द्रव्य सहायक

श्रीमान सेठ हस्तीमलजी जेठमलजी जिनाणी बागरेचा
मु गढ़ सिवाना (राजस्थान)

प्राप्ति स्थान—

१ श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन सस्कृति रक्षक सघ सैलाना (मध्य-प्रदेश)
शाखा—श्री अ भा साधुमार्गी जैन सस्कृति रक्षक सघ
२ " " २३४ नागदेवी स्ट्रीट, बम्बई न ३
३ " " सराफा बाजार, जोधपुर (राजस्थान)

स्वल्प मूल्य ५–००

प्रथमावृति ८००

वीर सवत् २४९४
विक्रम सवत् २०२५
ईसवी सन् १९६८

मुद्रक—श्री जैन प्रिंटिंग प्रेस सैलाना (म प्र)

समर्पित

पूज्य
पिताजी
श्री हस्तीमलजी साहब !
आप बडे ही धर्मात्मा है, सम्यग्
ज्ञान से युक्त दृढ श्रद्धावान् श्रावक
है। सैद्धातिक ज्ञान प्राप्त करने की आप मे
बहुत रुचि है। आप कई थोकडो के जानकार है।
सैद्धातिक चर्चा मे आप बहुत रस लेते है। साधु-साध्वियो की
चारित्र शुद्धि को आप महत्व देते है। सयम मे ढिलाई आपको
सदैव खटकती है। आप व्रतो का पालन करने मे सावधान रहते
है। सामायिक तो आप करते ही रहते है। जब भी अव-
काश मिला, आप सामायिक करके स्मरण, स्तवन
और थोकडो के चिन्तन मे लग जाते है। वर्षो
से आप ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर
रहे है और आश्रव सेवन से
आप बचते रहते है।

आपकी
धार्मिक वृत्ति का ही
परिणाम है कि मै भी धर्म
के अभिमुख हुआ। आपके दिये हुए
धर्म-सस्कारो से प्रेरित होकर, श्री भगवती
सूत्र का यह चतुर्थ भाग आपके
करकमलो मे अर्पण करता
हूँ

आपश्री का विनम्र पुत्र--
जेठमल आगरेचा सिवाना

निवेदन

श्री भगवती सूत्र का यह चतुथ भाग है। तीसरा भाग प्रकाशित होने के ग्यारह महीने बाद यह चौथा भाग प्रकाशित हो रहा है। तीसरा भाग प्रकाशित होने के बाद स्वाध्याय प्रेमी आगम रसिक महानुभाव चौथे भाग की प्रतीक्षा करने लगे, उनके पत्र आने लग। चातुर्मास प्रारभ होते ही यहा तक आग्रह होने लगा कि–' हमारे लिए कुछ प्रतियो की जिल्द पहले बँधवा कर हमे भेज दे।" इस प्रकार एक भाग प्रकाशित होने के बाद दूसरे की माग तय्यार रहती है। यह आगम रसिक धर्मात्माओ की धम प्रियता का प्रमाण है। इसका यह अथ नही कि यह प्रकाशन उच्च कोटि का तथा निर्दोष है। इसमे प्रूफ सशोधन की त्रुटियाँ है और भाषा आदि की भी त्रुटियाँ भी है, इससे बढकर अच्छा प्रकाशन भी हो सकता है। किन्तु यह भी सभावना है कि द्रव्यापेक्षा–भाषा, विवेचन, आकारप्रकार एव आवपकता मे बढचढकर होते हुए भी भावो मे कुरूपता-विपरीतता आने की, वत्तमान समय मे अत्यधिक सभावना रहती है। अतएव वैस बाह्यरूप से सुदर दिखाई देने वाले और अन्तर मे भाव विपयय एव भ्रमोत्पादक प्रकाशनो की अपेक्षा यह प्रकाशन उत्तम है–यह कहना अत्युक्ति नही होगा।

इस भाग मे ९ से १२ तक चार शतक का समावेश हुआ है। इसके बाद पाचवा भाग छपेगा, किन्तु उसमें विलम्ब होगा। हमारा विचार अब 'मोक्ष माग' ग्रथ की दूसरी आवृति शीघ्र प्रकाशित करने का है। अतएव उसका प्रकाशन प्रारम्भ किया जायगा, उसके बाद भगवती सूत्र का पाचवाँ भाग छपेगा। अतएव पाठको को धैय्य धारण करना पड़ेगा।

इस भाग के प्रकाशन का समस्त व्यय गढ सिवाना निवासी उदारमना श्रीमान सेठ हस्तीमलजी जेठमलजी जिनाणी बागरेचा ने दिया है। अतएव आपको अनेकानेक धन्यवाद है। आशा है कि अन्य महानुभाव भी आपश्री का अनुकरणकर अपनी उदार भावना का परिचय देकर जिनवाणी के प्रचार मे योगदान करेंगे।

विनीत–

माणकलाल पोरवाड–अध्यक्ष
रतनलाल डोशी–प्रधान मन्त्री
बाबूलाल सराफ–मन्त्री
जशवन्तलाल शाह–मन्त्री

भाद्रपद शुक्ला ११
वीर स २४९४
वि स २०२५
३-९-६८

शुद्धि–पत्र

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५७४	४	पुक्खरद्धे	पुक्खरोदे
१५७५	७	पुप्करार्द्ध	पुष्करोद
"	११	स्वम्भूरमण	स्वयम्भूरमण
१५७६	९	निण्णी	त्रिण्णि
१५७७	१४	तरह	तरफ
"	१५	तीसरी	तीसरी
१५८५	१७	ज़ावणो	जाव णो
१५८८	१५	केवलणाण	केवलणाण णो
१६३७	१	वालुयप्पभाए	दो वालुयप्पभाए
"	१४	घमप	धूमप्प
१६३९	९	पचण्ण	पचण्ह
१६४०	९	सक्करप्पभाए	एगे वालुयप्पभाए
१६४१	१९	एक अथवा	अथवा एक
१६५४	१२	सत्तमसयोगी	सत्त सयोगी
१६७८	१७	इकइया	इकाइया
१६८०	६	वेमणिएमु	वेमाणिएमु
१६८५	४	अमुरकुमार	असुरकुमार
१६९२	७	हृष्ट	हृष्ट
१७०७	१६	णिग्गच्छइ	णिग्गच्छति
"	१८	"	"
१७१५	१९	दुव्वल	दुव्वल
"	२०	भूपण	भूसण
१७१६	१३	णिखयक्ख	णिरयवक्खे
१७१८	१०	होते	०
"	२४	जया	जाया
१७१९	५	पुच्छा	पच्छा
"	"	अवस्स	अवस्स
१७२०	८	वीरीय	वीरिय
१७२६	१९	अवस्स	अवस्स
१७२८	१०	अहियावित्तए	अहियासित्तए

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७३५	२	सहाय	गहाय
१७३९	१४	सण्णिसण्णा	सण्णिमण्णे
१७४१	९	मीह	सीय
१७४३	२१	वररुण	वरतरुण
१७५२	१४	अणागारसएहि	अणगारसएहिं
१७८२	३	आयट्ठी	आयड्ढी
१७८३	३	रायागहे	रायगिहे
१७८६	६	जे अरुवि	जे रूवी
१७९१	१४	रियइ	रीयइ
१७९७	१७	अणालोइया	अणालोइय
१८०४	२	अलावगा	आलावगा
१८१३	१७	त्रायस्त्रिशक	त्रायस्त्रिंशक
१८१६	९	त्रायस्त्रिक	"
१८१८	१६	सामान	समान
१८२३	१८	जमस्स	जमस्स
१८४०	७	ठीई	ठिई
१८४२	९	एकरूप	एकरूक
१८४७	१	बघए	वधए
१८४९	५	एक एक	एक
१८६९	१३	चेव चेव	चेव
१८७८	१६	बहिरिय	बाहिरिय
१८७९	४	पम्हल०	०
१८८६	१२	समुप्पज्जित्थ	समुप्पज्जित्था
"	"	अत्थिा	अत्थि
१८८९	२०	अनुभू	अनु
१८९१	११	स्पृस्ट	स्पृष्ट
"	१८	स्वम्भू	स्वयम्भू
१९०५	१३	अणताभागूणे	अणतभागूणे
१९०७	११	अगएवी	अगए
१९१९	२०	जहण्णाए	जहण्णए
१९२४	९	गधुद्धया	गधुद्धुया
१९५२	१६	अट्ट	अट्ठ
१९५५	१४	घम्मघोसस्स	धम्मघोसस्स

पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९	एयमट्ठे	एसमट्ठे
१८	मीया	सिया
२०	तसस्त	समस्त
१४	नि श्रिप्ट	निसृष्ट
२	पूद्गल	पुद्गल
१६	है युक्त	मुक्त है।
१	स्वयभूरण	स्वयम्भूरमण
७	वणमत्र	वाणमतर
१३	आणागारो	अणागारो
१६	आठ और	और आठ
१४	आयाण	अयाण
१४	सयसस्स	सयसहस्स
६	ठिईयसो णरयसी	ठिइयसि णरयसि
११	दवेहिनो	देवेहितो
१७	जधन्र	जघन्य
९	आयोगी	अयोगी
६	खघे	खधे
१८	स्कन्घ	स्कन्ध

) पृष्ठ २०१४ पंक्ति १८ का पाठ प भगवानदासजी दोषी सम्पादित भाग ३ पृ
मार है और ऐसा ही पाठ सूरतवाली प्रति पृ १०३४ मे भी है, किंतु अन्य प्रतियो
गयओ दुपएसिए खध एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ।"–
पाठ होना आवश्यक भी है। इसका अर्थ पृ २०१५ प ७ मे–'होता है' के आगे–
आर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर
कन्ध होता है"–होना चाहिए।

पृ २०१५ पंक्ति ९ मे–' अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि
खधा भवति"–पाठ प० भगवानदास दोषी सम्पादित भाग ३ पृ २६६ मे है, और
है, किंतु अन्य प्रतियो मे देखने मे नही आया।

पृ २०९० पंक्ति २ मे "णा उववाओ" पाठ प भगवानदास दोषी सम्पादित
९० मे है और उसीसे लिया है, किन्तु अन्य प्रतियो मे नही है।

स्पष्टीकरण

ो भगवती सूत्र भाग ३ पृ १४६२ के विवेचन मे 'अनिवृत्ति बादर' नामक ९ वें
मे दर्शनत्रिक का प्रदेशत उदय बताया गया है, यह एक आचार्य का मत है। किन्तु
उपशम-श्रेणी मे दर्शनत्रिक का प्रदेश उदय भी नही होता। प्रदेशत उदय क्षयोप-
त्व मे होता है। क्षयोपशम समकित सातवे गुणस्थान तक होती है। —डोशी

विषयानुक्रमणिका—

शतक ९

शतक १०

क्रमांक	विषय	पृष्ट

उद्देशक ३

उद्देशक ४

क्रमाक	विषय

उद्देशक ५

उद्देशक ६

उद्देशक ७ से ३४

शतक ११

उद्देशक १

उद्देशक २

उद्देशक ३

उद्देशक ४

उद्देशक ५

उद्देशक ६

उद्देशक ७

उद्देशक ८

उद्देशक ९

उद्देशक १०

उद्देशक ११

उद्देशक १२

शतक १२

णमोत्थुण समणस्स भगवओ महावीरस्स

गणधर भगवत्सुधर्मस्वामि प्रणीत

भगवती सूत्र

शतक ९

१ जबुद्दीवे २ जोइस ३–३० अतरदीवा ३१ असोच्च ३२ गगेय ।
३३ कुडग्गामे ३४ पुरिसे णवमम्मि सतमि चोत्तीसा ॥

भावार्थ–नौवें शतक में चौतीस उद्देशक है । यथा–जम्बूद्वीप के विषय में प्रथम उद्देशक है । ज्योतिषी देवो के सम्बन्ध में दूसरा उद्देशक है । तीसरे से तीसवें उद्देशक तक अट्ठाईस उद्देशको में अन्तर्द्वीपो का वर्णन है । इकत्तीसवें उद्देशक में 'असोच्चा केवली' का वर्णन है । बत्तीसवें उद्देशक में गांगेय अनगार के प्रश्न है । तेतीसवाँ उद्देशक ब्राह्मणकुण्ड ग्राम विषयक है । चौतीसवें उद्देशक में पुरुषघातक पुरुष आदि का वर्णन है ।

विवेचन–उपरोक्त सग्रह गाथा में नौवे शतक में प्ररूपित ३४ उद्देशक का नाम निर्देश किया गया है । तीसरे उद्दशक से तीसवे तक अट्ठाईस उद्देशक, अट्ठाईस अन्तर्द्वीपो के मनुष्यो के विषय में है। इसलिए तीसरे से लगाकर तीसवे तक के उद्देशक का वणन एक साथ ही हुआ है ।

शतक ९ उद्देशक १

जम्बूद्वीप

२ प्रश्न–तेणं कालेण तेणं समएणं मिहिला णाम णयरी होत्था । वण्णओ । माणिभद्दे चेइए । वण्णओ । सामी समोसढे, परिसा णिग्गया जाव भगव गोयमे पज्जुवासमाणे एव वयासी–कहि ण भते ! जबुद्दीवे, दीवे किसठिए ण भते ! जबुद्दीवे दीवे ?

२ उत्तर–एव जबुद्दीवपण्णत्ती भाणियव्वा जाव एवामेव सपुव्वावरेण जबुद्दीवे दीवे चोद्दस सलिला सयसहस्सा छप्पण्ण च सहस्सा भवतीति मक्खाया ।

॰ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॰

॥ इति णवमसए पढमो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ–किसठिए–किस आकार मे, सपुव्वावरेणं–पूर्व और पश्चिम, सलिला–नदी ।

भावार्थ–२ प्रश्न–उस काल उस समय में मिथिला नाम की नगरी थी । वर्णन । वहाँ मणिभद्र नामका चैत्य (उद्यान) था । वर्णन । वहाँ श्रमण भगवान् महावीर स्वामी पधारे । परिषद वन्दन के लिये निकली और धर्मोपदेश सुनकर वापिस लौट गई, यावत् पर्युपासना करते हुए गौतम स्वामी ने इस प्रकार पूछा–

हे भगवन् ! जम्बूद्वीप कहा है ? हे भगवन् ! जम्बूद्वीप का आकार कैसा है ?

उत्तर–हे गौतम ! इस विषय में जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति में कहे अनुसार सारा वर्णन जानना चाहिये, यावत् इस जम्बूद्वीप में पूर्व और पश्चिम चौदह लाख छप्पन हजार नदियां है–वहाँ तक कहना चाहिये ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-जम्बूद्वीप के वर्णन के विषय में जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र का अतिदेश किया गया है। जम्बूद्वीप सब द्वीपों के मध्य में है। यह सब से छोटा द्वीप है और इसका आकार 'तैल अपूर' (तैल का मालपूआ) रथचक्र, और पुष्करकर्णिका तथा पूर्णचन्द्र के समान गोल है। यह एक लाख योजन लम्बा और चौडा है, यावत इसमे चौदह लाख छप्पन हजार नदियाँ पूर्व समुद्र और पश्चिम समुद्र मे जाकर गिरती हैं। इत्यादि सारा वर्णन जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्ति सूत्र के अनुसार जानना चाहिये।

॥ इति नौवें शतक का प्रथम उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ९ उद्देशक २

जम्बूद्वीपादि मे चन्द्रमा

१ प्रश्न-रायगिहे जाव एव वयासी-जबुद्दीवे ण भते ! दीवे केवइया चदा पभासिंसु वा, पभासेंति वा, पभासिस्सति वा ?

१ उत्तर-एव जहा जीवाभिगमे, जाव-"एग च सयसहस्सं तेत्तीस खलु भवे सहस्साइ। णव य सया पण्णासा तारागणकोडा-कोडीणं"। सोभ सोभिंसु, सोभिंति, सोभिस्सति।

२ प्रश्न-लवणे ण भते ! समुद्दे केवइया चदा पभासिंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्सति वा ?

२ उत्तर-एव जहा जीवाभिगमे जाव ताराओ । धायइसडे, कालोदे, पुक्खरवरे, अब्भितरपुक्खरद्धे, मणुस्सखेत्ते-एएसु सव्वेसु जहा जीवाभिगमे, जाव-"एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडीणं"।

३ प्रश्न-पुक्खरद्धे णं भते ! समुद्दे केवइया चदा पभासिंसु वा ० ?

३ उत्तर-एव सव्वेसु दीव-समुद्देसु जोडसियाण भाणियव्व, जाव सयभूरमणे, जाव सोभ सोभिंसु वा, सोभति वा, सोभिस्सति वा ।

॥ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

॥ णवमसए बीओ उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-केवइया-कितने, पभासिंसु-प्रकाश किया, सोभ-शोभित किया, ससी-चन्द्रमा, पुक्खरोदे-पुष्करोद (पुष्कर समुद्र) ।

भावार्थ-१ प्रश्न-राजगृह नगर में यावत् गौतम स्वामी ने इस प्रकार पूछा-

हे भगवन् ! जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में कितने चन्द्रमाओ ने प्रकाश किया, प्रकाश करते है और प्रकाश करेगे ?

१ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति के दूसरे उद्देशक में कहा है, उसी प्रकार जानना चाहिये । यावत् 'एक लाख तेतीस हजार नौ सौ पचास कोडाकोडी ताराओ के समूह शोभित हुए, शोभित होते है और शोभित होगे-यहां तक जानना चाहिये ।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! लवण समुद्र में कितने चन्द्रमाओ ने प्रकाश किया,

प्रकाश करते है और प्रकाश करेंगे ?

२ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति के दूसरे उद्देशक में कहा है, उसी प्रकार ताराओ के वर्णन तक जानना चाहिये। धातकीखण्ड, कालोदधि, पुष्करवर द्वीप, आभ्यन्तर पुष्करार्द्ध और मनुष्य क्षेत्र, इन सब में जीवाभिगम सूत्र के अनुसार जानना चाहिये। यावत् 'एक चन्द्र का परिवार यावत् कोडाकोडी तारागण है'-वहाँ तक जानना चाहिये।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! पुष्करार्द्ध समुद्र में कितने चन्द्रमाओ ने प्रकाश किया, प्रकाश करते है और प्रकाश करेगे ?

३ उत्तर-हे गौतम ! जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति के दूसरे उद्देशक में सब द्वीप और समुद्रो में ज्योतिषी देवो का जो वर्णन कहा है, उसी प्रकार यावत 'स्वम्भूरमण समुद्र में यावत शोभित हुए है, शोभते है और शोभेंगे।' वहाँ तक जानना चाहिये।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते है।

विवेचन-जम्बूद्वीप, लवण समुद्र, घातकीखण्ड द्वीप, कालोद समुद्र और पुष्करवर द्वीप आदि सभी द्वीप समुद्रो मे चन्द्र, सूय, ग्रह, नक्षत्र और तारा के विषय में प्रश्न किये गये हैं। उत्तर मे जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति के दूसरे उद्दशक का अतिदेश किया गया है। ढाई द्वीप (जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड द्वीप और आभ्यन्तर पुष्करार्द्ध द्वीप) और दो समुद्र (लवण समुद्र और कालोद समद्र) परिमाण मनुष्य क्षेत्र मे चन्द्र सूय आदि जो ज्योतिषी देव हैं, वे सब चर हैं। मनुष्य क्षेत्र के बाहर के सब द्वीप समुद्रो मे चन्द्र, सूय आदि ज्योतिषी देव हैं वे सब अचर (स्थिर) हैं। इनकी सख्या आदि का सभी वणन जीवाभिगम सूत्र से जान लेना चाहिये।

॥ इति नौवें शतक का दूसरा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ९ उद्देशक ३ से ३०

अन्तर्द्वीपक मनुष्य

१ प्रश्न–रायगिहे जाव एव वयासी–कहि ण भते ! दाहि-णिल्लाणं एगोरुयमणुस्साण एगोरुयदीवे णाम दीवे पण्णत्ते ?

१ उत्तर–गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण चुल्लहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ लवणसमुद्द उत्तरपुरत्थिमेणं तिण्णि जोयणमयाइ ओगाहित्ता एत्थ णं दाहिणिल्लाणं एगोरुयमणुस्साण एगोरुयदीवे णाम दीवे पण्णत्ते । गोयमा ! तिण्णी जोयणसयाइ आयाम-विक्खभेणं णव-एगूणवण्णे जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण पण्णत्ते । से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसडेणं सव्वओ समता सपरि-क्खित्ते, दोण्ह वि पमाण वण्णओ य एव एएणं कमेण एव जहा जीवाभिगमे जाव 'सुद्धदतदीवे,' जाव 'देवलोगपरिग्गहा ण ते मणुया पण्णत्ता' समणाउसो ! एव अट्ठावीसपि अतरदीवा सएणं मएण आयाम-विक्खभेण भाणियव्वा, णवर दीवे दीवे उद्देसओ, एव सव्वे वि अट्ठावीस उद्देसगा ।

ॐ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॐ

॥ इति णवमसयस्स तीसइमो उद्देसो ममत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ—दाहिणिल्लाण—दक्षिण दिशा के, चरिमताओ—अतिम किनारे से, उत्तरपुरत्थिमेण—उत्तर पूव (ईशान कोन मे), ओगाहित्ता—जाने पर एगूणवण्णे—ऊनपचास, किंचिविसेसूणे—किंचित कम, परिक्खेवेण—परिक्षेप (परिधि) सव्वओ समता—चारो ओर, सपरिक्खित्ते—लिपटा हुआ (घिरा हुआ), सएण—अपने ।

भावार्थ—१ प्रश्न—राजगृह नगर में यावत् गौतमस्वामी ने इस प्रकार पूछा—हे भगवन् ! दक्षिण दिशा का 'एकोरुक' मनुष्यो का 'एकोरुक' नामक द्वीप कहाँ है ?

१ उत्तर—हे गौतम ! जम्बूद्वीप नाम के द्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में चुल्लहिमवन्त नामक वर्षधर पर्वत के पूर्व के चरमान्त (किनारे) से ईशान कोण में तीन सौ योजन लवण समुद्र में जाने पर वहा दक्षिण दिशा के 'एकोरुक' मनुष्यो का 'एकोरुक' नामक द्वीप है । हे गौतम ! उस द्वीप की लम्बाई चौडाई तीन सौ योजन है और उसका परिक्षेप (परिधि) नव सौ ऊन-चास योजन से कुछ कम है । वह द्वीप एक पद्मवर वेदिका और एकवन खण्ड द्वारा चारों तरह से वेष्टित है । इन दोनो का प्रमाण और वर्णन जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति के पहले उद्देशक के अनुसार जानना चाहिये । इसी क्रम से यावत् शुद्धदन्त द्वीप तक का वर्णन वहा से जान लेना चाहिये । 'इन द्वीपो के मनुष्य मरकर देव गति में उत्पन्न होते हैं'—यहा तक का वर्णन जानना चाहिये । इस प्रकार इन अट्ठाईस अन्तरदीपो की अपनी अपनी लम्बाई चौडाई भी जान लेनी चाहिये । परन्तु यहा एक एक द्वीप के विषय में एक एक उद्देशक कहना चाहिये । इस प्रकार इन अट्ठाईस अन्तरद्वीपो के अट्ठाईस उद्देशक होते है ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । ऐसा कहकर गौतमस्वामी यावत विचरते है ।

विवेचन—लवण समुद्र के भीतर होने से इनको 'अन्तरद्वीप' कहते हैं । उनमें रहने वाले मनुष्यो को 'अन्तरद्वीपक' कहते हैं । जम्बूद्वीप मे भरत क्षेत्र और हैमवत क्षेत्र की मर्यादा करने वाला 'चुल्लहिमवान्' पर्वत है । वह पर्वत पूर्व और पश्चिम मे लवणसमुद्र को स्पर्श करता है । उस पर्वत के पूर्व और पश्चिम के चरमान्त से चारो विदिशाओ (ईशान,

आग्नेय, नैऋत्य और वायव्य) मे लवण समुद्र मे प्रत्येक विदिशा मे तीन तीन सौ योजन जाने पर प्रत्येक विदिशा मे एकोरुक आदि एक एक द्वीप आता है। वे द्वीप गोल हैं। उनकी लम्बाई चौडाई तीन तीन सौ योजन की है। परिधि प्रत्येक की ६४६ याजन से कुछ कम है। इन द्वीपो से चार चार सौ योजन लवण समुद्र मे जाने पर क्रमश पाँचवा, छठा, सातवा आठवा, द्वीप आते हैं। इनकी लम्बाई चौडाई चार चार सौ याजन की है। य भी गोल हैं। इनकी प्रत्येक की परिधि १२६५ योजन से कुछ कम है। इसी प्रकार इनसे आगे क्रमश पाच सौ, छह सौ, सात सौ, आठ सौ, नवसौ, योजन जाने पर क्रमश चार चार द्वीप आते जाते हैं। उनकी लम्बाई चौडाई पाचसौ से लेकर नवसौ योजन तक क्रमश जाननी चाहिये। सभी गाल हैं। तिगुनी से कुछ अधिक परिधि है। इसी प्रकार चुल्लहिमवान पवत की चारो विदिशाओ में अट्ठाईस अ तरद्वीप हैं।

जिस प्रकार चुल्लहिमवान पवत के चारो विदिशाओ मे अट्ठाईस अन्तरद्वीप कहे गये हैं। उसी प्रकार शिखरी पवत की चारो विदिशाओ मे भी अट्ठाईस अ तरद्वीप है। जिनका वणन दसवे शतक के ७ वे उद्दशक से लेकर ३४ वे उद्देशक तक २८ उद्देशको मे किया गया है। उनके नाम आदि सभी समान हैं।

जीवाभिगम और प्रज्ञापना आदि सूत्रो की टीका में चुल्लहिमवान् और शिखरी पवत की चारो विदिशाओ मे चार चार दाढाए बतलाई गई है और उन दाढाओ पर अन्तर द्वीपो का हाना बतलाया गया है। किंतु यह बात सूत्र के मूलपाठ से मिलती नही है, क्योकि इन दोनो पवतो की लम्बाई आदि जो बतलाई गई है, वह पवत की सीमा तक ही आई है। उसमे दाढाओ की लम्बाई आदि नही बतलाई गई। यदि इन पवतो की दाढाए होती, तो उन पवतो की हद लवण समुद्र मे भी बतलाई जाती। लवण समुद्र मे भी दाढाओ का वणन नही है। इसी प्रकार यहा भगवती सूत्र के मूलपाठ मे तथा टीका मे भी दाढाओ का वणन नही है। य द्वीप विदिशाओ मे टेढे टेढे आय हुए हैं, इसलिये दाढाओ की कल्पना करली गई मालूम हाती है। सूत्र का वर्णन देखने से दाढाएँ किसी भी प्रकार से सिद्ध नही हाती।

॥ इति नौवें शतक का तीन से तीस तक के उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ९ उद्देशक ३१

असोच्चा केवली

१ प्रश्न–रायगिहे जाव एव वयासी–असोच्चा णं भते! केवलिस्स वा, केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा, तपक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवासगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्जा सवणयाए ?

१ उत्तर–गोयमा! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगइए केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्जा सवणयाए, अत्थेगइए केवलिपण्णत्त धम्म णो लभेज्जा सवणयाए।

प्रश्न–से केणट्ठेणं भते! एव वुच्चइ–'असोच्चा णं जाव णो लभेज्जा सवणयाए'?

उत्तर–गोयमा! जस्स ण णाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा, जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, जस्स णं णाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे णो कडे भवइ से णं असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म णो लभेज्ज सवणयाए। से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ–त चेव

जाव 'णो लभेज्ज सवणयाए' ।

कठिन शब्दार्थ–असोच्चा–अश्रुत्वा (किसी के पास सुने बिना ही), तप्पक्खियाए–उसके पक्षवाले से, लभेज्जा–प्राप्त होता है, सवणयाए–सुनने के लिए, अत्थेगइए–किसी जीव का, खओवसमे–क्षयोपशम, कडे–किया हो ।

भावार्थ–१ प्रश्न–राजगृह नगर में यावत् गौतम स्वामी ने इस प्रकार पूछा–"हे भगवन् ! केवली, केवली के श्रावक, केवली की श्राविका, केवली के उपासक, केवली की उपासिका, केवलीपाक्षिक (स्वय बुद्ध), केवलीपाक्षिक के श्रावक, केवलिपाक्षिक की श्राविका, केवलिपाक्षिक के उपासक, केवलिपाक्षिक की उपासिका, इनमें से किसी के पास बिना सुने ही किसी जीव को केवलि प्ररूपित धर्म श्रवण का लाभ होता है ?

१ उत्तर–हे गौतम ! केवली यावत् केवलीपाक्षिक की उपासिका (इन दस) के पास सुने बिना ही किसी जीव को केवलिप्ररूपित धर्मश्रवण का लाभ होता है (धम का बोध होता है) और किसी जीव को नहीं होता ।

प्रश्न–हे भगवन् ! ऐसा किस कारण कहा गया कि–किसी के पास सुने विना भी किसी जीव को केवलिप्ररूपित धम का बोध होता है और किसी को नहीं होता ?

उत्तर–हे गौतम ! जिस जीव के ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम किया हुआ है,उसको केवली यावत् केवलिपाक्षिक उपासिका–इनमें से किसी के पास सुने बिना ही केवलिप्ररूपित धर्म श्रवण का लाभ होता है और जिस जीव ने ज्ञानावरणीय कम का क्षयोपशम नहीं किया, उसको केवली यावत केवलिपाक्षिक की उपासिका के पास सुने बिना केवलिप्ररूपित धर्म श्रवण का लाभ नहीं होता। हे गौतम ! इस कारण ऐसा कहा कि 'यावत किसी को धर्म श्रवण का लाभ होता है और किसी को नहीं होता।'

२ प्रश्न–असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खिय-

उवासियाए वा केवल वोहिं वुज्झेज्जा ?

२ उत्तर-गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगइए केवल वोहिं वुज्झेज्जा, अत्थेगइए केवल वोहिं णो वुज्झेज्जा ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! जाव णो वुज्झेज्जा ?

उत्तर-गोयमा ! जस्स ण दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवल वोहि वुज्झेज्जा, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवल वोहिं णो वुज्झेज्जा; से तेणट्ठेणं जाव णो वुज्झेज्जा ।

कठिन शब्दार्थ-वोहिं वुज्झेज्जा-बोधि (समझ-सम्यग्दर्शन) प्राप्त करे-अनुभव करे ।

भावार्थ-२ प्रश्न-हे भगवन् ! केवली यावत् केवलिपाक्षिक की उपासिका से सुने बिना ही कोई जीव शुद्धबोधि (सम्यग्दर्शन) प्राप्त करता है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! केवली आदि के पास सुने बिना कुछ जीव शुद्ध-बोधि प्राप्त करते हैं और कितनेक जीव शुद्धबोधि प्राप्त नहीं करते ।

प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसा किस कारण कहा गया कि 'यावत् शुद्धबोधि को प्राप्त नहीं करते ?

उत्तर-हे गौतम ! जिस जीव ने दर्शनावरणीय (दर्शनमोहनीय) कर्म का क्षयोपशम किया है, उस जीव को केवली आदि के पास सुने बिना ही शुद्ध-बोधि का लाभ होता है और जिस जीव के दर्शनावरणीय का क्षयोपशम नहीं किया, उस जीव को केवली आदि के पास सुने बिना शुद्धबोधि का लाभ नहीं

होता। इसलिये हे गौतम ! यावत् सुने बिना शुद्ध बोधि प्राप्त नहीं करते ।

३ प्रश्न-असोच्चा ण भंते ! केवलिस्स वा, जाव तप्पक्खिय-उवासियाए वा केवल मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्व-एज्जा ?

३ उत्तर-गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवा-सियाए वा अत्थेगइए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा; अत्थेगइए केवल मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं णो पव्वएज्जा ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं जाव णो पव्वएज्जा ?

उत्तर-गोयमा ! जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माण खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव मुंडे भवित्ता जाव णो पव्वएज्जा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव णो पव्वएज्जा ।

कठिन शब्दार्थ-मुंडे भवित्ता-मुंडित (दीक्षित) होकर, अगाराओ अणगारियं-गृहस्थवास से अनगार (साधु) पन को, पव्वएज्जा-प्रव्रज्या स्वीकार करे, धम्मंतराइयाण-धर्म में बाधक होने वाले ।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! केवली आदि के पास सुने बिना क्या

कोई जीव अगारवास छोडकर और मुण्डित होकर अनगारिकपन (प्रव्रज्या) स्वीकार करता है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! कोई जीव स्वीकार करता है और कोई स्वीकार नहीं करता ?

प्रश्न-हे भगवन् ! इसका क्या कारण है ?

उत्तर-हे गौतम ! जिस जीव के धर्मान्तरायिक कर्म का अर्थात् चारित्र धर्म में अन्तरायभूत चारित्रावरणीय कर्म का क्षयोपशम किया हुआ है, वह जीव केवली आदि के पास सुने विना ही मुंडित होकर अनगारपने को स्वीकार करता है, परन्तु जिस जीव के धर्मान्तरायिक कर्मों का क्षयोपशम नहीं हुआ, वह प्रव्रज्या स्वीकार नहीं करता, इसलिए पूर्वोक्त कथन है ।

४ प्रश्न-असोच्चा ण भंते ! केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा केवल बंभचेरवास आवसेज्जा ?

४ उत्तर-गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगइए केवल बंभचेरवास आवसेज्जा, अत्थेगइए केवल बंभचेरवास णो आवसेज्जा ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'जाव णो आवसेज्जा' ?

उत्तर-गोयमा ! जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवल बंभचेरवास आवसेज्जा, जस्स ण चरित्तावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे णो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव णो आवसेज्जा,

से तेणट्ठेणं जाव णो आवसेज्जा ।

कठिन शब्दार्थ–अज्झवसाणावरणिज्जाण–अध्यवसानावरणीय (भाव चारित्र के आवरक)।

भावार्थ–४ प्रश्न–हे भगवन् ! केवली आदि के पास सुने बिना क्या कोई जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवास को धारण करता है ?

४ उत्तर–हे गौतम ! कोई जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवास को धारण करता है और कोई नहीं करता ।

प्रश्न–हे भगवन् ! इसका क्या कारण है ?

उत्तर–हे गौतम ! जिस जीव ने चारित्रावरणीय कर्म का क्षयोपशम किया है, वह केवली आदि के पास सुने बिना ही शुद्ध ब्रह्मचर्यवास को धारण करता है, परतु जिसने चारित्रावरणीय कर्म का क्षयोपशम नहीं किया, वह जीव यावत् 'ब्रह्मचर्यवास को धारण नहीं करता,' इसलिये पूर्वोक्त प्रकार से कहा गया है ।

५ प्रश्न–असोच्चा ण भंते ! केवलिस्स वा जाव केवलेण संजमेण संजमेज्जा ?

५ उत्तर–गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगइए केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, अत्थेगइए केवलेणं संजमेण णो संजमेज्जा ।

प्रश्न–से केणट्ठेण जाव णो संजमेज्जा ?

उत्तर–गोयमा ! जस्स ण जयणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव केवलेण संजमेणं

सजमेज्जा, जस्स ण जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव णो सजमेज्जा, से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव अत्थेगइए णो सजमेज्जा ।

कठिन शब्दार्थ–जयणावरणिज्जाण–यतनावरणीय ।

भावार्थ–५ प्रश्न–हे भगवन् ! केवली आदि के पास सुने विना भी क्या कोई जीव, शुद्ध सयम द्वारा सयम-यतना करता है ?

५ उत्तर–हे गौतम ! कोई जीव करता है और कोई नहीं करता ।

प्रश्न–हे भगवन् ! इसका क्या कारण है ?

उत्तर–हे गौतम ! जिस जीव ने यतनावरणीय (वीर्यान्तराय) कर्म का क्षयोपशम किया है, वह केवली आदि किसी के पास सुने विना भी शुद्ध सयम द्वारा सयम-यतना करता है और जिसने यतनावरणीय कर्म का क्षयोपशम नहीं किया, वह यावत् 'शुद्ध सयम द्वारा सयम-यतना नहीं करता ।' इसलिये हे गौतम ! पूर्वोक्त प्रकार से कहा है ।

६ प्रश्न–असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा केवलेणं सवरेणं सवरेज्जा ?

६ उत्तर–गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव अत्थेगइए केवलेणं सवरेण सवरेज्जा, अत्थेगइए केवलेणं जावणो सवरेज्जा ।

प्रश्न–से केणट्ठेणं जाव णो सवरेज्जा ?

उत्तर–गोयमा ! जस्स ण अज्झवसाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलेण

सवरेणं सवरेज्जा, जस्स णं अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव णो सवरेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव णो सवरेज्जा ।

भावार्थ-६ प्रश्न-हे भगवन् ! केवली आदि के पास से धर्म श्रवण किये बिना ही क्या कोई जीव शुद्ध सवर द्वारा सवृत्त होता है (आश्रव निरोध करता है) ?

६ उत्तर-हे गौतम ! कोई करता है और कोई नहीं भी करता ।

प्रश्न-हे भगवन् ! इसका क्या कारण है ?

उत्तर-हे गौतम ! जिस जीव ने अध्यवसानावरणीय (भाव चारित्रावरणीय) कर्म का क्षयोपशम किया है, वह यावत् सुने बिना भी शुद्ध सवर द्वारा आश्रव का निरोध करता है और जिस ने अध्यवसानावरणीय कर्म का क्षयोपशम नहीं किया, वह शुद्ध सवर द्वारा आश्रव का निरोध नही करता । इसलिये हे गौतम ! पूर्वोक्त प्रकार से कहा है ।

७ प्रश्न-असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव केवल आभिणिवोहियणाणं उप्पाडेज्जा ?

७ उत्तर-गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगइए केवल आभिणिवोहियणाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए केवल आभिणिवोहियणाण णो उप्पाडेज्जा ।

प्रश्न-से केणट्ठेण जाव णो उप्पाडेज्जा ?

उत्तर-गोयमा ! जस्स ण आभिणिबोहियणाणावरणिज्जाण

कम्माण खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवल आभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा, जस्स णं आभिणिबोहिय-णाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे णो कडे भवइ, से णं असोच्चा केवलिस्स वा, जाव केवल आभिणिबोहियणाणं णो उप्पा-डेज्जा, से तेणट्ठेण जाव णो उप्पाडेज्जा ।

कठिन शब्दार्थ–उप्पाडेज्जा–उत्पन्न करे ।

भावार्थ–७ प्रश्न–हे भगवन् ! केवली आदि के पास से सुने विना ही कोई जीव शुद्ध आभिनिबोधिकज्ञान उत्पन्न करता है ?

७ उत्तर–हे गौतम ! कोई करता है और कोई नहीं करता ।

प्रश्न–हे भगवन् ! इसका क्या कारण है ?

उत्तर–हे गौतम ! जिस जीव ने आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम किया है, वह यावत् सुने विना ही आभिनिबोधिक ज्ञान उत्पन्न करता है और जिस जीव ने आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम नहीं किया, वह यावत आभिनिबोधिक ज्ञान उत्पन्न नहीं करता । इसलिये हे गौतम ! पूर्वोक्त प्रकार से कहा गया है ।

८ प्रश्न–असोच्चा णं भंते ! केवलि० जाव केवल सुयणाणं उप्पाडेज्जा ?

८ उत्तर–एवं जहा आभिणिबोहियणाणस्स वत्तव्वया भणिया तहा सुयणाणस्स वि भाणियव्वा, णवरं सुयणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे । एवं चेव केवल ओहिणाणं भाणि-

यव्व, णवर ओहिणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे। एव केवल मणपज्जवणाण उप्पाडेज्जा, णवर मणपज्जवणाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे भाणियव्वे।

भावार्थ—८ प्रश्न—हे भगवन् ! केवली आदि के पास से सुने बिना ही कोई जीव शुद्ध श्रुतज्ञान उत्पन्न करता है ?

८ उत्तर—हे गौतम ! जिस प्रकार आभिनिबोधिक ज्ञान का कथन किया गया, उसी प्रकार शुद्ध श्रुतज्ञान, शुद्ध अवधिज्ञान और शुद्ध मन पर्ययज्ञान के विषय में भी कहना चाहिये, परन्तु श्रुतज्ञान में श्रुत-ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम, अवधिज्ञान में अवधिज्ञानावरणीय कम का क्षयोपशम और मन पर्यय ज्ञान में मन पयययज्ञानावरणीय कम का क्षयोपशम कहना चाहिये।

९ प्रश्न—असोच्चा णं भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खिय-उवासियाए वा केवलणाण उप्पाडेज्जा ?

९ उत्तर—एव चेव, णवर केवलणाणावरणिज्जाण कम्माण खए भाणियव्वे, सेस त चेव, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जाव केवलणाण उप्पाडेज्जा।

कठिन शब्दाथ—खए—क्षय स।

भावाथ—९ प्रश्न—हे भगवन् ! केवली आदि के पास सुने बिना ही कोई जीव केवलज्ञान उत्पन्न करता है ?

९ उत्तर—हे गौतम ! कोई करता है और कोई नहीं करता।

प्रश्न—हे भगवन् ! इसका क्या कारण है ?

उत्तर—हे गौतम ! जिस जीव ने केवल ज्ञानावरणीय कम का क्षय किया

है, वह जीव केवलज्ञान उत्पन्न करता है और जिस जीव ने केवलज्ञानावरणीय कर्म का क्षय नहीं किया, वह केवलज्ञान उत्पन्न नहीं करता। इसलिये हे गौतम ! पूर्वोक्त प्रकार से कहा गया है।

१० प्रश्न–असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खिय-उवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, केवलं आभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा, जाव केवलं मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा केवलणाणं उप्पाडेज्जा ?

१० उत्तर–गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगइए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, अत्थेगइए केवलिपण्णत्तं धम्मं णो लभेज्जा सवणयाए, अत्थेगइए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, अत्थेगइए केवलं बोहिं णो बुज्झेज्जा, अत्थेगइए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, अत्थेगइए जाव णो पव्वएज्जा, अत्थेगइए केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, अत्थेगइए केवलं बंभचेरवासं णो आवसेज्जा, अत्थेगइए केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, अत्थेगइए केवलेणं संजमेणं णो संजमेज्जा, एवं संवरेण वि, अत्थेगइए केवलं आभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए जाव णो उप्पाडेज्जा, एवं जाव मणपज्जवणाणं, अत्थे-

गइए केवलणाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए केवलणाणं णो उप्पाडेज्जा ।

प्रश्न–से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ–असोच्चा णं तं चेव जाव अत्थेगइए केवलणाणं णो उप्पाडेज्जा ?

उत्तर–गोयमा ! जस्स णं णाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ, जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ, एवं चरित्तावरणिज्जाणं, जयणावरणिज्जाणं, अज्झवसाणावरणिज्जाणं, आभिणिबोहियणाणावरणिज्जाणं, जाव मणपज्जवणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ, जस्स णं केवलणाणावरणिज्जाणं जाव खए णो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलिपण्णत्तं धम्मं णो लभेज्ज सवणयाए, केवलं बोहिं णो वुज्झेज्जा, जाव केवलणाणं णो उप्पाडेज्जा । जस्स णं णाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स णं धम्मंतराइयाणं, एवं जाव जस्स णं केवलणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, केवलं बोहिं वुज्झेज्जा, जाव केवलणाणं उप्पाडेज्जा ।

भावार्थ–१० प्रश्न–हे भगवन् ! केवली यावत् केवलिपाक्षिक की उपा-

सिका, इन दस के पास केवली प्ररूपित धर्म सुने विना भी क्या कोई जीव केवली प्ररूपित धर्म का श्रवण-बोध (श्रुत सम्यक्त्व का अनुभव) करता है, मुण्डित होकर अगारवास से अनगारवास को स्वीकार करता है, शुद्ध ब्रह्मचर्यवास धारण करता है, शुद्ध सयम द्वारा सयम-यतना करता है, शुद्ध सवर द्वारा आश्रव का निरोध करता है, शुद्ध आभिनिवोधिक ज्ञान उत्पन्न करता है, यावत् शुद्ध मन पर्यय ज्ञान तथा केवलज्ञान उत्पन्न करता है ?

१० उत्तर-हे गौतम ! केवली आदि के पास से सुने विना भी कोई जीव वोध प्राप्त करता है और कोई जीव नहीं करता। कोई जीव शुद्ध सम्यक्त्व का अनुभव करता है और कोई नहीं करता। कोई जीव मुण्डित होकर अगारवास से अनगारपन स्वीकार करता है और कोई नहीं करता। कोई जीव शुद्ध ब्रह्मचर्य वास धारण करता है और कोई नहीं करता। कोई जीव शुद्ध सयम द्वारा सयम-यतना करता है और कोई नहीं करता। कोई जीव शुद्ध सवर द्वारा आश्रव का निरोध करता है और कोई नहीं करता। कोई जीव शुद्ध आभिनिवोधिक ज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यय ज्ञान और केवलज्ञान उत्पन्न करता है और कोई जीव नहीं करता।

प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसा कहने का कारण क्या है ?

उत्तर-हे गौतम ! (१) जिस जीव ने ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम नहीं किया। (२) दर्शनावरणीय कर्म का क्षयोपशम नहीं किया, (३) धर्मान्तरायिक कर्म का क्षयोपशम नही किया, (४) चारित्रावरणीय कर्म का क्षयोपशम नहीं किया, (५) यतनावरणीय कर्म का क्षयोपशम नहीं किया, (६) अध्यवसानावरणीय कर्म का क्षयोपशम नहीं किया, (७) आभिनिवोधिक ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम नहीं किया, (८ से १०) इसी प्रकार श्रुतज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय और मन पर्यय ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम नहीं किया, (११) केवल ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय नहीं किया, वे जीव केवलज्ञानी आदि के पास केवलिप्ररूपित धर्म को सुने विना धर्म का बोध प्राप्त नहीं करते, शुद्ध

सम्यक्त्व का अनुभव नहीं करते, यावत् केवलज्ञान को उत्पन्न नहीं करते। जिन जीवो ने ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम किया है, दर्शनावरणीय कर्म का क्षयोपशम किया है, धर्मान्तरायिक कर्म का क्षयोपशम किया है, यावत केवलज्ञानावरणीय कम का क्षय किया है, वे जीव, केवली आदि के पास सुने बिना ही धर्म का बोध प्राप्त करते ह, शुद्ध सम्यक्त्व का अनुभव करते हैं यावत् केवलज्ञान उत्पन्न करते हैं।

विवेचन-केवलज्ञान, केवलदशन के धारक को केवली कहते हैं। जिसने स्वय केवलज्ञानी से पूछा है, अथवा उनके समीप सुना है, उसे-केवलिश्रावक' और 'केवलिश्राविका' कहते हैं। केवलज्ञानी की उपासना करते हुए, केवली के द्वारा दूसरे को कहाजाने पर जिसने सुना हो उसे-'केवलिउपासक' और 'केवलिउपासिका' कहते हैं। केवलिपाक्षिक का अथ है- स्वय बुद्ध'। उसके श्रावक, श्राविका, उपासक, उपासिका, क्रमश केवलि पाक्षिक श्रावक, केवलिपाक्षिक श्राविका, केवलिपाक्षिक उपासक और केवलिपाक्षिक उपासिका' कहते हैं। असोच्चा' का अथ है- धमफलादि प्रतिपादक वचन सुने बिना ही पूवकृत धर्मानुराग से'। इन दस के पास केवलि प्ररूपित धमफलादि प्रतिपादक वचन सुने बिना ही कोई जीव धम का बोध + प्राप्त करता है और कोई जीव नहीं करता। इसी प्रकार शुद्ध सम्यक्त्व, मुण्डित हाकर अगारवास से अनगारपन, शुद्ध ब्रह्मचयवास, शुद्ध सयम द्वारा सयमयतना, शुद्ध सवर द्वारा आश्रवनिरोध, आभिनिबाधिक ज्ञान यावत केवलज्ञान को तदावरणीय कर्मों के क्षयोपशम और क्षय से प्राप्त करता है, और जिस जीव के तदावरणीय कर्मों का क्षयापशम और क्षय नही हुआ, वह जीव धम बोध यावत केवलज्ञान प्राप्त नहीं करता।

असोच्चा-मिथ्यादृष्टि से सम्यग्दृष्टि

११-तस्स ण भते! छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण

+ मूल पाठ में 'सवणयाए' शब्द है जिसका सीधा अथ होता है 'सुनना' कि तु यहाँ श्रवण का अथ श्रुतज्ञानरूप बोध (धम का बाध) लेना चाहिये।

उड्ढ वाहाओ पगिज्भिय पगिज्भिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए,पगइउवसतयाए, पगइपयणुकोह माण-माया-लोभयाए, मिउमद्दवसपण्णयाए अल्लीणयाए, भद्दयाए, विणीययाए, अण्णया कयावि सुभेण अज्भवमाणेण, सुभेण परिणा-मेण, लेस्साहिं विसुज्भमाणीहिं विसुज्भमाणीहिं तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेणं ईहा-ऽपोह-मग्गणगवेसणं करेमाणस्स विब्भगे णाम अण्णाणे समुप्पज्जइ, से ण तेण विब्भगणाणेण समुप्पण्णेण जहण्णेणं अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेणं असखेज्जाइ जोयण-सहस्साइ जाणइ पासइ, से णं तेण विब्भगणाणेण समुप्पण्णेणं जीवे वि जाणइ, अजीवे वि जाणइ, पासडत्थे, सारभे, सपरिग्गहे, सकिलिस्समाणे वि जाणइ, विसुज्भमाणे वि जाणइ, से णं पुव्वामेव सम्मत्त पडिवज्भइ, सम्मत्त पडिवज्जित्ता समणधम्म रोएइ, समणधम्म रोएत्ता चरित्त पडिवज्जइ, चरित्त पडिवज्जित्ता लिंग पडिवज्जइ, तस्स ण तेहिं मिच्छत्तपज्जवेहि परिहायमाणेहिं परिहायमाणेहि सम्मदसण-पज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं परिवड्ढमाणेहिं से विब्भगे अण्णाणे सम्मत्त-परिग्गहिए खिप्पामेव ओही परावत्तइ ।

कठिन शब्दार्थ—अणिक्खित्तण—निरतर, पगिज्भिय—रखकर,आयावणभूमीए—आतापना भूमि मे, पगइभद्दयाए—प्रकृति (स्वभाव) की भद्रता से, पगइउवसतयाए—स्वभाव से ही क्रोधादि कषायो की उपशानता से, पगइपयणुकोह—स्वभाव से ही पतले क्रोध मिउमद्दव सपण्णयाए-अत्यत मृदुता (नम्रता से युक्त होने से) अल्लीणयाए-प्रलीनता (गद्धि रहित)

होने से, भद्दयाए-भद्रता से, अण्णयाकयावि-अन्य किसी दिन, विसुज्झमाणीहिं-विशुद्धय-मान होने के कारण, ईहाऽपोहमग्गणगवेसण-ईहा अपोह, मागणा गवेपणा (विचार धारा मे सलग्न हो ऊहापोह मे बढते हुए), पासडत्थे-पाखड मे रहे, सारभे-आरभवाले, सकि-लिस्समाण-सक्लेश को प्राप्त हुए रोएइ-रुचि करते हैं, परिहायमाणेहिं-क्षीण होते हुए, परिवड्ढमाणेहिं-बढते हुए, खिप्पामेव-शीघ्र ही, परावत्तइ-परिवत्तन होता है ।

भावार्थ-११-निरन्तर छठ-छठ का (बेले, बेले) का तप करते हुए सूर्य के समुख ऊँचे हाथ करके, आतापना भूमि में आतापना लेते हुए, उस जीव के प्रकृति की भद्रता, प्रकृति की उपशान्तता, स्वभाव से ही क्रोध मान-माया-लोभ के अत्यन्त अल्प होनें, अत्यन्त मादव-नम्रता, अर्थात प्रकृति की कोमलता, कामभोगो में आसक्ति नहीं होने, भद्रता और विनीतता से, किसी दिन शुभ अध्यवसाय, शुभपरिणाम, विशुद्ध लेश्या एव तदावरणीय (विभगज्ञानावरणीय) कर्मों के क्षयोपशम से ईहा, अपोह, मार्गणा और गवेषणा करते हुए 'विभग' नामक अज्ञान उत्पन्न होता है । उस उत्पन्न हुए विभगज्ञान द्वारा वह जघन्य अगुल के असख्यातवे भाग और उत्कृष्ट असख्यात हजार योजन तक जानता और देखता है । उस उत्पन्न हुए विभगज्ञान द्वारा वह जीवो को भी जानता है और अजीवो को भी जानता है । वह पाखण्डो, आरम्भी, परिग्रही और सक्लेश को प्राप्त हुए जीवो को भी जानता है और विशुद्ध जीवो को भी जानता है । इसके बाद वह विभगज्ञानी, सर्व प्रथम सम्यक्त्व प्राप्त करता है । उसके बाद श्रमण-धर्म पर रुचि करता है, रुचि करके चारित्र अगीकार करता है । फिर लिंग (साधुवेश) स्वीकार करता है । तब उस विभगज्ञानी के मिथ्यात्व के पर्याय क्रमश क्षीण होते होते और सम्यग्दर्शन के पर्याय क्रमश बढते-बढते वह 'विभग' नामक अज्ञान, सम्यक्त्व युक्त होता है और शीघ्र ही अवधिरूप में परिवर्तित हो जाता है ।

विवेचन-मूल पाठ में-'छटठ छटठेण' कहा है । इसका अभिप्राय यह है कि प्राय बेले बले की तपस्या करने वाले बाल तपस्वी अज्ञानी जीवो को विभगज्ञान उत्पन्न होता है ।

यद्यपि यहां मूलपाठ में चारित्र प्राप्ति के बाद 'सम्मत्तपरिग्गहिए आदि पाठ आया है, तथापि उस पाठ का सम्बन्ध-'सम्मत्त पडिवज्जइ, सम्मत्त पडिवज्जित्ता' के साथ है ।

जिसका सीधा अर्थ यह होगा कि चारित्र प्राप्ति के पहले ही वह सम्यक्त्व प्राप्त करता है और सम्यक्त्व परिगृहीत होने पर उसका विभगज्ञान अवधिज्ञान रूप मे परिणत हो जाता है। फिर श्रमण धर्म पर रुचि करके चारित्र धर्म को अगीकार करता है। अगीकार करके लिंग स्वीकार करता है।

विद्यमान पदार्थों के प्रति ज्ञान चेष्टा को 'ईहा' कहते हैं। 'यह घट है, पट नही।' इस प्रकार विपक्ष के निराकरणपूर्वक वस्तु तत्त्व के विचार को 'अपोह' कहते हैं। अन्वय व्याप्तिपूर्वक पदार्थ के विचार को 'मार्गण' कहते हैं। व्यतिरेक व्याप्तिपूर्वक पदार्थ के विचार को 'गवेषण' कहते हैं। ईहा, अपोह, मार्गण और गवेषण करते हुए आतापनाभूमि मे आतापना लेते हुए, उस बाल तपस्वी को शुभ अध्यवसाय आदि कारणो से विभगज्ञानावरणीय कर्मों का क्षयोपशम होकर विभगज्ञान उत्पन्न होता है। इसके पश्चात परिणाम अध्यवसाय और लेश्या की विशुद्धि से सम्यक्त्व उत्पन्न होता है। सम्यक्त्व प्राप्ति के साथ ही वह विभगज्ञान अवधिज्ञान हो जाता है। इसके पश्चात वह चारित्र स्वीकार कर साधु वेष को अगीकार करता है।

असोच्चा-लेश्या ज्ञान योगादि

१२ प्रश्न-से णं भते ! कइसु लेस्सासु होज्जा ?

१२ उत्तर-गोयमा ! तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, त जहा-तेउलेस्साए, पम्हलेस्साए सुक्कलेस्साए।

१३ प्रश्न-से णं भते ! कइसु णाणेसु होज्जा ?

१३ उत्तर-गोयमा ! तिसु आभिणिबोहियणाण-सुयणाण-ओहिणाणेसु होज्जा।

१४ प्रश्न-से ण भते ! किं सजोगी होज्जा, अजोगी होज्जा ?

१४ उत्तर-गोयमा ! सजोगी होज्जा, णो अजोगी होज्जा।

१५ प्रश्न-जइ सजोगी होज्जा, किं मणजोगी होज्जा, वइ-जोगी होज्जा, कायजोगी होज्जा ?

१५ उत्तर-गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा ।

१६ प्रश्न-से णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा, अणागारो-वउत्ते वा होज्जा ?

१६ उत्तर-गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारो-वउत्ते वा होज्जा ।

कठिन शब्दार्थ-सागारोवउत्ते-साकार (ज्ञान) उपयोगवाला, अणागारोवउत्ते-अनाकार (दर्शन) उपयोगवाला ।

भावार्थ-१२ प्रश्न-हे भगवन् ! वह अवधिज्ञानी, कितनी लेश्याओं में होता है ?

१२ उत्तर-हे गौतम ! तीन विशुद्ध लेश्याओं में होता है । यथा-१ तेजोलेश्या, २ पद्मलेश्या और ३ शुक्ललेश्या ।

१३ प्रश्न-हे भगवन् ! वह अवधिज्ञानी, कितने ज्ञान में होता है ?

१३ उत्तर-हे गौतम ! १ आभिनिबोधिकज्ञान, २ श्रुतज्ञान और ३ अवधिज्ञान, इन तीन ज्ञानों में होता है ।

१४ प्रश्न-हे भगवन् ! वह अवधिज्ञानी, सयोगी होता है, या अयोगी ?

१४ उत्तर-हे गौतम ! वह सयोगी होता है, अयोगी नहीं होता ।

१५ प्रश्न-हे भगवन ! यदि वह सयोगी होता है, तो क्या मनयोगी होता है, वचनयोगी होता है, या काययोगी होता है ?

१५ उत्तर-हे गौतम ! वह मनयोगी होता है, वचनयोगी होता है और काययोगी भी होता है।

१६ प्रश्न-हे भगवन् ! वह साकार उपयोग वाला होता है, या अनाकार उपयोग वाला ?

१६ उत्तर-हे गौतम ! वह साकार (ज्ञान) उपयोगवाला भी होता है और अनाकार (दर्शन) उपयोग वाला भी होता है।

१७ प्रश्न-से णं भंते ! कयरम्मि संघयणे होज्जा ?

१७ उत्तर-गोयमा ! वइरोसहणारायसंघयणे होज्जा ।

१८ प्रश्न-से णं भंते ! कयरम्मि संठाणे होज्जा ?

१८ उत्तर-गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे होज्जा ।

१९ प्रश्न-से णं भंते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?

१९ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पंच-धणुसइए होज्जा ।

२० प्रश्न-से णं भंते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?

२० उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउए होज्जा ।

२१ प्रश्न-से णं भंते ! किं सवेदए होज्जा, अवेदए होज्जा ?

२१ उत्तर-गोयमा ! सवेदए होज्जा, णो अवेदए होज्जा ।

२२ प्रश्न-जइ सवेदए होज्जा किं इत्थिवेदए होज्जा, पुरिस-

वेदए होज्जा, पुरिस-णपुसगवेदए होज्जा, णपुसगवेदए होज्जा ?

२२ उत्तर-गोयमा ! णो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, णो णपुसगवेदए होज्जा, पुरिस-णपुसगवेदए वा होज्जा ।

२३ प्रश्न-से ण भते ! किं सकसाई होज्जा अकसाई होज्जा ?

२३ उत्तर-गोयमा ! सकसाई होज्जा, णो अकसाई होज्जा ।

२४ प्रश्न-जइ सकसाई होज्जा से णं भते ! कइसु कसाएसु होज्जा ?

२४ उत्तर-गोयमा ! चउसु सजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा ।

२५ प्रश्न-तस्स ण भते ! केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?

२५ उत्तर-गोयमा ! असखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ।

२६ प्रश्न-ते ण भते ! कि पसत्था, अप्पसत्था ?

२६ उत्तर-गोयमा ! पसत्था, णो अप्पसत्था ।

कठिन शब्दार्थ-कयरम्मि-किस, वइरोसहणारायसघयणे-वज्रऋषभनाराच सहनन, सठाणे-आकार मे, उच्चत्ते-उच्चत्व-ऊचाई, सत्तरयणीए-सात हाथ, पसत्था-प्रशस्त (अच्छे)।

भावार्थ-१७ प्रश्न-हे भगवन् ! वह किस सहनन में होता है ?

१७ उत्तर-हे गौतम ! वह वज्रऋषभनाराच सहनन वाला होता है।

१८ प्रश्न-हे भगवन् ! वह किस सस्थान में होता है ?

१८ उत्तर-हे गौतम ! वह छह सस्थानो में से किसी भी सस्थान में होता है।

१९ प्रश्न-हे भगवन् ! वह अवधिज्ञानी कितनी ऊँचाई वाला होता है ?

१९ उत्तर-हे गौतम ! वह जघन्य सात हाथ और उत्कृष्ट पाच सौ धनुष की ऊँचाई वाला होता है ।

२० प्रश्न-हे भगवन् ! वह कितनी आयुष्य वाला होता है ?

२० उत्तर-हे गौतम ! जघन्य साधिक आठ वर्ष और उत्कृष्ट पूर्व कोटि आयुष्य वाला होता है ।

२१ प्रश्न-हे भगवन् ! वह सवेदी होता है, या अवेदी ?

२१ उत्तर-हे गौतम ! वह सवेदी होता है, अवेदी नहीं होता ।

२२ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वह सवेदी होता है, तो क्या स्त्री-वेदी होता है, पुरुष-वेदी होता है, नपुसक-वेदी होता है, या पुरुषनपुसक-वेदी (कृत्रिम नपुसक) होता है ?

२२ उत्तर-हे गौतम ! स्त्रीवेदी नहीं होता, पुरुषवेदी होता है, नपुसक-वेदी नहीं होता, किन्तु पुरुषनपुसकवेदी होता है ।

२३ प्रश्न-हे भगवन् ! वह अवधिज्ञानी सकषायी होता है, या अकषायी ?

२३ उत्तर-हे गौतम ! वह सकषायी होता है, अकषायी नहीं होता ।

२४ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वह सकषायी होता है, तो वह कितने कषाय वाला होता है ?

२४ उत्तर-हे गौतम ! वह सज्वलन क्रोध, मान, माया और लोभ-इन चार कषायो वाला होता है ।

२५ प्रश्न-हे भगवन् ! उसके कितने अध्यवसाय होते है ?

२५ उत्तर-हे गौतम ! उसके असख्यात अध्यवसाय होते है ।

२६ प्रश्न-हे भगवन् ! वे अध्यवसाय प्रशस्त होते है, या अप्रशस्त ?

२६ उत्तर-हे गौतम ! प्रशस्त होते है, अप्रशस्त नही होते ।

२७-से णं भते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहिं

अणंतेहिं णेरइयभवग्गहणेहितो अप्पाणं विसजोएइ, अणंतेहिं तिरिक्खजोणिय-जाव विसजोएइ, अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसजोएइ,- अणतेहि देवभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसजोएइ, जाओ वि य से इमाओ णेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगइणामाओ चत्तारि उत्तरपयडीओ, तासिं च णं उवग्गहिए अणताणुबधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, अण० खवेइत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह माण माया लोभे खवेइ, अपच्च० खवेइत्ता पच्चक्खाणावरण कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, पच्च० खवेइत्ता सजलणकोह-माण-माया-लोभे खवेइ, सज० खवेइत्ता पचविह णाणावरणिज्ज, णवविह दरिसणावरणिज्ज, पचविह अतराइय, तालमत्थाकड च णं मोहणिज्ज कट्टु कम्मरयविकिरणकर अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाण-दसणे समुप्पण्णे ।

२८ प्रश्न–से णं भते ! केवलिपण्णत्त धम्म आघवेज्ज वा, पण्णवेज्ज वा, परूवेज्ज वा ?

२८ उत्तर–णो तिणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ एगण्णाएण वा, एगवागरणेण वा ।

२९ प्रश्न–से ण भते ! पव्वावेज्ज वा, मुडावेज्ज वा ?

२९ उत्तर–णो इणट्ठे समट्ठे, उवएस पुण करेज्जा ।

३० प्रश्न-से णं भंते ! सिज्झइ जाव अंत करेइ ?

३० उत्तर-हंता सिज्झइ, जाव अंत करेइ ।

कठिन शब्दार्थ-विमेजोएइ-विमुक्त करते हैं, उवग्गहिए-आधारभूत, तालमत्थाकड-तालवृक्ष के मस्तक के समान क्षीण करके, कम्मरयविकिरणकर-कर्मरूपी रज को झटककर, अपुव्वकरण-अपूर्वकरण मे, अणुपविट्ठस्स-प्रवेश करके, णिव्वाघाए-व्याघात रहित, णिरावरणे-आवरण रहित, कसिण-सम्पूर्ण पडिपुण्णे-प्रतिपूर्ण, समुप्पज्जे-उत्पन्न होता है, एगण्णाएण-एक उदाहरण एगवागरणेण-एक प्रश्न का उत्तर ।

भावार्थ-२७-वह अवधिज्ञानी, बढते हुए प्रशस्त अध्यवसायो से, अनन्त नैरयिक भवो से अपनी आत्मा को विमुक्त करता है, अनन्त तिर्यंच-भवो से अपनी आत्मा को विमुक्त करता है, अनन्त मनुष्य-भवो से अपनी आत्मा को विमुक्त करता है और अनन्त देव-भवो से अपनी आत्मा को विमुक्त करता है । जो ये नरक-गति, तिर्यंच गति, मनुष्य-गति और देव-गति नामक चार उत्तर प्रकृतियाँ है, उनके तथा दूसरी प्रकृतियो के आधारभूत अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया और लोभ का क्षय करता है, उनका क्षय करके अप्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया और लोभ का क्षय करता है, उनका क्षय करके प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया और लोभ का क्षय करता है, उनका क्षय करके सज्वलन क्रोध, मान, माया और लोभ का क्षय करता है । इसके बाद पांच प्रकार का ज्ञानावरणीय कर्म, नौ प्रकार का दर्शनावरणीय कर्म, पाँच प्रकार का अन्तराय कर्म तथा कटे हुए मस्तक वाले ताड-वृक्ष के समान मोहनीय कर्म को बनाकर, कर्म-रज को बिखेर देने वाले अपूर्वकरण में प्रवेश किये हुए उस जीव के अनन्त, अनुत्तर, व्याघात रहित, आवरण रहित, कृत्स्न (सपूर्ण) प्रतिपूर्ण एव श्रेष्ठ केवलज्ञान और केवल-दर्शन उत्पन्न होता है ।

२८ प्रश्न-हे भगवन् ! वे असोच्चाकेवली, केवलिप्ररूपित धर्म कहते है, बतलाते है और प्ररूपणा करते है ?

२८ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं । वे एक ज्ञात (उदाहरण)

और एक प्रश्न के उत्तर के सिवाय धर्म का उपदेश नहीं करते ।

२९ प्रश्न–हे भगवन् ! वे असोच्चाकेवली किसी को प्रव्रजित करते हैं, मुण्डित करते हैं ?

२९ उत्तर–हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं, किन्तु (अमुक के पास तुम प्रव्रज्या ग्रहण करो -) ऐसा उपदेश करते (कहते) हैं ।

३० प्रश्न–हे भगवन् ! वे असोच्चाकेवली सिद्ध होते हैं यावत् समस्त दुःखों का अन्त करते हैं ?

३० उत्तर–हाँ, गौतम ! वे सिद्ध होते हैं, यावत् समस्त दुःखों का अंत करते हैं ।

३१ प्रश्न–से णं भंते ! किं उड्ढं होज्जा, अहे होज्जा, तिरियं होज्जा ?

३१ उत्तर–गोयमा ! उड्ढं वा होज्जा, अहे वा होज्जा, तिरियं वा होज्जा, उड्ढं होज्जमाणे सद्दावइ-वियडावइ-गंधावइ-मालवंत-परियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वएसु होज्जा, साहरणं पडुच्च सोमणसवणे वा होज्जा, पंडगवणे वा होज्जा, अहे होज्जमाणे गड्डाए वा, दरीए वा होज्जा, साहरणं पडुच्च पायाले वा, भवणे वा होज्जा, तिरियं होज्जमाणे पण्णरससु कम्मभूमीसु होज्जा, साहरणं पडुच्च अड्ढा-इज्जदीव-समुद्द तदेक्कदेसभाए होज्जा ।

३२ प्रश्न– ते णं एगसमए णं केवइया होज्जा ?

३२ उत्तर–गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा,

उक्कोसेणं दस, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-'असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगइए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, अत्थेगइए असोच्चा णं केवलि० जाव णो लभेज्जा सवणयाए, जाव अत्थेगइए केवलणाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए केवलणाणं णो उप्पाडेज्जा' ।

कठिन शब्दार्थ-अहे-नीचे, पायाले-पाताल मे ।

भावार्थ-३१ प्रश्न-हे भगवन् ! वे असोच्चाकेवली क्या ऊर्ध्वलोक में होते है, अधोलोक में होते है, या तिर्यग् लोक में होते है ?

३१ उत्तर-हे गौतम ! ऊर्ध्व-लोक में भी होते है, अधोलोक में भी होते है और तिर्यग्-लोक में भी होते है । यदि ऊर्ध्व-लोक में होते है, तो शब्दापाती, विकटापाती, गन्धापाती और माल्यवन्त नामक वृत्त (वैताढ्य) पर्वतो में होते है । तथा सहरण की अपेक्षा सौमनस वन में अथवा पाण्डुक वन में होते है । यदि अधोलोक में होते है, तो गर्त्ता (अधोलोक ग्रामादि) में अथवा गुफा में होते है । तथा सहरण की अपेक्षा पाताल-कलशो में अथवा भवनवासी देवो के भवनो में होते है । यदि तिर्यग-लोक में होते है, तो पन्द्रह कर्मभूमि में होते है । तथा सहरण की अपेक्षा ढाई द्वीप और समुद्रो के एक भाग में होते है ।

३२ प्रश्न-हे भगवन् ! वे असोच्चा केवली, एक समय में कितने होते है ?

३२ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ट दस होते है । इसलिये हे गौतम ! मैं ऐसा कहता हू कि केवली यावत् केवलिपाक्षिक की उपासिका के पास, केवली प्ररूपित धर्म सुने बिना ही किसी जीव को केवलि प्ररूपित धर्म का बोध होता है और किसी को नहीं होता, यावत् कोई जीव केवलज्ञान उत्पन्न कर लेता है और कोई उत्पन्न नहीं करता ।

विवेचन-उपर्युक्त अवधिज्ञानी के विषय मे जो कहा गया है वह सब उस अवधिज्ञानी के लिये समझना चाहिये, जो विभगज्ञानी से अवधिज्ञानी बना है । वह प्रशस्त भाव-

लेश्याओ मे ही होता है, अप्रशस्त भाव लेश्याओ मे नही । सम्यक्त्व प्राप्त ह ते ही उसका मति अज्ञान श्रुतअज्ञान और विभगज्ञान-ये तीनो अज्ञान, ज्ञानरूप में परिणत हा जाते हैं। अवधिज्ञानी के लिये जा वज्रऋषभनाराच सहनन का कथन किया गया है वह आगे प्राप्त होनेवाले केवलज्ञान की अपेक्षा समझना चाहिये। क्योकि केवलज्ञान की प्राप्ति वज्रऋषभ नाराच सहनन वाला को ही हाती है। अवधिज्ञानी दशा मे वह सवेदी होता है। सवदी मे भी पुरुषवेदी और पुरुष नपुसक वेदी होता है। वह सज्वलन कषायवाला होता है। इसके पश्चात् भावो की विशुद्धता से नरकादि चारो गतियो के कारणभूत कषाय का क्षय करता है। पश्च त जिस प्रकार तालवक्ष की मस्तक शूचि के भिन्न हाने पर, तालवक्ष नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार मोहनाय कम का क्षय करता है। जैसा कि कहा है-

मस्तकसूचिविनाश तालस्य यथा ध्रुवो भवति नाश ।
तदवतकमविनाशोऽपि मोहनीयक्षये नित्यम ॥

अथ-जिस प्रकार तालवक्ष की मस्तकशूचि का विनाश होने पर तालवृक्ष का नाश हो जाता है उसी प्रकार मोहनीय कम का क्षय होने पर शेष कर्मो का भी नाश हो जाता है। अत मोहनीय कम की शप प्रकृतियो का क्षय करके ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय-इन तीनो कर्मों की सभी प्रकृतियो का क्षय कर देता है। इनका क्षय होते ही केवलज्ञान, केवलदशन उत्पन्न हो जाते हैं। केवलज्ञान के लिय शास्त्रकार ने विशेषण दिये हैं। यथा-अनन्त-विषय की अनन्तता के कारण केवलज्ञान अनन्त है। वह अनुत्तर है अर्थात केवलज्ञान से बढकर दूसरा कोई ज्ञान नही है, अर्थात वह सर्वोत्तम ज्ञान है। फिर वह निर्व्याघात होता है अर्थात भीत आदि के द्वारा वह प्रतिहत (स्खलित) नही होता। वह सम्पूण आवरणो के क्षय हो जाने से 'निरावरण' होता है। सकल पदार्थों का ग्राहक होने से 'कृत्स्न' होता है। अपन सम्पूण अशो से युक्त उत्पन्न होने से प्रतिपूर्ण' होता है। इसी तरह केवल दशन के लिय भी ये हो विशपण समझ लेने चाहिये।

वे असोच्चा केवली किसी के द्वारा प्रश्न पूछने पर उत्तर देते हैं तथा एक उदाहरण देते हैं। इसके अतिरिक्त वे किसी प्रकार का उपदेशादि नहीं देते। किसी का अपना शिष्य नहीं बनाते किन्तु किसी दीक्षार्थी के उपस्थित हाने पर व केवल इतना कहते हैं कि 'अमुक के पास दीक्षा लो।'

इस प्रकार के असोच्चा केवली ऊर्ध्वलाक, अधोलोक और तिरछा लोक-इन तीनो लोको मे होते हैं। सहरण आदि का कथन मूल पाठ मे ही कर दिया गया है।

सोच्चा केवली

३३ प्रश्न-सोच्चा ण भंते ! केवलिस्स वा, जाव तप्पक्खिय-उवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्जा सवणयाए ?

३३ उत्तर-गोयमा ! सोच्चा णं केवलिस्स वा, जाव अत्थेगइए केवलिपण्णत्त धम्म, एव जा चेव असोच्चाए, वत्तव्वया सा चेव सोच्चाए वि भाणियव्वा, णवर अभिलावो 'सोच्चे' त्ति, सेस त चेव णिरवसेस, जाव जस्स णं मणपज्जवणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स णं केवलणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ से णं सोच्चा केवलिस्स वा, जाव उवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्जा सवणयाए, केवल बोहिं बुज्झेज्जा, जाव केवलणाण उप्पाडेज्जा ।

कठिन शब्दार्थ-सोच्चाण-सुनकर, सवणयाए-श्रुतज्ञानरूप बोध।

भावार्थ-३३ प्रश्न-हे भगवन् ! केवली यावत् केवलिपाक्षिक की उपासिका के पास धर्म-प्रतिपादक वचन सुनकर कोई जीव, केवलिप्ररूपित धर्म का बोध प्राप्त कर सकता है ?

३३ उत्तर-हे गौतम ! केवली यावत् केवलिपाक्षिक की उपासिका में से किसी के पास धर्मप्रतिपादक वचन सुनकर कोई जीव केवलिप्ररूपित धर्म का बोध प्राप्त करता है और कोई नहीं करता। इस विषय में जिस प्रकार 'असोच्चा' की वक्तव्यता कही, उसी प्रकार 'सोच्चा' की भी कहनी चाहिये, परन्तु यहां 'सोच्चा' ऐसा पाठ कहना चाहिये। शेष सभी पूर्वोक्त वक्तव्यता

कहनी चाहिये । यावत् जिस जीव के मन पर्यय ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम हुआ है और जिस जीव ने केवलज्ञानावरणीय कर्म का क्षय किया है, उस जीव को केवली आदि के पास से सुनकर केवलिप्ररूपित धर्म का बोध होता है, शुद्ध सम्यक्त्व का बोध होता है यावत केवलज्ञान की प्राप्ति होती है ।

३४-तस्स णं अट्ठमअट्ठमेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं अप्पाण भावेमाणस्स पगइभद्दयाए, तहेव जाव गवेसणं करेमाणस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ, से णं तेण ओहिणाणेण समुप्पण्णेण जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण असखेज्जाइ अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइ खडाइ जाणइ पासइ ।

३५ प्रश्न-से ण भते ! कइसु लेस्सासु होज्जा ?

३५ उत्तर-गोयमा ! छसु लेसासु होज्जा, त जहा-कण्हलेस्साए, जाव सुक्कलेस्साए ।

३६ प्रश्न-से ण भते ! कइसु णाणेसु होज्जा ?

३६ उत्तर-गोयमा ! तिसु वा, चउसु वा होज्जा, तिसु होज्जमाणे तिसु आभिणिवोहियणाण-सुयणाण-ओहिणाणेसु होज्जा, चउसु होज्जमाणे आभिणिवोहियणाण सुयणाण-ओहिणाण-मणपज्जवणाणेसु होज्जा ।

कठिन शब्दार्थ-अट्ठमअट्ठमेण-अष्टम अष्टम (तेले तेले की तपस्या), अणिक्खित्तेण-निरन्तर, अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइ-अलोक मे लोक प्रमाण ।

भावार्थ-३४ केवली आदि के पास से धर्मप्रतिपादक वचन सुनकर

सम्यग्दर्शनादि प्राप्त जीव को निरन्तर तेले-तेले की तपस्या द्वारा आत्मा को भावित करते हुए, प्रकृति की भद्रता आदि गुणो से यावत् ईहा, अपोह, मार्गण गवेषण करते हुए अवधिज्ञान उत्पन्न होता है। उस उत्पन्न हुए अवधिज्ञान के द्वारा वह जघन्य अगुल के असख्यातवे भाग और उत्कृष्ट अलोक में लोक प्रमाण असख्य खण्डो को जानता और देखता है।

३५ प्रश्न-हे भगवन् ! वह अवधिज्ञानी जीव, कितनी लेश्याओ में होता है ?

३५ उत्तर-हे गौतम ! वह छहो लेश्याओ में होता है। यथा-कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या।

३६ प्रश्न-हे भगवन् ! वह अवधिज्ञानी कितने ज्ञान में होता है ?

३६ उत्तर-हे गौतम ! वह तीन ज्ञान अथवा चार ज्ञान में होता है। यदि तीन ज्ञान में होता है, तो आभिनिवोधिक ज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान में होता है, यदि चार ज्ञान में होता है, तो आभिनिवोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मन पर्ययज्ञान में होता है।

३७ प्रश्न-से णं भते ! कि सजोगी होज्जा, अजोगी होज्जा ?

३७ उत्तर-एव जोगो, उवओगो, सघयणं, सठाणं, उच्चत्त, आउय च एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि।

३८ प्रश्न-से ण भते ! किं सवेदए-पुच्छा ?

३८ उत्तर-गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा।

३९ प्रश्न-जइ अवेदए होज्जा किं उवसतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा ?

३९ उत्तर-गोयमा ! णो उवसतवेदए होज्जा, खीणवेदए

होज्जा ।

४० प्रश्न-जइ सवेदए होज्जा किं इत्थीवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, णपुसगवेदए होज्जा, पुरिस-णपुसगवेदए होज्जा-पुच्छा ?

४० उत्तर-गोयमा ! इत्थीवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिस-णपुसगवेदए वा होज्जा ।

४१ प्रश्न-से णं भंते ! किं सकसाई होज्जा, अकसाई होज्जा ?

४१ उत्तर-गोयमा ! सकसाई वा होज्जा, अकसाई वा होज्जा ।

४२ प्रश्न-जइ अकसाई होज्जा किं उवसतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा ?

४२ उत्तर-गोयमा ! णो उवसतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा ।

४३ प्रश्न-जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कइसु कसाएसु होज्जा ?

४३ उत्तर-गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एक्कम्मि वा होज्जा । चउसु होज्जमाणे चउसु सजलणकोह-माण-माया लोभेसु होज्जा, तिसु होज्जमाणे तिसु-सजलणमाण-माया-लोभेसु होज्जा, दोसु होज्जमाणे दोसु सजलणमाया-लोभेसु होज्जा, एगम्मि होज्जमाणे एगम्मि सजलणलोभे होज्जा ।

भावार्थ-३७ प्रश्न-हे भगवन् ! वह अवधिज्ञानी सयोगी होता है, या

अयोगी होता है ?

३७ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार 'असोच्चा' के विषय में कहा, उसी प्रकार यहां भी योग, उपयोग, सहनन, सस्थान, ऊँचाई और आयुष्य, इन सभी के विषय में कहना चाहिये ।

३८ प्रश्न-हे भगवन् ! वह अवधिज्ञानी सवेदी होता है, या अवेदी ?

३८ उत्तर-हे गौतम ! वह अवधिज्ञानी सवेदी होता है अथवा अवेदी होता है ।

३९ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वह अवेदी होता है, तो क्या उपशान्त वेदी होता है, या क्षीण वेदी होता है ?

३९ उत्तर-हे गौतम ! वह उपशान्त वेदी नहीं होता, किन्तु क्षीण वेदी होता है ।

४० प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वह सवेदी होता है, तो क्या स्त्री-वेदी होता है, पुरुष-वेदी होता है, नपुसक-वेदी होता है, या पुरुषनपुसक-वेदी होता है ?

४० उत्तर-हे गौतम ! वह स्त्री वेदी होता है अथवा पुरुष-वेदी होता है अथवा पुरुषनपुसक-वेदी होता है ।

४१ प्रश्न-हे भगवन् ! वह अवधिज्ञानी सकषायी होता है, या अकषायी ?

४१ उत्तर-हे गौतम ! वह सकषायी होता है अथवा अकषायी होता है ।

४२ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वह अकषायी होता है, तो क्या उपशान्त कषायी होता है, या क्षीण कषायी ?

४२ उत्तर-हे गौतम ! वह उपशान्त कषायी नहीं होता, किन्तु क्षीण-कषायी होता है ।

४३ प्रश्न-हे भगवन ! यदि वह सकषायी होता है, तो कितने कषायो में होता है ?

४३ उत्तर–हे गौतम ! वह चार कषाय में, तीन कषाय में, दो कषा में, या एक कषाय में होता है। यदि चार कषायो में होता है, तो सज्वलन-क्रो मान, माया और लोभ में होता है । यदि तीन कषायो में होता है, तो सज्वल मान, माया और लोभ में होता है । यदि दो कषायो में होता है, तो सज्वल माया और लोभ में होता है। यदि एक कषाय में होता है, तो एक सज्वल लोभ में होता है ।

४४ प्रश्न–तस्स णं भते ! केवइया अज्झवमाणा पण्णत्ता ?

४४ उत्तर–गोयमा ! असखेज्जा, एव जहा असोच्चाए तहे जाव केवलवरणाण-दसणे समुप्पज्जइ ।

४५ प्रश्न–से ण भते ! केवलिपण्णत्त धम्म आघवेज्ज व पण्णवेज्ज वा, परूवेज्ज वा ?

४५ उत्तर–हता, आघवेज्ज वा, पण्णवेज्ज वा, परूवेज्ज वा

४६ प्रश्न–से ण भते ! पव्वावेज्ज वा, मुडावेज्ज वा ?

४६ उत्तर–हता, गोयमा ! पव्वावेज्ज वा, मुडावेज्जा वा ।

४७ प्रश्न–तस्स ण भते ! सिस्सा वि पव्वावेज्ज वा, मुडा वेज्ज वा ?

४७ उत्तर–हता, पव्वावेज्ज वा, मुडावेज्ज वा ।

४८ प्रश्न–तस्स ण भते ! पसिस्सा वि पव्वावेज्ज वा, मुडा वेज्ज वा ?

४८ उत्तर-हता, पव्वावेज्ज वा, मुडावेज्ज वा ।

४९ प्रश्न-से णं भते ! सिज्झइ वुज्झइ जाव अत करेइ ?

४९ उत्तर-हता, सिज्झइ जाव अत करेइ ।

५० प्रश्न-तस्स णं भते ! सिस्सा वि सिज्झति जाव अत करेंति ?

५० उत्तर-हता, सिज्झति जाव अत करेंति ।

५१ प्रश्न-तस्स णं भते ! पसिस्सा वि सिज्झति जाव अत करेंति ?

५१ उत्तर-एव चेव जाव अत करेंति ।

५२ प्रश्न-से ण भते ! कि उड्ढ होज्जा ?

५२ उत्तर-जहेव असोच्चाए जाव तदेक्कदेसभाए होज्जा ।

५३ प्रश्न-ते णं भते ! एगसमए णं केवइया होज्जा ?

५३ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं अट्ठसय, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ-'सोच्चा णं केवलिस्स वा, जाव केवलिउवासियाए वा, जाव अत्थेगइए केवलणाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए केवलणाणं णो उप्पाडेज्जा' ।

॥ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

॥ णवमसए एगतीसइमो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-सिस्सा-शिष्य, पसिस्सा-प्रशिष्य (शिष्यों के शिष्य), अट्ठसय-एक सौ आठ।

भावार्थ-४४ प्रश्न-हे भगवन् ! उस अवधिज्ञानी के कितने अध्यवसाय होते हैं ?

४४ उत्तर-हे गौतम ! उसके असंख्यात अध्यवसाय होते हैं। 'असोच्चा केवली' में कहे अनुसार यावत् 'उसे केवलज्ञान केवलदर्शन उत्पन्न होता है'। वहाँ तक कहना चाहिये।

४५ प्रश्न-हे भगवन् ! वे 'सोच्चा केवली' केवली-प्ररूपित धर्म कहते हैं, जतलाते हैं, प्ररूपित करते हैं ?

४५ उत्तर-हाँ, गौतम ! वे केवलीप्ररूपित धर्म कहते हैं, जतलाते हैं और प्ररूपित करते हैं।

४६ प्रश्न-हे भगवन् ! वे किसी को प्रव्रजित करते हैं, मुण्डित करते हैं ?

४६ उत्तर-हाँ, गौतम ! वे प्रव्रजित करते हैं, मुण्डित करते हैं।

४७ प्रश्न-हे भगवन् ! उन सोच्चा केवली के शिष्य भी किसी को प्रव्रजित करते हैं, मुण्डित करते हैं ?

४७ उत्तर-हाँ, गौतम ! उनके शिष्य भी प्रव्रजित करते हैं, मुण्डित करते हैं।

४८ प्रश्न-हे भगवन् ! उन सोच्चा केवली के प्रशिष्य भी प्रव्रजित करते हैं, मुण्डित करते हैं ?

४८ उत्तर-हाँ, गौतम ! उनके प्रशिष्य भी प्रव्रजित करते हैं, मुण्डित करते हैं।

४९ प्रश्न-हे भगवन् ! वे सोच्चा केवली सिद्ध होते हैं, बुद्ध होते हैं, यावत् समस्त दुःखों का अन्त करते हैं ?

४९ उत्तर-हाँ, गौतम ! वे सिद्ध होते हैं, बुद्ध होते हैं यावत् समस्त दुःखों का अन्त करते हैं।

५० प्रश्न-हे भगवन् ! उनके शिष्य भी सिद्ध होते है, यावत् सभी दु खो का अन्त करते है ?

५० उत्तर-हां, गौतम ! सिद्ध होते है, यावत् समस्त दु खो का अन्त करते है।

५१ प्रश्न-हे भगवन् ! उनके प्रशिष्य भी सिद्ध होते है, यावत् समस्त दु खो का अन्त करते है ?

५१ उत्तर-हां, गौतम ! सिद्ध होते है, यावत् समस्त दु खो का अन्त करते है।

५२ प्रश्न-हे भगवन् ! वे 'सोच्चा कवली' ऊर्ध्वलोक में होते है-इत्यादि प्रश्न ?

५२ उत्तर-हे गौतम ! 'असोच्चा' केवली के विषय में कहे अनुसार जानना चाहिये यावत् 'वे ढाई द्वीप समुद्र के एक भाग में होते है'-वहां तक कहना चाहिये।

५३ प्रश्न-हे भगवन् ! वे सोच्चा केवली एक समय में कितने होते है ?

५३ उत्तर-हे गौतम ! वे एक समय में जघन्य एक, दो, या तीन होते है और उत्कृष्ट एक सौ आठ होते है। इसलिये हे गौतम ! ऐसा कहा गया है कि 'केवली यावत् केवलिपाक्षिक की उपासिका से धर्म प्रतिपादक वचन सुनकर यावत् कोई जीव केवलज्ञान, केवलदर्शन उत्पन्न करता है और कोई उत्पन्न नहीं करता।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है-ऐसा कहकर गौतमस्वामी यावत् विचरते है।

विवेचन-जिस प्रकार केवली आदि के पास धर्म सुने बिना ही जीव को सम्यग बोध से लेकर यावत केवलज्ञान होता है, उसी प्रकार धर्म का श्रवण करने वाले जीव को भी सम्यग्-बोध से लेकर यावत केवलज्ञान उत्पन्न होता है। यही बात उपर्युक्त सभी प्रकरण में बतलाई गई है।

बेले बेले की विकट तपस्या करने वाले साधु का अवधिज्ञान उत्पन्न होता है और

वह इतना विस्तृत हो सकता है कि अलोक मे भी लोक प्रमाण असख्यात खण्ड जानने की उसकी शक्ति होती है किन्तु वहाँ ज्ञेय पदार्थ न होने से वह जानता देखता नही ।

सवेदी को अवधिज्ञान होता है, तो वह पुरुषवेदी, स्त्रीवेदी, पुरुष नपुसकवेदी को होता है और अवेदी को होता है तो क्षीणवेदी को होता है, किन्तु उपशान्तवेदी को नही होता, क्योंकि आगे इसी अवधिज्ञानी के केवलज्ञान उत्पत्ति का कथन विवक्षित है ।

सकषायी अकषायी के विषय मे भी उपरोक्त प्रकार से स्वय घटित कर लेना चाहिये ।

॥ इति नौवें शतक का इकत्तीसवा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ९ उद्देशक ३२

गांगेय प्रश्न—सान्तर निरन्तर उत्पत्ति आदि

१—तेण कालेणं तेणं समएण वाणियग्गामे णाम णयरे होत्था । वण्णओ । दूइपलासए चेइए । सामी समोसढे । परिसा णिग्गया । धम्मो कहिओ । परिसा पडिगया । तेण कालेण तेण समएण पासावच्चिज्जे गंगेए णाम अणगारे जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते ठिच्चा समण भगव महावीर एव वयासी—

२ प्रश्न—सतर भते ! णेरइया उववज्जति, णिरतर णेरइया

उववज्जंति ?

२ उत्तर-गंगेया ! संतरं पि णेरइया उववज्जंति णिरंतरं पि णेरइया उववज्जंति ।

३ प्रश्न-संतरं भंते ! असुरकुमारा उववज्जंति, णिरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति ?

३ उत्तर-गंगेया ! संतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति, णिरंतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति, एवं जाव थणियकुमारा ।

कठिन शब्दार्थ-पासावच्चिज्जे-पार्श्वापत्य-भगवान् पार्श्वनाथ के संतानिये (शिष्यानुशिष्य), अदूरसामंते-थोडी दूर (अति दूर व अति निकट नहीं), ठिच्चा-खडे रहकर, संतरं-अन्तर सहित ।

भावार्थ-१ उस काल उस समय में वाणिज्य-ग्राम नामक नगर था (वर्णन) वहां दयुतिपलाश नामक चैत्य (उद्यान) था । वहां श्रमण भगवान् महावीर स्वामी पधारे । परिषद् वन्दन के लिये निकली । भगवान् ने धर्मोपदेश दिया । परिषद् वापिस चली गई । उसकाल उस समय में पुरुषादानीय भगवान् पार्श्वनाथ के शिष्यानुशिष्य गांगेय नामक अनगार थे । वे जहां श्रमण भगवान् महावीर स्वामी थे, वहां आये और श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के न अति समीप न अति दूर खडे रहकर श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से इस प्रकार पूछा-

२ प्रश्न-हे भगवन् ! क्या नैरयिक सान्तर (अन्तर सहित) उत्पन्न होते है, या निरन्तर उत्पन्न होते है ?

२ उत्तर-हे गांगेय ! नैरयिक, सान्तर भी उत्पन्न होते है और निरन्तर भी ।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! असुरकुमार सान्तर उत्पन्न होते हैं, या निरन्तर ?

३ उत्तर-हे गांगेय ! वे सान्तर भी उत्पन्न होते हैं और निरन्तर भी । इस प्रकार यावत् स्तनितकुमार तक जानना चाहिये ।

४ प्रश्न–संतरं भंते ! पुढविक्काइया उववज्जंति, णिरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति ?

४ उत्तर–गंगेया ! णो संतरं पुढविक्काइया उववज्जंति, णिरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति; एवं जाव वणस्सइकाइया, वेइंदिया जाव वेमाणिया एए जहा णेरइया।

५ प्रश्न–संतरं भंते ! णेरइया उव्वट्टंति, णिरंतरं णेरइया उव्वट्टंति ?

५ उत्तर–गंगेया ! संतरं पि णेरइया उव्वट्टंति, णिरंतरं पि णेरइया उव्वट्टंति, एवं जाव थणियकुमारा ।

६ प्रश्न–संतरं भंते ! पुढविक्काइया उव्वट्टंति–पुच्छा ।

६ उत्तर–गंगेया ! णो संतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति, णिरंतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति, एवं जाव वणस्सइकाइया णो संतरं, णिरंतरं उव्वट्टंति ।

७ प्रश्न–संतरं भंते ! वेइंदिया उव्वट्टंति, णिरंतरं वेइंदिया उव्वट्टंति ?

७ उत्तर–गंगेया ! संतरं पि वेइंदिया उव्वट्टंति, णिरंतरं पि वेइंदिया उव्वट्टंति, एवं जाव वाणमंतरा ।

८ प्रश्न–संतरं भंते ! जोइसिया चयंति–पुच्छा ।

८ उत्तर—गंगेया ! संतरं पि जोइसिया चयंति, णिरंतरं पि जोइसिया चयंति, एवं जाव वेमाणिया वि ।

कठिन शब्दार्थ—उव्वट्टंति—निकलते ।

भावार्थ—४ प्रश्न—हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव, सान्तर उत्पन्न होते हैं, या निरन्तर ?

४ उत्तर—हे गांगेय ! पृथ्वीकायिक जीव, सान्तर उत्पन्न नहीं होते, निरन्तर उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक जीवों तक जानना चाहिये । बेइन्द्रिय जीवों से लेकर यावत् वैमानिक देवों तक, नैरयिकों के समान जानना चाहिये ।

५ प्रश्न—हे भगवन् ! नैरयिक जीव, सान्तर उद्वर्तते (मरते) हैं, या निरन्तर ?

५ उत्तर—हे गांगेय ! नैरयिक जीव, सान्तर भी उद्वर्तते हैं और निरन्तर भी । इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमारों तक जानना चाहिये ।

६ प्रश्न—हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव, सान्तर उद्वर्तते हैं, या निरन्तर ?

६ उत्तर—हे गांगेय ! पृथ्वीकायिक जीव, सान्तर नहीं उद्वर्तते, किन्तु निरन्तर उद्वर्तते हैं । इसी प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक जीवों तक जानना चाहिये—ये सान्तर नहीं, निरन्तर उद्वर्तते हैं ।

७ प्रश्न—हे भगवन् ! बेइन्द्रिय जीव, सान्तर उद्वर्तते हैं, या निरन्तर ?

७ उत्तर—हे गांगेय ! बेइन्द्रिय जीव, सान्तर भी उद्वर्तते हैं और निरन्तर भी । इसी प्रकार यावत् वाणव्यन्तर तक जानना चाहिये ।

८ प्रश्न—हे भगवन् ! ज्योतिषी देव, सान्तर चवते हैं, या निरन्तर ?

८ उत्तर—हे गांगेय ! ज्योतिषी देव, सान्तर भी चवते हैं और निरन्तर भी । इसी प्रकार यावत् वैमानिक तक जानना चाहिये ।

विवेचन—जीवों की उत्पत्ति आदि में समयादि काल का जो अन्तर (व्यवधान) होता है वह 'सान्तर' कहलाता है । एकेन्द्रिय जीव प्रति समय उत्पन्न होते हैं और मरते

हैं। इसलिये उनकी उत्पत्ति और उद्वर्तन सांतर नहीं, निरंतर होता है। एकेन्द्रियों के सिवाय शेष सभी जीवों की उत्पत्ति और मरण में अन्तर संभव है, इसलिये वे सांतर और निरन्तर दोनों प्रकार से उत्पन्न होते हैं और मरते हैं।

गांगेय प्रश्न-प्रवेशनक

९ प्रश्न-कइविहे णं भंते ! पवेसणए पण्णत्ते ?

९ उत्तर-गंगेया ! चउव्विहे पवेसणए पण्णत्ते, तं जहा-णेरइय-पवेसणए, तिरिक्खजोणियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए, देवपवेसणए।

१० प्रश्न-णेरइयपवेसणए णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

१० उत्तर-गंगेया ! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा-रयणप्पभा-पुढविणेरइयपवेसणए, जाव अहेसत्तमापुढविणेरइयपवेसणए।

११ प्रश्न-एगे णं भंते ! णेरइए णेरइयपवेसणएणं पविसमाणे किं रयणप्पभाए होज्जा, सक्करप्पभाए होज्जा, जाव अहे सत्तमाए होज्जा ?

११ उत्तर-गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्त-माए वा होज्जा।

कठिन शब्दार्थ-पवेसणए-प्रवेशनक (एक गति से दूसरी गति में प्रवेश करना-जाना)।

भावार्थ-९ प्रश्न-हे भगवन् ! प्रवेशनक (उत्पाद-उत्पत्ति) कितने प्रकार का कहा गया है ?

९ उत्तर-हे गांगेय ! प्रवेशनक चार प्रकार का कहा गया है। यथा-

रयिक प्रवेशनक, तिर्यञ्चयोनिक प्रवेशनक, मनुष्य प्रवेशनक और देव प्रवेशनक।

१० प्रश्न—हे भगवन् ! नैरयिक प्रवेशनक कितने प्रकार का कहा गया है ?

१० उत्तर—हे गांगेय ! सात प्रकार का कहा गया है। यथा—रत्नप्रभा-पृथ्वी नैरयिक प्रवेशनक यावत् अध सप्तम पृथ्वी नैरयिक प्रवेशनक।

११ प्रश्न—हे भगवन् ! एक नैरयिक जीव, नैरयिक प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करता हुआ क्या रत्नप्रभा पृथ्वी में होता है, या शर्कराप्रभा पृथ्वी अथवा यावत् अध सप्तम पृथ्वी में होता है ?

११ उत्तर—हे गांगेय ! वह रत्नप्रभा पृथ्वी में होता है, या यावत् अध-सप्तम पृथ्वी में होता है।

विवेचन—एक गति से मरकर दूसरी गति मे उत्पन्न होना—'प्रवेशनक' कहलाता है। एक नैरयिक जीव रत्नप्रभा आदि नरकों में उत्पन्न हो, तो उसके सात विकल्प होते हैं। यथा—(१) या तो वह रत्नप्रभा पृथ्वी मे उत्पन्न होता है, (२) या शर्कराप्रभा में। इसी प्रकार आगे एक एक पृथ्वी मे यावत् अथवा अध सप्तम पृथ्वी मे उत्पन्न होता है। इस प्रकार सात विकल्प होते हैं और ये सात ही भग होते हैं। उत्कृष्ट प्रवेशनक को छोडकर सभी नरक स्थान मे असयोगी सात विकल्प हैं, इसलिए सात ही भग होते हैं।

२

१२ प्रश्न—दो भंते ! णेरइया णेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा, जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?

१२ उत्तर—गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्त-माए वा होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे

अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एव जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, तहा सव्वपुढवीणं भाणियव्व, जाव अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे

सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा; अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

भावार्थ-१३ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए तीन नैरयिक क्या रत्नप्रभा में उत्पन्न होते हैं, अथवा यावत् अध सप्तम पृथ्वी में उत्पन्न होते हैं ?

१३ उत्तर-हे गांगेय ! वे तीन नैरयिक रत्नप्रभा में उत्पन्न होते हैं अथवा यावत् अध सप्तम पृथ्वी में उत्पन्न होते हैं। अथवा एक रत्नप्रभा में दो

अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एव जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, तहा सव्वपुढवीणं भाणियव्व, जाव अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे

भाए होज्जा, एवं जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे अहेसत्त-माए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एव जहेव रयणप्पभाए उवरिमाहिं सम चारिय तहा सक्क-रप्पभाए वि उवरिमाहिं समं चारेयव्व, एव एक्केक्काए सम चारेयव्व, जाव अहवा तिण्णि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ६३।

कठिन शब्दार्थ-पविसमाणा-प्रवेश करते हुए।

भावार्थ-१४ प्रश्न-हे भगवन्! नैरयिक प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए चार नैरयिक जीव रत्नप्रभा में उत्पन्न होते है, इत्यादि प्रश्न।

१४ उत्तर-हे गागेय! वे चार जीव, रत्नप्रभा में होते है, अथवा यावत् अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। (इस प्रकार असयोगी सात विकल्प और सात ही भग होते हैं।)

(द्विक सयोगी त्रेसठ भग)-अथवा एक रत्नप्रभा में और तीन शर्कराप्रभा में होते हैं। अथवा एक रत्नप्रभा में और तीन वालुकाप्रभा में होते है। इस प्रकार अथवा यावत् एक रत्नप्रभा में और तीन अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। (इस प्रकार १-३ के छह भग हुए) अथवा दो रत्नप्रभा में और दो शर्कराप्रभा में होते हैं। इस प्रकार अथवा यावत् दो रत्नप्रभा में और दो अध-सप्तम पृथ्वी में होते हैं। (इस प्रकार २-२ के छह भग होते हैं।) अथवा तीन रत्नप्रभा में और एक शर्कराप्रभा में होता है। इस प्रकार अथवा यावत् तीन रत्नप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (इस प्रकार ३-१ के छह भग होते है। इस प्रकार रत्नप्रभा के साथ अठारह भग होते है।) अथवा एक शर्कराप्रभा में और तीन वालुकाप्रभा में होते हैं। जिस प्रकार रत्नप्रभा का आगे की नरको के साथ सचार (योग) किया, उसी प्रकार शर्कराप्रभा का भी उसके आगे की नरको के साथ सचार करना चाहिये। इस प्रकार एक एक नरक के साथ योग करना चाहिये अथवा यावत् तीन तम प्रभा में और एक अध सप्तम

एक विकल्प बनता है। इस प्रकार वालुकाप्रभा के साथ ३-२-१ = ये ६ विकल्प होते है।) अथवा एक पकप्रभा में, एक धूमप्रभा में और एक तम प्रभा में होता है। अथवा एक पकप्रभा में, एक धूमप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (इस प्रकार पकप्रभा और धूमप्रभा के साथ दो विकल्प होते है।) अथवा एक पकप्रभा में, एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (इस प्रकार पकप्रभा के साथ २-१ = ये ३ विकल्प होते है।) अथवा एक धूमप्रभा में, एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (इस प्रकार धूम-प्रभा पृथ्वी के साथ एक विकल्प होता है। १५-१०-६-३-१ ये सब मिलकर त्रिक सयोगी पैतीस विकल्प तथा पैतीस ही भग होते है।

विवेचन-यदि तीन जीव नरक मे उत्पन्न होवे ता उनके असयोगी (एक एक) ७, द्विक सयोगी ४२ और त्रिक सयोगी ३५ -ये सब ८४ भग होते हैं। जा ऊपर बतला दिये गये हैं।

४

१४ प्रश्न-चत्तारि भते ! णेरइया णेरइयपवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा-पुच्छा।

१४ उत्तर-गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयण-प्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाय एगे सक्करप्प-

भग होते हैं ।) अथवा एक रत्नप्रभा में, दो शर्कराप्रभा में और एक वालुकाप्रभा में होता है । इस प्रकार एक रत्नप्रभा में, दो शर्कराप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । (इस प्रकार १-२-१ के पाच भग होते हैं ।) अथवा दो रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और एक वालुकाप्रभा में होता है । इसी प्रकार यावत् दो रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । (इस प्रकार २-१-१ के पाच भग होते हैं । तीनो को मिलाकर पन्द्रह भग होते हैं) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और दो पकप्रभा में होते है । इस प्रकार यावत् एक रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और दो अध सप्तम पृथ्वी में होते है । इसी अभिलाप द्वारा जिस प्रकार तीन नैरयिको के त्रिक सयोगी भग कहे, उसी प्रकार चार नैरयिको के भी त्रिक सयोगी भग जानना चाहिये यावत दो धूमप्रभा में एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । (ये त्रिक सयोगी १०५ भग हुए ।)

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा १, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा २, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए होज्जा ३, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ४, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा ५, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए होज्जा ६; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए

पृथ्वी में होता है। (इस तरह ये द्विक सयोगी त्रेसठ भग हुए।)

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो पकप्पभाए होज्जा, एव जाव एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। एव एएणं गमएणं जहा तिण्ह तियसजोगो तहा भाणियव्वो, जाव अहवा दो धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १०५।

कठिन शब्दार्थ-एएण-इस प्रकार, गमएण-गमक (पाठ) से, तिय सजोगो-त्रिक सयाग।

(त्रिक सयोगी १०५ भग-) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और दो वालुकाप्रभा में होते है। अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शकराप्रभा में और दो पकप्रभा में होते है। इसी प्रकार यावत एक रत्नप्रभा में, एक शकराप्रभा में और दो अध सप्तम पृथ्वी में होते है। (इस प्रकार १-१-२ के पाच

रप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा २१ । एव जहा रयणप्पभाए उवरिमाओ पुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाओ चारियव्वाओ; जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३० । अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ३१, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३२, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३३, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३४, अहवा एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३५ ।

(चतु सयोगी पैंतीस भग)—(१) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और एक पकप्रभा में होता है (२) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में एक वालुकाप्रभा में और एक धूमप्रभा में होता है। (३) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और एक तम प्रभा में होता है। (४) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (ये चार भग होते हैं।) (१) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक पकप्रभा में और एक धूमप्रभा में होता है। (२) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक पकप्रभा में और एक तम प्रभा में होता है। (३) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक पकप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है।

एगे पकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ७, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ८, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ९, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १०, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा ११, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए होज्जा १२, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १३, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा १४, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १५, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १६, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा १७, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १८, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १९, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २०, अहवा एगे सक्क-

है। (शर्कराप्रभा के सयोग वाले दस भग होते है।) (१) अथवा एक वालुकाप्रभा में, एक पकप्रभा में, एक धूमप्रभा में और एक तम प्रभा में होता है। (२) अथवा एक वालुकाप्रभा में, एक पकप्रभा में, एक धूमप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (३) अथवा एक वालुकाप्रभा में, एक पकप्रभा में, एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (४) अथवा एक वालुकाप्रभा में, एक धूमप्रभा में एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (इस प्रकार वालुकाप्रभा के सयोग वाले चार भग होते हैं।) (१) अथवा एक पकप्रभा में, एक धूमप्रभा में, एक तम प्रभा में और एक अध - सप्तम पृथ्वी में होता है। (इस प्रकार यह एक भग होता है। ये २०–१० ४–१–ये चतु सयोगी ३५ भग होते हैं। सब मिलकर चार नैरयिक आश्रयी असयोगी ७, द्विक सयोगी ६३, त्रिक सयोगी १०५ और चतु सयोगी ३५, ये सब २१० भग होते हैं।)

विवेचन–चार नैरयिक जीवो के १ ३ २-२, ३-१,–इस प्रकार एक विकल्प के द्विक सयोगी तीन भग हान हैं। उनमे से रत्नप्रभा के साथ शप पृथ्वियो का सयोग करने से १-३ के छह भग हाते हैं। इसी प्रकार २-२ के छह भग और ३-१ के छह भग होते हैं। इस प्रकार ये अठारह भग होते हैं। शकराप्रभा के साथ उसी प्रकार तीन विकल्प के ५-५-५ ये पन्द्रह भग हाते है। इस प्रकार वालुकाप्रभा के साथ ४-४ ४–ये वारह भग हाते हैं। इसी प्रकार पकप्रभा के साथ ३ ३-३–ये नौ, धूमप्रभा के साथ २-२ २–ये छह, और तम प्रभा के साथ १ १-१–ये तीन भग होते हैं। सभी मिलकर द्विकसयोगी त्रेसठ भग होते हैं। उनमे से रत्नप्रभा के अठारह भग ऊपर मूल अनुवाद मे बतला दिये गये है। इसी प्रकार शकरा प्रभा के साथ आगे की पथ्वियो का योग करने से १ ३ के पाच भग होते हैं। यथा–एक शकराप्रभा मे और तीन बालुकाप्रभा आदि मे हाते है। इसी तरह २ २ के भी पाच भग होते हैं। यथा– दो शकराप्रभा मे और दो वालुकाप्रभा आदि मे होते हैं। इसी प्रकार ३-१ के भी पाच भग हाते है। यथा–तीन शकराप्रभा मे और एक बालुकाप्रभा आदि में हाता है। इस प्रकार शकराप्रभा के साथ पन्द्रह भग होते हैं। बालुकाप्रभा के साथ आगे की पथ्वियो का सयोग करने से चार विकल्प हाते हैं। उनका पूर्वोक्त तीन भगो से गुणा करने पर वारह भग हाते हैं। इसी प्रकार पकप्रभा के साथ आगे की पृथ्वियो का योग करने

(ये तीन भग होते है।) (१) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शकराप्रभा में, एक धूमप्रभा में और एक तम प्रभा में होता है। (२) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में एक धूमप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में में होता है। (ये दो भग होते है।) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (यह एक भग होता है।) (१) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में, एक पकप्रभा में और एक धूमप्रभा में होता है। (२) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में, एक पकप्रभा में और एक तम प्रभा में होता है। (३) अथवा एक रत्नप्रभा में एक वालुकाप्रभा में, एक पकप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (ये तीन भग होते है।) (१) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में, एक धूमप्रभा में और एक तम प्रभा में होता है। (२) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में, एक धूमप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (ये दो भग होते है।) (१) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में, एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (यह एक भग होता है।) (१) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक पकप्रभा में, एक धूम प्रभा में और एक तम प्रभा में, होता है। (२) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक पकप्रभा में, एक धूमप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (ये दो भग होते है) (१) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक पकप्रभा में, एक तम प्रभा में और एक अध-सप्तम पृथ्वी में होता है। (यह एक भग होता है।) (१) अथवा एक रत्न-प्रभा में एक धूमप्रभा में, एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (यह एक भग होता है। इस प्रकार रत्नप्रभा के सयोग वाले ४-३-२-१ ३-२-१-२-१-१ = २० भग होते है।) (१) अथवा शकराप्रभा में, एक वालुका-प्रभा में, एक पकप्रभा में और एक धूमप्रभा में होता है। जिस प्रकार रत्नप्रभा का आगे की पृथ्वियो के साथ सचार (योग) किया, उसी प्रकार शर्कराप्रभा का उसके आगे की पृथ्वियो के साथ योग करना चाहिये यावत अथवा एक शकरा-प्रभा में, एक धूमप्रभा में, एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता

५

१५ प्रश्न-पच भते ! णेरइया णेरइप्पवेसणएण पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा-पुच्छा ।

१५ उत्तर-गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा । एव जहा रयणप्पभाए सम उवरिमपुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि सम चारेयव्वाओ, जाव अहवा चत्तारि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, एव एक्केक्काए सम चारेयव्वाओ, जाव अहवा चत्तारि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

कठिन शब्दार्थ-चारियाओ-सयाग किया है, चारियव्वाओ-सयोग करना चाहिय ।

भावार्थ-१५ प्रश्न-हे भगवन ! पाच नैरयिक जीव, नैरयिक प्रवेशनक

पर एव तीन विकल्पो से गुणा करने पर नव भग हाते है। इसी प्रकार धूमप्रभा के साथ छह भग और तम प्रभा के साथ तीन भग होते हैं। इस प्रकार आगे की पथ्वियो के साथ याग करने पर ऊपर कहे अनुसार रत्नप्रभा के १८, शकराप्रभा के १५, बालुकाप्रभा के १२, पकप्रभा के ९, धूमप्रभा के ६, और तम प्रभा के ३-ये सभी मिलकर चार नैरयिको के द्विकसयोगी ६३ (त्रेसठ) भग होत हैं।

चार नैरयिको के त्रिकसयोगी एक सौ पाच भग हात हैं। यथा-चार नरयिको के १ १ २, १-२-१ और २ १ १-ये तीन भग एक विकल्प के होते हैं। इन को रत्नप्रभा और शकराप्रभा के साथ वालुकाप्रभादि आगे की पथ्वियो का याग करने पर पाच विकल्प होते हैं। पूर्वोक्त तीन भगा के साथ गुणा करने स पन्द्रह भग हात हैं। इसी प्रकार इन तीन भगो द्वारा रत्नप्रभा और बालुकाप्रभा-इन दोनो का आग की पथ्वियो के साथ सयाग करने पर कुल बारह भग हाते हैं। रत्नप्रभा और पकप्रभा के साथ शष पथ्वियो का सयाग करने पर कुल नौ भग होते हैं। रत्नप्रभा और धूमप्रभा के साथ सयोग करने पर छह, तथा रत्नप्रभा और तम प्रभा के साथ सयाग करने पर तीन भग होते हैं। इस प्रकार रत्नप्रभा के सयोग वाले १५, १२, ९, ६ और ३-ये कुल ४५ भग हाते है। पूर्वोक्त तीन भगो द्वारा शकराप्रभा और बालुकाप्रभा के साथ सयोग करने पर बारह, शकरा और पकप्रभा के साथ सयोग करने पर नो, शकराप्रभा और धूमप्रभा के साथ सयोग करने पर छह, शकराप्रभा और तम प्रभा के साथ सयाग करने पर तीन भग हाते हैं। इस प्रकार शकराप्रभा के सयाग वाले १२, ९, ६ ३-य सब तीस भग होते हैं। पूर्वोक्त तीन भगो द्वारा बालुकाप्रभा और पकप्रभा का शेष पथ्वियो के साथ सयोग करने पर नौ बालुकाप्रभा और धूमप्रभा के साथ छह बालुकाप्रभा और तम प्रभा के साथ सयोग करने पर तीन भग होते हैं। इस प्रकार बालुकाप्रभा के सयोग वाले नौ छह तीन-ये अठारह भग होते हैं। पूर्वोक्त तीन भगो द्वारा पकप्रभा और धूमप्रभा के साथ शेष का सयाग करने पर छह, तथा पकप्रभा और तम प्रभा के साथ सयोग करने पर तीन भग होते हैं। इस प्रकार पकप्रभा के सयोग वाले छह और तीन ये नौ भग होत हैं। पूर्वोक्त तीन भगो द्वारा धूमप्रभा और तम प्रभा के साथ सयोग करने पर तीन भग होते हैं। इस प्रकार ४५ ३०, १८ ९ और ३ ये सभी मिलकर त्रिक सयागी १०५ भग हाते हैं।

उपर्युक्त रीति के अनुसार चार नैरयिको के चतु सयोगी पतीस भग होते हैं। इस प्रकार असयोगी ७ द्विकसयागी ६३, त्रिकसयोगी १०५ और चतु सयागी ३५ (जो कि भावाथ मे बतला दिये हैं) य सभी मिलकर चार नैरयिक की अपेक्षा २१० भग हाते हैं।

५

१५ प्रश्न-पच भते ! णेरइया णेरइप्पवेसणएण पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा-पुच्छा ।

१५ उत्तर-गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे रयणप्भाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा; एव जाव अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा । एव जहा रयणप्पभाए सम उवरिमपुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि सम चारेयव्वाओ, जाव अहवा चत्तारि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, एव एक्केक्काए सम चारेयव्वाओ, जाव अहवा चत्तारि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

कठिन शब्दार्थ-चारियाओ-सयाग किया है, चारियव्वाओ-सयोग करना चाहिये ।

भावार्थ-१५ प्रश्न-हे भगवन ! पाच नैरयिक जीव, नैरयिक प्रवेशनक

द्वारा प्रवेश करते हुए क्या रत्नप्रभा में उत्पन्न होते हैं,-इत्यादि प्रश्न ।

१५ उत्तर-हे गागेय ! रत्नप्रभा में होते हैं अथवा यावत अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं । (इस प्रकार-असयोगी सात भग होते हैं ।)

(द्विक सयोगी ८४ भग)-अथवा एक रत्नप्रभा में और चार शकराप्रभा में होते हैं । अथवा यावत् एक रत्नप्रभा में और चार अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं । (इस प्रकार 'एक और चार' से रत्नप्रभा के साथ शेष पृथ्वियो का योग करने पर छह भग होते हैं ।) (१) अथवा दो रत्नप्रभा में और तीन शकराप्रभा में होते ह । इस प्रकार यावत दो रत्नप्रभा में और तीन अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं । (इस प्रकार 'दो और तीन' के छह भग होते हैं ।) अथवा तीन रत्नप्रभा में और दो शर्कराप्रभा में होते हैं । इस प्रकार यावत तीन रत्नप्रभा में और दो अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं (इस प्रकार 'तीन और दो' से छह भग होते हैं ।) अथवा चार रत्नप्रभा में और एक शकराप्रभा में होता है । इस प्रकार चार रत्नप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । (इस प्रकार 'चार और एक' से छह भग होते हैं । रत्नप्रभा के सयोग से ये कुल चौवीस भग होते हैं ।) अथवा एक शर्कराप्रभा में और चार वालुकाप्रभा में होते हैं । जिस प्रकार रत्नप्रभा के साथ आगे की पृथ्वियो का सयोग किया, उसी प्रकार शर्कराप्रभा के साथ सयोग करने से बीस भग होते हैं । अथवा यावत चार शर्कराप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । इस प्रकार वालुकाप्रभा आदि एक एक पृथ्वी के साथ योग करना चाहिये । यावत् चार तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । (ये द्विक सयोगी के चौरासी भग होते हैं ।)

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्क-

रप्पभाए वालुयप्पभाए होज्जा; एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेमत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहेसत्तमाए। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए तिण्णि पकप्पभाए होज्जा। एव एएणं कमेण जहा चउण्ह तियासंजोगो भणिओ तहा पचण्ह वि तियासजोगो भाणियव्वो, णवर तत्थ एगो सचारिज्जइ इह, दोण्णि सेस त चेव, जाव अहवा तिण्णि धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

(त्रिक सयोगी २१० भग) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और तीन वालुकाप्रभा में होते हैं। इस प्रकार यावत् एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और तीन अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। (इस प्रकार 'एक, एक, तीन' के पाच भग होते हैं।) अथवा एक रत्नप्रभा में, दो शकराप्रभा में और दो वालुकाप्रभा में होते हैं। इस प्रकार यावत् एक रत्नप्रभा में, दो शर्कराप्रभा

में और दो अधःसप्तम पृथ्वी में होते हैं। (इस प्रकार 'एक, दो, दो' के पाच भग होते हैं।) अथवा दो रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और दो वालुकाप्रभा में होते हैं। इस प्रकार यावत् दो रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और दो अधःसप्तम पृथ्वी में होते हैं। (इस प्रकार 'दो, एक, दो' के पाच भग होते हैं।) अथवा एक रत्नप्रभा में, तीन शर्कराप्रभा में और एक वालुकाप्रभा में होता है। इस प्रकार यावत एक रत्नप्रभा में, तीन शर्कराप्रभा में और एक अधःसप्तम पृथ्वी में होता है। (इस प्रकार 'एक, तीन, एक' के पाच भग होते हैं।) अथवा दो रत्नप्रभा में, दो शर्कराप्रभा में और एक वालुकाप्रभा में होता है। इस प्रकार यावत दो रत्नप्रभा में, दो शर्कराप्रभा में और एक अधःसप्तम पृथ्वी में होता है। (इस प्रकार 'दो, दो, एक' के पाच भग होते हैं।) अथवा तीन रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और एक वालुकाप्रभा में होता है। इस प्रकार यावत तीन रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और एक अधःसप्तम पृथ्वी में होता है। (इस प्रकार 'तीन, एक, एक' के पाँच भग होते हैं।) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और तीन पकप्रभा में होते हैं। इस क्रम से जिस प्रकार चार नैरयिक जीवो के त्रिक सयोगी भग कहे हैं, उसी प्रकार पाच नैरयिको के भी त्रिक सयोगी भग जानना चाहिये। परन्तु यहा 'एक' के स्थान में 'दो' का सचार करना चाहिये। शेष सभी पूर्वोक्त जान लेना चाहिये यावत् तीन धूमप्रभा में एक तमःप्रभा में और एक अधःसप्तम पृथ्वी में होता है। यहा तक कहना चाहिये। (ये त्रिक सयोगी २१० भग होते हैं।)

- अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए

होज्जा, एवं जाव अहेसत्तमाए । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्प-भाए दो धूमप्पभाए होज्जा, एव जहा चउण्ह चउक्कसजोगो भणिओ तहा पचण्ण वि चउक्कसजोगो भाणियव्वो, णवर अब्भहियं एगो सचारेयव्वो, एव जाव अहवा दो पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

(चतु सयोगी १४० भग)-अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और दो पकप्रभा में होते है । इस प्रकार यावत् एक रत्न-प्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और दो अध सप्तम पृथ्वी में होते है । (ये चार भग होते है ।) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, दो वालुकाप्रभा में और एक पकप्रभा में होता है । इस प्रकार यावत् एक रत्न-प्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, दो वालुकाप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । (ये चार भग होते है ।) अथवा एक रत्नप्रभा में, दो शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और एक पकप्रभा में होता है । इस प्रकार यावत् एक रत्न-प्रभा में, दो शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । (ये चार भग होते है ।) अथवा दो रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और एक पकप्रभा में होता है । इस प्रकार यावत् दो रत्न-

में और दो अध सप्तम पृथ्वी में होते है। (इस प्रकार 'एक, दो, दो' के पांच भग होते ह।) अथवा दो रत्नप्रभा में, एक शकराप्रभा में और-दो वालुकाप्रभा में होते है। इस प्रकार यावत् दो रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और दो अध-सप्तम पृथ्वी में होते ह। (इस प्रकार 'दो, एक, दो' के पाच भग होते हैं।) अथवा एक रत्नप्रभा में, तीन शकराप्रभा में और एक वालुकाप्रभा में होता है। इस प्रकार यावत एक रत्नप्रभा में, तीन शकराप्रभा में और एक, अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (इस प्रकार 'एक, तीन, एक' के पाच भग होते है।) अथवा दो रत्नप्रभा में, दो शर्कराप्रभा में और एक वालुकाप्रभा में होता है। इस प्रकार यावत दो रत्नप्रभा में, दो शकराप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (इस प्रकार 'दो, दो, एक' के पाच भग होते हैं।) अथवा तीन रत्नप्रभा में, एक शकराप्रभा में और एक वालुकाप्रभा में होता है। इस प्रकार यावत तीन रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (इस प्रकार 'तीन, एक, एक' के पांच भग होते हैं।) अथवा एक- रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और तीन पकप्रभा में होते ह। इस क्रम से जिस प्रकार चार नैरयिक जीवो के त्रिक सयोगी भग कहे है, उसी प्रकार पाच नैरयिको के भी त्रिक सयोगी भग जानना चाहिये। परन्तु यहा 'एक' के स्थान में 'दो' का सचार करना चाहिये। शेष सभी पूर्वोक्त जान लेना चाहिये यावत् तीन धूमप्रभा में एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। यहा तक कहना चाहिये। (ये त्रिक सयोगी २१० भग होते है।)

- अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए

होज्जा; एव जाव अहेसत्तमाए । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए दो धूमप्पभाए होज्जा, एव जहा चउण्ह चउक्कसजोगो भणिओ तहा पचण्ण वि चउक्कसजोगो भाणियव्वो, णवर अब्भहिय एगो सचारेयव्वो, एव जाव अहवा दो पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

(चतु सयोगी १४० भग)–अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और दो पकप्रभा में होते हैं । इस प्रकार यावत् एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और दो अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं । (ये चार भग होते हैं ।) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शकराप्रभा में, दो वालुकाप्रभा में और एक पकप्रभा में होता है । इस प्रकार यावत् एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, दो वालुकाप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । (ये चार भग होते हैं ।) अथवा एक रत्नप्रभा में, दो शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और एक पकप्रभा में होता है । इस प्रकार यावत एक रत्नप्रभा में, दो शकराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । (ये चार भग होते हैं ।) अथवा दो रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और एक पकप्रभा में होता है । इस प्रकार यावत दो रत्न-

में और दो अधःसप्तम पृथ्वी में होते है । (इस प्रकार 'एक, दो, दो' के पाच भग होते है ।) अथवा दो रत्नप्रभा में, एक शकराप्रभा में और-दो वालुकाप्रभा में होते है । इस प्रकार यावत दो रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और दो अध - सप्तम पृथ्वी में होते है । (इस प्रकार 'दो, एक, दो' के पाच भग होते है ।) अथवा एक रत्नप्रभा में, तीन शकराप्रभा में और एक वालुकाप्रभा में होता है । इस प्रकार यावत एक रत्नप्रभा में, तीन शकराप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । (इस प्रकार 'एक, तीन, एक' के पाच भग होते है ।) अथवा दो रत्नप्रभा में, दो शकराप्रभा में और एक वालुकाप्रभा में होता है । इस प्रकार यावत् दो रत्नप्रभा में, दो शकराप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । (इस प्रकार 'दो, दो, एक' के पाच भग होते है ।) अथवा तीन रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और एक वालुकाप्रभा में होता है । इस प्रकार यावत् तीन रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । (इस प्रकार 'तीन, एक, एक' के पाँच भग होते है ।) अथवा एक- रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और तीन पकप्रभा में होते है । इस क्रम से जिस प्रकार चार नैरयिक जीवो के त्रिक सयोगी भग कहे है, उसी प्रकार पाच नैरयिको के भी त्रिक सयोगी भग जानना चाहिये । परन्तु यहा 'एक' के स्थान में 'दो' का सचार करना चाहिये । शेष सभी पूर्ववत जान लेना चाहिये यावत् तीन धूमप्रभा में एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । यहा तक कहना चाहिये । (ये त्रिक सयोगी २१० भग होते है ।)

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ९, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १०, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ११, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १२, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १३, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १४, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा १५, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा १६, अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १७, अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १८, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १९, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा २०, अहवा एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा २१ ।

(पंच संयोगी इक्कीस भंग)—एक अथवा रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में,

प्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (ये चार भग होते हैं।) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक पकप्रभा में और दो धूमप्रभा में होते है। जिस प्रकार चार नैरयिक जीवों के चतु सयोगी भग कहे है, उसी प्रकार पाच नैरयिक जीवो के भी चतु सयोगी भग कहना चाहिये, परन्तु यहा एक अधिक का सचार (सयोग) करना चाहिये। इस प्रकार यावत् दो पकप्रभा में, एक धूमप्रभा में, एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। यहाँ तक कहना चाहिये। (ये चतु सयोगी १४० भग होते है।)

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा १, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए होज्जा २, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ४, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ५, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ६, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ७, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ८,

है। (१९) अथवा एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में, एक धूमप्रभा में, एक तमःप्रभा में और एक अधःसप्तम पृथ्वी में होता है। (२०) अथवा एक शर्कराप्रभा में, एक पंकप्रभा में, यावत् एक अधःसप्तम पृथ्वी में होता है। (२१) अथवा एक वालुकाप्रभा में, यावत् एक अधःसप्तम पृथ्वी में होता है।

विवेचन-पांच नैरयिक जीवों के द्विक संयोगी १-४। २ ३। ३ २। ४ १। इस प्रकार एक विकल्प के स्थान मे चार भंग होते हैं। रत्नप्रभा के द्विक संयोगी छह भंगों के साथ चार से गुणा करने पर चौबीस भंग होते हैं। शर्कराप्रभा के साथ पूर्वोक्त रीति से द्विक संयोगी बीस भंग होते हैं। वालुकाप्रभा के साथ १६, पंकप्रभा के साथ १२, धूमप्रभा के साथ ८ भंग और तमःप्रभा के साथ ४ भंग होते हैं। इस प्रकार २४, २०, १६, १२, ८, ४-ये सभी मिलकर द्विक संयोगी ८४ भंग होते हैं।

पांच नैरयिक जीवों के त्रिक संयोगी एक विकल्प के छह भंग होते हैं। यथा-१-१ ३। १-२ २। २-१-२। १ ३-१। २ २-१। ३ १-१। सात नरकों के त्रिक संयोगी पैंतीस विकल्प होते हैं। उन प्रत्येक को छह भंगों से गुणा करने पर पांच नैरयिक जीवों आश्रयी त्रिक संयोगी २१० भंग होते हैं। इनमे से रत्नप्रभा के संयोग वाले ९०, शर्कराप्रभा के संयोग वाले ६०, वालुकाप्रभा के संयोग वाले ३६, पंकप्रभा के संयोग वाले १८ और धूमप्रभा के संयोग वाले ६ भंग होते हैं-ये सभी मिलकर २१० भंग होते हैं।

पांच नैरयिक जीवों के चतुःसंयोगी १-१-१-२। १ १-२ १। १-२ १-१। २ १-१-१। ये एक विकल्प के चार भंग होते हैं। सात नरकों के चतुःसंयोगी पैंतीस विकल्प होते हैं। इन पैंतीस को चार से गुणा करने पर १४० भंग होते हैं। यथा-रत्नप्रभा के संयोग वाले ८०, शर्कराप्रभा के संयोग वाले ४०, वालुकाप्रभा के संयोग वाले १६ और पंकप्रभा के संयोग वाले ४। ये सभी मिलकर पांच नैरयिक जीवों के चतुःसंयोगी १४० भंग होते हैं। पांच नैरयिकों के पांच संयोगी १-१ १-१ १। इस प्रकार एक विकल्प का एक ही भंग होता है। इसके द्वारा सात नरकों के पांच संयोगी २१ ही विकल्प और इक्कीस ही भंग होते हैं। जिनमें से रत्नप्रभा के संयोग वाले १५, शर्कराप्रभा के संयोग वाले ५ और वालुकाप्रभा के संयोग वाला १ भंग होता है। ये सभी मिलकर पांच संयोगी २१ भंग होते हैं। असंयोगी ७, द्विकसंयोगी ८४ त्रिक संयोगी २१०, चतुःसंयोगी १४० और पंचसंयोगी २१। ये सभी मिलकर पांच नैरयिक जीवों के कुल ४६२ (७+८४+२१०+१४०+२१=४६२) भंग होते हैं।

एक वालुकाप्रभा में, एक पकप्रभा में और एक धूमप्रभा में होता है। (२) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में, एक पकप्रभा में और एक तम प्रभा में होता है। (३) अथवा एक रत्नप्रभा में यावत एक पकप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (४) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक बालुकाप्रभा में, एक धूमप्रभा में और एक तम प्रभा में होता है। (५) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में, एक धूमप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (६) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शकराप्रभा में, एक बालुकाप्रभा में, एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (७) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शकराप्रभा में, एक पक-प्रभा में, एक धूमप्रभा में और एक तम प्रभा में होता है। (८) अथवा एक रत्न-प्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक पकप्रभा में एक धूमप्रभा में और एक अध-सप्तम पृथ्वी में होता है। (९) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक पकप्रभा में, एक तमःप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (१०) अथवा एक रत्नप्रभा में एक शर्कराप्रभा में, एक धूमप्रभा में, एक तम-प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (११) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में, एक पकप्रभा में, एक धूमप्रभा में और एक तम प्रभा में होता है। (१२) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक बालुकाप्रभा में, एक पकप्रभा में, एक धूमप्रभा में, और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (१३) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक बालुकाप्रभा में, एक पकप्रभा में, एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (१४) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में, एक धूमप्रभा में, एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (१५) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक पकप्रभा में, यावत एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (१६) अथवा एक शकराप्रभा में, एक बालुकाप्रभा में, यावत् एक तम प्रभा में होता है। (१७) अथवा एक शकराप्रभा में, यावत् एक पकप्रभा में, एक धूम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (१८) अथवा एक शकराप्रभा में, यावत एक पकप्रभा में, एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता

होते हैं। अथवा यावत् (६) एक रत्नप्रभा में और पाच अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। अथवा दो रत्नप्रभा में और चार शर्कराप्रभा में होते हैं। अथवा यावत् (६) दो रत्नप्रभा में और चार अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। अथवा तीन रत्नप्रभा में और तीन शर्कराप्रभा में होते हैं। इस क्रम द्वारा जिस प्रकार पाच नैरयिक जीवो के द्विक-सयोगी भग कहे हैं, उसी प्रकार छह नैरयिको के भी कहना चाहिये, परन्तु यहा एक अधिक का सचार करना चाहिये यावत् (१०५) अथवा पाच तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि पकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेणं जहा पचण्ह तियासजोगो भणिओ तहा छण्ह वि भाणियव्वो, णवर एक्को अहिओ उच्चारेयव्वो, सेस त चेव। चउक्कसजोगो वि तहेव, पचगसजोगो वि तहेव, णवर एक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो, जाव पच्छिमो भगो, अहवा दो वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

(त्रिक सयोगी ३५० भग)—(१) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और चार वालुकाप्रभा में होते है। (२) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और चार पकप्रभा में होते है। इस प्रकार यावत् (५) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शकराप्रभा में और चार अध सप्तम पृथ्वी में होते ह।

६

१६ प्रश्न–छ्ब्भते ! णेरइया णेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा–पुच्छा ।

१६ उत्तर–गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए पच सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए पच वालुयप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे रयणप्पभाए पत्र अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा, जाव अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए, एव एएण कमेणं जहा पचण्ह दुयासजोगो तहा छण्ह वि भाणियव्वो, णवर एक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो, जाव अहवा पत्र तमाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा ।

कठिन शब्दार्थ–अब्भहिओ–अधिक सचारेयव्वो–गिनना चाहिए ।

भावार्थ–१६ प्रश्न–हे भगवन् ! छह नैरयिक जीव, नैरयिक प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए क्या रत्नप्रभा में उत्पन्न होते हैं, इत्यादि प्रश्न ।

१६ उत्तर–हे गागेय ! वे रत्नप्रभा में होते है अथवा यावत अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं । (ये असयोगी सात भग होते हैं ।)

(द्विक सयोगी १०५ भग)–(१) अथवा एक रत्नप्रभा में और पाच शर्कराप्रभा में होते है । (२) अथवा एक रत्नप्रभा में और पाच वालुकाप्रभा में

एक धूमप्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (३) अथवा एक रत्न-प्रभा में यावत् एक पकप्रभा में एक तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (४) अथवा एक रत्नप्रभा में यावत् एक वालुकाप्रभा में, एक धूम-प्रभा में यावत् एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (५) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक पकप्रभा में यावत् एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (६) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में यावत् एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। (७) अथवा एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में यावत् एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है।

विवेचन-छह नैरयिको के द्विक सयोगी विकल्प के पाच भग होते हैं। यथा-१-५। २ ४। ३ ३। ४ २। ५ १। इन पाच भगो द्वारा सात नरको के द्विक सयोगी २१ विकल्पो को गुणा करने से १०५ भग होते है। यथा-रत्नप्रभा के सयोग वाले ३०, शर्कराप्रभा के सयोग वाले २५, वालुकाप्रभा के सयोग वाले २०, पकप्रभा के सयोग वाले १५, धूमप्रभा के सयोग वाले १०, तम प्रभा के सयोग वाले ५ भग होते हैं। ये सभी मिलकर १०५ (३०+२५+२०+१५+१०+५=१०५) भग होते हैं। छह नैरयिको के त्रिक सयोगी एक विकल्प के १० भग होते हैं। यथा-१ १ ४। १-२ ३। २ १ ३। १ ३ २। २-२ २। ३ १ २। १ ४ १। २ ३-१। ३ २-१। ४ १-१। सात नरको के त्रिक सयोगी ३५ विकल्प पूर्वोक्त प्रकार से होते हैं, जो कि पाच नैरयिको के त्रिक सयोगी भगो के प्रसग मे बतला दिये गये हैं। उन पतीस को दस भगो से गुणा करने पर तीन सो पचास भग होते है।

छह नरयिको के चतु सयोगी एक विकल्प के दस भग होते हैं। यथा-१ १-१-३। १-१-२-२। १-२ १ २। २ १ १-२। १ १ ३-१। १ २-२-१। २ १-२-१। १-३ १ १। २-२-१-१। ३ १-१ १। इन दस भगो द्वारा चतु सयोगी पतीस विकल्पो को गुणा करने से तीन सौ पचास भग होते हैं।

छह नैरयिक जीवो के पचसयोगी एक विकल्प के पाच भग होते हैं। यथा-१ १ १ १ २। १ १ १ २ १। १ १-२-१-१। १ २ १ १ १। २ १ १ १ १। इन पाच भगो द्वारा सात नरको के पच सयोगी इक्कीस विकल्पो को गुणा करने से एक सौ पाच भग बनते हैं।

छह नरयिक जीवो का छह सयोगी एक ही विकल्प होता है। उसके द्वारा सात नरको के छह सयोगी सात भग होते है। इस प्रकार छह नैरयिको के असयोगी ७, द्विक-

(१) अथवा एक रत्नप्रभा में, दो शर्कराप्रभा में और तीन वालुकाप्रभा में होते है। इस क्रम से जिस प्रकार पाच नैरयिक जीवो के त्रिक सयोगी भग कहे है, उसी प्रकार छह नैरयिक जीवो के भी त्रिक-सयोगी भग कहना चाहिये, परन्तु यहाँ एक का सचार अधिक करना चाहिये। शेष सभी पूर्ववत कहना चाहिये। (इस प्रकार ये ३५० भग होते है।)

(पच सयोगी १०५ भग)—जिस प्रकार पाच नैरयिको के भग कहे गये, उसी प्रकार छह नैरयिको के चतु सयोगी और पच-सयोगी भग जान लेने चाहिये, परन्तु इनमें एक नैरयिक का सचार अधिक करना चाहिये। यावत् अतिम भग इस प्रकार है—दो वालुकाप्रभा में, एक पकप्रभा में, एक धूमप्रभा में, एक तम-प्रभा में और एक तमस्तम प्रभा में होता है।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए, जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

(छह सयोगी सात भग)—(१) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्करा-प्रभा में यावत एक तम प्रभा में होता है। (२) अथवा एक रत्नप्रभा में, यावत्

जिस प्रकार छह नैरयिक जीवो के द्विक-सयोगी भग कहे है, उसी प्रकार सात नैरयिको के भी जानने चाहिये, परन्तु इतनी विशेषता है कि यहाँ एक नैरयिक का अधिक सचार करना चाहिये। शेष सभी पूर्ववत् जानना चाहिये। जिस प्रकार छह नैरयिक जीवो के त्रिक-सयोगी, चतु सयोगी, पचसयोगी और पटसयोगी भग कहे, उसी प्रकार सात नैरयिको के विषय में भी जानना चाहिये परन्तु इतनी विशेषता है कि यहां एक एक नैरयिक जीव का अधिक सचार करना चाहिये। यावत् पट्सयोगी का अन्तिम भग इस प्रकार कहना चाहिये। अथवा दो शर्करा-प्रभा में, एक वालुकाप्रभा में, यावत एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है। यहा तक जानना चाहिये। (सात सयोगी एक भग।) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्करा-प्रभा में, यावत् एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है।

विवेचन-सात नैरयिको के द्विक सयोगी एक विकल्प के छह भग होते हैं। यथा-१ ६। २ ५। ३ ४। ४-३। ५ २। ६-१। इन छह भगो द्वारा पूर्वोक्त सातन रको के द्विक-सयोगी २१ विकल्पो को गुणा करने से सात नैरयिक सम्बन्धी द्विकसयोगी १२६ भग होते हैं।

सात नैरयिको के त्रिक सयोगी एक विकल्प के १५ भग होते हैं। यथा-१-१ ५। १ २ ४। २ १ ४। १-३ ३। २ २-३। ३-१-३। १-४ २। २-३-२। ३-२ २। ४-१-२। १ ५-१। २-४-१। ३ ३-१। ४ २-१। ५-१-१। इन पन्द्रह भगो द्वारा पूर्वोक्त त्रिकसयोगी पैंतीस विकल्पो को गुणा करने से ५२५ भग होते हैं।

सात नैरयिको के चतुमसयोगी-१-१ १-४ इत्यादि एक विकल्प के वीस भग होते हैं। इनके द्वारा पूर्वोक्त चतु सयोगी पतीस विकल्पो को गुणा करने से ७०० भग होते हैं।

सात नैरयिको के पचसयोगी १-१-१ १-३। इत्यादि एक विकल्प के १५ भग होते हैं। उनके द्वारा पूर्वोक्त पचसयोगी इक्कीस विकल्पो को गुणा करने से ३१५ भग होते हैं।

सात नैरयिको के पटसयोगी १ १ १ १ १ २। इत्यादि एक विकल्प के छह भग होते हैं। उनके द्वारा पूर्वोक्त छह सयोगी सात विकल्पो को गुणा करने से बयालीस भग होते हैं।

सात सयोगी एक विकल्प और एक ही भग होता है। इस प्रकार (७+१२६+५२५+७००+३१५+४२+१=१७१६) कुल मिलाकर सात नैरयिको के १७१६ भग होते हैं।

सयोगी १०५ त्रिक सयोगी ३५०, चतु सयोगी ३५०, पचसयोगी १०५ और छह सयोगी ७। ये सभी मिलकर ९२४ भग होते है ।

७

१७ प्रश्न-सत्त भते ! णेरडया णेरडयपवेसणएणं पविसमाणा० पुच्छा ।

१७ उत्तर-गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए छ सक्करप्पभाए होज्जा । एव एएण कमेणं जहा छण्ह दुयासजोगो तहा सत्तण्ह वि भाणियव्व, णवर एगो अब्भहिओ सचारिज्जइ, सेस त चेव । तियासजोगो, चउक्कसजोगो, पचसजोगो, छक्कसजोगो य छण्ह जहा तहा सत्तण्ह वि भाणियव्व, णवर एक्केक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो, जाव छक्कगसजोगो । अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

कठिन शब्दार्थ दुयासजोगो-द्विक सयोग ।

भावार्थ-१७ प्रश्न-हे भगवन ! सात नैरयिक जीव, नैरयिक प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए क्या रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्पन्न होते ह, इत्यादि प्रश्न ।

१७ उत्तर-हे गागेय ! वे सातो नैरयिक रत्नप्रभा में होते ह, अथवा यावत् अध सप्तम पृथ्वी में होते है-ये असयोगी सात विकल्प होते है ।

अथवा एक रत्नप्रभा में और छह शर्कराप्रभा में होते है । इस क्रम से

इतनी विशेषता है कि एक एक नैरयिक का अधिक सचार करना चाहिये । शेष सभी छह सयोगी तक पूर्ववत प्रकार से कहना चाहिये । अन्तिम भग यह है— अथवा तीन शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में यावत् एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । (१) अथवा एक रत्नप्रभा में यावत् एक तम प्रभा में और दो अध - सप्तम पृथ्वी में होते हैं । (२) अथवा एक रत्नप्रभा में यावत दो तम प्रभा में और एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है । इसी प्रकार सभी स्थानो पर सचार करना चाहिये । अथवा यावत् दो रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में यावत् एक अध - सप्तम पृथ्वी में होता है ।

विवेचन-आठ नैरयिको के असयोगी ७ भग होते है । द्विकसयोगी एक विकल्प के सात भग होते है । उनके द्वारा पूर्वोक्त सात नरको के द्विकसयोगी इक्कीस विकल्पो को गुणा करने से १४७ भग होते हैं ।

आठ नैरयिको के १-१ ६ इत्यादि त्रिकसयोगी एक विकल्प के इक्कीस भग होते हैं । उनके द्वारा पूर्वोक्त सात नरको के त्रिकसयोगी पैंतीस विकल्पो के साथ गुणा करने से ७३५ भग होते हैं ।

आठ नैरयिको के १-१ १ ५ इत्यादि चतु सयोगी एक विकल्प के पैंतीस भग होते हैं । उनके द्वारा पूर्वोक्त सात नरको के चतु सयोगी पैंतीस विकल्पो को गुणा करने से १२२५ भग होते हैं ।

आठ नैरयिको के १ १ १-१ ४ इत्यादि पचसयोगी एक विकल्प के पनीस भग होते है । उनके द्वारा पूर्वोक्त सात नरको के पचसयोगी इक्कीस विकल्पो को गुणा करने से ७३५ भग होते है ।

आठ नैरयिको के १ १-१ १ १-३ इत्यादि षटसयोगी एक विकल्प के इक्कीस भग होते हैं । उनके द्वारा पूर्वोक्त सात नरको के षटसयोगी सात विकल्पो को गुणा करने से १४७ भग होते हैं ।

आठ नैरयिको के सात सयोगी १-१-१-१ १-१-२ इत्यादि एक विकल्प के ७ भग होते हैं । इस प्रकार आठ नरयिको के कुल ३००३ (७+१४७+७३५+१२२५+७३५+१४७+ ७=३००३) भग होते हैं ।

८

१८ प्रश्न-अट्ठ भंते ! णेरइया णेरइयपवेसणएणं पविसमाणा० पुच्छा ।

१८ उत्तर-गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए सत्त सक्करप्पभाए होज्जा । एवं दुयासंजोगो, जाव छक्कसंजोगो य जहा सत्तण्ह भणिओ तहा अट्ठण्ह वि भाणियव्वो, णवरं एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेसं तं चेव, जाव छक्कसंजोगस्स । अहवा तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे तमाए दो अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । एवं संचारे-यव्वं, जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

भावार्थ-१८ प्रश्न-हे भगवन् ! आठ नैरयिक जीव, नैरयिक प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए क्या रत्नप्रभा में उत्पन्न होते हैं, इत्यादि प्रश्न ।

१८ उत्तर-हे गांगेय ! रत्नप्रभा में होते हैं, अथवा यावत् अधःसप्तम पृथ्वी में होते हैं ।

अथवा एक रत्नप्रभा में और सात शर्कराप्रभा में होते हैं । जिस प्रकार सात नैरयिकों के द्विक संयोगी, त्रिकसंयोगी, चतुःसंयोगी पंचसंयोगी और षट्-संयोगी भंग कहे हैं, उसी प्रकार आठ नैरयिकों के भी कहना चाहिये । परन्तु

विवेचन–नौ नैरयिक जीवो आश्रयी असयोगी सात भग होते हैं ।

नौ नैरयिक जीवो के द्विकसयोगी एक विकल्प के आठ भग होते हैं उनके द्वारा पूर्वोक्त सात नरको के द्विकसयोगी इक्कीस विकल्पो को गुणा करने से १६८ भग होते हैं ।

नौ नैरयिक जीवो के १ १-७ इत्यादि त्रिक्सयोगी एक विकल्प के अट्ठाईस भग होते हैं, उनके द्वारा सात नरको के पूर्वोक्त त्रिकसयोगी पतीस विकल्पो को गुणा करने से ९८० भग होते हैं ।

नौ नैरयिक जीवो के १ १-१ ६ इत्यादि चतु सयोगी एक विकल्प के ५६ भग होते हैं । उनके द्वारा सात नरको के पूर्वोक्त चतु सयोगी पैंतीस विकल्पो के साथ गुणा करने से १९६० भग होते हैं ।

नौ नैरयिक जीवो के १-१-१ १ ५ इत्यादि पचसयोगी एक विकल्प के ७० भग होते हैं, उनके द्वारा सात नरको के पूर्वोक्त पचसयोगी इक्कीस विकल्पो के साथ गुणा करने से १४७० भग होते हैं ।

नौ नैरयिक जीवो के १ १ १ १-१ ४ इत्यादि पटसयोगी एक विकल्प के ५६ भग होते हैं, उनके द्वारा सात नरको के पूर्वोक्त पटसयोगी सात विकल्पो के साथ गुणा करने से ३९२ भग होते हैं ।

नौ नैरयिक जीवो के १-१ १-१-१-१-३ इत्यादि सप्तसयोगी एक विकल्प के २८ भग होते हैं उनके द्वारा सात नरको के पूर्ववत सप्तसयोगी एक विकल्प के साथ गुणा करने पर अट्ठाईस भग होते हैं । इस प्रकार सभी मिलकर ५००५ (७+१६८+९८०+१९६०+१४७०+३९२+२८=५००५) भग होते हे ।

१०

२० प्रश्न–दस भते ! णेरइया णेरइयपवेसणएणं पविसमाणा० पुच्छा ।

२० उत्तर–गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए णव सक्करप्पभाए होज्जा । एव

९

१९ प्रश्न-णव भंते ! णेरइया णेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं० पुच्छा ।

१९ उत्तर-गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्त-माए वा होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए अट्ठ सक्करप्पभाए होज्जा । एवं दुयासंजोगो, जाव सत्तगसंजोगो य जहा अट्ठण्हं भणियं तहा णवण्ह पि भाणियव्वं, णवरं एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेसं तं चेव । पच्छिमो आलावगो-अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहे-सत्तमाए होज्जा ।

कठिन शब्दार्थ-पच्छिमो-पीछे का, बाद का (अंत का) आलावगो-आलापक ।

भावार्थ-१९ प्रश्न-हे भगवन् ! नौ नैरयिक जीव, नैरयिक प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए क्या रत्नप्रभा में उत्पन्न होते है, इत्यादि प्रश्न ।

१९ उत्तर-हे गांगेय ! वे नौ नैरयिक जीव, रत्नप्रभा में होते है, अथवा *यावत् अधःसप्तम पृथ्वी में होते है ।*

अथवा एक रत्नप्रभा में और आठ शर्कराप्रभा में होते है । इत्यादि जिस प्रकार आठ नैरयियो के द्विक-सयोगी, त्रिक-सयोगी, चतु सयोगी, पचसयोगी, षटसयोगी और सप्तसयोगी भंग कहे, उसी प्रकार नौ नैरयिको के विषय में भी कहना चाहिये । परन्तु विशेष यह है कि एक एक नैरयिक का अधिक सचार करना चाहिये । शेष सभी पूर्वोक्त प्रकार से जानना चाहिये । अन्तिम भंग इस प्रकार है-अथवा तीन रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में यावत एक अधःसप्तम पृथ्वी में होता है ।

हैं। उनके साथ सात नरको के पूर्वोक्त पैतीस विकल्पो को गुणा करने से २६४० भग होते हैं।

दस नैरयिक जीवो के १-१-१-१ ६ इत्यादि पचसयोगी एक विकल्प के १२६ भग होते हैं, उनके द्वारा सात नरको के पचसयोगी इक्कीस विकल्पो के साथ गुणा करने से २६४६ भग होते हैं।

दस नैरयिक जीवो के १-१-१-१-१-५ इत्यादि षट्सयोगी एक विकल्प के १२६ भग होते हैं। उनके द्वारा सात नरको के षटसयोगी सात विकल्पो के साथ गुणा करने से ८८२ भग होते हैं।

दस नैरयिक जीवो के १-१ १ १ १-१-४ इत्यादि एक विकल्प के ८४ भग होते हैं। उनके द्वारा सात नरको के सप्तमयोगी एक विकल्प को गुणा करने से ८४ भग होते है। इस प्रकार सभी मिलकर दस नैरयिक जीवो के ८००८(७+१८९+१२६०+२६४०+२६४६+८८२+८४=८००८) भग होते हैं।

संख्यात नैरयिक प्रवेशनक

२१ प्रश्न-सखेज्जा भते! णेरइया णेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा० पुच्छा।

२१ उत्तर-गगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एव एएण कमेण एक्केक्को सचारेयव्वो, जाव अहवा दस रयणप्पभाए

दुयासजोगो जाव सत्तसजोगो य जहा णवण्ह, णवर एक्केक्को अ०भहिओ सचारेयव्वो, सेस त चेव । अपच्छिमआलावगो-अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

कठिन शब्दार्थ-अपच्छिमआलावगो-अन्तिम आलापक ।

भावार्थ-२० प्रश्न-हे भगवन् ! दस नैरयिक जीव, नैरयिक प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए क्या रत्नप्रभा में होते हैं, अथवा यावत् अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं ?

२० उत्तर-हे गागेय ! वे दस नैरयिक जीव, रत्नप्रभा में होते हैं अथवा यावत अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं ।

अथवा एक रत्नप्रभा में और नौ शकराप्रभा में होते हैं । इत्यादि द्विक-सयोगी, त्रिकसयोगी, चतु सयोगी, पचसयोगी, षटसयोगी और सप्तमसयोगी भग जिस प्रकार नौ नैरयिक जीवो के कहे गये है, उसी प्रकार दस नैरयिक जीवो के विषय में भी जानना चाहिये । परन्तु विशेषता यह है कि एक एक नैरयिक का अधिक सचार करना चाहिये । शेष सभी पूर्वोक्त रूप से जानना चाहिये । उनका अन्तिम भग इस प्रकार है-अथवा चार रत्नप्रभा में, एक शकराप्रभा में यावत एक अध सप्तम पृथ्वी में होता है ।

विवेचन-दस नैरयिक जीवा के असयोगी सात भग होते हैं ।

दस नैरयिक जीवो के १-६ इत्यादि द्विकसयोगी एक विकल्प के ६ भग होते ह । उनके द्वारा सात नरको के पूर्वोक्त द्विकसयोगी इक्कीस विकल्पो के साथ गुणा करने से १८६ भग होते हैं ।

दस नैरयिक जीवो के १ १ ८ इत्यादि त्रिकसयोगी एक विकल्प के ३६ भग होते हैं । उनके द्वारा सात नरका के पूर्वोक्त त्रिकसयोगी पतीस विकल्पो के साथ गुणा करने से १२६० भग होते हैं ।

दस नैरयिक जीवो के १ १ १ ७ इत्यादि चतु सयोगी एक विकल्प के ८४ भग होते

प्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएणं कमेण एक्केक्को रयणप्पभाए सचारेयव्वो; जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयण-प्पभाए एगे वालुयप्पभाए सखेज्जा पकप्पभाए होज्जा; जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो वालुयप्पभाए सखेज्जा पकप्पभाए होज्जा, एव एएणं कमेणं तियासजोगो, चउक्कसजोगो, जाव सत्तगसजोगो य जहा दसण्ह तहेव भाणियव्वो । पच्छिमो आलावगो सत्तसजो-गस्स–अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए जाव सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा ।

कठिन शब्दार्थ–कमेण–क्रम से, उवरिमपुढविहि–ऊपर की पृथ्वी के ।

भावार्थ–२१ प्रश्न–हे भगवन् ! सख्यात नैरयिक जीव, नैरयिक प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए क्या रत्नप्रभा में उत्पन्न होते है, इत्यादि प्रश्न ।

२१ उत्तर–हे गागेय ! सख्यात नैरयिक रत्नप्रभा में उत्पन्न होते हैं, अथवा यावत् अध सप्तम पृथ्वी में उत्पन्न होते है । (ये असयोगी सात भग होते है ।)

(१) अथवा एक रत्नप्रभा में होता है और सख्यात शर्कराप्रभा में होते है । (२-६) इसी प्रकार यावत् एक रत्नप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी

सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एव जाव अहवा दस रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव जहा रयणप्पभा उवरिमपुढवीहिं सम चारिया एव सक्करप्पभा वि उवरिमपुढवीहि सम चारेयव्वा, एव एक्केक्का पुढवी उवरिमपुढवीहिं सम चारेयव्वा, जाव अहवा सखेज्जा तमाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा पकप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएणं कमेण एक्केक्को सचारेयव्वो, अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, जाव अहवा दो रयण-

प्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएणं कमेण एक्केक्को रयणप्पभाए सचारेयव्वो, जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयण-प्पभाए एगे वालुयप्पभाए सखेज्जा पकप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए दो वालुयप्पभाए सखेज्जा पकप्पभाए होज्जा, एव एएणं कमेणं तियासजोगो, चउक्कसजोगो, जाव सत्तगसजोगो य जहा दसण्ह तहेव भाणियव्वो । पच्छिमो आलावगो सत्तसजो-गस्स–अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए जाव सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा ।

कठिन शब्दार्थ–कमेण–क्रम से, उवरिमपुढविहिं–ऊपर की पृथ्वी के ।

भावार्थ–२१ प्रश्न–हे भगवन् ! सख्यात नैरयिक जीव, नैरयिक प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए क्या रत्नप्रभा में उत्पन्न होते हैं, इत्यादि प्रश्न ।

२१ उत्तर–हे गागेय ! सख्यात नैरयिक रत्नप्रभा में उत्पन्न होते हैं, अथवा यावत् अध सप्तम पृथ्वी में उत्पन्न होते हैं । (ये असयोगी सात भग होते हैं ।)

(१) अथवा एक रत्नप्रभा में होता है और सख्यात शर्कराप्रभा में होते हैं । (२-६) इसी प्रकार यावत् एक रत्नप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी

में होते है। (ये छह भग होते हैं।)

(१) अथवा दो रत्नप्रभा में और सख्यात शर्कराप्रभा में होते हैं। (२-६) इस प्रकार यावत् दो रत्नप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। (ये छह भग होते हैं।)

(१) अथवा तीन रत्नप्रभा में और सख्यात शर्कराप्रभा में होते हैं। इसी प्रकार इसी क्रम से एक-एक नैरयिक का सचार करना चाहिये। अथवा यावत् दस रत्नप्रभा में और सख्यात शर्कराप्रभा में होते हैं। इस प्रकार यावत दस रत्नप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। अथवा सख्यात रत्नप्रभा में और सख्यात शर्कराप्रभा में होते हैं। इस प्रकार यावत् सख्यात रत्नप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। अथवा एक शर्कराप्रभा में और सख्यात वालुकाप्रभा में होते हैं। जिस प्रकार रत्नप्रभा पृथ्वी का शेष पृथ्वियो के साथ सयोग किया, उसी प्रकार शर्कराप्रभा पृथ्वी का भी आगे की सभी पृथ्वियो के साथ सयोग करना चाहिये। इस प्रकार एक-एक पृथ्वी का आगे की पृथ्वियों के साथ सयोग करना चाहिये। यावत् अथवा सख्यात तम प्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। (ये द्विक-सयोगी २३१ भग होते हैं।)

(१) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और सख्यात वालुका-प्रभा में होते हैं। (२) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और सख्यात पकप्रभा में होते हैं। इस प्रकार यावत् एक रत्नप्रभा में, एक शकराप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। अथवा एक रत्नप्रभा में, दो शर्करा-प्रभा में और सख्यात वालुकाप्रभा में होते हैं। अथवा एक रत्नप्रभा में, दो शकराप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। अथवा एक रत्नप्रभा में, तीन शर्कराप्रभा में और सख्यात वालुकाप्रभा में होते हैं। इस प्रकार इस क्रम से एक-एक नैरयिक का अधिक सचार करना चाहिये। अथवा एक रत्नप्रभा में, सख्यात शकराप्रभा में और सख्यात वालुकाप्रभा में होते हैं। यावत अथवा एक रत्नप्रभा में, सख्यात वालुकाप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते

है । अथवा दो रत्नप्रभा में, सख्यात शर्कराप्रभा में और सख्यात वालुकाप्रभा में होते है, यावत् अथवा दो रत्नप्रभा में, सख्यात शर्कराप्रभा में और सख्यात अध - सप्तम पृथ्वी में होते है, अथवा तीन रत्नप्रभा में, सख्यात शर्कराप्रभा में और सख्यात वालुकाप्रभा में होते है । इस क्रम से रत्नप्रभा में एक-एक नैरयिक का अधिक सचार करना चाहिये, यावत् अथवा सख्यात रत्नप्रभा में सख्यात शर्करा-प्रभा में और सख्यात वालुकाप्रभा में होते है, यावत् अथवा सख्यात रत्नप्रभा में, सख्यात शर्कराप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते है । अथवा एक रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और सख्यात पकप्रभा में होते है । यावत् अथवा एक रत्नप्रभा में, एक वालुकाप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते है । अथवा एक रत्नप्रभा में, दो वालुकाप्रभा में और सख्यात पकप्रभा में होते है । इस क्रम से त्रिक-सयोगी, चतु सयोगी यावत् सप्तसयोगी भगो का कथन, दस नैरयिक सम्बन्धी भगो के समान कहना चाहिये । (अन्तिम भग यह है–) अथवा सख्यात रत्नप्रभा में, सख्यात शर्कराप्रभा में और यावत् सख्यात अध - सप्तम पृथ्वी में होते है ।

विवेचन-यहा ग्यारह से लेकर शीर्ष प्रहेलिका तक की सख्या को–'सख्यात' कहा गया है । उसमे असयोगी सात भग होते हैं । द्विक सयोगी मे सख्याता के दो विभाग करने पर–एक और सख्यात, दो और सख्यात यावत दस और सख्यात तथा 'सख्यात और सख्यात' इस एक विकल्प के ग्यारह भग होते हैं । ये विकल्प रत्नप्रभादि पृथ्वियो के साथ आगे की पृथ्वियो का सयोग करने पर एक से लेकर सख्यात तक ग्यारह पदो का सयोग करने से और शर्कराप्रभादि पृथ्वियो के साथ केवल सख्यात पद का सयोग करने से बनते हैं । इनसे विपरीत रत्नप्रभादि पूर्व पूर्व की पृथ्वियो के साथ 'सख्यात' पद का सयोग और आगे आगे की पृथ्वियो के साथ एकादि पदो का सयोग करने से जो भग होते है, उनकी विवक्षा यहा नही की गई है अर्थात एक रत्नप्रभा मे और सख्यात शर्कराप्रभा मे होते है, एक रत्नप्रभा म और सख्यात वालुकाप्रभा मे होते है, इत्यादि भग करने चाहिय । परन्तु 'सख्यात रत्नप्रभा मे और एक शर्कराप्रभा मे, सख्यात रत्नप्रभा मे और एक वालुकाप्रभा मे होता है,'–इत्यादि भग नही करने चाहियें । क्योकि इससे पूर्व सूत्रो मे ये ही क्रम विवक्षित है । पूर्व सूत्रो मे दस आदि सख्याओ के दो भाग करके एकादि लघु सख्याओ को पहले दिया है और नौ आदि बडी

में होते है। (ये छह भग होते हैं।)

(१) अथवा दो रत्नप्रभा में और सख्यात शर्कराप्रभा में होते हैं। (२-६) इस प्रकार यावत् दो रत्नप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। (ये छह भग होते हैं।)

(१) अथवा तीन रत्नप्रभा में और सख्यात शर्कराप्रभा में होते हैं। इसी प्रकार इसी क्रम से एक-एक नैरयिक का सचार करना चाहिये। अथवा यावत् दस रत्नप्रभा में और सख्यात शर्कराप्रभा में होते हैं। इस प्रकार यावत दस रत्नप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। अथवा सख्यात रत्नप्रभा में और सख्यात शर्कराप्रभा में होते हैं। इस प्रकार यावत् सख्यात रत्नप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते है। अथवा एक शर्कराप्रभा में और सख्यात वालुकाप्रभा में होते हैं। जिस प्रकार रत्नप्रभा पृथ्वी का शेष पृथ्वियो के साथ सयोग किया, उसी प्रकार शर्कराप्रभा पृथ्वी का भी आगे की सभी पृथ्वियो के साथ सयोग करना चाहिये। इस प्रकार एक-एक पृथ्वी का आगे की पृथ्वियों के साथ सयोग करना चाहिये। यावत् अथवा सख्यात तम प्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। (ये द्विक सयोगी २३१ भग होते हैं।)

(१) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और सख्यात वालुका-प्रभा में होते हैं। (२) अथवा एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और सख्यात पकप्रभा में होते हैं। इस प्रकार यावत् एक रत्नप्रभा में, एक शर्कराप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते है। अथवा एक रत्नप्रभा में, दो शर्करा-प्रभा में और सख्यात वालुकाप्रभा में होते हैं। अथवा एक रत्नप्रभा में, दो शर्कराप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते है। अथवा एक रत्नप्रभा में, तीन शर्कराप्रभा में और सख्यात वालुकाप्रभा में होते हैं। इस प्रकार इस क्रम से एक एक नैरयिक का अधिक सचार करना चाहिये। अथवा एक रत्नप्रभा में, सख्यात शर्कराप्रभा में और सख्यात वालुकाप्रभा में होते हैं। यावत अथवा एक रत्नप्रभा में, सख्यात वालुकाप्रभा में और सख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते

होते हैं । इन इकतीस भगो द्वारा पूर्वोक्त सात नरको के चतु सयोगी पैंतीस विकल्पो को गुणा करने से चतु सयोगी १०८५ भग होते हैं ।

पहले की पाच नरको के साथ प्रथम पञ्चसयोगी भग होता है । इसमें पहले की चार नरको मे 'एक, एक, एक, एक, और पाचवी नरक में सख्यात' यह प्रथम भग होता है । इसके बाद पूर्वोक्त क्रम से चौथी नरक में अनुक्रम से दो से लेकर सख्यात पद तक का सयोग करना चाहिये । इसी प्रकार तीसरी, दूसरी और पहली नरक में भी दो से लेकर सख्यात पद तक का सयोग करना चाहिये । इस प्रकार सब मिलकर पञ्च सयोगी ४१ भग होते हैं । उनके साथ पूर्वोक्त सात नरक सम्बन्धी पञ्चसयोगी २१ पदो को गुणा करने से ८६१ भग होते हैं ।

षट्सयोग में पूर्वोक्त क्रम से ५१ भग होते हैं और उनके साथ पूर्वोक्त सात नरको के षट्सयोगी सात पदो को गुणा करने से ३५७ भग होते हैं ।

सप्तसयोग में पूर्वोक्त प्रकार से ६१ भग होते हैं । इस प्रकार सख्यात नैरयिक जीवो आश्रयी ३३३७ (७+२३१+७३५+१०८५+८६१+३५७+६१=३३३७) भग होते हैं ।

असंख्यात नैरयिक प्रवेशनक

२२ प्रश्न-असखेज्जा भते ! णेरइया णेरइयप्पवेसणएणं ० पुच्छा ।

२२ उत्तर-गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्त-माए वा होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए असखेज्जा सक्करप्प-भाए होज्जा, एव दुयासजोगो, जाव सत्तगसजोगो य जहा सखेज्जाण भणिओ तहा असखेज्जाण वि भाणियव्वो, णवर 'अस-खेज्जाओ' अब्भहिओ भाणियव्वो, सेस त चेव, जाव सत्तगसजो-

सरयाओ के पीछे दिया है अर्थात 'एक रत्नप्रभा मे और नौ शकराप्रभा मे'—इस प्रकार कहा है, परन्तु 'नौ रत्नप्रभा मे और एक शकराप्रभा मे,' आठ रत्नप्रभा मे और दो शकराप्रभा मे' इस प्रकार पहले की पृथ्वियो मे सरया को घटाते हुए और आगे की पृथ्वियो मे सख्या बढाते हुए भग नही बतलाये गये है। इस प्रकार यहा भी पहले की नरक पृथ्वियो के साथ एकादि सख्या का, और आगे आगे की नरक पथ्वियो के साथ 'सख्यात' राशि का सयोग करना चाहिये। इनमे आगे आगे की नरक पथ्वियो के साथ वाली 'सख्यात' राशि मे से एकादि सरया को कम करने पर भी 'सरयात' राशि का सख्यातपन कायम रहता है। इनमे से रत्नप्रभा के साथ एक से लेकर सरयात तक ग्यारह पदो का और शेप पृथ्वियो के साथ अनुक्रम से 'सख्यात' पद का सयोग करने से ६६ भग होते है। शकराप्रभा का शप नरक पथ्वियो के साथ सयोग करने से पाच विकल्प होते है। उन पाच विकल्पो को एकादि ग्यारह पदो से गुणा करने पर शकराप्रभा के सयोग वाले ५५ भग होते हैं। इसी प्रकार वालुका-प्रभा के सयोग वाले ४४, पकप्रभा के सयोग वाले ३३, धूमप्रभा के सयोग वाले २२ और तम प्रभा के सयोग वाले ११ भग होते है। इस प्रकार सभी मिलकर द्विकसयोगी २३१ (६६+५५+४४+३३+२२+११=२३१) भग होते है।

त्रिकसयोगी मे 'रत्नप्रभा' शकराप्रभा और वालुकाप्रभा' यह प्रथम त्रिकसयोग है और इसमे 'एक, एक और सख्यात' यह प्रथम भग है। 'पहली नरक मे एक जीव और तीसरी नरक मे सरयात जीव' इस पद को कायम रख कर दूसरी नरक मे अनुक्रम से सख्या का विन्यास किया जाता है अथात दो से लेकर दस तक की सख्या का तथा 'सख्यात' पद का योग करने से कुल ग्यारह भग होते हैं। इसके बाद दूसरी और तीसरी पथ्वी मे 'सख्यात' पद को कायम रखकर पहली पृथ्वी में दा से लेकर दस तक एव सरयात पद का सयोग करने पर दस भग होते हैं। वे सब मिलकर इक्कीस भग होते है। इन इक्कीस भगो के साथ पूर्वोक्त सात नरक के त्रिक-सयोगी पतीस पदो को गुणा करने से त्रिकसयोगी भग ७३५ हाते है।

पहले की चार नरको के साथ प्रथम चतु सयोगी भग हाता है। उसमें पहले की तीन नरको में 'एक, एक, एक और चौथी नरक में सख्यात' इस प्रकार प्रथम भग होता है। इसके वाद पूर्वोक्त क्रम से तीसरी नरक मे, दो से लेकर 'सख्यात' पद तक का सयोग करने से दूसरे दस भग वनते हैं। इसी प्रकार दूसरी नरक में और पहली नरक में भी दो से लेकर सख्यात पद तक का सयोग करने से वीस भग होते हैं। ये सब मिलकर इकत्तीस भग

अहेसत्तमाए य होज्जा; अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होज्जा, जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा; अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए धूमाए होज्जा, एवं रयण-प्पभं अमुयंतेसु जहा तिण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा । अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा, जाव अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा, एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा चउण्हं चउक्कग-संजोगो भणिओ तहा भाणियव्वं, जाव अहवा रयणप्पभाए धूम-प्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा । अहवा रयणप्पभाए सक्कर-प्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा १, अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य होज्जा २, अहवा रयण-प्पभाए जाव पंकप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा ३, अहवा रयण-प्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए य होज्जा ४, एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा पंचण्हं पंचगसंजोगो तहा भाणियव्वं, जाव अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा,

गस्स पच्छिमो आलावगो–अहवा असखेज्जा रयणप्पभाए असखेज्जा सक्करप्पभाए जाव असखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा ।

भावार्थ–२२ प्रश्न–हे भगवन् ! असख्यात नैरयिक, नैरयिक-प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए क्या रत्नप्रभा में होते हैं, इत्यादि प्रश्न ?

२२ उत्तर–हे गागेय ! रत्नप्रभा में होते हैं, अथवा यावत् अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं, अथवा एक रत्नप्रभा में और असख्यात शर्कराप्रभा में होते हैं। जिस प्रकार सख्यात नैरयिको के द्विकसयोगी यावत् सप्तसयोगी भग कहे, उसी प्रकार असख्यात के भी कहना चाहिये, परन्तु इतनी विशेषता है कि यहाँ 'असख्यात' का पद अधिक कहना चाहिये अर्थात् बारहवा 'असख्यात पद' कहना चाहिये । शेष सभी पूर्वोक्त प्रकार से जानना चाहिये, यावत् अन्तिम आलापक यह है–अथवा असख्यात रत्नप्रभा में, असख्यात शर्कराप्रभा में यावत् असख्यात अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं ।

उत्कृष्ट नैरयिक प्रवेशनक

२३ प्रश्न–उक्कोसेण भते ! णेरइया णेरइयप्पवेसणएणं ० पुच्छा ।

२३ उत्तर–गगेया ! सव्वे वि ताव रयणप्पभाए होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा, जाव अहवा रयणप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा, एव जाव अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य

तम प्रभा और अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं ।

(चतु सयोगी वीस भग) (१) अथवा रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा और पकप्रभा में होते हैं । (२) अथवा रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा और धूमप्रभा में होते हैं । यावत् (४)अथवा रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा और अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं । (५) अथवा रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, पकप्रभा और धूमप्रभा में होते हैं । रत्नप्रभा को न छोडते हुए जिस प्रकार चार नैरयिक जीवो के चतु सयोगी भग कहे है, उसी प्रकार यहाँ भी कहना चाहिये । यावत् (२०) अथवा रत्नप्रभा, धूमप्रभा, तम प्रभा और अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं ।

(पच सयोगी पन्द्रह भग) (१) अथवा रत्नप्रभा, शकराप्रभा, वालुकाप्रभा, पकप्रभा और धूमप्रभा में होते हैं । (२) अथवा रत्नप्रभा यावत् पकप्रभा और तम प्रभा में होते हैं । (३) अथवा रत्नप्रभा यावत् पकप्रभा और अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं । (४) अथवा रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, धूमप्रभा और तम प्रभा में होते हैं । रत्नप्रभा को न छोडते हुए जिस प्रकार पाँच नैरयिक जीवो के पच सयोगी भग कहे हैं, उसी प्रकार कहना चाहिये, अथवा यावत् (१५) रत्नप्रभा, पकप्रभा यावत् अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं ।

(षट्सयोगी छह भग) (१) अथवा रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, यावत् धूमप्रभा और तम प्रभा में होते हैं । (२) अथवा रत्नप्रभा, यावत् धूमप्रभा और अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं । (३) अथवा रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा यावत् पकप्रभा, तम प्रभा और अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं । (४) अथवा रत्नप्रभा, शकराप्रभा, वालुकाप्रभा, धूमप्रभा, तम प्रभा और अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं । (५) अथवा रत्नप्रभा, शकराप्रभा, पकप्रभा, यावत् अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं । (६)अथवा रत्नप्रभा, वालुकाप्रभा, यावत अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं ।

(सप्तसयोगी एक भग) (१) अथवा रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, यावत् अध - सप्तम पृथ्वी में होते हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट पद के सभी मिलकर चौसठ (१+६+१५+२०+१५+६+१=६४) भग होते हैं ।

अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव धूमप्पभाए तमाए य होज्जा १, अहवा रयणप्पभाए जाव धूमप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा २, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव पकप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा ३, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा ४, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पकप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ५, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए जाव अहेसत्तमाए होज्जा ६; अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ७ ।

कठिन शब्दार्थ--उक्कोसेण-उत्कृष्टता से, अमुयतेसु-न छोडते हुए।

भावार्थ-२३ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए नैरयिक उत्कृष्ट पद में क्या रत्नप्रभा में होते हैं, इत्यादि प्रश्न ?

२३ उत्तर-हे गागेय ! उत्कृष्ट पद में सभी नैरयिक रत्नप्रभा में होते हैं। (१) अथवा रत्नप्रभा और शकराप्रभा में होते हैं। २ अथवा रत्नप्रभा और वालुकाप्रभा में होते हैं। इस प्रकार यावत रत्नप्रभा और अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। (त्रिकसयोगी पन्द्रह विकल्प) (१) अथवा रत्नप्रभा, शकराप्रभा और वालुकाप्रभा में होते हैं। इस प्रकार यावत (५) रत्नप्रभा, शकराप्रभा और अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। (६) अथवा रत्नप्रभा, वालुकाप्रभा और पकप्रभा में होते हैं। (७-९) अथवा यावत् रत्नप्रभा, वालुकाप्रभा और अध सप्तम पृथ्वी में होते हैं। (१०) अथवा रत्नप्रभा, पकप्रभा और धूमप्रभा में होते हैं। जिस प्रकार रत्नप्रभा को न छोडते हुए तीन-नैरयिक जीवो के त्रिकसयोगी भग कहे हैं, उसी प्रकार यहाँ पर भी कहना चाहिये। यावत् (१५) अथवा रत्नप्रभा,

तिर्यंच योनिक प्रवेशनक

२५ प्रश्न–तिरिक्खजोणियपवेसणए णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

२५ उत्तर–गंगेया ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए, जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियप्पवेसणए ।

२६ प्रश्न–एगे भंते ! तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणियप्पवेसणएणं पविसमाणे किं एगिंदिएसु होज्जा, जाव पंचिंदिएसु होज्जा ?

२६ उत्तर–गंगेया ! एगिंदिएसु वा होज्जा, जाव पंचिंदिएसु वा होज्जा ।

२७ प्रश्न–दो भंते ! तिरिक्खजोणिया० पुच्छा ।

२७ उत्तर–गंगेया ! एगिंदिएसु वा होज्जा, जाव पंचिंदिएसु वा होज्जा । अहवा एगे एगिंदिएसु होज्जा एगे बेइंदिएसु होज्जा, एवं जहा णेरइयप्पवेसणए तहा तिरिक्खजोणियप्पवेसणए वि भाणियव्वे, जाव असंखेज्जा ।

२८ प्रश्न–उक्कोसा भंते ! तिरिक्खजोणिया ० पुच्छा ।

२८ उत्तर–गंगेया ! सव्वे वि ताव एगिंदिएसु होज्जा, अहवा एगिंदिएसु वा बेइंदिएसु वा होज्जा । एवं जहा णेरइया चारिया तहा तिरिक्खजोणिया वि चारेयव्वा । एगिंदिया अमुयंतेसु दुयासंजोगो, तियासंजोगो, चउक्कसंजोगो, पंचसंजोगो उवउंजिऊण

विवेचन-सख्यात प्रवेशनक के समान असख्यात प्रवेशनक का भी कथन करना चाहिये। किन्तु यहा 'असख्यात' का पद अधिक कहना चाहिये। असख्यात नैरयिक जीवो सम्बन्धी एक सयोगादि भग क्रमश इस प्रकार होते हैं-७+२५२+८०५+११६०+६४५+३९२+६७=ये सभी मिलकर ३६५८ भग होते हैं।

उत्कृष्ट प्रवेशनक के भग ऊपर बतला दिये गये है।

नैरयिक प्रवेशनक का अल्प बहुत्व

२४ प्रश्न-एयस्स णं भंते ! रयणप्पभापुढविणेरइयप्पवेसणगस्स सक्करप्पभापुढवि-जाव अहे सत्तमापुढविणेरइयप्पवेसणगस्स कयरे-कयरे जाव विसेसाहिया वा ?

२४ उत्तर-गंगेया ! सव्वत्थोवे अहेसत्तमापुढविणेरइयपवेसणए, तमापुढविणेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे, एवं पडिलोमगं जाव रयणप्पभापुढविणेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे ।

कठिन शब्दार्थ-एयस्सणं-इनमे से, पडिलोमगं-प्रतिलोम (विपरीतक्रम)।

भावार्थ-२४ प्रश्न-हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी नैरयिक-प्रवेशनक, शर्कराप्रभा पृथ्वी नैरयिक प्रवेशनक, यावत अधःसप्तम पृथ्वी नैरयिक प्रवेशनक, इनमें कौन प्रवेशनक किस प्रवेशनक से अल्प, बहुत, तुल्य या विशेषाधिक है ?

२४ उत्तर-हे गांगेय ! सब से अल्प अधःसप्तम पृथ्वी नैरयिक प्रवेशनक है, उससे तम प्रभा पृथ्वी नैरयिक प्रवेशनक असख्यात गुण हैं, इस प्रकार उलटे क्रम से यावत् रत्नप्रभा पृथ्वी नैरयिक प्रवेशनक असख्यात गुण है।

विवेचन-अधःसप्तम पृथ्वी मे जानेवाले जीव सब से थोडे हैं। उसकी अपेक्षा तम-प्रभा मे जानेवाले असख्यात गुण हैं। इस प्रकार उलटे क्रम से एक एक से आगे असख्यात गुण हैं।

नैरयिक जीवो के विषय में कहा, उसी प्रकार तिर्यंच-योनिक प्रवेशनक के विषय में भी कहना चाहिये। यावत् असख्य तिर्यंच-योनिक प्रवेशनक तक कहना चाहिये।

२८ प्रश्न-हे भगवन् ! उत्कृष्ट तिर्यंच-योनिक प्रवेशनक विषयक प्रश्न ?

२८ उत्तर-हे गागेय ! वे सभी एकेन्द्रियो में होते हैं। अथवा एकेन्द्रिय और बेइन्द्रियो में होते हैं, जिस प्रकार नैरयिक जीवो में सचार किया गया है, उसी प्रकार तिर्यंचयोनिक प्रवेशनक के विषय में भी सचार करना चाहिये। एकेन्द्रिय जीवो को न छोडते हुए द्विकसयोगी, त्रिकसयोगी, चतु सयोगी और पच-सयोगी भग उपयोगपूर्वक कहना चाहिये। यावत् अथवा एकेन्द्रिय जीवो में, बेइन्द्रियो में यावत पचेन्द्रियो में होते हैं।

२९ प्रश्न-हे भगवन् ! एकेद्रिय तिर्यंच योनिक प्रवेशनक यावत् पचेद्रिय-तिर्यंच योनिक प्रवेशनक, इनमें कौन किससे यावत विशेपाधिक है ?

२९ उत्तर-हे गागेय ! सब से थोडे पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक प्रवेशनक है, उनसे चतुरिन्द्रिय तिर्यंच योनिक प्रवेशनक विशेपाधिक है, उनसे तेइन्द्रिय तिर्यंच योनिक प्रवेशनक विशेपाधिक है, उनसे द्वीन्द्रिय तिर्यंच-योनिक प्रवेशनक विशेपाधिक है और उनसे एकेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक प्रवेशनक विशेपाधिक है।

विवेचन-एकेन्द्रिय से लेकर पचेन्द्रिय तक तिर्यंच होते हैं। उनका प्रवेशनक ऊपर बतलाया गया है।

शङ्का-ऊपर जो यह बतलाया गया है कि 'एक जीव एकेन्द्रियो मे उत्पन्न होता है,' यह कसे ? क्योकि एकेन्द्रियो मे एक जीव कदापि उत्पन्न नही होता वहा प्रति समय अनन्त जीव उत्पन्न होते ह।

समाधान-इस शका का समाधान यह है कि सबसे पहले 'प्रवेशनक' शब्द का अथ जानना आवश्यक है। उसका अथ यह है कि 'विजातीय देवादि भव से निकल कर एकेन्द्रियादि मे उत्पन्न होना - प्रवेशनक' कहलाता है। इस अपेक्षा से एक जीव भी मिल सकता है। क्योकि प्रवेशनक का यह अथ है कि विजातीय भव से आकर विजातीय भव मे उत्पन्न होना। सजातीय जीव, सजातीय मे उत्पन्न हो यह प्रवेशनक नही कहलाता। क्योकि वह तो एकेन्द्रिय जाति मे प्रविष्ट है ही। अर्थात एकेन्द्रिय मरकर एकेन्द्रिय मे उत्पन्न हो, वह

भाणियव्वो, जाव अहवा एगिंदिएसु वा, बेइंदिय० जाव पचिंदिएसु वा होज्जा ।

२९ प्रश्न–एयस्स ण भते ! एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसण-गस्स, जाव पचिंदिय तिरिक्खजोणियपवेसणगस्स य कयरे-कयरे जाव विसेसाहिया वा ?

२९ उत्तर–गगेया ! सव्वत्थोवे पचिंदियतिरिक्खजोणियप्पवे-सणए, चउरिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, तेइंदिय० विसेसाहिए, बेइंदिय० विसेसाहिए, एगिंदियतिरिक्ख० विसेसाहिए।

कठिन शब्दार्थ–उवउजिऊण–उपयोग लगाकर।

भावार्थ–२५ प्रश्न–हे भगवन् ! तिर्यंचयोनिक प्रवेशनक कितने प्रकार का कहा गया है ?

२५ उत्तर–हे गागेय ! वह पाच प्रकार का कहा गया है। यथा–एकेंद्रिय तिर्यंच-योनिक प्रवेशनक यावत् पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक प्रवेशनक ।

२६ प्रश्न–हे भगवन् ! एक तिर्यंच योनिक जीव, तिर्यंच-योनिक प्रवेश-नक द्वारा प्रवेश करता हुआ क्या एकेंद्रियो में उत्पन्न होता है, अथवा यावत पचेन्द्रियो में उत्पन्न होता है ?

२६ उत्तर–हे गागेय ! एक तिर्यंच-योनिक जीव, एकेन्द्रियो में उत्पन्न होता है, अथवा यावत पचेन्द्रियों में उत्पन्न होता है ।

२७ प्रश्न–हे भगवन ! दो तिर्यंच-योनिक जीव, तिर्यंच-योनिक प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए क्या एकेन्द्रियो में उत्पन्न होते है, इत्यादि प्रश्न ?

२७ उत्तर–हे गागेय ! एकेन्द्रियो में होते है अथवा यावत पचेन्द्रियो में होते है । अथवा एक एकेन्द्रिय में और एक बेइन्द्रिय में होता है । जिस प्रकार

एगे गब्भवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा, एव एएणं कमेणं जहा णेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणए वि भाणियव्वे, जाव दस।

३३ प्रश्न–सखेज्जा भंते ! मणुस्सा० पुच्छा।

३३ उत्तर–गगेया ! समुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा। अहवा एगे समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा सखेज्जा गब्भवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा, अहवा दो समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा सखेज्जा गब्भवक्कतिय मणुस्सेसु होज्जा, एव एक्केक्क उस्सारितेसु जाव अहवा सखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा सखेज्जा गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा।

३४ प्रश्न–असखेज्जा भंते ! मणुस्सा ० पुच्छा।

३४ उत्तर–गगेया ! सव्वे वि ताव समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा। अहवा असखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु, एगे गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा असखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु दो गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, एव जाव असखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा सखेज्जा गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा।

३५ प्रश्न–उक्कोसा भंते ! मणुस्सा ० पुच्छा।

३५ उत्तर–गगेया ! सव्वे वि ताव समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा अहवा समुच्छिममणुस्सेसु य गब्भवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा।

प्रवेशनक की गणना मे नही आता, जो अनन्त उत्पन्न होते हैं, वे तो एकेन्द्रिय मे से ही हैं।

एक जीव अनुक्रम से एकेन्द्रियादि पाच स्थानो मे उत्पन्न हो, तब उसके पाच भग होते है। दो जीव भी एक एक स्थल मे साथ उत्पन्न हो, तो पाच ही भग होते हैं और द्विक-सयोगी दस भग होते है। तीन से लेकर असख्यात तियच योनिक जीवो का प्रवेशनक नैरयिक प्रवेशनक के समान जानना चाहिये, परन्तु नैरयिक जीव, सात नरक पृथ्वियो मे उत्पन्न होते हैं और तिर्यंच जीव, एकेन्द्रियादि पाच स्थानो मे उत्पन्न होते हैं। इसलिये भगो की सख्या में भिन्नता है, वह बुद्धिमानो को स्वय विचार कर जान लेनी चाहिये।

यद्यपि अनन्त एकेन्द्रिय जीव उत्पन्न होते हैं, परन्तु ऊपर बतलाया हुआ प्रवेशनक का लक्षण असख्यात जीवो में ही घटित हो सकता है। इसलिये असख्यात तक ही प्रवेशनक कहा गया है।

मनुष्य प्रवेशनक

३० प्रश्न–मणुस्सप्पवेसणए णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

३० उत्तर–गंगेया ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा–समुच्छिममणुस्सप्पवेसणए, गब्भवक्कतियमणुस्सप्पवेसणए य।

३१ प्रश्न–एगे भंते ! मणुस्से मणुस्सप्पवेसणएणं पविसमाणे किं समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा, गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा ?

३१ उत्तर–गंगेया ! समुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा।

३२ प्रश्न–दो भंते ! मणुस्स० पुच्छा।

३२ उत्तर–गंगेया ! समुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा। अहवा एगे समुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा

मनुष्यो में होते है। अथवा एक सम्मूच्छिम मनुष्यो में होता है और सख्यात गर्भज मनुष्यो में होते हैं। अथवा दो सम्मूच्छिम मनुष्यो में होते है और सख्यात गर्भज मनुष्यो में होते है। इस प्रकार एक-एक बढाते हुए यावत् अथवा सख्यात सम्मूच्छिम मनुष्यो में और सख्यात गर्भज मनुष्यो में होते है।

३४ प्रश्न–हे भगवन ! असख्यात मनुष्य, मनुष्य-प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करने के सम्बन्ध में प्रश्न।

३४ उत्तर–हे गागेय ! वे सभी सम्मूच्छिम मनुष्यो में होते है। अथवा असख्यात सम्मूच्छिम मनुष्यो में होते है और एक गर्भज मनुष्यो में होता है। अथवा असख्यात सम्मूच्छिम मनुष्यो में होते है और दो गर्भज मनुष्यो में होते है। अथवा इस प्रकार यावत् असख्यात सम्मूच्छिम मनुष्यो में होते है और सख्यात गर्भज मनुष्यो में होते है।

३५ प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य, उत्कृष्ट रूप से किस प्रवेशनक में होते है ? इत्यादि प्रश्न।

३५ उत्तर–हे गागेय ! वे सभी सम्मूच्छिम मनुष्यो में होते है। अथवा सम्मूच्छिम मनुष्यो में और गर्भज मनुष्यो में होते है।

३६ प्रश्न–हे भगवन् ! सम्मूच्छिम मनुष्य प्रवेशनक और गर्भज मनुष्य प्रवेशनक, इनमें कौन प्रवेशनक किस प्रवेशनक से यावत् विशेषाधिक है।

३६ उत्तर–हे गागेय ! सब से अल्प गर्भज मनुष्य प्रवेशनक है, उससे सम्मूच्छिम मनुष्य-प्रवेशनक असख्यात गुण है।

विवेचन–मनुष्य प्रवेशनक मे दो स्थान हैं। यथा–सम्मूच्छिम मनुष्य प्रवेशनक और गभज मनुष्य प्रवेशनक। इन दोनो की अपेक्षा एक से लेकर सख्यात तक विकल्प पूववत समझना चाहिये। सख्यात पद मे द्विक सयोग मे पूववत ग्यारह विकल्प होते हैं। असख्यात पद मे पहले बारह विकल्प बतलाये गये हैं किन्तु यहा ग्यारह विकल्प ही होते हैं। क्योकि यदि सम्मूच्छिम मनुष्या मे असख्यातपन और गभजमनुष्यो मे भी असख्यातपन हो, तभी बारहवा विकल्प बन सकता है किन्तु यह सगत नही। क्योकि गभज मनुष्य असख्यात नही हैं अतएव उनके प्रवेशनक मे असख्यातपन नही हो सकता। अत असख्यात पद मे भी

३६ प्रश्न-एयस्स णं भंते ! समुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स गब्भवक्कंतियमणुस्स-पवेसणगस्स य कयरे कयरे-जाव विसेसाहिया ?

३६ उत्तर-गंगेया ! सव्वत्थोवे गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए, समुच्छिममणुस्सप्पवेसणए असंखेज्जगुणे ।

कठिन शब्दार्थ-उस्सारितेसु-बढाते हुए ।

भावार्थ-३० प्रश्न-हे भगवन् ! मनुष्य-प्रवेशनक कितने प्रकार का कहा गया है ?

३० उत्तर-हे गांगेय ! दो प्रकार का कहा गया है । यथा-सम्मूच्छिम मनुष्य-प्रवेशनक और गर्भज मनुष्य प्रवेशनक ।

३१ प्रश्न-हे भगवन् ! मनुष्य प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करता हुआ एक मनुष्य क्या सम्मूर्च्छिम मनुष्यों में उत्पन्न होता है, या गर्भज मनुष्यों में उत्पन्न होता है ?

३१ उत्तर-हे गांगेय ! वह सम्मूच्छिम मनुष्यों में उत्पन्न होता है, अथवा गर्भज मनुष्यों में उत्पन्न होता है ।

३२ प्रश्न-हे भगवन् ! दो मनुष्य, मनुष्य-प्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए क्या सम्मूर्च्छिम मनुष्यों में उत्पन्न होते हैं, इत्यादि प्रश्न ।

३२ उत्तर-हे गांगेय ! दो मनुष्य, सम्मूर्च्छिम मनुष्यों में होते हैं, अथवा गर्भज मनुष्यों में होते हैं । अथवा एक सम्मूर्च्छिम मनुष्यों में और एक गर्भज मनुष्यों में होता है । इस क्रम से जिस प्रकार नैरयिक प्रवेशन कहा, उसी प्रकार मनुष्य प्रवेशनक भी कहना चाहिये । यावत् दस मनुष्यों तक कहना चाहिये ।

३३ प्रश्न-हे भगवन् ! संख्यात मनुष्य, मनुष्यप्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए, इत्यादि प्रश्न ।

३३ उत्तर-हे गांगेय ! वे सम्मूर्च्छिम मनुष्यों में होते हैं, अथवा गर्भज

४० उत्तर–गंगेया ! सव्वे वि ताव जोइसिएसु होज्जा, अहवा जोइसिय-भवणवासिसु य होज्जा, अहवा जोइसिय-वाणमंतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिय-वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासिसु य वाणमंतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासिसु य वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा अहवा जोइसिएसु य भवणवासिसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा ।

४१ प्रश्न–एयस्स णं भंते ! भवणवासिदेवपवेसणगस्स, वाणमंतरदेवपवेसणगस्स, जोइसियदेवपवेसणगस्स, वेमाणियदेवपवेसणगस्स य कयरे कयरे–जाव विसेसाहिया वा ?

४१ उत्तर–गंगेया ! सव्वत्थोवे वेमाणियदेवपवेसणए, भवणवासिदेवपवेसणए असंखेज्जगुणे, वाणमंतरदेवपवेसणए असंखेज्जगुणे, जोइसियदेवपवेसणए संखेज्जगुणे ।

कठिन शब्दार्थ–कयरे कयरे–कौन किससे ।

भावार्थ–३७ प्रश्न–हे भगवन् ! देव प्रवेशनक कितने प्रकार का कहा गया है ?

३७ उत्तर–हे गांगेय ! चार प्रकार का कहा गया है । यथा–भवनवासी देव-प्रवेशनक, वाणव्यन्तर देव प्रवेशनक, ज्योतिषि देव प्रवेशनक और वैमानिक देव-प्रवेशनक ।

३८ प्रश्न–हे भगवन् ! एक देव, देवप्रवेशनक द्वारा प्रवेश करता हुआ क्या भवनवासी देवों में होता है, वाणव्यन्तर देवों में होता है, ज्योतिषी देवों

ग्यारह विकल्प ही होते हैं ।

उत्कृष्ट पद मे सम्मूच्छिम मनुष्य प्रवेशनक कहा गया है। क्योकि सम्मूच्छिम मनुष्य ही असख्यात है, इसलिये उनका प्रवेशनक भी असख्यात हो सकता है । अतएव अल्प बहुत्व मे भी गभज मनुष्य प्रवेशनक से सम्मूच्छिम मनुष्य प्रवेशनक असख्यात गुण बतलाया गया है ।

देव प्रवेशनक

३७ प्रश्न—देवपवेसणए ण भते ! कइविहे पण्णत्ते ?

३७ उत्तर—गगेया ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—भवणवासि-देवपवेसणए, जाव वेमाणियदेवपवेसणए ।

३८ प्रश्न—एगे भते ! देवे देवपवेसणएण पविसमाणे किं भवण-वासीसु होज्जा, वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएसु होज्जा ?

३८ उत्तर—गगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमतर-जोइ-सिय-वेमाणिएसु वा होज्जा ।

३९ प्रश्न—दो भते ! देवा देवपवेसणएणं० पुच्छा ।

३९ उत्तर—गगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमतर-जोइ-सिय-वेमाणिएसु वा होज्जा। अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाण-मतरेसु होज्जा, एव जहा तिरिक्खजोणियपवेसणए तहा देवपवेसणए वि भाणियव्वे, जाव असखेज्ज त्ति ।

४० प्रश्न—उक्कोसा भते ! पुच्छा ।

वैमानिक देव सबसे थोडे हैं और उनमें जाने वाले जीव भी सब से थोडे हैं, इसीलिये अल्प बहुत्व में यह कहा गया है कि वैमानिक देव प्रवेशनक सबसे अल्प हैं।

प्रवेशनको का अल्प-बहुत्व

४२ प्रश्न-एयस्स णं भंते ! णेरइयपवेसणगस्स तिरिक्खजोणिय० मणुस्स० देवपवेसणगस्स य कयरे कयरे-जाव विसेसाहिए वा ?

४२ उत्तर-गंगेया ! सव्वत्थोवे मणुस्सपवेसणए, णेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे, देवपवेसणए असंखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियप्पवेसणए असंखेज्जगुणे।

भावार्थ-४२ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेशनक, तिर्यंचयोनिकप्रवेशनक, मनुष्यप्रवेशनक और देव प्रवेशनक, इनमें कौन प्रवेशनक, किस प्रवेशनक से यावत् विशेषाधिक है ?

४२ उत्तर-हे गांगेय ! सबसे अल्प मनुष्य प्रवेशनक है, उससे नैरयिकप्रवेशनक असंख्यात गुण है, उससे देव प्रवेशनक असंख्यात गुण है और उससे तिर्यंचयोनिक प्रवेशनक असंख्यात गुण है।

विवेचन-मनुष्य, मनुष्य क्षेत्र मे ही होते हैं। इसलिये मनुष्य प्रवेशनक सबसे अल्प है क्योंकि मनुष्य क्षेत्र अल्प है। उससे नैरयिक-प्रवेशनक असंख्यात गुण हैं, क्योंकि नरक मे जाने वाले जीव असंख्यात गुण हैं, इसी प्रकार देव प्रवेशनक और तिर्यंचयोनिक प्रवेशनक के विषय मे भी समझना चाहिये।

में होता है, अथवा वैमानिक देवो में होता है ?

३८ उत्तर-हे गागेय ! वह भवनवासी देवो में होता है, अथवा वाण व्यन्तर देवो में, अथवा ज्योतिषी देवो में, अथवा वैमानिक देवो में होता है ।

३९ प्रश्न-हे भगवन् ! दो देव, देवप्रवेशनक द्वारा प्रवेश करते हुए-इत्यादि प्रश्न ।

३९ उत्तर-हे गागेय ! वे दो देव, भवनवासी देवो में होते है, अथवा वाणव्यन्तर देवो में होते है, अथवा ज्योतिषी देवो में होते है, अथवा वैमानिक देवो में होते है । अथवा एक भवनवासी देवो में होता है और एक वाणव्यन्तर देवो में होता है । जिस प्रकार तिर्यंच-योनिक प्रवेशनक कहा, उसी प्रकार देव-प्रवेशनक भी कहना चाहिये । यावत् असख्यात देव प्रवेशनक तक कहना चाहिये ।

४० प्रश्न-हे भगवन ! देव उत्कृष्टपने किस प्रवेशनक में होते है, इत्यादि प्रश्न ।

४० उत्तर-हे गागेय ! वे सभी ज्योतिषी देवो में होते है, अथवा ज्योतिषी और भवनवासी देवो में होते है, अथवा ज्योतिषी और वाणव्यन्तर देवो में होते है, अथवा ज्योतिषी और वैमानिक देवो में होते है, अथवा ज्योतिषी, भवनवासी और वाणव्यन्तर देवो में होते है, अथवा ज्योतिषी, भवनवासी और वैमानिक देवो में होते है, अथवा ज्योतिषी, वाणव्यन्तर और वैमानिक देवो में होते है । अथवा ज्योतिषी, भवनवासी, वाणव्यन्तर और वैमानिक देवो में होते ह ।

४१ प्रश्न-हे भगवन ! भवनवासी देवप्रवेशनक, वाणव्यन्तर देव-प्रवेशनक, ज्योतिषि-देवप्रवेशनक और वैमानिक देव-प्रवेशनक, इनमें कौन प्रवेशनक किस प्रवेशनक से यावत विशेषाधिक है ?

४१ उत्तर-हे गागेय ! वैमानिक देव प्रवेशनक सबसे अल्प है, उससे भवनवासी देव-प्रवेशनक असख्यात गुण है, उससे वाणव्यन्तर देव प्रवेशनक असख्यात गुण है, और उससे ज्योतिषि-देवप्रवेशनक सख्यातगुण है ।

विवेचन-ज्योतिषी देवो में जाने वाले जीव बहुत होते हैं । इसलिये उत्कृष्ट पद में कहा गया है कि वे सभी ज्योतिषी देवा में होते हैं ।

चयति ।

कठिन शब्दार्थ-सतर-सान्तर-अतर-व्यवधान सहित, चयति-च्यवते-नीचे गिरते (मरकर नीचे आते) ।

भावार्थ-४३ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक सान्तर (अन्तर सहित) उत्पन्न होते है अथवा निरन्तर उत्पन्न होते है, असुरकुमार सान्तर उत्पन्न होते है अथवा निरन्तर, यावत् वैमानिक देव सान्तर उत्पन्न होते है, या निरन्तर । नैरयिक सान्तर उद्वतते है, या निरन्तर, यावत् वाणव्यन्तर सान्तर उद्वतते है, या निरन्तर । ज्योतिषी देव सान्तर चवते है, या निरन्तर । वैमानिक देव सान्तर चवते है या निरन्तर ?

४३ उत्तर-हे गागेय ! नैरयिक सान्तर भी उत्पन्न होते है और निरन्तर भी, यावत स्तनितकुमार सान्तर भी उत्पन्न होते है और निरन्तर भी उत्पन्न होते है । पृथ्वीकायिक सान्तर उत्पन्न नहीं होते, परन्तु निरन्तर उत्पन्न होते है । इसी प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक जीव सातर उत्पन्न नही होते, निरन्तर उत्पन्न होते है । शेष सभी जीव, नैरयिक जीवो के समान सान्तर भी उत्पन्न होते है और निरन्तर भी, यावत वैमानिक देव सान्तर भी उत्पन्न होते है और निरन्तर भी । नैरयिक जीव सान्तर भी उद्वतते है और निरन्तर भी । इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमारो तक कहना चाहिये । पृथ्वीकायिक जीव, सातर नहीं उद्वतते, निरन्तर उद्वतते है। इसी प्रकार यावत वनस्पतिकायिक जीवो तक कहना चाहिये । शेष सभी जीवो का कथन नैरयिको के समान जानना चाहिये । किंतु इतनी विशेषता है कि 'ज्योतिषी और वैमानिक देव चवते है'-ऐसा पाठ कहना चाहिये, यावत् वैमानिक देव सातर भी चवते है और निरन्तर भी चवते है ।

४४ प्रश्न-सओ भते ! णेरइया उववज्जति, असओ भते ! णेरइया उववज्जति ?

सान्तरादि उत्पाद और उद्वर्तन

४३ प्रश्न–सतर भते ! णेरइया उववज्जति णिरतर णेरइया उववज्जति, सतर असुरकुमारा उववज्जति णिरतर असुरकुमारा उववज्जति, जाव सतर वेमाणिया उववज्जति णिरतर वेमाणिया उववज्जति, सतर णेरइया उव्वट्टति णिरतर णेरइया उव्वट्टति, जाव सतर वाणमतरा उव्वट्टति णिरतर वाणमतरा उव्वट्टति, सतर जोइसिया चयति णिरतर जोइसिया चयति, सतर वेमाणिया चयति णिरतर वेमाणिया चयति ?

४३ उत्तर–गगेया ! सतर पि णेरइया उववज्जति णिरतर पि णेरइया उववज्जति, जाव सतर पि थणियकुमारा उववज्जति णिरतर पि थणियकुमारा उववज्जति, णो सतर पुढविक्काइया उववज्जति णिरतर पुढविक्काइया उववज्जति, एव जाव वणस्सइकाइया, सेसा जहा णेरइया, जाव सतर पि वेमाणिया उववज्जति णिरतर पि वेमाणिया उववज्जति, सतर पि णेरइया उव्वट्टति णिरतर पि णेरइया उव्वट्टति, एव जाव थणियकुमारा। णो सतर पुढविक्काइया उव्वट्टति णिरतर पुढविक्काइया उव्वट्टति, एव जाव वणस्सइकाइया, सेसा जहा णेरइया, णवर जोइसिय-वेमाणिया चयति अभिलावो, जाव सतर पि वेमाणिया चयति णिरतर पि वेमाणिया

णो असओ णेरइया उववज्जंति, जाव सओ वेमाणिया चयंति, णो असओ वेमाणिया चयंति ।

उत्तर-से णूणं गंगेया ! पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं सासए लोए वुइए अणाईए अणवयग्गे, जहा पंचमसए, जाव 'जे लोक्कइ से लोए,' से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ-जाव सओ वेमाणिया चयंति, णो असओ वेमाणिया चयंति ।

कठिन शब्दार्थ-सतो-सद (विद्यमान), सासए-शाश्वत, वुइए-कहा है, अणवयग्गे-अनन्त (अन्त रहित) ।

भावार्थ-४४ प्रश्न-हे भगवन् ! सत् (विद्यमान) नैरयिक उत्पन्न होते हैं, या असत् (अविद्यमान) नैरयिक उत्पन्न होते हैं ?

४४ उत्तर-हे गांगेय ! सत् नैरयिक उत्पन्न होते हैं, असत् नैरयिक उत्पन्न नहीं होते । इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिये ।

४५ प्रश्न-हे भगवन् ! सत नैरयिक उद्वतते है, या असत् नैरयिक ?

४५ उत्तर-हे गांगेय ! सत् नैरयिक उद्वतते हैं, असत् नैरयिक नहीं उद्वतते । इसी प्रकार यावत् वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिये, परन्तु इतनी विशेषता है कि 'ज्योतिषी और वैमानिक देव चवते हैं'-ऐसा कहना चाहिए ।

४६ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीव, सत् नैरयिकों में उत्पन्न होते हैं, या असत् नैरयिको में । असुरकुमार देव, सत् असुरकुमार देवो में उत्पन्न होते हैं, या असत् असुरकुमार देवो में, इसी प्रकार यावत् सत वैमानिको में उत्पन्न होते है, या असत वैमानिको में । सत् नैरयिको में से उद्वतते है, या असत् नैरयिको में से । सत असुरकुमारो में से उद्वतते हैं, या असत् असुरकुमारो में से । इसी प्रकार यावत सत् वैमानिको में से चवते हैं, या असत वैमानिको में से ?

४६ उत्तर-हे गांगेय ! नैरयिक जीव, सत् नैरयिको में उत्पन्न होते हैं, परन्तु असत् नैरयिको में उत्पन्न नहीं होते । सत् असुरकुमारो में उत्पन्न होते हैं,

४४ उत्तर-गगेया ! सन्नो णेरइया उववज्जति, णो असन्नो णेरइया उववज्जति, एव जाव वेमाणिया ।

४५ प्रश्न-सन्नो भते ! णेरइया उव्वट्टति, असन्नो णेरइया उव्वट्टति ?

४५ उत्तर-गगेया ! सन्नो णेरइया उव्वट्टति, णो असन्नो णेरइया उव्वट्टति, एव जाव वेमाणिया, णवर जोइसिय वेमणिएसु चयति भाणियव्व ।

४६ प्रश्न-सन्नो भते ! णेरइया उववज्जति, असन्नो भते ! णेरइया उववज्जति, सन्नो असुरकुमारा उववज्जति, जाव सन्नो वेमाणिया उववज्जति, असन्नो वेमाणिया उववज्जति । सन्नो णेरइया उव्वट्टति, असन्नो णेरइया उव्वट्टति, सन्नो असुरकुमारा उव्वट्टति, जाव सन्नो वेमाणिया चयति, असन्नो वेमाणिया चयति ?

४६ उत्तर-गगेया ! सन्नो णेरइया उववज्जति, णो असन्नो णेरइया उववज्जति, सन्नो असुरकुमारा उववज्जति, णो असन्नो असुरकुमारा उववज्जति, जाव सन्नो वेमाणिया उववज्जति, णो असन्नो वेमाणिया उववज्जति, सन्नो णेरइया उवट्टति, णो असन्नो णेरइया उवट्टति, जाव सन्नो वेमाणिया चयति, णो असन्नो वेमाणिया चयति ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ-सन्नो णेरइया उववज्जति,

प्रश्न–से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ–त चेव, जाव 'णो असओ वेमाणिया चयति ?

उत्तर–गंगेया ! केवली णं पुरत्थिमेण मिय पि जाणइ, अमिय पि जाणइ, दाहिणेण एव जहा सद्दुद्देसए, जाव णिव्वुडे णाणे केवलिस्स, से तेणट्ठेण गंगेया ! एव वुच्चइ 'त चेव जाव णो असओ वेमाणिया चयति' ।

कठिन शब्दार्थ–सय–खुद, अमिय–अपरिमित (नि सीम=जिस की कोई सीमा नही) णिव्वुडे–निवृत्त हुए ।

भावार्थ–४७ प्रश्न–हे भगवन् ! आप स्वय इस प्रकार जानते हैं, अथवा अस्वय जानते हैं, विना सुने ही इस प्रकार जानते हैं अथवा सुनकर जानते हैं कि 'सत् नैरयिक उत्पन्न होते हैं, असत् नैरयिक नहीं, यावत् सत् वैमानिको से चवते हैं, असत् वैमानिको से नहीं ?'

४७ उत्तर–हे गागेय ! ये सभी बाते मैं स्वय जानता हूँ, अस्वय नहीं, विना सुने ही जानता हूँ, सुनकर ऐसा नहीं जानता कि 'सत् नैरयिक उत्पन्न होते हैं, असत् नैरयिक नहीं, यावत सत् वैमानिको से चवते हैं, असत् वैमानिको से नहीं ।"

प्रश्न–हे भगवन् ! ऐसा कहने का क्या कारण है कि 'मैं स्वय जानता हूँ,' इत्यादि पूर्वोक्त यावत सत वैमानिको से चवते हैं, असत वैमानिको से नहीं ?

उत्तर–हे गागेय ! केवलज्ञानी पूर्व में मित (मर्यादित) भी जानते हैं और अमित (अमर्यादित) भी जानते हैं, इसी प्रकार दक्षिण में भी जानते हैं । इस प्रकार शब्द उद्देशक (छठे शतक के चौथे उद्देशक) में कहे अनुसार जानना चाहिये । यावत् केवली का ज्ञान निरावरण होता है । इसलिए हे गागेय ! इस

असत् असुरकुमारो में नहीं। इसी प्रकार यावत् सत् वैमानिको में उत्पन्न होते हैं, असत् वैमानिको में नहीं। सत् नैरयिको में से उद्वर्तते है, असत नैरयिको में से नही, यावत् सत् वैमानिको में से चवते है, असत् वैमानिको में से नहीं।

प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसा किस कारण से कहते हैं कि सत् नैरयिको में उत्पन्न होते है, असत् नैरयिको में नही, इसी प्रकार यावत् सत् वैमानिको से चवते हैं, असत् वैमानिको से नहीं ?

उत्तर-हे गांगेय ! पुरुषादानीय अरिहन्त श्री पार्श्वनाथ ने 'लोक को शाश्वत, अनादि और अनन्त कहा है।' इत्यादि पांचवे शतक के नौवे उद्देशक में कहे अनुसार जानना चाहिये। यावत् "जो अवलोकन किया जाय, उसे 'लोक' कहते है," इस कारण हे गांगेय ! ऐसा कहा गया है कि यावत् सत् वैमानिको से चवते है, असत् वैमानिको से नहीं।

केवली सर्वज्ञ होते है

४७ प्रश्न-सयं भंते ! एवं जाणह, उदाहु असयं, असोच्चा एए एवं जाणह, उदाहु सोच्चा, सओ णेरइया उववज्जंति, णो असओ णेरइया उववज्जंति, जाव सओ वेमाणिया चयंति णो असओ वेमाणिया चयंति ?

४७ उत्तर-गंगेया ! सयं एए एवं जाणामि, णो असयं, असोच्चा एए एवं जाणामि, णो सोच्चा सओ णेरइया उववज्जंति, णो असओ णेरइया उववज्जंति, जाव सओ वेमाणिया चयंति, णो असओ वेमाणिया चयंति।

प्रश्न–से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–तं चेव, जाव 'णो असओ वेमाणिया चयंति ?

उत्तर–गंगेया ! केवली णं पुरत्थिमेणं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ, दाहिणेणं एवं जहा सद्दुद्देसए, जाव णिव्वुडे णाणे केवलिस्स, से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ 'तं चेव जाव णो असओ वेमाणिया चयंति' ।

कठिन शब्दार्थ–सयं-खुद, अमियं–अपरिमित (निःसीम=जिस की कोई सीमा नहीं) णिव्वुडे-निवृत्त हुए ।

भावार्थ–४७ प्रश्न–हे भगवन् ! आप स्वयं इस प्रकार जानते हैं, अथवा अस्वयं जानते हैं, बिना सुने ही इस प्रकार जानते हैं अथवा सुनकर जानते हैं कि 'सत् नैरयिक उत्पन्न होते हैं, असत् नैरयिक नहीं, यावत् सत् वैमानिकों से चवते हैं, असत् वैमानिकों से नहीं ?'

४७ उत्तर–हे गांगेय ! ये सभी बातें मैं स्वयं जानता हूँ, अस्वयं नहीं, बिना सुने ही जानता हूँ, सुनकर ऐसा नहीं जानता कि 'सत् नैरयिक उत्पन्न होते हैं, असत् नैरयिक नहीं, यावत् सत् वैमानिकों से चवते हैं, असत् वैमानिकों से नहीं ।"

प्रश्न–हे भगवन् ! ऐसा कहने का क्या कारण है कि 'मैं स्वयं जानता हूँ,' इत्यादि पूर्वोक्त यावत सत वैमानिकों से चवते हैं, असत वैमानिकों से नहीं ?

उत्तर–हे गांगेय ! केवलज्ञानी पूर्व में मित (मर्यादित) भी जानते हैं और अमित (अमर्यादित) भी जानते हैं, इसी प्रकार दक्षिण में भी जानते हैं । इस प्रकार शब्द उद्देशक (छठे शतक के चौथे उद्देशक) में कहे अनुसार जानना चाहिये । यावत् केवली का ज्ञान निरावरण होता है । इसलिए हे गांगेय ! इस

कारण मैं कहता हूँ कि 'मैं स्वय जानता हूँ । इत्यादि यावत असत् वैमानिको से नहीं चवते ।'

स्वयं उत्पन्न होते है

४८ प्रश्न-सय भते ! णेरइया णेरइएसु उववज्जति, असय णेरइया णेरइएसु उववज्जति ?

४८ उत्तर-गगेया ! सय णेरइया णेरइएसु उववज्जति, णो असय णेरइया णेरइएसु उववज्जति ।

प्रश्न-से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ-जाव उववज्जति ?

उत्तर-गगेया ! कम्मोदएण, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसभारियत्ताए, असुभाण कम्माण उदएण, असुभाण कम्माण विवागेण, असुभाण कम्माण फलविवागेण सय णेरइया णेरइएसु उववज्जति, णो असय णेरइया णेरइएसु उववज्जति, से तेणट्ठेण गगेया ! जाव उववज्जति ।

४९ प्रश्न-सय भते ! असुरकुमारा० पुच्छा ?

४९ उत्तर-गगेया ! सय असुरकुमारा जाव उववज्जति, णो असय असुरकुमारा जाव उववज्जति ।

प्रश्न-से केणट्ठेण त चेव जाव उववज्जति ?

उत्तर-गगेया ! कम्मोदएण, कम्मोवसमेण, कम्मविगईए, कम्मविसोहीए, कम्मविसुद्धीए, सुभाण कम्माण उदएण, सुभाण कम्माण विवागेण, सुभाण कम्माण फलविवागेण सय असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए उववज्जति णो असय असुरकुमार जाव उववज्जति, से तेणट्ठेण जाव उववज्जति, एव जाव थणियकुमारा ।

५० प्रश्न-सय भते ! पुढविक्काइया० पुच्छा ?

५० उत्तर-गगेया ! सय पुढविक्काइया जाव उववज्जति, णो असय पुढविक्काइया जाव उववज्जति ।

प्रश्न-से केणट्ठेण जाव उववज्जति ?

उत्तर-गगेया ! कम्मोदएण, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसभारियत्ताए सुभा-सुभाण कम्माण उदएण, सुभा-सुभाणं कम्माण विवागेणं, सुभा-सुभाण कम्माणं फलविवागेणं सय पुढविक्काइया जाव उववज्जति, णो असय पुढविक्काइया जाव उववज्जति, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जति । एव जाव मणुस्सा । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा । से तेणट्ठेण गगेया ! एव वुच्चई-सय वेमाणिया जाव उववज्जति, णो असय जाव उववज्जति ।

कठिन शब्दार्थ-कम्मोदएण-कर्मोदय से कम्मगुरुयत्ताए-कर्म की गुरुता से, विवागेण-विपाक से, कम्मोवसमेण-कर्मउपशात होने पर, कम्मविगइए-कर्म के अभाव से ।

भावार्थ-४८ प्रश्न-हे भगवन् ! क्या नैरयिक, नैरयिको में स्वय उत्पन्न होते है, या अस्वय उत्पन्न होते है ?

४८ उत्तर-हे गागेय ! नैरयिक नैरयिको, में स्वय उत्पन्न होते हे, अस्वय उत्पन्न नहीं होते।

प्रश्न-हे भगवन ! ऐसा क्यो कहते हे ?

उत्तर-हे गागेय ! कम के उदय से, कम के गुरुपन से, कर्म के भारी-पन से, कर्मो के अत्यन्त गुरुत्व और भारीपन से, अशुभ कर्मों के उदय से, अशुभ कर्मो के विपाक से और अशुभ कर्मो के फल विपाक से नैरयिक, नैरयिको में स्वय उत्पन्न होते हे, अस्वय नहीं होते। इस कारण हे गागेय ! यह कहा गया है कि नैरयिक, नैरयिको में स्वय उत्पन्न होते है, अस्वय उत्पन्न नही होते।

४९ प्रश्न-हे भगवन् ! क्या असुरकुमार, असुरकुमारो में स्वय उत्पन्न होते है, या अस्वय ?

४९ उत्तर-हे गागेय ! असुरकुमार, असुरकुमारो में स्वय उत्पन्न होते है, अस्वय उत्पन्न नहीं होते।

प्रश्न-हे भगवन् ! ऐसा कहने का क्या कारण है ?

उत्तर-हे गागेय ! कम के उदय से, अशुभ कम के उपशम से, अशुभ कम के अभाव से, कम की विशोधि से, कर्मो की विशुद्धि से, शुभ कर्मो के उदय से, शुभ कर्मो के विपाक से और शुभ कर्मों के फल विपाक से असुरकुमार असुरकुमारो में स्वय उत्पन्न होते है, अस्वय उत्पन्न नही होते। इसलिये हे गागेय ! पूर्वोक्त-रूप से कहा गया है। इसी प्रकार यावत स्तनितकुमारो तक जानना चाहिये।

५० प्रश्न-हे भगवन् ! क्या पृथ्वीकायिक, पृथ्वीकायिको में स्वय उत्पन्न होते है, या अस्वय उत्पन्न होते है ?

५० उत्तर-हे गागेय ! पृथ्वीकायिक, पृथ्वीकायिको में स्वय उत्पन्न होते है, अस्वय उत्पन्न नहीं होते।

प्रश्न-हे भगवन ! ऐसा किस कारण कहते ह, कि 'पृथ्वीकायिक स्वय उत्पन्न होते है,' इत्यादि।

उत्तर–हे गागेय ! कम के उदय से, कर्म के गुरुपन से, कर्म के भारीपन से, कम के अत्यन्त गुरुत्व और भारीपन से, शुभ और अशुभ कर्मों के उदय से, शुभ और अशुभ कर्मो के विपाक से और शुभाशुभ कर्मो के फल विपाक से पृथ्वीकायिक, पृथ्वीकायिको में स्वय उत्पन्न होते हैं, अस्वय उत्पन्न नहीं होते । इसलिये हे गागेय ! पूर्वोक्त रूप से कहा गया है। इसी प्रकार यावत मनुष्य तक जानना चाहिये । जिस प्रकार असुरकुमारो के विषय में कहा, उसी प्रकार वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिको के विषय में भी जानना चाहिये । इसलिये हे गागेय ! इस कारण ऐसा कहता हूँ कि 'यावत वैमानिक, वैमानिको में स्वय उत्पन्न होते हैं, अस्वय उत्पन्न नहीं होते ।'

विवेचन–यद्यपि 'प्रवेशनक से पूव नैरयिक आदि जीवो के उत्पाद आदि का तथा सातरादि का कथन किया गया है, तथापि यहा जो पुन कथन किया जाता है, इसका कारण यह है कि पहले नैरयिक आदि के प्रत्येक का उत्पाद और उद्वतना का सान्तरादि कथन किया गया है। यहा नैरयिक आदि सभी जीवो के उत्पाद और उद्वतना का समुदित (सम्मिलित) रूप से कथन किया जाता है।

सत अर्थात 'द्रव्य रूप से विद्यमान' नैरयिक ही नैरयिको मे उत्पन्न होते है, असत (अविद्यमान) उत्पन्न नही होते । क्योंकि सवथा असत द्रव्य कोई भी उत्पन्न नही होता । वह तो 'खरविषाण'(गधे के सीग) के समान असत है । इन जीवो मे 'सत्त्व' जीव द्रव्य की अपेक्षा, अथवा नैरयिक पर्याय की अपेक्षा समझना चाहिये क्योकि भावी नैरयिक पर्याय की अपेक्षा द्रव्य से नैरयिक ही नैरयिको मे उत्पन्न होते है । अथवा यहा से मरकर नरक मे जाते समय विग्रह गति मे नरकायु का उदय हो जाता है, इसलिये वे भाव-नारक हैं और भाव नारक होकर ही नैरयिको मे उत्पन्न होते हैं ।

जो जीव, नरक मे उत्पन्न होता है, वह पहले से उत्पन्न हुए नैरयिको मे उत्पन्न होता है किन्तु असत नैरयिको मे उत्पन्न नही होता, क्योकि लोक शाश्वत है। इसलिये नैरयिक आदि का सदा सद्भाव रहता है ।

"लोक शाश्वत है, ऐसा पुरुषादानीय भगवान पार्श्वनाथ ने भी फरमाया है,"-ऐसा कहकर भगवान महावीर ने गागेय सम्मत्त सिद्धान्त के द्वारा अपने कथन की पुष्टि की है।

गागेय के प्रश्न के उत्तर मे भगवान ने कहा कि इन सब बातो को मैं किसी अनु

मान के द्वारा नही किन्तु स्वय आत्मा द्वारा जानता हूँ तथा किसी दूसरे पुरुषो के वचनो को सुनकर नही जानता, अपितु पारमार्थिक प्रत्यक्ष स्वरूप केवलज्ञान के द्वारा मैं स्वय जानता हूँ।

'नैरयिक स्वय उत्पन्न होते है, अस्वय उत्पन्न नही होते'-यह कथन कर के जीव के लिये 'ईश्वर परतन्त्रता' का खण्डन किया गया है। जैसा कि किन्ही मतावलम्बियो ने कहा है-

अज्ञो जन्तुरनीशोऽयमात्मन सुखदुखयो ।
ईश्वरप्रेरितो गच्छेत, स्वर्ग वा स्वभ्रमेव वा ॥१॥

अर्थ-यह जीव अज्ञ है और अपने लियें सुख दुख उत्पन्न करने मे असमर्थ है। ईश्वर की प्रेरणा से यह स्वर्ग मे चला जाता है, अथवा नरक मे चला जाता है।

यह मान्यता जैन सिद्धान्त से विपरीत है। क्योकि जीव कर्म करने मे स्वतन्त्र है। फिर कर्मो के वश वह स्वर्ग या नरक मे जाता है, ईश्वर की प्रेरणा से नही जाता।

जीवो की उत्पत्ति के लिये मूल मे 'कर्मोदय' आदि शब्द दिये गये हैं, उनका अर्थ इस प्रकार है। यथा-कर्मोदय-कर्मों का उदय। कर्मगुरुता-कर्मों का गुरुत्व। कर्मभारिता-कर्मों का भारीपन। कर्मगुरुसभारिता-कर्मो के गुरुत्व और भारीपन की अति प्रकृष्ट अवस्था। विपाक-यथाबद्ध रसानुभूति। फलविपाक-रसप्रकर्षता। कर्मविगति-कर्मो का अभाव। कर्म विशोधि-कर्मों के रस की विशुद्धि। कर्मविशुद्धि-कर्मों के प्रदेशो की विशुद्धि। उपरोक्त शब्दो मे किंचित् अर्थ भेद है अथवा ये सभी शब्द एकार्थक ही हैं। अर्थ प्रकर्ष को बतलाने के लिये दिये गये हैं।

गांगेय की श्रद्धा

५१ प्रश्न-तप्पभिइ च ण से गंगेये अणगारे समणं भगव महावीर पच्चभिजाणइ सव्वण्णु, सव्वदरिसिं। तएण से गगेये अणगारे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-इच्छामि

ण भंते ! तुब्भं अंतियं चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं, एवं जहा कालासवेसियपुत्तो तहेव भाणियव्वं, जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

। णवमसए गंगेयो बत्तीसइमो उद्देसो समत्तो ।

कठिन शब्दार्थ-तप्पभिइ-तब से लेकर, पच्चभिजाणइ-विश्वास पूर्वक जाना ।

भावार्थ-५१ प्रश्न-इसके बाद गांगेय अनगार ने श्रमणभगवान् महावीर स्वामी को सर्वज्ञ और सर्वदर्शी जाना । पश्चात् गांगेय अनगार ने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिणा की, वन्दना नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार करके इस प्रकार निवेदन किया-"हे भगवन् ! मैं आपके पास चार यामरूप धर्म से पाँच महाव्रत रूप धर्म को अंगीकार करना चाहता हूँ । इस प्रकार सारा वर्णन पहले शतक के नौवें उद्देशक में कथित कालास्यवेषिक-पुत्र अनगार के समान जानना चाहिये । यावत् गांगेय अनगार सिद्ध, बुद्ध, मुक्त यावत् समस्त दु खो से रहित बने ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् यह इसी प्रकार है ।

विवेचन-पूर्वोक्त प्रश्नोत्तरो से जब गांगेय अनगार को यह विश्वास हो गया कि श्रमण भगवान् महावीर स्वामी सर्वज्ञ, सर्वदर्शी हैं, तब उन्होंने चतुर्याम धर्म से पञ्चयाम धर्म को स्वीकार किया और क्रमश कालान्तर मे मोक्ष पधारे ।

॥ इति नौवें शतक का बत्तीसवा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ९ उद्देशक ३३

ऋषभदत्त और देवानन्दा

१–तेणं कालेणं, तेणं समएणं माहणकुडग्गामे णयरे होत्था। वण्णओ। बहुसालए चेइए। वण्णओ। तत्थ णं माहणकुडग्गामे णयरे उसभदत्ते णाम माहणे परिवसइ, अड्ढे, दित्ते, वित्ते, जाव अपरिभूए, रिउव्वेद-जजुव्वेद-सामवेद-अथव्वणवेद जहा खंदओ, जाव अण्णेसु य बहुसु बंभण्णएसु सुपरिणिट्ठिए समणोवासए अभिगयजीवाऽजीवे, उवलद्धपुण्ण-पावे, जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तस्स णं उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदा णाम माहणी होत्था, सुकुमालपाणि-पाया, जाव पियदंसणा, सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवा-जीवा, उवलद्धपुण्ण-पावा जाव विहरइ। तेणं कालेणं, तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा जाव पज्जुवासइ।

कठिन शब्दार्थ–परिवसइ–बसता (रहता) था अड्ढे–समृद्ध, दित्ते–दीप्त (तेजस्वी), वित्ते–प्रसिद्ध, अपरिभूए–अपरिभूत (किसी से भी नहीं दबने वाला), बंभण्णएसु–ब्राह्मणों के शास्त्रों में, सुपरिणिट्ठिए–कुशल था, सुकुमालपाणि पाया–जिसके हाथ पाँव बहुत सुकुमार (कोमल) थे पियदंसणा–प्रियदर्शना (देखने में प्रिय)

भावार्थ–१–उस काल उस समय में 'ब्राह्मण-कुण्डग्राम' नाम का नगर था। (वर्णन) बहुशालक नाम का चैत्य (उद्यान) था। उस ब्राह्मणकुण्ड ग्राम नामक नगर में 'ऋषभदत्त' नाम का ब्राह्मण रहता था। वह आढ्य (धनवान्) तेजस्वी, प्रसिद्ध यावत् अपरिभूत था। वह ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वणवेद में निपुण था। (शतक दो उद्देशक एक में कथित) स्कन्दक तापस

की तरह वह भी ब्राह्मणो के दूसरे बहुत से नयो (शास्त्रो) में कुशल था । वह श्रमणो का उपासक, जीवाजीवादि तत्त्वो का जानकार, पुण्य पाप को पहिचानने वाला, यावत् आत्मा को भावित करता हुआ रहता था×। उस ऋषभदत्त ब्राह्मण के 'देवानन्दा' नाम की स्त्री थी । उसके हाथ पैर सुकुमाल थे, यावत् उसका दर्शन भी प्रिय था । उसका रूप सुन्दर था । वह श्रमणोपासिका थी । वह जीवाजीवादि तत्त्वो की जानकार, तथा पुण्य पाप को पहिचाननेवाली थी ।

उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी वहाँ पधारे । जनता यावत् पर्युपासना करने लगी ।

तएणं से उसभदत्ते माहणे इमीसे कहाए उवलद्धट्ठे समाणे हट्ठ जाव हियए, जेणेव देवाणंदा माहणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवाणंद माहणिं एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगव महावीरे आइगरे, जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी, आगासगएणं चक्केण जाव सुहसुहेणं विहरमाणे बहुसालए चेइए अहापडिरूव जाव विहरइ । त महाफल खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाणं अरहताणं भगवताण णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण णमसण-पडिपुच्छण पज्जुवासणयाए, एगस्स वि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए, त गच्छामो ण देवाणुप्पिए ! समण भगव महावीर

× श्री ऋषभदत्तजी पहले तो वैदिक मतावलम्बी रहे होंगे, किन्तु बाद में भ पार्श्वनाथजी के सतानिक मुनिवरो के सम्पर्क से श्रमणोपासक बन होंगे –डोशी ।

शतक ९ उद्देशक ३३

ऋषभदत्त और देवानन्दा

१–तेणं कालेणं, तेणं समएणं माहणकुडग्गामे णयरे होत्था। वण्णओ। बहुसालए चेइए। वण्णओ। तत्थ णं माहणकुडग्गामे णयरे उसभदत्ते णाम माहणे परिवसइ, अड्ढे, दित्ते, वित्ते, जाव अपरिभूए, रिउव्वेद-जजुव्वेद-सामवेद-अथव्वणवेद जहा खदओ, जाव अण्णेसु य बहुसु बभण्णएसु सुपरिणिट्ठिए समणोवासए अभिगयजीवाऽजीवे, उवलद्धपुण्ण-पावे, जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तस्स णं उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदा णाम माहणी होत्था, सुकुमालपाणि-पाया, जाव पियदसणा, सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवा-जीवा, उवलद्धपुण्ण-पावा जाव विहरइ। तेणं कालेण, तेण समएण सामी समोसढे। परिसा जाव पज्जुवासइ।

कठिन शब्दार्थ–परिवसइ–बसता (रहता) था, अड्ढ–समृद्ध, दित्ते–दीप्त (तेजस्वी), वित्ते–प्रसिद्ध, अपरिभूए–अपरिभूत (किसी से भी नही दबने वाला), बभण्णएसु–ब्राह्मणो के शास्त्रो मे, सुपरिणिट्ठिए–कुशल था, सुकुमालपाणि पाया–जिसके हाथ पाव बहुत सुकुमार (कोमल) थे, पियदसणा–प्रियदर्शना (देखने मे प्रिय),

भावार्थ–१–उस काल उस समय में 'ब्राह्मण-कुण्डग्राम' नाम का नगर था। (वर्णन) बहुशालक नाम का चैत्य (उद्यान) था। उस ब्राह्मणकुण्ड ग्राम नामक नगर में 'ऋषभदत्त' नाम का ब्राह्मण रहता था। वह आढ्य (धनवान्) तेजस्वी, प्रसिद्ध यावत् अपरिभूत था। वह ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वणवेद में निपुण था। (शतक दो उद्देशक एक में कथित) स्कन्दक तापस

की तरह वह भी ब्राह्मणो के दूसरे बहुत से नयो (शास्त्रों) में कुशल था। वह श्रमणो का उपासक, जीवाजीवादि तत्त्वो का जानकार, पुण्य पाप को पहिचानने वाला, यावत् आत्मा को भावित करता हुआ रहता था×। उस ऋषभदत्त ब्राह्मण के 'देवानन्दा' नाम की स्त्री थी। उसके हाथ पैर सुकुमाल थे, यावत् उसका दर्शन भी प्रिय था। उसका रूप सुन्दर था। वह श्रमणोपासिका थी। वह जीवाजीवादि तत्त्वो की जानकार, तथा पुण्य पाप को पहिचाननेवाली थी।

उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी वहाँ पधारे। जनता यावत् पर्युपासना करने लगी।

तएणं से उसभदत्ते माहणे इमीसे कहाए उवलद्धट्ठे समाणे हट्ठ जाव हियए, जेणेव देवाणदा माहणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवाणद माहणिं एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिए! समणे भगव महावीरे आइगरे, जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी, आगासगएण चक्केणं जाव सुहसुहेणं विहरमाणे बहुसालए चेइए अहापडिरूव जाव विहरइ। त महाफल खलु देवाणुप्पिए! तहारूवाणं अरहताणं भगवताण णामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-णमसण-पडिपुच्छण पज्जुवासणयाए, एगस्स वि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए, त गच्छामो ण देवाणुप्पिए! समणं भगव महावीर

× श्री ऋषभदत्तजी पहले तो वैदिक मतावलम्बी रहे होंगे, किंतु बाद में भ पार्श्वनाथजी के संतानिक मुनिवर्गो के सम्पर्क से श्रमणोपासक बन होंगे –डोशी।

वदामो णमसामो जाव पज्जुवासामो, एय णं इहभवे य, परभवे य हियाए सुहाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ। तएण सा देवाणदा माहणी उसभदत्तेण माहणेणं एव वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया करयल जाव कट्टु उसभदत्तस्स माहणस्स एयमट्ठ विणएण पडिसुणेइ।

कठिन शब्दार्थ-इमीसे कहाए-यह कथा (बात), उवलद्धे-प्राप्त (जान) कर हट्ठ-हृष्ट, आगासगएण चक्केण-आकाशगत चक्र, अहापडिरूव-यथाप्रतिरूप (कल्प के अनुसार), विउलस्स-विपुल, अट्ठस्स-अर्थ का, हियाए-हितकारी, सुहाए-सुखकारी, खमाए-क्षेमकारी, णिस्सेसाए-नि श्रेयसकारी, आणुगामियत्ताए-अनुगमन करने, (शुभ बन्ध करने) वाली।

भावार्थ-श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के आगमन की बात सुनकर वह ऋषभदत्त ब्राह्मण बडा प्रसन्न हुआ। यावत् उल्लसित हृदय वाला हुआ। वह अपनी पत्नी देवानन्दा ब्राह्मणी के पास आया और इस प्रकार कहा-'हे देवानुप्रिये ! तीर्थ की आदि के करने वाले यावत् सर्वज्ञ सर्वदर्शी श्रमण भगवान् महावीर स्वामी, आकाश में रहे हुए चक्र से युक्त यावत् सुखपूर्वक विहार करते हुए यहा पधारे और बहुशालक नामक उद्यान में यथायोग्य अवग्रह ग्रहण कर के यावत् विचरते हैं। हे देवानुप्रिये ! तथारूप के अरिहन्त भगवान के नाम-गोत्र के श्रवण का भी महान फल है, तो उनके सम्मुख जाने, वन्दन नमस्कार करने, प्रश्न पूछने और पर्युपासना करने आदि से होनेवाले फल के विषय में तो कहना ही क्या है। तथा एक भी आर्य और धार्मिक सुवचन के श्रवण से महाफल होता है, तो फिर विपुल अर्थ को ग्रहण करने से महाफल हो, इसमें तो कहना ही क्या है। इसलिये हे देवानुप्रिये ! अपन चलें और श्रमण भगवान महावीर स्वामी को वन्दन नमस्कार करें यावत उनकी पर्युपासना करें। यह कार्य अपने लिये इस भव में और परभव में हित, सुख, सगतता, नि श्रेयस और

शुभ अनुबन्ध के लिये होगा।' ऋषभदत्त से यह बात सुनकर देवानन्दा बडी प्रसन्न यावत् उल्लसित हृदय वाली हुई और दोनो हाथ जोड, मस्तक पर अजली करके ऋषभदत्त ब्राह्मण के इस कथन को विनय पूर्वक स्वीकार किया।

२-तएणं से उसभदत्ते माहणे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, कोडुवियपुरिसे सद्दावेत्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! लहुकरणजुत्त-जोडय-समखुरवालिहाण-समलिहियसिंगेहिं, जवूणयामयकलावजुत्त परिविसिट्ठेहिं, रययामयघटा सुत्तरज्जुयपवरकचणणत्थपग्गहोग्गहियएहिं, णीलुप्पलकयामेलएहिं, पवरगोणजुवाणएहिं णाणामणि-रयण-घटियाजाल-परिगय, सुजायजुग-जोत्तरज्जुयजुग-पसत्थसुविरचियणिमिय, पवरलक्खणोववेय धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। तएण ते कोडुवियपुरिसा उसभदत्तेणं माहणेण एव वुत्ता समाणा हट्ठजाव हियया, करयल एव सामी तहत्ताणाए विणएण वयण जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त जाव धम्मिय जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेत्ता जाव तमाणत्तिय पच्चप्पिणंति।

कठिन शब्दार्थ कोडुवियपुरिसे-कौटुम्बिक (कर्मचारी) पुरुष, सद्दावेइ-बुलाये, खिप्पामेव-क्षिप्र-शीघ्रता से, लहुकरणजुत्ता-शीघ्र गतिवाले साधन युक्त समखुरवलिहाण-समान खुरी और पूंछ वाले, समलिहियसिंगेहि-समान सिंग वाले, जवूणयामयकलावजुत्त-स्वर्ण के कलाप-कठाभरण युक्त सुत्तरज्जुयपवरकचणणत्थपग्गहोग्गहियएहिं-स्वर्णमय सूत की नाथ से बँधे हुए णीलुप्पलकयामेलएहिं-नील कमल के सिरपेच युक्त, पवरगोणजुवाणएहिं-उत्तम

योवन वाले वैलो से, सुजायजुगजोत्तरज्जुयजुगपसत्थसुविरचियनिमिय-उत्तम काष्ठ के जूए और जोत्र की युगल रस्सियो से सुनियोजित, पवालक्खणोववेय-उत्तम लक्षण युक्त, जाणप्प वर-श्रेष्ठ यान-रथ, जुत्तामेव-जोतकर, उवट्ठावेइ-उपस्थित करो, एत्तमाणत्तिय-यह आज्ञा, पच्चप्पिणह-प्रत्यपण करो (पीछी अपण करो) तहत्ताणाए-आज्ञा मान्यकर ।

भावार्थ-२-इसके बाद ऋषभदत्त ब्राह्मण ने अपने कौटुम्बिक (सेवक) पुरुषो को बुलाया और इस प्रकार कहा-'हे देवानुप्रियो ! जल्दी चलनेवाले सुन्दर और समान रूप वाले, समान खुर और पूछवाले, समान सींगवाले, स्वण निर्मित कण्ठ के आभूषणो से युक्त, उत्तम गति (चाल) वाले चांदी की घण्टियो से युक्त, स्वर्णमय नासारज्जु (नाथ) द्वारा बाधे हुए, नील-कमल के सिरपेच वाले दो उत्तम युवा बैलो से युक्त, अनेक प्रकार की मणियम घण्टियो के समूह से व्याप्त, उत्तम काष्ठमय धोसरा (जुआ) और जोत की दो उत्तम डोरियो से युक्त, प्रवर (श्रेष्ठ) लक्षण युक्त धार्मिक श्रेष्ठ यान (रथ) तैयार करके यहां उपस्थित करो और आज्ञा का पालन कर निवेदन करो (अर्थात् कार्य सम्पूर्ण होजाने की सूचना दो) । ऋषभदत्त ब्राह्मण की इस प्रकार आज्ञा होने पर वे सेवक पुरुष प्रसन्न यावत् आनन्दित हृदय वाले हुए और मस्तक पर अजली करके इस प्रकार कहा-'हे स्वामिन् ! यह आपकी आज्ञा हमें मान्य है'-ऐसा कहकर विनय पूर्वक उसके वचनो को स्वीकार किया और आज्ञानुसार शीघ्र चलने वाले दो बैलो से युक्त यावत् धार्मिक श्रेष्ठ रथ को शीघ्र उपस्थित किया, यावत् आज्ञा पालन कर निवेदन किया ।

३-तएण से उसभदत्ते माहणे ण्हाए जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणप्पवर दुरूढे । तएण सा

देवाणदा माहणी अतो अतेउरसि ण्हाया; कयवलिकम्मा, कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ता, किंच वरपायपत्तणेउर-मणिमेहला हार-रचिय - उचियकडग खुड्डाग - एगावली-कठसुत्त-उरत्थगेवेज्ज-सोणि-सुत्तग-णाणामणि - रयणभूमणविराइयगी, चीणंसुयवत्थपवरपरि-हिया, दुगुल्लसुकुमालउत्तरिज्जा सव्वोउयसुरभिकुसुमवरियसिरया, वरचदणवदिया, वराभरणभूसियगी, कालागरुधूवधूविया, सिरिम-माणवेसा, जाव अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा, वहूहिं खुज्जाहि, चिलाइयाहिं, णाणादेस - विदेसपरिपिंडियाहिं, सदेसणेवत्थगहिय-वेसाहिं, इगिय-चिंतिय-पत्थियवियाणियाहिं, कुसलाहिं, विणीयाहिं, चेडियाचक्कवालवरिसधर-थेरकचुइज्ज-महत्तरगवदपरिक्खित्ता अते-उराओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव धम्मिय जाणप्पवर दुरूढा ।

कठिन शब्दार्थ—ण्हाए—स्नान किया, अप्पमहग्घाभरणालक्यिसरीरे—अल्प किंतु महा-मूल्यवान आभरणो से शरीर का अलकृत करके, साओ—स्वय के, गिहाओ—घर से, पडि-णिक्खमइ—निकला, वाहिरिया—वाहर की, उवट्ठाणसाला—उपस्थानशाला, उवागच्छइ—उपा-गच्छति—आया, दुरुढे—आरूढ (सवार) हुआ, अतो—भीतर के, अतेउरसि—अन्त पुर के, कय वलिकम्मा—कृतवलिकर्म अर्थात स्नान के समय करने योग्य कार्य (यह शब्द जहा स्नान का अर्थ सक्षिप्त मे बतलाना होता है वहा प्रयुक्त होता है), कयकोउय—कौतुक किया, मगल-पायच्छित्ता—मगल और प्रायश्चित्त किया, वरपायपत्तणेउर—पांवो मे उत्तम नूपुर पहने, मणिमेहला—मणि जडित मेखला (कदोरा), हाररचिय—हार (माला) से सुशोभित उचिय-कडग—उचित कडे, खुड्डाग—अगुठिया, एकावली कठसुत्त—एक लडीवाला कठसूत्र (माला),

उरत्थगेवेज्ज–हृदय पर रहे हुए ग्रैवेयक (आभूषण), सोणिसुत्तग–कटिसूत्र, णाणामणिरयण भूसणं विराइयंगी–जिसके अंग (शरीर) पर विविध प्रकार के मणि एवं रत्नों के आभूषण विराज रहे (शोभित हो रहे) हैं, चीणंसुयवत्थपवरपरिहिया–चीनांशुक (रेशमी) उत्तम वस्त्र को पहिनकर दुगुल्लसुकुमालउत्तरिज्जा–ऊपर सुकोमल वस्त्र ओढकर, सव्वोउयसुरभि कुसुमवरियसिरया–सभी ऋतुओं के उत्तम पुष्पों से अपने केशों को गूंथ कर वरचन्दणवंदिया–ललाट पर उत्तम चंदन लगाकर, वराभरणभूसियंगी–उत्तम आभूषणों से शरीर को शृंगारित करके, कालागुरुधूवधूविया–कालागरु के धूप से धूपित होकर, सिरिसमाणवेसा–श्री–लक्ष्मी के समान वेशवाली, खुज्जाहिं–दासियों के साथ, चिलाइयाहिं–चिलात देश की, परिपिंडियाहिं–एकत्रित हुई, सदेसणवत्थगहियवेसाहिं–अपने देश की विभूषानुसार वेश पहिनी हुई, इंगिय चिंतियपत्थियवियाणियाहिं–संकेत से ही मन चिंतित एवं इच्छित इष्ट विषय को जानने वाली, कुसलाहिं–कुशलता युक्त, विणीयाहिं–विनय करनेवाली, चेडियाचक्कवाल–दासियों से घिरी हुई, वरिसधर–वर्षधर (नपुंसक बनाये हुए अन्तःपुर रक्षक), थेरकंचुइज्ज–वृद्ध कंचुकी (अंतःपुर के कार्य का निवेदन करनेवाला, प्रतिहारी), महत्तरगवंदपरिक्खित्ता–मान्य पुरुषों के वृन्द सहित, णिग्गच्छई–निकली।

भावार्थ–३ तब ऋषभदत्त ब्राह्मण ने स्नान किया यावत् अल्प भार और महामूल्य वाले आभूषणों से अपने शरीर को अलंकृत किया और घर से बाहर निकल कर जहाँ बाहरी उपस्थान शाला है और जहाँ धार्मिक श्रेष्ठ रथ है वहाँ आया, आकर रथ पर चढा।

तब देवानन्दा ब्राह्मणी ने अंतःपुर में स्नान किया, बलिकर्म किया (स्नान सम्बन्धी कार्य किये) कौतुक (मषि-तिलक), मंगल और प्रायश्चित्त किया (अनिष्ट निवारण के लिए योग्य कार्य किया) फिर पैरों में पहनने के सुंदर नूपुर, मणि युक्त मेखला (कन्दोरा), हार, उत्तम कङ्कण अंगूठियाँ, विचित्र मणिमय एकावली (एक लडा) हार, कण्ठ सूत्र, ग्रैवेयक (वक्षस्थल पर रहा हुआ गले का लम्बा हार), कटिसूत्र और विचित्र मणि तथा रत्नों के आभूषण, इन सब से शरीर को सुशोभित करके, उत्तम चीनांशुक (वस्त्र) पहनकर शरीर पर सुकुमाल रेशमी वस्त्र ओढकर, सब ऋतुओं के सुगन्धित फूलों से अपने केशों को गूंथकर, कपाल पर चन्दन लगाकर, उत्तम आभूषणों से शरीर को अलंकृत कर, काला-

गुरु के धूप से सुगन्धित होकर, लक्ष्मी के समान वेषवाली यावत् अल्पभार और बहुमूल्यवाले आभरणो से शरीर को अलकृत करके, बहुतसी कुब्जा दासिया, चिलात देश की दासियाँ यावत अनेक देश विदेशो से आकर एकत्रित हुई दासिया अपने देश के वेष धारण करनेवाली, इगित-आकृति द्वारा चिन्तित और इष्ट अर्थ को जाननेवाली कुशल और विनय सम्पन्न दासियो के परिवार सहित तथा स्वदेश की दासियाँ, खोजा पुरुष, वृद्ध कचुकी और मान्य पुरुषो के समूह के साथ वह देवानन्दा अपने अत पुर से निकली और जहाँ बाहर की उपस्थान शाला है और जहाँ धार्मिक श्रेष्ठ रथ खडा है वहाँ आई और उस धार्मिक श्रेष्ठ रथ पर चढी।

तएण से उसभदत्ते माहणे देवाणंदाए माहणीए सद्धिं धम्मिय जाणप्पवर दुरूढे समाणे णियगपरियालसपरिवुडे माहणकुडग्गाम णयर मज्झमज्झेण णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता छत्ताईए तित्थगराइसए पासइ, पासित्ता धम्मिय जाणप्पवर ठवेइ, ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता समण भगव महावीर पच-विहेणं अभिगमेण अभिगच्छइ, त जहा-सच्चित्ताण दव्वाण विउ-सरणयाए, एव जहा बिइयसए जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासइ। तएण सा देवाणदा माहणी धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता बहूहिं खुज्जाहिं जाव महत्तरगवद-परिक्खित्ता समण भगव महावीर पचविहेण अभिगमेण अभि-

गच्छइ, त जहा–सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए अचित्ताणं दव्वाण अविमोयणयाए, विणयोणयाए गायलट्ठीए, चक्खुप्फासे अजलिपग्गहेण, मणस्स एगत्तीभावकरणेण, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ करित्ता वदइ णमसइ वदित्ता, णमसित्ता उसभदत्त माहणं पुरओ कट्टु ट्ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी, णमसमाणी, अभिमुहा विणएण पजलिउडा जाव पज्जुवासइ ।

४–तएण सा देवाणदा माहणी आगयपण्हाया, पप्फुयलोयणा सवरियवलयबाहा कचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलबग पिव समूसवियरोमकूवा समण भगव महावीर अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी पेहमाणी चिट्ठइ ।

कठिन शब्दार्थ–सद्धि–साथ णियगपरियाल सपरिवुड–अपने परिवार से घिरी हुई, तित्थगराइसए–तीथङ्कर के अतिशय, ठवेइ–स्थिर किया–खडा रक्खा, पच्चोरुहइ–नीचे उतरे, अभिगमेण अभिगच्छइ–धर्म सभा मे जाने योग्य अभिगम (नियम) से गये, सचित्ताण दव्वाण विउसरणयाए–सचित्त द्रव्य का त्यागना, अचित्ताण दव्वाण अविउसरणयाए–अचित्त द्रव्य मर्यादित करना एगसाडिएण उत्तरासगकरणण–एक (बिना सिये) वस्त्र का उत्तरासग करना, चक्खुप्फासे अजलिप्पग्गहेण भगवान के दृष्टि गोचर होते ही हाथ जोडकर मस्तक पर लगाना, मणसो एगत्तीकरणेण–मन को एकाग्र करना पुरओ कट्टु आगे करके, ट्ठिया–ठहरी, आगय पण्हाया–आयात प्रश्रवा (स्तन मे दूध आया) पप्फुयलोयणा–प्रफल्ल लोचना (नयन

* दहमाणी पाठ कई प्रतियो म है । इमीस मिलता हुआ पाठ अतगडदसा वग ३ अ० ८ म है, वहां 'पेहमाणी' है । अर्थ दोनो का समान ही है -डाशी ।

हर्षित हुए) सवरियवलय बाहा–हर्ष से फूलती हुई भुजाओ को कडो ने रोकी, कचुयपरिखित्ता–कचुकी विस्तृत हुई, धाराहयकलबग-मेघधारा से विकसित कदम्ब पुष्प की तरह, समूसवियरोमकूवा–रोमकूप विकसित हुए अणिमिसाए–निर्निमेष दृष्टि से, पेहमाणी–देखती हुई।

भावार्थ–इसके बाद वह ऋषभदत्त ब्राह्मण देवानन्दा ब्राह्मणी के साथ धार्मिक श्रेष्ठ रथ पर चढा हुआ और अपने परिवार से परिवृत्त, ब्राह्मणकुण्ड ग्राम नामक नगर के मध्य में होता हुआ निकला और बहुशालक उद्यान में आया। तीर्थङ्कर भगवान् के छत्र आदि अतिशयो को देख कर उसने धार्मिक श्रेष्ठ रथ को खडा रखा और नीचे उतरा। रथ पर से उतर कर वह श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास पाँच प्रकार के अभिगम से जाने लगा। वे अभिगम इस प्रकार है। यथा –'सचित्त द्रव्यो का त्याग करना,' इत्यादि दूसरे शतक के पाँचवे उद्देशक में कहे अनुसार यावत तीन प्रकार की उपासना करने लगा। देवानन्दा ब्राह्मणी भी धार्मिक रथ से नीचे उतरी और अपनी दासियाँ आदि के परिवार से परिवृत्त होकर श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास पाँच प्रकार के अभिगम युक्त जाने लगी। वे अभिगम इस प्रकार है,–(१) सचित्त द्रव्य का त्याग करना, (२) अचित्त द्रव्य का त्याग नहीं करना अर्थात् वस्त्रादिक को समेट कर व्यवस्थित करना, (३) विनय से शरीर को अवनत करना (नीचे की ओर झुका देना), (४) भगवान् के दृष्टिगोचर होते ही दोनो हाथ जोडना और (५) मन को एकाग्र करना। इन पाँच अभिगम द्वारा जहाँ श्रमण भगवान महावीर स्वामी है, वहाँ आई और भगवान् को तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिणा करके वन्दन नमस्कार किया। वन्दन नमस्कार के बाद ऋषभदत्त ब्राह्मण को आगे कर अपने परिवार सहित शुश्रूषा करती हुई और नत बन कर सम्मुख स्थित रही हुई, विनय पूर्वक हाथ जोड कर उपासना करने लगी।

(४) इसके बाद उस देवानन्दा ब्राह्मणी के पाना चढा अर्थात उसके स्तनो में दूध आया। उसके नेत्र आनन्दाश्रुओ से भीग गये। हर्ष से प्रफुल्लित होती हुई उसकी भुजाओ को वलयो ने रोका (उसकी भुजाओ के कडे तग हो

गये) हर्ष से उसका शरीर प्रफुल्लित होगया । उसकी कचुकी विस्तीर्ण हो गई। मेघ की धारा से विकसित कदम्ब पुष्प के समान उसका सारा शरीर रोमाञ्चित हो गया । वह श्रमण भगवान् महावीर स्वामी की ओर अनिमेष दृष्टि से देखने लगी ।

विवेचन–ऋषभदत्त ब्राह्मण और देवानन्दा ब्राह्मणी धार्मिक श्रेष्ठ रथ पर चढकर भगवान के दर्शन करने के लिये गये। भगवान को वन्दनार्थ जाते हुए उन्होने पाच अभिगम किये । यथा–(१) सचित्त द्रव्य, जसे–पुष्प, ताम्बूल आदि का त्याग करना। (२) अचित्त द्रव्य –वस्त्र आदि को मर्यादित करना (३) एक पटवाले दुपट्टे का उत्तरासग करना। (४) मुनिराज के दष्टिगोचर होते ही हाथ जोडना और (५)मन को एकाग्र करना। साधु साध्वियो के पास जाते समय श्रावक श्राविकाओ को पाच अभिगमो का पालन करना चाहिये। साधु साध्वियो के सन्मुख जाते समय पाले जानेवाले नियमो का 'अभिगम' कहते हैं। श्राविका के अभिगमो मे थोडा सा ,अन्तर है । वह यह है–तीसरे अभिगम के स्थान पर 'विनय से शरीर को झुका देना'–कहना चाहिये ।

भगवान को देखते ही देवानन्दा के नेत्र आनन्दाश्रुओ से भर गये । मेघधारा से विकसित कदम्ब पुष्प के समान उसका सारा शरीर रोमाञ्चित हो उठा । उसकी कञ्चुकी तग हो गई और स्तनो मे दूध आ गया ।

५ प्रश्न–भते ! त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी–किं ण भते ! एसा देवाणदा माहणी आगयपण्हया, त चेव जाव रोमकूवा देवाणुप्पिय अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी पेहमाणी चिट्ठइ ?

५ उत्तर–गोयमाइ ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी–एव खलु गोयमा ! देवाणदा माहणी मम अम्मगा, अह ण देवाणदाए माहणीए अत्तए, तएण सा देवाणदा माहणी तेणं

पुव्वपुत्तसिणेहरागेण आगयपण्हया, जाव समूमवियरोमकूवा मम अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी पेहमाणी चिट्ठइ । तएण समणे भगव महावीरे उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदाए माहणीए तीसे य महति-महालियाए इसिपरिसाए जाव परिसा पडिगया ।

कठिन शब्दार्थ–अम्मगा–माता, अत्तए–आत्मज, पुव्वपुत्तसिणेहरागेण–पूर्व के पुत्र स्नेहानुराग से, इसिपरिसाए–ऋषियो की परिषद को ।

भावार्थ–५ प्रश्न–इसके पश्चात् हे 'भगवन् !' ऐसा कहकर गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दना नमस्कार किया । वन्दना नमस्कार करके इस प्रकार पूछा–'हे भगवन् ! इस देवानन्दा ब्राह्मणी को किस प्रकार पाना चढा (इसके स्तनो में से दूध कैसे आगया) यावत उसको रोमाञ्च किस प्रकार हुआ ? और आप देवानुप्रिय की ओर अनिमेष दृष्टि से देखती हुई क्यो खडी है ?

५ उत्तर–'हे गौतम ! '–ऐसा कहकर श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने गौतम स्वामी से इस प्रकार कहा–"हे गौतम ! यह देवानन्दा मेरी माता है, मैं देवानन्दा का आत्मज (पुत्र) हूँ । इसलिये देवानन्दा को पूर्व के पुत्र-स्नेहानुराग से पाना चढा यावत रोमाञ्च हुआ और यह मेरी ओर अनिमेष दृष्टि से देखती हुई खडी है ।

इसके वाद श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने ऋषभदत्त ब्राह्मण, देवानन्दा ब्राह्मणी और उस बडी ऋषिपरिषद् आदि को धर्म-कथा कही, यावत् परिषद वापिस चली गई ।

६–तएण से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठेत्ता

समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो, जाव णमसित्ता एव वयासी—एव-मेय भते। तहमेय भते। जहा खदओ जाव से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिम दिसिभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्ला-ऽलकार ओमुयइ, सयमेव० ओमुइत्ता सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ, करित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण, जाव णमसित्ता एव वयासी—आलित्ते ण भते! लोए, पलित्ते णं भते! लोए, आलित्तपलित्ते ण भते! लोए जराए मरणेण य, एव एएण कमेण जहा खदओ तहेव पव्वइओ, जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, जाव वहूहि चउत्थ-छट्ठ ट्ठम-दसम-जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे वहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसित्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदित्ता जस्स-ट्ठाए कीरइ णग्गभावो जाव तमट्ठ आराहेइ, आराहेत्ता जाव सव्व-दुक्खप्पहीणे।

कठिन शब्दार्थ—एवमेय—इसी प्रकार तहमेय—इसी प्रकार अवक्कमइ—जाकर, लोय-लोच आलित्ते—जल रहा ह, पलित्ते—प्रज्वलित हो रहा है जस्सट्ठाए—जिसके लिए।

भावार्थ—६—श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास धम श्रवण कर और हृदय में धारण कर के ऋषभदत्त ब्राह्मण बडा प्रसन्न हुआ, तुष्ट हुआ। उसने खडे होकर श्रमण भगवान महावीर स्वामी की तीन बार प्रदक्षिणा की

यावत् नमस्कार किया और इस प्रकार निवेदन किया कि 'हे भगवन ! आपका कथन यथाय है, 'हे भगवन् ! आपका कथन यथार्थ है ।' इत्यादि दूसरे शतक के पहले उद्देशक में स्कन्दक तापस के प्रकरण में कहे अनुसार यावत् 'जो आप कहते है वह उसी प्रकार है ।' इस प्रकार कह कर ऋषभदत्त ब्राह्मण ईशान कोण की ओर गया और स्वयमेव आभरण, माला और अलकारो को उतार दिया । फिर स्वयमेव पञ्चमुष्टि लोच किया और श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पास आया । भगवान को तीन वार प्रदक्षिणा की यावत नमस्कार करके इस प्रकार कहा-"हे भगवन् ! जरा और मरण से यह लोक चारो ओर प्रज्वलित है, हे भगवन् ! यह लोक चारो ओर अत्यन्त प्रज्वलित है । इस प्रकार कहकर स्कन्दक तापस की तरह प्रव्रज्या अगीकार की, यावत सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया, और वहुत से उपवास, वेला, तेला, चौला आदि विचित्र तप कर्म से आत्मा को भावित करते हुए वहुत वर्षो तक श्रमण पर्याय का पालन किया और एक मास की सलेखना से आत्मा को सलिखित करके साठ भवतो के अनशनो का छेदन किया और जिसके लिये नग्न-भाव (निर्ग्रन्थपन-सयम) स्वीकार किया था यावत उस निर्वाण रूप अर्थ की आराधना करली यावत् वे सर्व दु खो से मुक्त हुए ।

७-तएण सा देवाणदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठा तुट्ठा समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण, जाव णमसित्ता एव वयासी-एवमेय भते तहमेय भते ! एव जहा उसभदत्तो तहेव जाव धम्म आइक्खिय । तएण समणे भगव महावीरे देवाणंद माहणि सयमेव पव्वावेइ, सयमेव पव्वावित्ता सयमेव अज्जचदणाए अज्जाए सीसिणित्ताए दल-

यइ । तएणं सा अज्जचदणा अज्जादेवाणंदामाहणिं सयमेव पव्वावेइ, सयमेव मुडावेइ, सयमेव सेहावेइ, एव जहेव उसभदत्तो तहेव अज्जचदणाए अज्जाए इम एयारूव धम्मिय च उवएस सम सपडिवज्जइ, तमाणाए तहा गच्छइ, जाव सजमेण सजमइ । तएणं सा देवाणंदा अज्जा अज्जचदणाए अज्जाए अतिय सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्झइ, सेस त चेव, जाव सव्वदुक्खप्पहीणा ।

कठिन शब्दार्थ—आइक्खिय—कहा, दलयइ—देते हैं, सेहावेइ—शिक्षित करती है, सव्वदुक्खप्पहीणा—समस्त दु खो को नष्टकर मुक्त हुई ।

भावाथ—७—श्रमण भगवान महावीर स्वामी से धम सुनकर और हृदय में धारण करके देवानन्दा ब्राह्मणी हृष्ट (आनन्दित) और तुष्ट हुई । श्रमण भगवान महावीर स्वामी की तीन बार प्रदक्षिणा कर यावत् नमस्कार कर इस प्रकार बोली—'हे भगवन ! आपका कथन यथाथ है ।' इस प्रकार ऋषभदत्त ब्राह्मण के समान कहकर निवेदन किया कि हे भगवन ! मैं प्रव्रज्या अगीकार करना चाहती हूं । तब श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने देवानन्दा को स्वयमेव दीक्षा दी । दीक्षा देकर आय चन्दना आर्या को शिष्या रूप में दिया । इसके पश्चात आय च दना ने आय देवानन्दा को स्वयमेव प्रव्रजित किया, स्वयमेव मुण्डित किया, स्वयमेव शिक्षा दी । देवानन्दा ने भी ऋषभदत्त ब्राह्मण के समान आय च दना के वचनो को स्वीकार किया और उनकी आज्ञानुसार पालन करने लगी यावत सयम में प्रवृत्ति करने लगी । देवान दा आर्या ने आर्य च दना आर्या के पास सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया । शेष वर्णन पूववत है यावत् वह देवानन्दा आर्या सभी दु खो से मुक्त हुई ।

जमाली चरित्र

८—तस्स ण माहणकुडग्गामस्स णयरस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं खत्तियकुडग्गामे णाम णयरे होत्था । वण्णओ । तत्थ णं खत्तियकुडग्गामे णयरे जमाली णाम खत्तियकुमारे परिवसइ, अड्ढे दित्ते, जाव अपरिभूए उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहि मुइगमत्थएहि वत्तीसइवद्धेहि णाडएहि णाणाविहवरतरुणीसपउत्तेहि उवणच्चिज्जमाणे उवणच्चिज्जमाणे, उवगिज्जमाणे उवगिज्जमाणे, उवलालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे, पाउस-वासारत्त-सरय हेमत-वसत-गिम्हपज्जते छप्पि उऊ जहाविभवेणं माणमाणे, काल गालेमाणे, इट्ठे सद्द-फरिस रस-रूव-गधे पचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ । तएण खत्तियकुडग्गामे णयरे सिघाडग-तिक-चउक्क-चच्चर-जाव वहुजणसद्दे इ वा जहा उववाइए जाव एव पण्णवेइ एव परूवेइ एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे आइगरे, जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुडग्गामस्स णयरस्स वहिया वहुसालए चेइए अहापडिरूव जाव विहरइ । त महप्फल खलु देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहताण भगवताण जहा उववाइए, जाव एगाभिमुहे खत्तियकुडग्गाम णयर मज्झमज्झेण णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुडग्गामे णयरे जेणेव वहुसालए चेइए,

एव जहा उववाइए, जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासइ ।

कठिन शब्दार्थ–पच्चत्थिमेण–पश्चिम दिशा, उप्पि–ऊपर के, पासायवरगए–उत्तम प्रासाद (भवन) मे, फुट्टमाणेहिं–अति आस्फालन से (बजाने से) आवाज करते हुए, मुइग मत्थएहिं–मदग के मस्तक से, णाडएहिं–नाटक से, णाणाविहवरतरुणीसपउत्तेहिं–अनेक प्रकार की सुदर युवतियो से, उवणच्चिज्जमाण–नचाता हुआ, उवगिज्जमाणे–स्तुति कराता हुआ, उवलालिज्जमाणे–काम क्रीडा करता हुआ, पाउस–प्रावृष, वासारत्त–वर्षा, गिम्हपज्जते–ग्रीष्म पयन्त, छप्पि–छह, जहाविभवेण–अपने वभव के अनुसार, माणमाण–सुखानुभव करता हुआ, कालगालेमाणे–समय व्यतीत करता हुआ, पच्चणुब्भवमाणे–अनुभव करता हुआ ।

भावार्थ–८–उस ब्राह्मणकुण्ड ग्राम नामक नगर के पश्चिम दिशा में क्षत्रियकुण्ड ग्राम नामक नगर था । उस क्षत्रियकुड ग्राम नामक नगर में जमाली नाम का क्षत्रियकुमार रहता था । वह आढच, (धनिक) दीप्त–तेजस्वी यावत् अपरिभूत था । वह अपने उत्तम भवन पर, जिसमें मृदग बज रहे है, अनेक प्रकार की सुन्दर युवतियो द्वारा सेवित है, बत्तीस प्रकार के नाटको द्वारा हस्त-पादादि अवयव जहाँ नचाए जा रहे है, जहाँ बारबार स्तुति की जा रही है, अत्यन्त खुशिया मनाई जा रही है, उस भवन में प्रावृष, वर्षा, शरद, हेमन्त, बसन्त और ग्रीष्म, इन छह ऋतुओ में अपने वैभव के अनुसार सुख का अनुभव करता हुआ, समय बिताता हुआ, मनुष्य सम्बन्धी पाच प्रकार के इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गन्ध, इन काम भोगो का अनुभव करता हुआ रहता था ।

क्षत्रियकुड ग्राम नामक नगर में शृगाटक, त्रिक, चतुष्क और चत्वर में यावत् बहुत से मनुष्यो का कोलाहल हो रहा था, इत्यादि सारा वणन औपपातिक सूत्र में कहे अनुसार जानना चाहिये, यावत् बहुत-से मनुष्य परस्पर इस प्रकार कहते ह यावत् परूपणा करते है कि–'हे देवानुप्रियो ! आदिकर (धम-तीर्थ की आदि करने वाले) यावत सवज्ञ सवदर्शी, श्रमण भगवान महावीर स्वामी, इस ब्राह्मणकुड ग्राम नगर के बाहर, बहुशाल नामके उदचान में यथायोग्य अवग्रह ग्रहण करके यावत विचरते है । हे देवानुप्रियो ! तथारूप अरिहत भगवान् के

नाम, गोत्र के श्रवण मात्र से भी महाफल होता है, इत्यादि औपपातिक सूत्र के अनुसार वर्णन जानना चाहिये, यावत वह जन-समूह एक दिशा की ओर जाता है और क्षत्रियकुंड ग्राम नामक नगर के मध्य में होता हुआ, बाहर निकलता है और बहुशालक उद्यान में आता है। इसका सारा वर्णन औपपातिक सूत्र के अनुसार जानना चाहिये, यावत् वह जन-समूह तीन प्रकार की पर्युपासना करता है।

तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स तं महयाजणसद्दं वा जाव जणसण्णिवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयं एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-"किं णं अज्ज खत्तियकुंडग्गामे णयरे इंदमहे इ वा, खंदमहे इ वा मुगुंदमहे इ वा, णागमहे इ वा, जक्खमहे इ वा, भूयमहे इ वा, कूवमहे इ वा, तडागमहे इ वा, णईमहे इ वा, दहमहे इ वा, पव्वयमहे इ वा, रुक्खमहे इ वा, चेइयमहे इ वा, थूभमहे इ वा, जणं एए बहवे उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, णाया, कोरव्वा, खत्तिया खत्तियपुत्ता, भडा, भडपुत्ता, जहा उववाइए जाव सत्थवाहप्पभिइओ ण्हाया, कयबलिकम्मा जहा उववाइए, जाव णिग्गच्छइ" एवं संपेहेइ, एवं संपेहित्ता कंचुइज्ज पुरिसं सद्दावेइ, सं० सद्दावित्ता एवं वयासी-किं णं देवाणुप्पिया! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे णयरे इंदमहे इ वा, जाव णिग्गच्छइ। तएणं से कंचुइज्जपुरिसे जमालिणा खत्तियकुमारेण एवं वुत्ते समाणे हट्ठ-तुट्ठे

समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल जमालि खत्तियकुमार जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावित्ता एव वयासी–णो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुडग्गामे णयरे इद-महे इ वा, जाव णिग्गच्छति, एव खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे भगव महावीरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुडग्गामस्स णयरस्स वहिया वहुसालए चेइए अहापडिरूव उग्गह जाव विहरइ। तएण एए बहवे उग्गा भोगा, जाव अप्पेगइया वदणवत्तिय जाव णिग्गच्छति। तएण से जमाली खत्तियकुमारे कचुइपुरिसस्स अतिय एय अट्ठ सोच्चा, णिसम्म हट्ठ तुट्ठ जाव कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, को० सद्दावेत्ता एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घट आसरह जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। तएणं ते कोडुवियपुरिसा जमालिणा खत्तियकुमारेण एव वुत्ता समाणा जाव पच्चप्पिणति।

कठिन शब्दार्थ–इदमहे–इन्द्रमहोत्सव, खदमहे–स्कन्ध महोत्सव, मगुदमहे–मुकुन्द महोत्सव भडा–भट, सत्थवाहप्पभिइयो–सार्थवाह प्रभति (इत्यादि), आगमगहियविणिच्छए–आगमन का निश्चय करके आसरह–अश्वरथ।

भावार्थ–बहुत से मनुष्यो के शब्द और कोलाहल सुनकर और अवधारण कर क्षत्रियकुमार जमाली के मन में इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ कि–"क्या आज क्षत्रियकुड ग्राम नगर में इन्द्र का उत्सव है, स्कन्द का उत्सव है, वासुदेव का उत्सव है, नाग का उत्सव है, यक्ष का उत्सव है, भूत का उत्सव है, कूप उत्सव है, तालाब उत्सव है, नदी का उत्सव है, द्रह का उत्सव है, पर्वत का

उत्सव है, वृक्ष का उत्सव है, चैत्य का उत्सव है, या स्तूप का उत्सव है, कि जिससे ये सब उग्रकुल, भोगकुल, राजन्यकुल, इक्ष्वाकुकुल, ज्ञातकुल और कुरुवश, इन सब के क्षत्रिय, क्षत्रियपुत्र, भट और भटपुत्र इत्यादि औपपातिक सूत्र में कहे अनुसार यावत् सार्थवाह प्रमुख, स्नानादि करके यावत बाहर निकलते है—इस प्रकार विचार करके जमाली क्षत्रियकुमार ने कञ्चुकी (सेवक) को बुलाया और इस प्रकार कहा—'हे देवानुप्रिय ! क्या आज क्षत्रियकुड ग्राम नामक नगर के बाहर इन्द्र आदि का उत्सव है, जिससे ये सब लोग बाहर जा रहे है ?" जमाली क्षत्रियकुमार के इस प्रश्न को सुनकर वह कचुकी पुरुष हर्षित एव सतुष्ट हुआ। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के आगमन का निश्चय करके उसने हाथ जोडकर जमाली क्षत्रियकुमार को जय-विजय शब्दो द्वारा बधाया। तदनन्तर उसने इस प्रकार कहा—"हे देवानुप्रिय ! आज क्षत्रियकुड ग्राम नामक नगर के बाहर इन्द्र आदि का उत्सव नहीं है, किन्तु सर्वज्ञ, सर्वदर्शी श्रमण भगवान महावीर स्वामी नगर के बाहर बहुशाल नामक उद्यान में पधारे है और यथायोग्य अवग्रह ग्रहण करके यावत् विचरते है। इसीलिये ये उग्रकुल भोग-कुलादि के क्षत्रिय आदि वन्दन के लिये जा रहे है।" कचुकी पुरुष से यह बात सुनकर एव हृदय में धारण करके जमाली क्षत्रियकुमार हर्षित एव सतुष्ट हुआ और कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाकर इस प्रकार कहा—'हे देवानुप्रियो ! तुम शीघ्र चार घण्टा वाले अश्वरथ को जोडकर यहाँ उपस्थित करो और मेरी आज्ञा को पालन कर निवेदन करो। जमाली क्षत्रियकुमार की इस आज्ञा को सुनकर तदनुसार कार्य करके उन्हे निवेदन किया।

९—तएण से जमालिखत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे जाव उववाइए परिसावण्णओ तहा भाणियव्व, जाव चदणोकिण्णगायसरीरे सव्वा-

लंकारविभूसिए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, मज्जणघराओ पडि-णिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घंटे आस-रहे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता चाउग्घंट आसरहं दुरू-हइ, चाउग्घंट आसरहं दुरूहित्ता सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, महया-भड चडकरपहकरवंद-परिक्खित्ते, खत्तिय-कुंडग्गामे णयरे मज्झमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे णयरे, जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ,उवा-गच्छित्ता तुरए णिगिण्हेइ, तुरए णिगिण्हित्ता रह ठवेइ, रह ठवेत्ता रहाओ पच्चोरूहइ, पच्चोरूहित्ता पुप्फतंबोला-ऽऽउहमाइयं वाहणाओ य विसज्जेइ, वाहणाओ विसज्जेत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, एग० करित्ता आयंते, चोक्खे, परमसुइब्भूए, अंजलिमउलियहत्थे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ ति० २ करेत्ता जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ । तएणं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स, तीसे य महतिमहालियाए इसि० जाव धम्मकहा, जाव परिसा पडिगया ।

कठिन शब्दार्थ-सकोरंटमल्लदामेण-कोरंट पुष्प की माला युक्त, तुरए-घोडे को, तंबोलाऽऽउहमाइय-ताम्बूल पुष्प आयुधादि, विसज्जेइ-त्याग करता है आयंते-स्वच्छ होकर, चोक्खे-पवित्र, परमसुइब्भूए-परम शुचिभूत ।

भावार्थ-९-इसके बाद जमाली क्षत्रियकुमार स्नानघर में गया । वहाँ

जाकर स्नान-सम्बन्धी सभी क्रियापूवक स्नान किया यावत् औपपातिक सूत्र में वर्णित परिषद का सारा वर्णन जानना चाहिये। यावत् चन्दन से लिप्त शरीर वाला वह जमाली सभी अलकारो से विभूषित होकर घर से बाहरनिकला और उपस्थानशाला में आकर अश्वरथ पर चढा। सिर पर कोरण्ट पुष्प की माला युक्त छत्र धारण किया हुआ और महायोद्धाओ के समूह से परिवृत्त वह जमाली कुमार क्षत्रियकुड ग्राम नामक नगर के मध्य में होकर बाहर निकला और बहुशाल उद्यान में आया। घोडो को रोककर रथ खडा किया और नीचे उतरा। फिर पुष्प, ताम्बूल, आयुध (शस्त्र) आदि तथा उपानह (जूता) छोड दिया और एक पट वाले वस्त्र का उत्तरासग किया। इसके बाद परम पवित्र बनकर और मस्तक पर दोनो हाथ जोडकर श्रमण भगवान महावीर स्वामी के निकट पहुँचा। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को तीन बार प्रदक्षिणा की यावत् त्रिविध पर्युपासना से उपासना करने लगा। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने जमाली क्षत्रियकुमार को तथा उस बडी ऋषिगण आदि की महा-परिषद् को धर्मोपदेश दिया। धर्मोपदेश श्रवण कर वह परिषद् वापिस चली गई।

१०–तएणं से जमालिखत्तियकुमारे समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अतिए धम्म सोच्चा, णिसम्म हट्ठ तुट्ठ जाव हियए, उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो जाव णम-सित्ता एव वयासी–सद्दहामि ण भते ! णिग्गथ पावयणं, पत्तियामि ण भते ! णिग्गथ- पावयण, रोएमि ण भते ! णिग्गथ पावयणं, अब्भुट्ठेमि ण भते ! णिग्गथ पावयणं, एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते ! जाव से जहेय तुब्भे वयह, ज णवर देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएण अह देवा-

णुप्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वयामि। अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध।

कठिन शब्दार्थ-रोएमि-मैं रुचि करता हू, अब्भुट्ठेमि-मैं उद्यत (तत्पर) होता हूँ, एवमेय-इसी प्रकार है, तहमेय-उसी प्रकार सत्य-तथ्य है, अवितह-अवितथ-सत्य, असदिद्ध-सन्देह रहित।

भावार्थ-१०-श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास धर्म सुनकर और हृदय में धारण करके जमाली क्षत्रियकुमार हर्षित और सतुष्ट हृदय वाला हुआ यावत् खडे होकर श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को तीन बार प्रदक्षिणा करके वन्दन नमस्कार किया और इस प्रकार कहा-"हे भगवन ! मै निर्ग्रंथ प्रवचन पर श्रद्धा करता हूँ, हे भगवन् ! मै निग्रन्थ-प्रवचन पर विश्वास करता हूँ, हे भगवन् ! मै निर्ग्रन्थ प्रवचन पर रुचि करता हूँ, हे भगवन् ! मै निर्ग्रन्थ-प्रवचन के अनुसार प्रवृत्ति करने को तत्पर हुआ हूँ। हे भगवन् ! यह निग्रन्थ-प्रवचन सत्य है, तथ्य है, असदिग्ध है, जैसा कि आप कहते है। हे देवानुप्रिय ! मै अपने माता-पिता की आज्ञा लेकर, गृहवास का त्याग करके, मुण्डित होकर आपके पास अनगार धर्म को स्वीकार करना चाहता हूँ।"

भगवान् ने कहा,-"हे देवानुप्रिय ! जैसा तुम्हें सुख हो वैसा करो, धर्म-कार्य में समयमात्र भी प्रमाद मत करो।"

११-तएण से जमाली खत्तियकुमारे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो जाव णमसित्ता तामेव चाउग्घंट आसरह दुरूहेइ, दुरूहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ वहुसालाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सकोरट ० जाव धरिज्जमाणे ण महया-

भडचडगर जाव परिक्खित्ते, जेणेव खत्तियकुडग्गामे णयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खत्तियकुंडग्गाम णयर मज्झमज्झेणं, जेणेव सए गेहे, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए णिगिण्हइ, णिगिण्हित्ता रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, रहाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अब्भितरिया उवट्ठाणसाला जेणेव अम्मा-पियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मा-पियरो जएण विजएणं वद्धावेइ, जएणं विजएणं वद्धावित्ता एव वयासी–एव खलु अम्म-याओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे णिसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए। तएणं त जमालि खत्तियकुमार अम्मा-पियरो एव वयासी–धण्णे सि णं तुम जाया ! कयत्थे सि णं तुम जाया ! कयपुण्णे सि णं तुम जाया !, कयलक्खणे सि ण तुम जाया ! ज णं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे णिसते, से वि य धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए ।

कठिन शब्दार्थ–इच्छिए–इच्छित–इष्ट पडिच्छिए–प्रतीच्छित-अत्यन्त इष्ट, अभिरुइए–अभिरुचित–रुचिकर, कयत्थे–कृतार्थ हुए, कयपुण्णे–कृतपुण्य ।

भावार्थ–११–जब श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने जमाली से पूर्वोक्त प्रकार से कहा तो जमाली हर्षित और सतुष्ट हुआ । उसने भगवान् को तीन बार प्रदक्षिणा करके वन्दना नमस्कार किया । फिर चार घटावाले अश्वरथ पर चढकर श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास से और बहुशालक उद्यान

से निकला, यावत् सिर पर कोरण्ट पुष्प की माला युक्त छत्र धराता हुआ और महा सुभटो के समूह से परिवृत्त वह जमालीकुमार क्षत्रियकुड ग्राम नगर के मध्य होता हुआ अपने घर के बाहर की उपस्थानशाला में आया और घोडों को रोक कर रथ से नीचे उतरा। वह अपने माता पिता के पास आया और जय विजय शब्दो से बधाकर इस प्रकार बोला–"हे माता पिता! मैंने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से धर्म सुना है। वह धम मुझे इष्ट, अत्यन्त इष्ट और रुचिकर हुआ है।"

जमालीकुमार की यह बात सुनकर उसके माता पिता ने कहा–"हे पुत्र! तू धन्य है, तू कृतार्थ है, तू कृत्यपुण्य है और कृतलक्षण है कि तुने श्रमण भगवान महावीर स्वामी से धर्म सुना है और वह धम तुझे इष्ट, अत्यन्त इष्ट और रुचिकर हुआ है।

१२–तएण से जमालिखत्तियकुमारे अम्मा-पियरो दोच्च पि एव वयासी–एव खलु मए अम्मयाओ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मे णिसते, जाव अभिरुइए। तएण अह अम्मयाओ! ससारभउव्विग्गे, भीए जम्म-जरा-मरणेण, त इच्छामि ण अम्म याओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए।

कठिन शब्दार्थ–ससार भउव्विग्गे-ससार के भय से उद्विग्न हुआ भीए-डरा, अब्भणुण्णाए-आज्ञा होने पर।

भावार्थ–१२–जमाली क्षत्रियकुमार ने दूसरी बार अपने माता पिता से इस प्रकार कहा–"हे माता पिता! म ससार के भय से उद्विग्न हुआ हूँ, जन्म, जरा और मरण से भयभीत हुआ हूँ। अत हे माता पिता! मे आपकी आज्ञा

होने पर श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास मुण्डित होकर गृहवास का त्याग करके अनगार-धर्म स्वीकार करना चाहता हूँ।"

विवेचन–श्रद्धा –जहाँ तक का प्रवेश न हो–ऐसे धर्मास्तिकायादि द्रव्यो पर, व्याख्याता के कथन से विश्वास कर लेना 'श्रद्धा' है।

प्रतीति–व्याख्याता के साथ तर्क वितर्क करके युक्तियो द्वारा पुण्य पाप आदि को समझ कर विश्वास करना 'प्रतीति' है।

रुचि–व्याख्याता द्वारा उपदिष्ट विषय में श्रद्धा करके उसके अनुसार तप चारित्र आदि सेवन करने की इच्छा करना 'रुचि' है।

निर्ग्रन्थ प्रवचन 'तथ्य' है अर्थात आप्त पुरुषो के द्वारा कथन किया गया होने के कारण अभिमत है। यह निर्ग्रन्थ प्रवचन 'अवितथ है, अर्थात जिस प्रकार इस समय अभिमत है, उसी प्रकार यह सदा काल अभिमत रहता है, किन्तु कभी भी अनभिमत नही होता।

भगवान् के पास धर्म श्रवण कर जमाली क्षत्रियकुमार को उस पर श्रद्धा, प्रतीति और रुचि हुई। वह उसके अनुसार प्रवृत्ति करने को तत्पर हुआ और अपने माता पिता से दीक्षा की आज्ञा मांगने लगा।

१३–तएणं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया त अणिट्ठ, अकंत, अप्पिय, अमणुण्ण, अमणाम, असुयपुव्व गिर सोच्चा, णिसम्म, सेयागयरोमकूवपगलतविलीणगत्ता, सोगभरपवेवियगमगी, णित्तेया, दीण-विमणवयणा, करयलमलियव्व कमलमाला, तक्खण-ओलुग्गदुव्वलसरीरलावण्णसुण्णणिच्छाया, गयसिरीया, पसिढिल-भूषण-पडतखुण्णियसंचुण्णियधवलवलयपब्भट्ठउत्तरिज्जा, मुच्छावस-णट्ठचेयगरुई, सुकुमालविकिण्णकेसहत्था, परसुणिकत्त व्व चंपगलया, णिव्वत्तमहे व्व इदलट्ठी, विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि धसत्ति

सव्वगेहि सणिवडिया । तएण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ससभमोवत्तियाए, तुरिय कचणभिगारमुहविणिग्गय-सीयल-विमलजलधारपरिसिच्चमाणणिव्वावियगायलट्ठी,उक्खेवय तालियट-वीयणगजणियवाएणं, सफुसिएणं अतेउरपरिजणेण आसासिया समाणी, रोयमाणी, कदमाणी, सोयमाणी, विलवमाणी जमालिं खत्तियकुमार एव वयासी–तुम सि ण जाया ! अम्म एगे पुत्ते इट्ठे, कते, पिए, मणुण्णे, मणामे, थेज्जे, वेसासिए, सम्मए, वहुमए, अणु-मए, भडकरडगसमाणे, रयणे रयणब्भूए, जीविऊसविये, हियय-णंदिजणणे, उबरपुप्फमिव दुल्लहे सवणयाए, किमग ! पुण पासण-याए, त णो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भ खणमवि विप्पओग, त अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो, तओ पच्छा अम्हेहि कालगएहिं समाणेहि परिणयवये, वड्ढियकुलवसततुकज्जम्मि णिरवयक्ख समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि ।

कठिन शब्दार्थ–अणिटठे–अनिष्ट, अकत–अकान्त, अप्पिय–अप्रिय अमणुण्ण–अमनोज्ञ, अमणाम–अनिच्छनीय असुयपुव्व–पहले नही सुने ऐसे, गिर सोच्चा–वाणी सुनकर, सेयागय रोमकूवपगलतविलीणगत्ता–रोम कूपो मे से बहते हुए पसीने से भीग गया है शरीर जिसका, सोगभरपवेवियगमगी–शोक के कारण जिसके अग कम्पायमान हो रहे है निस्तेया–निस्तेज (म्लान) दीण विमणवयणा–जिसका मुह दीन एव शोकाकूल है, करयलमलियव्वकमलमाला–हाथो से मसली हुई कमल माला जैसी, तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरलावण्णसुण्णणिच्छाया–जिसका शरीर तत्क्षण ग्लान, दुबल, लावण्य शून्य एव प्रभा रहित हो गया, गयसिरिया–गत

श्री (शोभा रहित) पसिढिलभूसण-आभूषण ढीले होगए, पडतखुण्णियसचुण्णियधवलवलय-पब्भट्ठउत्तरिज्जा-निमल वलय (चूडियां) गिरकर चूर्ण होगई, उत्तरिय वस्त्र गिर गया, मुच्छावसणट्ठचेयगरुई-मूर्च्छा से चेतनता नष्ट होकर शरीर भारी होगया, सुकुमालविकिण्ण-केसहत्या-सुकोमल केश पास बिखर गया, परसुणियत्त व्व चंपगलया-कुल्हाडी से काटी हुई चम्पकलता की तरह, णिवत्तमहे व्व इंदलट्ठी-निवृत्त महोत्सव के इन्द्र ध्वज की लट्ठी (दंड) की तरह, विमुक्कसंधिबंधणा-शरीर के संधि बन्धन शिथिल होगए, कोट्टिमतलंसि धसत्ति सव्वंगेहिं सण्णिवडिया-धरती की फर्श पर धसक कर सर्वांग से गिर गई, ससंभमोवत्ति-याए-व्याकुलता पूर्वक गिरते हुए, तुरिय-त्वरित कंचणभिंगारमुहविणिग्गयसीयलविमल-जलधारपरिसिच्चमाणणिव्वावियगायलट्ठी-स्वर्ण कलश के मुख से निकलती हुई शीतल निर्मल जल धारा के सिंचन से स्वस्थ किया उक्खेवय तालियंट वीयणगजणियवाएण-बांस और ताल वृक्ष के पंखे की जल बिन्दुयुक्त वायु से सफुसिएण-स्पर्श से, अंतेउरपरिजणेण-अंत पुरस्थ परिजनों से, आसासियासमाणि-आश्वासन पाई हुई रोयमाणी-रोती हुई, कंदमाणी-आक्रन्द करती हुई, सोयमाणी-शोक करती हुई, विलवमाणी-विलाप करती हुई थिज्जे-स्थिरता गुण युक्त, वेसासिए-विश्वास योग्य संमए-सम्मत, बहुमए-बहुमत अणुमए-अनुमत भंडकरंडसमाणे-आभूषणों की पेटी जैसा रयणब्भूए-रत्न के समान जीविऊसविये-जीविकोत्सव समान हिययणंदिजणणे-हृदय में आनन्द उत्पन्न करने वाला, उंबरपुप्फमिव दुल्लभे-गूलर के फूल के समान दुर्लभ, खणमवि-क्षण मात्र भी, विप्पयोग-वियोग नहीं चाहते, कालगएहिं-मरने पर, परिणयवये-वृद्धावस्था में वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि-कुलवंश के तन्तु की वृद्धि करके, णिरवयक्ख-निरपेक्ष होकर।

भावार्थ-१३-जमाली क्षत्रियकुमार की माता उसके उपरोक्त अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ, मन को अप्रिय, अश्रुतपूर्व (जो पहले कभी नहीं सुनी) ऐसी (आघात कारक) वाणी सुनकर और अवधारण कर (शोक ग्रस्त हुई) शरीर के रोमकूपों से झरते हुए पसीने से वह भीग गई। शोक के भार से उसका सारा शरीर कम्पित होने लगा, चेहरे की कान्ति निस्तेज हो गई। उसका मुख, दीन और शोकातुर हो गया। हाथों से मसली हुई कमल माला की तरह उसका शरीर तत्काल म्लान एवं दुर्बल हो गया। वह लावण्य रहित, प्रभा रहित और शोभा रहित हो गई। उसके शरीर पर पहने हुए आभूषण ढीले हो गये। उसकी

सव्वगेहि सणिवडिया। तएण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ससभमोवत्तियाए, तुरिय कचणभिगारमुहविणिग्गय-सीयल-विमलजलधारपरिसिच्चमाणणिव्वावियगायलट्ठी,उक्खेवय तालियट-वीयणगजणियवाएणं, सफुसिएणं अतेउरपरिजणेण आसासिया समाणी, रोयमाणी, कदमाणी, सोयमाणी, विलवमाणी जमालि खत्तियकुमार एव वयासी–तुम सि ण जाया ! अम्म एगे पुत्ते इट्ठे, कते, पिए, मणुण्णे, मणामे, थेज्जे, वेसासिए, सम्मए, वहुमए, अणु-मए, भडकरडगसमाणे, रयणे रयणब्भूए, जीविऊसविये, हियय-णादिजणणे, उवरपुप्फमिव दुल्लहे सवणयाए, किमग ! पुण पासण-याए, त णो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भ खणमवि विप्पओग, त अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो, तओ पच्छा अम्हेहि कालगएहि समाणेहि परिणयवये, वड्ढियकुलवसततुकज्जम्मि णिरवयक्ख समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि।

कठिन शब्दार्थ–अणिट्ठे–अनिष्ट, अकत–अकान्त, अप्पिय–अप्रिय, अमणुण्ण–अमनोज्ञ, अमणाम–अनिच्छनीय, असुयपुव्व–पहले नही सुने ऐसे गिर सोच्चा–वाणी सुनकर, सेयागय रोमकूवपगलतविलीणगत्ता–रोम कूपो मे से बहते हुए पसीने से भीग गया है शरीर जिसका, सोगभरपवेवियगमगी–शोक के कारण जिसके अग कम्पायमान हो रहे हैं, णित्तेया–निस्तेज (म्लान) दीण विमणवयणा–जिसका मुह दीन एव शोकाकूल है, करयलमलियव्वकमलमाला–हाथो से मसली हुई कमल माला जसी तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरलावण्णसुण्णणिच्छाया–जिसका शरीर तत्क्षण ग्लान, दुबल, लावण्य शून्य एव प्रभा रहित हो गया गयसिरिया–गत

खलु अम्मयाओ ! माणुस्सए भवे अणेगजाइ-जरा-मरण-रोग-सारीर-माणसपकामदुक्ख-वेयण-वसण-सओवद्दवाभिभूए, अधुवे, अणिइए, असासए, सञ्झब्भरागसरिसे, जलबुब्बुयसमाणे, कुसग्गजलबिंदु-सण्णिभे, सुविणगदंसणोवमे, विज्जुलयाचंचले, अणिच्चे सडणपडण-विद्धंसणधम्मे, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्स विप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्विं गमणयाए, के पच्छा गमणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स जाव-पव्वइत्तए।

कठिन शब्दार्थ-वसणवसओवद्दवाभिभूए-सैकडो व्यसनो (दुखो) से पीडित अधुवे-अध्रुव, अणिइए-अनियत असासए-अशाश्वत सञ्झप्परागसरीसे-सध्या के सुदर रग जैसा, जलबुब्बुयसमाणे-पानी के बुदबुदे जैसा कुसग्गजलबिंदुसण्णिभे-घास पर रही हुई जल बिंदु के समान सुविणगदंसणोवमे-स्वप्न दर्शन जैसा, विज्जुल्लयाचचले-बिजली के समान चचल, अणिच्च-अनियत, सडणपडणविद्धंसणधम्मे-सडन गिरन और विध्वंसन धर्मवाला, विप्पजहियव्वे-त्याग करने योग्य।

भावार्थ-१४-तब राजकुमार जमाली ने अपने माता पिता से इस प्रकार कहा-"हे माता-पिता ! अभी जो आपने कहा कि-'हे पुत्र ! तू हमें इष्ट, कान्त, प्रिय आदि है यावत हमारे कालगत होने पर तू दीक्षा अगीकार करना" इत्यादि। परतु हे माता-पिता ! यह मनुष्य जीवन जन्म, जरा, मरण, रोग, व्याधि आदि अनेक शारीरिक और मानसिक दुःखो की अत्यन्त वेदना से और सैकडो व्यसनो (कष्टो) से पीडित है। यह अध्रुव, अनित्य और अशाश्वत है। सध्याकालीन रगो के समान, पानी के परपोटे (बुदबुदे) के समान, कुशाग्र पर रहे हुए जल बिंदु के समान, स्वप्न दर्शन के समान तथा बिजली की चमक के समान चञ्चल और अनित्य है। सडना, पडना, गलना और विनष्ट होना इसका धर्म (स्वभाव) है।

चूडियाँ हाथो से गिर पडी और टूट कर चूण हो गईं । उसका उत्तरीय वस्त्र अस्तव्यस्त हो गया । मूर्च्छा द्वारा उसका चैतन्य विलुप्त होजाने से वह भारी शरीर वाली हो गई । उसके सुकुमाल केशपाश बिखर गये । कुल्हाडी से काटी हुई चम्पक लता के समान और उत्सव पूरा हो जाने पर इन्द्रध्वजदण्ड के समान उसके सन्धि बन्धन शिथिल हो गये । वह सभी अगो से 'धस' करती हुई धरती पर गिर पडी । इसके बाद जमाली क्षत्रियकुमार की माता के शरीर पर दासियो द्वारा शीघ्र ही स्वण कलशो के मुख से निकली हुई शीतल और निमल जलधारा का सीचन करके स्वस्थ बनाया और बाँस के बने हुए उत्क्षेपक (पखो) तथा ताड पत्र के बने हुए पखो द्वारा जल बिन्दु सहित पवन करके दासियो ने उसे आश्वस्त और विश्वस्त किया । स्वस्थ होते होते ही रोती हुई, आक्रन्दन करती हुई, शोक करती हुई और विलाप करती हुई वह जमालीकुमार की माता इस प्रकार कहने लगी–'हे पुत्र ! तू मुझे इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, मनाप (मन गमता), आधारभूत, विश्वासपात्र, सम्मत, बहुमत, अनुमत आभूषणो की पेटी के तुल्य, रत्न स्वरूप, रत्न तुल्य, जीवित के उत्सव समान और हृदय को आनन्ददायक एक ही पुत्र है । उदुम्बर (गुलर) के पुष्प के समान तेरा नाम सुनना भी दुर्लभ है, तो तेरा दशन दुलभ हो, इसमें तो कहना ही क्या ? अत हे पुत्र ! तेरा वियोग मुझ से एक क्षण भी सहन नहीं हो सकता । इसलिए जब तक हम जीवित ह, तब तक घर ही रह कर कुल वश की अभिवृद्धि कर । जब हम कालधर्म को प्राप्त हो जायं और तुम्हारी वृद्धावस्था आ जाय तब, कुल वश की वृद्धि करके तुम निरपेक्ष होकर श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पास मुण्डित होकर अनगारधम को स्वीकार करना ।"

१४–तएण जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एव वयासी–तहा वि ण त अम्म-याओ ! ज ण तुब्भे मम एव वयह, तुम सि ण जया ! अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते चेव, जाव पव्वइहिसि, एव

तथा यौवनादि गुण है, अणुभूय–अनुभव किया हुआ ।

भावार्थ–१५–जमाली क्षत्रियकुमार की बात सुनकर उसके माता पिता ने इस प्रकार कहा–"हे पुत्र ! यह तेरा शरीर उत्तम रूप, लक्षण, व्यञ्जन (मस तिल आदि चिन्ह) और गुणो से युक्त है, उत्तम बल, वीर्य और सत्त्व सहित है, विज्ञान में विचक्षण है, सौभाग्य गुण से उन्नत है, कुलीन है, अत्यन्त समर्थ है, व्याधि और रोगो से रहित है, निरुपहत, उदात्त और मनोहर है, पटु (चतुर) पांच इन्द्रियो से युक्त और प्रथम युवावस्था को प्राप्त है, इत्यादि अनेक उत्तम गुणो से युक्त है । इसलिए हे पुत्र ! जबतक तेरे शरीर में रूप, सौभाग्य और यौवन आदि गुण है, तबतक तू इनका अनुभव कर । इसके पश्चात जब हम कालधर्म को प्राप्त हो जायें, और तुझे वृद्धावस्था प्राप्त हो जाय तब कुल-वंश की वृद्धि करने के पश्चात निरपेक्ष होकर, श्रमण भगवान् के पास दीक्षा लेना।"

१६ तएणं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एवं वयासी–तहा वि णं तं अम्म-याओ ! जं णं तुब्भे मम एवं वयह–इमं च णं ते जाया ! सरीरगं तं चेव जाव पव्वइहिसि, एवं खलु अम्म याओ ! माणुस्सगं सरीरं दुक्खाययणं, विविहवाहिसयसणिकेयं, अट्ठियकट्ठुट्ठियं, छिरा-ण्हारु-जालओणद्धसंपिणद्धं, मट्टियभंडं व दुब्बलं, असुइसंकिलिट्ठं, अणिट्ठवियसव्वकालसंठप्पयं, जराकुणिमजज्जरघरं व सडण-पडण-विद्धंसणधम्मं, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्स विप्पजहियव्वं भविस्सइ, से के स णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्विं तं चेव जाव पव्वइत्तए ।

कठिन शब्दार्थ–दुक्खाययण–दु खो का घर, विविहवाहिसयसणिकेय–विविध प्रकार

पहले या पीछे एक दिन अवश्य ही छोडना पडता है, तो हे माता पिता ! इस बात का निर्णय कौन कर सकता है कि हममें से कौन पहले जायगा (मरेगा) और कौन पीछे जायगा। इसलिए हे माता-पिता ! आप मुझे आज्ञा दीजिये। आपकी आज्ञा होने पर मैं श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पास प्रव्रज्या अगीकार करना चाहता हूँ।"

१५-तएणं त जमालिं खत्तियकुमार अम्मा-पियरो एव वयासी-इम च ते जाया ! सरीरग पविसिट्ठरूवलक्खण-वजण-गुणोववेय, उत्तमबल-वीरीय सत्तजुत्त, विण्णाणवियक्खण, ससोहग्ग-गुणसमुस्सिय अभिजायमहक्खम, विविहवाहिरोगरहिय णिरूवहय-उदत्त-लट्ठ, पचिदियपडुपढमजोव्वणत्थ, अणेगउत्तमगुणेहि सजुत्त, त अणुहोहि ताव जाया ! णियग-सरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे, तओ पच्छा अणुभूय णियगसरीररूव-सोहग्गजोव्वणगुणे अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहि परिणयवये वड्ढियकुलवसततुकज्जम्मि णिरव-यक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइहिसि।

कठिन शब्दार्थ-जाया-पुत्र, पविसिट्ठरूव-विशिष्ट रूप, सत्तजुत्त-सत्त्वयुक्त, विण्णाण वियक्खण-विज्ञान मे विचक्षण है, ससोहग्गगुणसमुस्सिय-सौभाग्यगुण से उन्नत है अभिजाय महक्खम-कुलीन है और अत्यत क्षमता (सामथ्य) वाला है, विविहवाहिरोगरहिय-विविध प्रकार की व्याधि एव रोग से रहित है णिरुवहय उदत्त लट्ठ-निरुपहत उदात्त और मनो हर है, पंचिदियपडुपढमजोव्वणत्थ-पाच इद्रिय और नवयुवावस्था प्राप्त है अणुहोहि ताव-अनुभव हो रहा है तबतक, णियगसरीररूवसोहग्गजोव्वणगुणे-तेरे शरीर मे रूप सौभाग्य

तया यौवनादि गुण है, अणुभूय-अनुभव किया हुआ ।

भावार्थ-१५-जमाली क्षत्रियकुमार की बात सुनकर उसके माता पिता ने इस प्रकार कहा-"हे पुत्र ! यह तेरा शरीर उत्तम रूप, लक्षण, व्यञ्जन (मस तिल आदि चिन्ह) और गुणो से युक्त है, उत्तम बल, वीर्य और सत्त्व सहित है, विज्ञान में विचक्षण है, सौभाग्य गुण से उन्नत है, कुलीन है, अत्यन्त समर्थ है, व्याधि और रोगो से रहित है, निरुपहत, उदात्त और मनोहर है, पटु (चतुर) पांच इन्द्रियो से युक्त और प्रथम युवावस्था को प्राप्त है, इत्यादि अनेक उत्तम गुणो से युक्त है । इसलिए हे पुत्र ! जबतक तेरे शरीर में रूप, सौभाग्य और यौवन आदि गुण है, तबतक तू इनका अनुभव कर । इसके पश्चात् जब हम कालधर्म को प्राप्त हो जायँ, और तुझे वृद्धावस्था प्राप्त हो जाय तब कुल-वंश की वृद्धि करने के पश्चात् निरपेक्ष होकर, श्रमण भगवान् के पास दीक्षा लेना ।"

१६ तएण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एव वयासी-तहा वि ण त अम्म-याओ ! ज ण तुब्भे मम एव वयह-इम च ण ते जाया ! सरीरग त चेव जाव पव्वइहिसि, एव खलु अम्म याओ ! माणुस्सग सरीर दुक्खाययण, विविहवाहिसयसणिकेय, अट्ठियकट्ठुट्ठिय, छिरा-ण्हारु-जालओणद्धसपिणद्ध, मट्टियभड व दुब्बल, असुइसकिलिट्ठ, अणिट्ठवियसव्वकालसठप्पय, जराकुणिम जज्जरघर व सडण-पडण-विद्धसणधम्म, पुव्वि वा पच्छा वा अवस्स विप्पजहियव्व भविस्सइ, से के स ण जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्वि त चेव जाव पव्वइत्तए ।

कठिन शब्दार्थ-दुक्खाययण-दु खो का घर, विविहवाहिसयसणिकेय-विविध प्रकार

पहले या पीछे एक दिन अवश्य ही छोडना पडता है, तो हे माता पिता ! इस बात का निर्णय कौन कर सकता हूं कि हममें से कौन पहले जायगा (मरेगा) और कौन पीछे जायगा। इसलिए हे माता-पिता ! आप मुझे आज्ञा दीजिये। आपकी आज्ञा होने पर मैं श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पास प्रव्रज्या अगीकार करना चाहता हूं।"

१५-तएणं त जमालि खत्तियकुमार अम्मा-पियरो एव वयासी-इम च ते जाया ! सरीरग पविसिट्ठरूवलक्खण-वजण-गुणोववेय, उत्तमवल वीरीय सत्तजुत्त, विण्णाणवियक्खण, ससोहग्ग-गुणसमुस्सिय अभिजायमहक्खम, विविहवाहिरोगरहिय णिरूवहय-उदत्त-लट्ठ, पचिदियपडुपढमजोव्वणत्थ, अणेगउत्तमगुणेहि सजुत्त, त अणुहोहि ताव जाया ! णियग-सरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे, तओ पच्छा अणुभूय णियगसरीररूव-सोहग्गजोव्वणगुणे अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवये वड्ढियकुलवसततुकज्जम्मि णिरव-यक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइहिसि।

कठिन शब्दार्थ-जाया-पुत्र, पविसिट्ठरूव-विशिष्ट रूप, सत्तजुत्त-सत्त्वयुक्त, विण्णाण वियक्खण-विज्ञान मे विचक्षण है ससोहग्गगुणसमुस्सिय-सोभाग्यगुण से उन्नत है अभिजाय महक्खम-कुलीन है और अत्यत क्षमता (सामर्थ्य) वाला है, विविहवाहिरोगरहिय-विविध प्रकार की व्याधि एव रोग से रहित है, णिरुवहय उदत्त लट्ठ-निरुपहत उदात्त और मनोहर है, पंचिदियपडुपढमजोव्वणत्थ-पाच इद्रिय और नवयुवावस्था प्राप्त है अणुहोहि ताव-अनुभव हो रहा है तवतक, णियगसरीररूवसोहग्गजोव्वणगुणे-तेरे शरीर म रूप सौभाग्य

कुल-वससताणततुवद्धणप्पगब्भवयभाविणीओ, मणाणुकूल-हिय-इच्छियाओ, अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ, उत्तमाओ णिच्च भावाणुरत्तसव्वगसुदरीओ भारियाओ, त भुजाहि ताव जाया ! एयाहिं सद्धि विउले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगी, विसय-विगयवोच्छिण्णकोउहल्ले अम्हेहि कालगएहि जाव पव्वइहिसि।

कठिन शब्दार्थ–विपुलकुलबालियाओ–विशाल कुल की बालाएँ, सिरिसियाओ–समान हैं, सिरित्तयाओ–समान त्वचावाली सिरिव्वयाओ–समान वयवाली आणिएल्लियाओ–लाई हुई, सव्वकाललालिय-सुहोचियाओ–सभी काल मे ललित एव सुखप्रद, णिउणविणओवयार-पडिय–निपुण विनयोपचार मे पडिता, वियक्खणा–विचक्षणा (चतुर) मजुल मिय महुर-भणिय–सुन्दर मित एव मधुर भाषण विहसिय विपेक्खियगइ विलास चिट्ठियविसारया–हास्य, कटाक्ष गति, विलास एव स्थिति मे विशारद, अविकलकुल सीलसालिणी–उत्तम कुल और शील से सुशोभित, सताणततुवद्धणप्पगब्भवयभाविणी–सतान ततु की वद्धि करने मे समथ यौवनवाली है, हियइच्छियाओ–हृदय मे चाहने योग्य, गुणवल्लहा–गुणवल्लभा, विसयविगय वोच्छिन्नकोउहल्ले–विषयेच्छा एव उत्सुकता नष्ट होने पर।

भावार्थ–१७–तब जमालीकुमार के माता पिता ने उससे इस प्रकार कहा–'हे पुत्र ! ये तेरे आठ स्त्रियाँ है। वे विशाल कुल में उत्पन्न और तरुण अवस्था को प्राप्त हैं, वे समान त्वचावाली, समान उम्रवाली, समान रूप, लावण्य और यौवन गुण से युक्त हैं, वे समान कुल से लाई हुई है, वे कला में कुशल, सवकाललालित और सुख के योग्य है। वे मार्दव गुण से युक्त, निपुण, विनयोप चार में पण्डिता और विचक्षणा है। सुन्दर, मित और मधुर बोलने वाली है। हास्य, विप्रेक्षित (कटाक्ष दृष्टि), गति, विलास और स्थिति में विशारद हैं। वे उत्तम कुल और शील से सुशोभित है। विशुद्ध कुलरूप वश ततु की वृद्धि करने में समर्थ यौवनवाली है। मन के अनुकूल और हृदय को इष्ट है और गुणो के द्वारा प्रिय और उत्तम हैं। वे तुझमें सदा अनुरक्त और सर्वांग सुन्दर ह।

की सकडो व्याधियो का निकेतन (स्थान) है, अट्ठियकट्ठुट्ठिय–अस्थिरूप लकडी का बना है, छिराण्हारुजालओणद्धसपिणद्ध–नाडियो और स्नायु समूह से अत्य त लिपटा हुआ है मट्टिय भड व दुब्बल–मिट्टी के बतन की तरह दुबल है, असुइ सकिलिट्ठ–अशुचि से भरपूर है, अणिट्ठवियसव्वकालसठप्पय–प्रनिष्ट होने से सदैव शुश्रूपा करनी होती है, जरा कुणिमजज्जर घर–जीण मास का जीण घर ।

भावाथ–१६–जमाली क्षत्रियकुमार ने अपने माता-पिता से इस प्रकार कहा–"हे माता पिता ! आपने कहा–"हे पुत्र ! यह तेरा शरीर उत्तम रूप, लक्षण, व्यञ्जन और गुणो से युक्त है, इत्यादि यावत् हमारे कालगत होने पर तू दीक्षा लेना ।" परन्तु हे माता-पिता ! यह मनुष्य का शरीर दु खो का घर है । अनेक प्रकार को व्याधियो का स्थान है। अस्थिरूप लकडी का बना हुआ है। नाडियो और स्नायुओ के समूह से वेष्टित है । मिट्टी के बतन के समान दुर्बल है । अशुचि का भण्डार है। निरन्तर इसकी सम्हाल करनी पडती है। जीणघर के समान सडना, गलना और विनष्ट होना इसका स्वभाव है । इस शरीर को पहले या पीछे एक दिन छोडना ही पडेगा । कौन जानता ह कि हम में से पहले कौन जायेगा और पीछे कौन ? इसलिए आप मुझे आज्ञा दीजिये ।"

१७–तएण त जमालि खत्तियकुमार अम्मा-पियरो एव वयासी–इमाओ य ते जाया ! विपुलकुलबालियाओ, सरिसियाओ, सरित्तयाओ,सरिव्वयाओ,सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वणगुणोववेयाओ, सरिसएहितो कुलेहितो आणिएल्लियाओ कलाकुसल-सव्वकाल-लालिय सुहोचियाओ, मद्दवगुणजुत्त-णिउणविणओवयारपडिय-वियक्खणाओ, मजुल-मिय-महुरभणिय विहसिय-विप्पेक्खियगइ-विलास-चिट्ठियविसारयाओ, अविकलकुल-सीलसालिणीओ,विसुद्ध-

कुल-वसमताणततुवद्धणप्पगब्भवयभाविणीओ, मणाणुकूल-हियइच्छियाओ, अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ, उत्तमाओ णिच्च भावाणुरत्तसव्वगसुदरीओ भारियाओ, त भुजाहि ताव जाया ! एयाहिं सद्धि विउले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगी, विसयविगयवोच्छिण्णकोउहल्ले अम्हेहि कालगएहिं जाव पव्वइहिमि ।

कठिन शब्दार्थ—विपुलकुलवालियाओ—विशाल कुल की बालाएँ, सिरिसियाओ—समान है, सिरित्तयाओ—समान त्वचावाली सिरिव्वयाओ—समान वयवाली आणिएल्लियाओ—लाई हुई, सव्वकाललालिय सुहोचियाओ—सभी काल मे ललित एव सुखप्रद, णिउणविणओवयारपडिय-निपुण विनयोपचार मे पडिता, वियक्खणा—विचक्षणा (चतुर) मजुल मिय महुरभणिय—सुन्दर मित एव मधुर भाषण विहसिय विपेक्खियगइ विलास चिट्ठियविसारया—हास्य, कटाक्ष गति, विलास एव स्थिति मे विशारद, अविकलकुल सीलसालिणी—उत्तम कुल और शील से सुशोभित, सताणततुवद्धणप्पगब्भवयमाविणी—सतान ततु की वृद्धि करने मे समर्थ यौवनवाली है, हियइच्छियाओ—हृदय मे चाहने योग्य, गुणवल्लहा—गुणवल्लभा, विसयविगय वोच्छिन्नकोउहल्ले—विषयेच्छा एव उत्सुकता नष्ट होने पर ।

भावार्थ—१७—तब जमालीकुमार के माता-पिता ने उससे इस प्रकार कहा—'हे पुत्र ! ये तेरे आठ स्त्रियाँ है । वे विशाल कुल में उत्पन्न और तरुण अवस्था को प्राप्त है, वे समान त्वचावाली, समान उम्रवाली, समान रूप, लावण्य और यौवन गुण से युक्त है, वे समान कुल से लाई हुई है, वे कला में कुशल, सर्वकाललालित और सुख के योग्य है । वे मादव गुण से युक्त, निपुण, विनयोपचार में पण्डिता और विचक्षणा है । सुन्दर, मित और मधुर बोलने वाली है । हास्य, विप्रेक्षित (कटाक्ष दृष्टि), गति, विलास और स्थिति में विशारद है । वे उत्तम कुल और शील से सुशोभित है । विशुद्ध कुलरूप वश तन्तु की वृद्धि करने में समर्थ यौवनवाली है । मन के अनुकूल और हृदय को इष्ट है और गुणो के द्वारा प्रिय और उत्तम है । वे तुझमें सदा अनुरक्त और सर्वांग सुन्दर है ।

इसलिये हे पुत्र ! तू इन स्त्रियो के साथ मनुष्य सम्बन्धी विपुल काम भोगो का भोग कर। जब विषय की उत्सूकता नही रहे और भुक्त भोगी हो जाय तब हमारे काल धम को प्राप्त हो जाने पर यावत तू दीक्षा लेना।

१८ तएण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एव वयासी-तहा वि ण त अम्म-याओ ! ज ण तुब्भे मम एय वयह-इमाओ ते जाया ! विपुलकुल जाव पव्वइहिसि, एव खलु अम्मयाओ ! माणुस्सगा कामभोगा असुई, असासया, वतासवा, पित्तासवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणियासवा, उच्चार-पासवण-खेल सिघाणग-वत-पित्त-पूय-सुक्क-सोणियसमुब्भवा, अमणुण्णदुरूव-मुत्त-पूइय पुरिस-पुण्णा, मयगधुस्सास-असुभ-णिस्सासउव्वेयणगा, बीभत्था, अप्प-कालिया, लहुसगा, कलमलाहियासदुक्खबहुजणसाहारणा, परिकिले-सकिच्छदुक्खसज्झा, अबुहजणणिसेविया, सया साहुगरहणिज्जा, अणतससारवद्धणा, कडुगफलविवागा चुडल्लिव्व अमुच्चमाण-दुक्खाणुबधिणो, सिद्धिगमणविग्घा, से के स ण जाणइ अम्म-याओ ! के पुव्वि गमणयाए के पच्छा ? त इच्छामि ण अम्म-याओ ! जाव पव्वइत्तए।

कठिन शब्दार्थ-वतासवा पित्तासवा-वात और पित्त से बहनेवाला खेलासवा, सुक्कासव ासोणियासवा-श्लेष्म, शुक्र एव श्रोणित के झरनेवाला उच्चार पासवण-विष्ठा मूत्र, समुब्भवा-उत्पन्न हुआ, पुइय पुरिस पुण्णा-पीप और विष्ठा से भरपूर, मयगधुस्सास असुभ णिस्सास उव्वेयणगा-मृतक जैसी गधवाले उच्छ्वास और अशुभ निश्वास से उद्वेग उत्पन्न

करनेवाला, अप्पकालिया-अल्पकालीन ।

भावार्थ-१८-माता-पिता की उपरोक्त बात के उत्तर में जमाली क्षत्रिय कुमार ने अपने माता पिता से इस प्रकार कहा-"हे माता-पिता ! आपने कहा कि-'विशाल कुल में उत्पन्न तेरी ये आठ स्त्रियाँ है, इत्यादि । हे माता-पिता ! ये मनुष्य सम्बन्धी काम-भोग निश्चित रूप से अशुचि और अशाश्वत है । वात, पित्त, श्लेष्म (कफ), वीर्य और रुधिर के झरने है । मल, मूत्र, श्लेष्म (खखार), सिंघाण (नासिका का मैल), वमन, पित्त, राध, शुक्र और शोणित से उत्पन्न हुए है । वे अमनोज्ञ, बुरे, मूत्र और विष्ठा से भरपूर तथा दुर्गन्ध से युक्त है । मृत कलेवर के समान गन्धवाले एव उच्छ्वास और निश्वास से उद्वेग उत्पन्न करनेवाले है । बीभत्स, अल्प काल रहनेवाले, हलके और कलमल (शरीर में रहा हुआ एक प्रकार का अशुद्ध द्रव्य) के स्थानरूप होने से दु खरूप है और सभी मनुष्यो के लिए साधारण है । काम-भोग, शारीरिक और मानसिक अत्यन्त दुख पूवक साध्य है । अज्ञानी पुरुषो द्वारा सेवित तथा उत्तम पुरुषो द्वारा सदा निन्दनीय है, अनन्त ससार की वृद्धि करनेवाले है, परिणाम में कटु फलवाले है, जलते हुए घासके पूले के स्पश के समान दु खदायी तथा कठिनता से छुटनेवाले है, दु खानुभव वाले है । ये काम भोग मोक्षमाग में विघ्नरूप ह । हे माता-पिता ! यह भी कौन जानता है कि हमारे में से कौन पहले जायगा और कौन पीछे । इसलिए मुझे दीक्षा लेने की आज्ञा दीजिए ।

१९-तएणं त जमालि खत्तियकुमार अम्मा-पियरो एव वयासी-इमे य ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहु-हिरण्णे य, सुवण्णेय, कसे य, दूसे य, विउलधण-कणग-जाव सत-सारसावएज्जे, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुल-वसाओ पकाम दाउ, पकाम भोत्तु, परिभाएउ त अणुहोहि ताव जाया ! विउले माणुस्सए

इड्डि-सक्कारसमुदए, तओ पच्छा अणुहूयकल्लाणे, वड्ढियकुलवस जाव पव्वइहिसि ।

कठिन शब्दार्थ–अज्जय–दादा, पज्जय–परदादा, पिउपज्जय–पिता का परदादा, सावएज्जे–स्वापतेय–धन, अलाहि–पर्याप्त पकाम–प्रकाम (अतिशय), परिभाएउ–वितरण करने ।

भावार्थ–१६–इसके पश्चात् जमालीकुमार के माता-पिता ने इस प्रकार कहा–"हे पुत्र ! यह दादा, परदादा और पिता के परदादा से प्राप्त बहुत हिरण्य, सुवर्ण, कास्य, वस्त्र, विपुल धन, कनक यावत् सारभूत द्रव्य विद्यमान है । यह द्रव्य इतना है कि यदि सात पीढी तक पुष्कल (खुले हाथो) दान दिया जाय, भोगा जाय और बाँटा जाय, तो भी समाप्त नही हो सकता । अत हे पुत्र ! मनुष्य सम्बन्धी विपुल ऋद्धि और सम्मान का भोग कर । सुख का अनुभव करके और कुल वश की वृद्धि करके पीछे यावत तू दीक्षा लेना ।

२०–तएण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एव वयासी–तहा वि ण त अम्म-याओ ! ज ण तुब्भे मम एव वयह-इम च ते जाया ! अज्जय-पज्जय-जाव पव्वइहिसि, एव खलु अम्म-याओ ! हिरण्णे य, सुवण्णे य, जाव सावएज्जे अग्गिसाहिए, चोर-साहिए, रायसाहिए, मच्चुसाहिए, दाइयसाहिए, अग्गिसामण्णे जाव दाइयसामण्णे, अधुवे, अणिइए, असासए, पुव्वि वा पच्छा वा अवस्स विप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस ण जाणइ त चेव जाव पव्वइत्तए ।

कठिन शब्दार्थ–अग्गिसाहिए–अग्नि साध्य (अग्नि का विभाग) अग्नि के लिए साधा

रण, मच्चु-मृत्यु, साहिए-साध्य दाइय-दायाद (बन्धु आदि भागीदार), सामण्णे-सामान्य।

भावार्थ-२०-तब जमाली क्षत्रियकुमार ने अपने माता-पिता से इस प्रकार कहा-"आपने धन सम्पत्ति आदि के लिए कहा है, परन्तु हे माता पिता ! यह हिरण्य, सुवण यावत् सर्व सारभूत द्रव्य अग्नि, चोर, राजा और मृत्यु (काल) के लिए साधारण (अधीन) है। बन्धु इसे बँटा सकते है। अग्नि यावत दायाद (भाई आदि हिस्सेदार) के लिए सामान्य (विशेष अधीन) है। यह अध्रुव, अनित्य और अशाश्वत है। इसे पहले या पीछे, एक-न एक दिन अवश्य छोडना पडेगा। हममें से पहले कौन जायगा और पीछे कौन जायगा, यह भी कौन जानता है। इसलिए आप मुझे दीक्षा की आज्ञा दीजिये।

२१-तएण त जमालिं खत्तियकुमार अम्म याओ जाहे णो सचाएति विसयाणुलोमाहि वहुहि आघवणाहि य, पण्णवणाहि य, सण्णवणाहि य, विण्णवणाहि य आघवेत्तए वा पण्णवेत्तए वा, सण्णवेत्तए वा, विण्णवेत्तए वा, ताहे विसयपडिकूलाहि सजमभयुव्वेयणकराहि पण्णवणाहि पण्णवेमाणा एव वयासी-एव खलु जाया ! णिग्गथे पावयणे सच्चे, अणुत्तरं, केवले जहा आवस्सए, जाव सव्वदुक्खाण अत करेंड। अहीव एगतदिट्ठीए खुरो इव एगतधाराए, लोहमया जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव णिस्साए गगा वा महाणई पडिसोयगमणयाए, महासमुद्दो वा भुयाहिं दुत्तरो, तिक्ख कमियव्व, गरुय लवेयव्व, असिधारग वय चरियव्व। णो खलु कप्पइ जाया ! समणाण णिग्गथाण आहाकम्मिए इ वा उद्देसिए

इ वा, मिस्सजाए इ वा, अज्झोयरए इ वा, पूइए इ वा, कीए इ वा, पामिच्चे इ वा, अच्छेज्जे इ वा, अणिसट्ठे इ वा, अभिहडे इ वा, कतारभत्ते इ वा, दुब्भिक्खभत्ते इ वा, गिलाणभत्ते इ वा, वद्दलिया-भत्ते इ वा, पाहुणगभत्ते इ वा, सेज्जायरपिंडे इ वा, रायपिंडे इ वा, मूलभोयणे इ वा, कदभोयणे इ वा, फलभोयणे इ वा, बीयभोयणे इ वा, हरियभोयणे इ वा, भुत्तए वा पायए वा । तुम सि च णं जाया ! सुहसमुचिए, णो चेव ण दुहसमुचिए, णाल सिय णाल उण्ह, णाल खुहा, णाल पिवासा, णाल चोरा, णाल वाला, णाल दसा, णाल मसगा, णाल वाइय-पित्तिय सेभिय सण्णिवाइए विविहरोगायके, परिस्सहोवसग्गे उदिण्णे अहियावित्तए । त णो खलु जाया ! अम्हे उ इच्छामो तुब्भ खणमवि विप्पओग, त अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो, तओ पच्छा अम्हेहिं जाव पव्वइहिसि,

कठिन शब्दार्थ-णो सचाएति-समर्थ नही हुए विसयाणुलोमाहि-विषय के अनुकूल, विषयपडिकूलाहि-विषय के प्रतिकूल, सजमभयुव्वेयणकराहि-सयम मे भय एव उद्वेग करने वाली, अणुत्तरे-सर्वोत्तम (प्रधान) अहीव एगतदिट्ठीए-सप की तरह एकान्त दृष्टिवाला, खुरो इव एगतधारए-उस्तरे की तरह एक धारवाला, वालुया कवले इव णिस्सारए-रेत के निवाले की तरह नि सार, पडिसोयगमणाए-प्रतिश्रोत (बहाव के सामने) गमन, दुत्तरो-दुस्तर (तैरना कठिन) तिक्ख कमियव्व-तीक्ष्ण खडगादि पर चलने जसा, गरुय लबेयव्व-भारी शिला उठाने जसा, असिधारग वय चरियव्व-तलवार की धार पर चलने जसा, सुहसमुचिए-सुख के योग्य, नाल-असमर्थ, वाला-व्याल (सिंहादि) सेंभिय-श्लेष्मिक, सण्णि वाइय-सन्निपातजन्य, विविहरोगायके-विविध प्रकार के रोग-आतक से, परिस्सहोवसग्गे-परीषह और उपसग से, उदिण्णे-उदय होने पर, अहियासित्तए-सहन करने मे ।

भावार्थ—२१—जब जमालीकुमार के माता-पिता उसे विषय के अनुकूल बहुत सी उक्तियां, प्रज्ञप्तियां, सज्ञप्तियां और विज्ञप्तियो द्वारा कहने, जतलाने और समझाने-बुझाने में समर्थ नहीं हुए, तब विषय के प्रतिकूल और सयम में भय तथा उद्वेग उत्पन्न करने वाली उक्तियो से समझाते हुए इस प्रकार कहने लगे—"हे पुत्र ! यह निर्ग्रन्थ-प्रवचन सत्य, अनुत्तर (अनुपम), अद्वितीय, परिपूर्ण, न्याययुक्त, शुद्ध, शल्य को काटनेवाला, सिद्धिमार्ग, मुक्तिमार्ग, निर्याणमार्ग और निर्वाणमार्ग रूप है, यह अवितथ (असत्य रहित) है, अविसधि (निरन्तर) है और समस्त दु खो का नाश करनेवाला है । इसमें तत्पर जीव सिद्ध, बुद्ध, एव मुक्त होते हैं, निर्वाण प्राप्त करते हैं तथा समस्त दु खो का अन्त करते हैं । परन्तु हे पुत्र ! यह धर्म, सर्प की एकान्त दृष्टि, शस्त्र की एक धार और लोहे के जौ (चने) चावने के समान दुष्कर है, वालु (रेत) के कवल (ग्रास) के समान निस्वाद है, गगा महानदी के प्रवाह के सम्मुख जाने के समान तथा भुजाओ से महा-समुद्र तैरने के समान इस का पालन करना वडा कठिन है । यह धर्म खडग आदि की तीक्ष्ण धार पर चलने के समान दुष्कर है । महाशिला को उठाने के समान है और तलवार की तीक्ष्ण धारा के समान व्रत का आचरण करना कठिन है । हे पुत्र ! श्रमण-निग्रन्थो को इतने काय करना नहीं कल्पते, यथा—(१) आधाकर्मिक, (२) औद्देशिक, (३) मिश्र जात, (४) अध्यवपूरक, (५) पूतिकम, (६) क्रीत, (७) प्रामित्य, (८) अच्छेद्य, (९) अनिसृष्ट, (१०) अभ्याहृत, (११) कान्तारभक्त, (१२) दुर्भिक्षभक्त, (१३) ग्लानभक्त, (१४) वार्दलिकाभक्त, (१५) प्राघुणकभक्त, (१६) शय्यातर-पिण्ड और (१७) राजपिण्ड । इसी प्रकार मूल, कन्द, फल, बीज और हरी वनस्पति का भोजन करना और पीना नहीं कल्पता । हे पुत्र ! तू सुख-भोग करने योग्य है, दु ख के योग्य नहीं है । तू शीत, उष्ण, भूख, प्यास, चोर, श्वापद (हिंसक पशु), डास और मच्छर के उपद्रव वात, पित्त, कफ और सन्निपात सम्बन्धी अनेक प्रकारके रोग और उन रोगो से होने वाला कष्ट तथा परिषह और उपसर्गों को सहन करने में तू समर्थ नहीं है । हे पुत्र ! हम एक क्षण के लिए भी तेरा वियोग सहन

नही कर सकते । इसलिए जब तक हम जीवित है तब तक तू गृहस्थवास में रह और हमारे काल-धर्म को प्राप्त हो जाने पर यावत दीक्षा लेना।

२२-तएणं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एव वयासी-तहा वि ण त अम्म याओ ! ज ण तुब्भे मम एव वयह, एव खलु जाया ! णिग्गथे पावयणे सच्चे, अणुत्तरे, केवले त चेव जाव पव्वइहिसि, एव खलु अम्मयाओ ! णिग्गथे पावयणे कीवाण कायराणं, कापुरिसाण, इहलोगपडिवद्धाण परलोगपरमुहाण, विसयतिसियाणं दुरणुचरे पागयजणस्स, धीरस्स, णिच्छियस्स, ववसियस्स णो खलु एत्थ किंचि वि दुक्कर करणयाए, त इच्छामि ण अम्म याओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए । तएणं त जमालि खत्तियकुमार अम्मा-पियरो जाहे णो सचाएति विसयाणुलोमाहि य, विसयपडिकूलाहि य बहूहिं आघवणाहि य, पण्णवणाहि य आघवित्तए वा, जाव विण्णवित्तए वा, ताहे अकामाइ चेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स णिक्खमण अणुमण्णित्था ।

कठिन शब्दार्थ--कापुरिसाण-डरपोक मनुष्य के लिए इहलोग पडिबद्धाण-इस लोक से आबद्ध (आसक्त) परलोगपरमुहाण-परलोक से पराङ्मुख (विमुख) विसयतिसियाण-विषयो की तृष्णावाले, दुरणुचरे-आचरण दुष्कर पागयजणस्स-प्राकृतजन साधारण मनुष्य के लिए णिच्छियस्स-निश्चित (निश्चयवाले), ववसियस्स-निर्णय किये हुए, निक्खमण-निष्क्रमण (त्यागकर निकलने) का, अणुमण्णित्था-अनुमति दी ।

भावार्थ-२२-माता-पिता को उत्तर देते हुए जमालीकुमार ने इस प्रकार कहा-"हे माता-पिता ! आपने निर्ग्रन्थ-प्रवचन को सत्य, अनुत्तर और अद्वितीय कह कर सयम पालन में जो कठिनाइयाँ वतलाईं, वे ठीक है, परन्तु कृपण-मन्द शक्तिवाले कायर और कापुरुष तथा इस लोक में आसक्त और परलोक से पराङ्-मुख ऐसे विषयभोगो की तृष्णा वाले पुरुषो के लिए इसका पालन करना अवश्य कठिन है। परतु धीर और शूरवीर, दृढ निश्चय वाले तथा उपाय करने में प्रवृत्त पुरुषो के लिए इसका पालन करना कुछ भी कठिन नही है। इसलिए हे माता-पिता ! आप मुझे दीक्षा की आज्ञा दीजिए। आपकी आज्ञा होने पर मं श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पास दीक्षा लेना चाहता हूँ।

जव जमालीकुमार के माता-पिता के विषय में अनुकूल और प्रतिकूल वहुत सी उक्तियाँ, प्रज्ञप्तियाँ, सज्ञप्तियाँ और विज्ञप्तियो द्वारा उसे समझाने में समर्थ नहीं हुए, तव बिना इच्छा के जमालीकुमार को दीक्षा लेने की आज्ञा दी।

विवेचन-जमाली क्षत्रिय कुमार के माता पिता ने सयम की कठिनाइया वतलाते हुए कहा, कि आगे वताये जानेवाले दोप युक्त आहारादि लेना साधु को नही कल्पता। यथा-

१ आधाकर्मिक-'आधया साधुप्रणिधानेन यत्सचेतनमचेतन क्रियते, अचेतन वा पच्यते, चीयते वा गहादिक, वयते वा वस्त्रादिक तदाधाकम।'

अथात किसी खास साधु को मन मे रखकर उसके निमित्त से सचित्त वस्तु को अचित्त करना या अचित्त को पकाना, घर आदि बनाना वस्त्र आदि बुनना-'आधाकम' कहलाता है। यह दोप चार प्रकार से लगता है। यथा-१ प्रतिसेवन-आधाकर्मी आहार आदि का सेवन करना, २ प्रतिश्रवण-आधाकर्मी आहारादि के लिये निमन्त्रण स्वीकार करना ३ सवसन-आधाकर्मी आहारादि भोगनेवालो के साथ रहना और ४ अनुमोदन-आधाकर्मी आहार आदि भोगनेवालो की अनुमोदना करना।

२ औद्देशिक-सामान्य याचको को देने की बुद्धि से जो आहारादि तैयार किये जाते हैं, उन्हे-'औद्देशिक' कहते हैं। इसके दो भेद है यथा-ओघ और विभाग। भिक्षुको के लिये अलग तैयार न करते हुए अपने लिय वनते हुए आहारादि मे ही कुछ और मिला देना-'ओघ' है। विवाह आदि मे याचको के लिये निकाल कर पथक रख छोडना 'विभाग' है। यह उद्दिष्ट, कृत और कम के भेद से तीन प्रकार का है। फिर प्रत्येक के उद्देश समुद्देश,

आदेश और समादेश, इस प्रकार चार चार भेद होते हैं। किसी खास साधु के लिये बनाया गया आहार यदि वही ले, तो 'आधाकम' है और यदि दूसरा साधु ले, तो 'औद्देशिक' है। आधाकम-पहले से ही किसी खास के निमित्त से वनाया जाता है। औद्दशिक साधारण दान के लिये पहले या पीछे कल्पित किया जाता है।

३ मिश्रजात-अपने लिये और साधु के लिये एक साथ पकाया हुआ आहार 'मिश्रजात' कहलाता है। इसके तीन भेद हैं। यथा-१ यावदर्थिक, २ पाखण्डिमिश्र और ३ साधुमिश्र। जो आहार अपने लिये और सभी याचको के लिये इक्ट्ठा वनाया जाय, वह 'यावदर्थिक' है। जो अपने लिये और बाबा, सयासियो के लिये इक्ट्ठा वनाया जाय, वह पाखण्डिमिश्र' है और जो अपने लिये और साधुओ के लिये इक्ट्ठा बनाया जाय, वह 'साधुमिश्र' है।

४ अध्यवपूरक-साधुओ का आगमन सुनकर आधण मे अधिक बढा देना अर्थात अपने लिये बनते हुए भोजन मे साधुओ का आगमन सुनकर उनके निमित्त से और मिला देना।

५ पूतिकम-शुद्ध आहार मे आधाकर्मादि का अश मिल जाना-'पूतिकम' है। आधाकर्मादि आहार का थोडा सा अश भी शुद्ध और निर्दोष आहार को सदोष बना देता है।

६ क्रीत-साधु के लिये मोल लिया हुआ आहारादि।

७ पामिच्चे (प्रामित्य) साधु के लिये उधार लिया हुआ आहारादि।

८ आछेदच-निबल व्यक्ति से या अपने आश्रित रहने वाले नौकर चाकर और पुत्र आदि से आहारादि छीन कर साधु को देना।

९ अनि सृष्ट-किसी वस्तु के एक से अधिक स्वामी होने पर सब की इच्छा के बिना देना, 'अनि सष्ट' है।

१० अभ्याहृत-साधु के लिये गहस्थ द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर या एक गाँव से दूसरे गाव सामने लाया हुआ आहारादि।

११ कान्तरभक्त-वन मे रहे भिखारी लोगो के निर्वाह के लिये तयार किया हुआ आहारादि।

१२ दुर्भिक्षभक्त-दुर्भिक्ष (दुष्काल) के समय, भिखारी लोगो के निर्वाह के लिये तैयार किया हुआ आहारादि।

१३ ग्लानभक्त-रोगियो के लिये तैयार किया हुआ आहारादि।

१४ बादलिकाभक्त-दुर्दिन अर्थात वर्षा के समय भिखारियो को भिक्षा कहाँ और

कैसे मिलेगी ? ऐसा सोचकर उस समय उन भिखारी लोगो के लिये बनाया हुआ आहारादि।

१५ प्राघूणकभक्त–पाहुनो के लिये बनाया हुआ आहारादि।

१६ शय्यातरपिण्ड–साधुओ को ठहरने के लिये जो स्थान देता है, वह व्यक्ति 'शय्यातर' कहलाता है। उसके वहाँ का आहार आदि 'शय्यातर पिण्ड' कहलाता है।

१७ राजपिण्ड–राजा के लिये तैयार किया गया, जिसका विभाग दूसरो को मिलता हो, वह आहार आदि।

उपर्युक्त प्रकार का आहार आदि लेना साधु को नही कल्पता।

जमाली क्षत्रियकुमार ने उत्तर दिया कि आपका यह कथन ठीक है। कायर पुरुषो के लिये सयम पालना कठिन है, किन्तु शूरवीर पुरुषो के लिये कुछ भी कठिन नही है।

जमाली के माता पिता विषय के अनुकूल और प्रतिकूल सभी प्रकार की युक्तियो से जब उसे समझाने मे समर्थ नही हुए, तब अनिच्छापूर्वक दीक्षा की आज्ञा दी।

२३–तएण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खत्तियकुडग्गाम णयर सब्भितरबाहिरिय आसिय-समज्जि-ओव-लित्तं जहा उववाइए, जाव पच्चप्पिणति। तएणं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया दोच्च पि कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमा-रस्स महत्थ, महग्घ, महरिह विपुल णिक्खमणाभिसेय उवट्ठवेह। तएण ते कोडुबियपुरिसा तहेव जाव पच्चप्पिणति। तएण त जमालिं खत्तियकुमार अम्मा-पियरो सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुह णिसीयावेंति, णिसीयावेत्ता अट्ठसएण सोवण्णियाण कलसाणं, एव जहा रायप्पसेणइज्जे, जाव अट्ठसएण भोमेज्जाणं कलसाण सव्विड्ढिए

जाव महया रवेण महया महया णिक्खमणाभिसेएण अभिसिंचति ।

कठिन शब्दार्थ–आसिय-पानी छिडकना समज्जिओवलित्त-साफ बराबर लिपाना, महत्थ–महान अर्थवाला महरिह–महापूज्य, महग्घ–महामूल्यवान णिसियावेति–बिठाते हैं, भोमेज्जाण–भूमि संबंधी ।

भावार्थ–२३–इसके बाद जमाली क्षत्रियकुमार के पिता ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और इस प्रकार कहा–'हे देवानुप्रियो ! शीघ्र ही इस क्षत्रिय कुंड ग्राम' नगर के बाहर और भीतर पानी का छिटकाव करो । झाड बुहार कर जमीन को साफ करो, इत्यादि औपपातिक सूत्र में कहे अनुसार कार्य करके उन पुरुषों ने आज्ञा वापिस सौंपी । इसके पश्चात् उसने सेवक पुरुषों से इस प्रकार कहा–'हे देवानुप्रियो ! शीघ्र इस जमाली क्षत्रियकुमार का महार्थ, महामूल्य, महापूज्य (महान पुरुषों के योग्य) और विपुल निष्क्रमणाभिषेक की तैयारी करो । सेवक पुरुषों ने उसकी आज्ञानुसार कार्य करके आज्ञा वापिस सौंपी । इसके पश्चात् जमाली क्षत्रियकुमार के माता पिता ने उसे उत्तम सिंहासन पर पूर्व की ओर मुंह करके बैठाया । और एक सौ आठ सोने के कलशों से इत्यादि राजप्रश्नीय सूत्र में कहे अनुसार यावत एक सौ आठ मिट्टी के कलशों से सर्वऋद्धि द्वारा यावत महा शब्दों द्वारा निष्क्रमणाभिषेक से अभिषेक करने लगे ।

महया महया णिक्खमणाभिसेएण अभिसिंचित्ता करयल–जाव जएणं विजएणं वद्धावेंति, जएणं विजएणं वद्धावित्ता एवं वयासी–भण जाया ! किं देमो, किं पयच्छामो, किणा वा ते अट्ठो ? तएणं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एवं वयासी–इच्छामि णं अम्म-याओ-कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणिउं कासवगं च सद्दाविउं । तएणं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया

कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, कोडुबियपुरिसे सद्दावित्ता एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइ सहाय दोहि सयसहस्सेणं कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गह च आणेह, सयसहस्सेणं कासवग सद्दावेह । तएण ते कोडुबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एव वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठ करयल जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइ, तहेव जाव कासवग सद्दावेंति । तएण से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठे तुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सरीरे, जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छइ ।

कठिन शब्दार्थ–देमो- देवे, पयच्छामो–प्रदान करें, किणा वा ते अट्ठो–तेरे क्या प्रयोजन है, कुत्तियावण–कुत्रिकापण–कु अर्थात पृथ्वी त्रिक अर्थात तीन, आपण अर्थात दुकान, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल रूप तीन लोकों मे रही हुई वस्तु मिलने का देवाधिष्ठित स्थान पडिग्गह पात्र, कासवग काश्यपक- नाई, सिरिघर श्री घर–खजाना, सयसहस्साइ–लाख की सख्या, आणेह लाओ, पिउणा–पिता द्वारा, एव वुत्ता समाणा इस प्रकार कहने पर ।

भावार्थ–अभिषेक करने के बाद जमालीकुमार के माता पिता ने हाथ जोड कर यावत उसे जय विजय शब्दो से बधाया । फिर उन्होने उससे कहा–"हे पुत्र ! हम तेरे लिए क्या देवे ? तेरे लिए क्या कार्य करें ? तेरा क्या प्रयोजन है ?" तब जमालीकुमार ने इस प्रकार कहा–'हे माता पिता ! मै कुत्रिकापण से रजोहरण और पात्र मगवाना तथा नापित को बुलाना चाहता हूँ । तब जमाली कुमार के पिता ने कौटुबिक पुरुषो को बुलाया और कहा–"हे देवानुप्रियो ! शीघ्र ही भडार में से तीन लाख सोनैया निकालो । उनमें से दो लाख सोनैया देकर

कुत्रिकापण से रजोहरण और पात्र लाओ और एक लाख सोनैया देकर नाई को बुलाओ। उपर्युक्त आज्ञा सुन कर हर्षित और तुष्ट हुए सेवको ने हाथ जोडकर स्वामी के वचन स्वीकार किये और भडार में से तीन लाख सोनैया (सुवर्ण मुद्रा) निकाल कर कुत्रिकापण से रजोहरण और पात्र लाए तथा नाई को बुलाया। जमालीकुमार के पिता के सेवक पुरुषो द्वारा बुलाये जाने पर नाई बडा प्रसन्न हुआ। उसने स्नानादि किया और अपने शरीर को अलकृत किया। फिर जमाली कुमार के पिता के पास आया।

उवागच्छित्ता करयल जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पियर जएणं विजएणं वद्धावेइ, जएणं विजएणं वद्धावित्ता एव वयासी–सदिसतु णं देवाणुप्पिया ! ज मए करणिज्ज ? तएणं से जमालिस्स खत्तिय-कुमारस्स पिया त कासवग एव वयासी–तुम देवाणुप्पिया ! जमा-लिस्स खत्तियकुमारस्स परेण जत्तेण चउरगुलवज्जे णिक्खमण-पाओग्गे अग्गकेसे कप्पेहि। तएण से कासवे जमालिस्स खत्तियकुमा-रस्स पिउणा एव वुत्ते समाणे हट्ठ-तुट्ठ-करयल जाव एव सामी ! तहत्ताणाए विणएण वयण पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता सुरभिणा गधो-दएण हत्थ पाए पक्खालेइ, पक्खालित्ता सुद्धाए अट्ठपडलाए पोत्तीए मुह बधइ, मुह बंधित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेण जत्तेणं चउरगुलवज्जे णिक्खमणपाओग्गे अग्गकेसे कप्पेइ। तएणं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हसलक्खणेण पडसाडएण अग्गकेसे पडिच्छइ, अग्गकेसे पडिच्छित्ता सुरभिणा गधोदएणं

पक्खालेइ सुरभिणा गधोदएणं पक्खालित्ता अग्गेहिं वरेहिं गधेहिं, मल्लेहिं अच्चेइ, अग्गेहिं वरेहि गधेहिं, मल्लेहिं अच्चित्ता सुद्धे वत्थे बधइ, सुद्धे वत्थे बधित्ता रयणकरडगसि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता हार-वारिधार-सिदुवार-छिण्णमुत्तावलिप्पगासाइ सुयवियोग-दूमहाइ असूइ विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी एवं वयासी–एस णं अम्ह जमालिस्स खत्तियकुमारस्स बहूसु तिहीसु य पव्वणीसु य उस्सवेसु य जण्णेसु य छणेसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सईति कट्टु ऊसीसगमूले ठवेइ ।

कठिन शब्दार्थ–जएण विजएण–'जय हो, विजय हो'–इस प्रकार कहकर, वद्धावेई–बधाये, सदिसतु–दिखाओ, कहो, परेण जत्तेण–अत्यत यत्नपूवक, णिक्खमणपाओग्गे–निष्क्रमण के योग्य, अग्गकेसे–आगे के बाल, कप्पेहि–काटो, तहत्ताणाए–आज्ञा स्वीकार कर, सुरभिणा-गधोदए–सुगधित गधोदक (सुगधित पानी) से, पक्खालेइ–धोये, अट्ठपडलाए–आठ प्रत वाली, पडसाडएण–पटसाटक (वस्त्र), पडिच्छइ-ग्रहण किये, अग्गेहि–उत्तम, अच्चेइ–अर्चित किये, पक्खिवई–प्रक्षिप्त किये (रखे), हार वारिधार सिंदुवार छिण्णमुत्तावलिप्पगासाइ–हार, पानी की धारा, सिदुवार के पुष्पो और टूटी हुई मोती की माला के मोती जैसे, सुयवियोगदुसहाइ–पुत्र वियोग से दुसह, असूइ विणिम्मूयमाणी–आँसू डालती हुई तिहिसु–तिथि मे, पव्वणीसु–पव पर उस्सवेसु–उत्सव पर जण्णसु–यनो पर अपच्छिमे–अपश्चिम, ऊसीसगमूले–तकिये के नीचे ठवेई–रखती है ।

भावार्थ--वह नापित जमालीकुमार के पिता के पास आया। उन्हे जय-विजय शब्दो से बधाया और इस प्रकार कहा–"हे देवानुप्रिय ! मेरे करने योग्य कार्य कहिये ।" जमालीकुमार के पिता ने उस नापित से इस प्रकार कहा–"हे देवानुप्रिय ! जमालीकुमार के अग्रकेश, अत्यन्त यत्नपूर्वक चार अगुल छोडकर निष्क्रमण के योग्य काट दे ।" जमालीकुमार के पिता की आज्ञा सुन कर नापित अत्यत प्रसन्न हुआ और दोनो हाथ जोडकर बोला–"हे स्वामिन् ! मै आपकी

आज्ञानुसार करूँगा,"–इस प्रकार कह कर विनयपूर्वक उनके वचनो को स्वीकार किया । फिर सुगन्धित गन्धोदक से हाथ पैर धोए और शुद्ध आठ पट वाले वस्त्र से मुँह बाँधा, फिर अत्यन्त यत्नपूवक जमालीकुमार के, निष्क्रमण योग्य चार अगुल अग्रकेश छोडकर शेष केशो को काटा । इसके बाद जमालीकुमार की माता ने हस के समान श्वेत वस्त्र में उन अग्र-केशो को ग्रहण किया । सुगन्धित गन्धोदक से धोया । उत्तम और प्रधान गन्ध तथा माला द्वारा उनका अचन किया और शुद्ध वस्त्र में बाँधकर उन्हें रत्न करण्डिये में रखा । इसके बाद जमालीकुमार की माता, पुत्र वियोग से रोती हुई हार, जलधारा, सिन्दुवार, वृक्ष के पुष्प और टूटी हुई मोतियो की माला के समान आँसू गिराती हुई इस प्रकार बोली–"ये केश हमारे लिए बहुत-सी तिथियाँ, पव, उत्सव, नागपूजादि रूप यज्ञ और महोत्सवो में जमालीकुमार के अन्तिम दर्शन रूप या बारम्बार दर्शनरूप होंगे"–ऐसा विचार कर उसने उन्हे अपने तकिये के नीचे रखा ।

२४–तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मा-पियरो दोच्च पि उत्तरावक्कमण सीहासण रयावेंति, दोच्च पि उत्तरा-वक्कमण सीहासण रयावित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सेया-पीयएहि कलसेहि ण्हावेंति सेया० ण्हावित्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गधकासाईए गायाइ लूहेति, प० लूहित्ता सरसेण गोसीसचदणेण गायाइ अणुलिपति स० अणुलिंपित्ता णासा-णिस्सासवायवोज्झ, चक्खुहर, वण्ण-फरिसजुत्त, हयलालापेलवाऽ-इरेग, धवल, कणगखचितकम्म, महरिह, हसलक्खणपडसाडग परिहिंति, परिहित्ता हार पिणद्धेति, पिणद्धित्ता अद्धहार पिणद्धेंति,

पिणद्धित्ता एव जहा सूरियाभस्स अलकारो तहेव जाव चित्त रयण-संकडुक्कड मउड पिणिद्धति किं वहुणा ? गथिम-वेढिम-पूरिम-सघाइमेणं चउव्विहेण मल्लेणं कप्परुक्खग पिव अलकिय-विभूसिय करेंति। तएण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुविय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेगखभसयसण्णिविट्ठ, लीलट्ठियसालभजियाग जहा रायप्पसेण-इज्जे विमाणवण्णओ, जाव मणिरयणघटियाजालपरिक्खित्त पुरिस-सहस्सवाहिणिं सीय उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पि-णह। तएणं ते कोडुवियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति। तएण से जमाली खत्तियकुमारे केसालकारेणं, वत्थालकारेण, मल्लालकारेणं, आभरणालकारेण चउव्विहेणं अलकारेणं अलकारिए समाणे पडि-पुण्णालकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, सीहासणाओ अब्भुट्ठित्ता सीय अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीय दुरूहइ, दुरूहित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाऽभिमुहे सण्णिसण्णा।

कठिन शब्दार्थ–उत्तरावक्कमण–उत्तराभिमुख–उत्तर दिशा की ओर, रयावेति–रख-वाया सेयापीयएहिं–श्वेतपीत (रजतस्वर्ण), ण्हावेति–स्नान कराया, पम्हलसुकुमालाए–रोयेंदार कोमल मुलायम वस्त्र से, सुरभीए-सुगधित, गधकासाईए–लालरग का सुगन्धित, गायाइ लूहेति–शरीर पोछा सरसेण–रसवाले, गोसीसचदणेण–गोशीर्ष चन्दन से, गायाइ अणुलिपंति–शरीर पर विलेपन किया, णासाणिस्सासवायवोज्झ–नासिका के श्वास से उडे वैसा हल्का, चक्खुहर–आखो को आकर्षित करने वाला, हयलालापेलवाऽइरेग–घोडे के मुह की लार से भी अधिक नरम, कणगखचितत्तकम्म–जिसकी किनारो पर सोना जडा है, परि-

हिति-पहिनाया, पिणद्धेति धारण कराया, रयणसकडुक्कड-रत्नो से जडे हुए मउड-मुकुट, कि बहुणा-अधिक क्या कहे, गथिम वेढिम पूरिम सघाइमेण-गुथे हुए, लपेटे, पिरोये और परस्पर जोडे हुए, अणगखभसयसण्णिविट्ठ-अनेक सैकडो स्तभो से युक्त, लीलट्ठियसाल भजियाग-लीला पूवक सालभजिका (पुतली) वाली, सीयअणुप्पदाहिणीकरेमाणे-शिविका को प्रदक्षिणा करते है, पुरत्थाभिमुहे-पूव की ओर मुह करके सण्णिसण्णा-वठा ।

भावार्थ-२४-इसके बाद जमालीकुमार के माता-पिता ने उत्तर दिशा की ओर दूसरा सिंहासन रखवाया और जमालीकुमार को सोने और चांदी के कलशो से स्नान कराया, फिर सुगन्धित गन्धकाषायित (गन्ध प्रधान लाल) वस्त्र से उसके अग पोछे । उसके बाद सरस गोशीर्ष चन्दन से गात्रो का विलेपन किया । तत्पश्चात् ऐसा पटशाटक (रेशमी वस्त्र) पहिनाया जो नासिका के निश्वास की वायु से उड जाय, ऐसा हलका, नेत्रो को अच्छा लगे वैसा सुन्दर, सुन्दर वर्ण और कोमल स्पश से युक्त था । वह वस्त्र घोडे के मुख की लार से भी अधिक मुलायम, श्वेत सोने के तार से जडा हुआ महामूल्यवान् और हस के चिन्ह से युक्त था । फिर हार (अठारह लडीवाला हार), अर्द्ध हार (नवसर हार) पहनाया । जिस प्रकार राजप्रश्नीय सूत्र में सूर्याभ देव के अलङ्कारो का वर्णन है, उसी प्रकार यहाँ भी समझना चाहिए । यावत विचित्र रत्नो से जडा हुआ मुकुट पहिनाया । अधिक क्या कहा जाय, ग्रथिम (गूँथी हुई), वेष्टिम (वींटी हुई), पूरिम (पूरी की हुई) और सघातिम (परस्पर सघात की हुई) से तैयार की हुई चारो प्रकार की मालाओ से कल्प वृक्ष के समान उस जमालीकुमार को अलकृत एव विभूषित किया गया । इसके बाद उसके पिता ने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया और इस प्रकार कहा-"हे देवानुप्रियो ! सैकडो स्तम्भो से युक्त लीलापूवक पुतलियो से युक्त इत्यादि राजप्रश्नीय सूत्र में वर्णित विमान के समान यावत मणिरत्नो की घण्टिकाओ के समूहो से युक्त, हजार पुरुषो द्वारा उठाने योग्य शिविका (पालकी) तैयार करके मुझे निवेदन करो ।" इसके बाद उन सेवक पुरुषो ने उसी प्रकार की शिविका तैयार कर निवेदन किया । इसके बाद जमाली कुमार केशालङ्कार, वस्त्रालङ्कार, मालालङ्कार और आभरणालङ्कार, इन चार

प्रकार के अलङ्कारो से अलकृत होकर और प्रतिपूर्ण अलङ्कारो से विभूषित होकर सिंहासन से उठा। वह दक्षिण की ओर से शिविका पर चढा और श्रेष्ठ सिंहासन पर, पूर्व की ओर मुंह करके बैठा।

तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ण्हाया, कयवलिकम्मा जाव सरीरा हसलक्खणं पडसाडग गहाय सीय अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीय दुरूहइ सीय दुरूहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरसि मणिसण्णा। तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मधाई ण्हाया जाव सरीरा, रयहरणं पडिग्गह च गहाय सीह अणुपदाहिणीकरेमाणी सीय दुरूहइ सीय दुरूहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरसि सणिसण्णा। तएण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा सगयगय जाव रूव-जोव्वण-विलासकलिया सुदरथण-हिम-रयय कुमुद कुदे दुप्पगास सकोरट-मल्लदाम धवल आयवत्त गहाय सलील उवरि धारेमाणी धारेमाणी चिट्ठइ। तएण तस्स जमालिस्स उभओ पासिं दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारु जाव कलियाओ, णाणामणि-कणग-रयण-विमल-महरिहतवणिज्जु-ज्जलविचित्त-दडाओ, चिल्लियाओ, सख-क-कुदें-दुदगरय-अमयमहिय-फेणपुजसण्णिकासाओ धवलाओ चामगओ गहाय सलील वीयमाणीओ वीयमाणीओ चिट्ठति। तएणं तस्स

जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तरपुरत्थिमेणं एगा वरतरुणी सिंगारागार जाव कलिया सेय रययामय विमलसलिलपुण्णं मत्तगयमहामुहाकिइसमाण भिंगार गहाय चिट्ठइ। तएण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणपुरत्थिमेणं एगा वरतरुणी सिंगारागार जाव कलिया चित्तकणगदड तालवेंट गहाय चिट्ठइ।

कठिन शब्दार्थ–भद्दासणवरंसि–उत्तम भद्रासन पर, अम्मधाई–धायमाता, पिट्ठओ–पीछे की ओर, वरतरुणी–श्रेष्ठ युवती, सिंगारागारचारुवसा–मनोहर आकृति और सुन्दर वेश वाली, सगयगय–सगत गतिवाली, धवल आयवत्त–श्वेत छत्र, महरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदडाओचिल्लियाओ–महामूल्यवान तपनीय (रक्त स्वर्ण) से बने हुए उज्ज्वल विचित्र दडवाले, सखककुदेंदुदगरय अमयमहिय फेणपुजसण्णिकासाओ–शख, अक, चन्द्र, मोगरे के फूल, जल बिन्दु और मथे हुए अमृत फेन के समान, विमलसलिलपुण्ण–स्वच्छ जल से परिपूर्ण, मत्तगयमहामुहाकिइसमाण–उन्मत्त हाथी के फले हुए मुह के आकार वाले, भिंगार–कलश को, तालवेंट–पखा।

भावार्थ–इसके बाद जमालीकुमार की माता, स्नानादि करके यावत शरीर को अलकृत करके, हस के चिन्ह वाला पटशाटक लेकर दक्षिण की ओर से शिविका पर चढी और जमालीकुमार के दाहिनी ओर उत्तम भद्रासन पर बैठी। इसके बाद जमालीकुमार की धायमाता स्नानादि करके यावत् शरीर को अलकृत करके रजोहरण और पात्र लेकर दाहिनी ओर से शिविका पर चढी और जमालीकुमार के बांई ओर उत्तम भद्रासन पर बैठी। इसके बाद जमालीकुमार के पीछे मनोहर आकार और सुन्दर वेष वाली, सुन्दर गतिवाली, सुन्दर शरीरवाली यावत् रूप और यौवन के विलास युक्त, एक युवती हिम, रजत, कुमुद, मोगरे के फूल और चन्द्रमा के समान कोरण्टक पुष्प की माला से युक्त श्वेत छत्र हाथ में लेकर, लीलापूर्वक धारण करती हुई खडी रही। फिर जमालीकुमार के दाहिनी तथा बांयी ओर, शृगार के घर के समान मनोहर आकारवाली और सुन्दर वेषवाली

उत्तम दो युवतियाँ दोनो ओर चामर ढुलाती हुई खडी हुई । वे चामर मणि, कनक, रत्न और महामूल्य के विमल तपनीय (रक्त सुवर्ण) से बने हुए विचित्र दण्ड वाले थे और शख, अङ्क, मोगरा के फूल, चन्द्र, जलविन्दु और मथे हुए अमृत के फेन के समान श्वेत थे । इसके बाद जमालीकुमार के उत्तर-पूव दिशा (ईशान कोण) में, शृगार के गृह के समान और उत्तम वेषवाली, एक उत्तम स्त्री श्वेत रजतमय पवित्र पानी से भरा हुआ, उन्मत्त हाथी के मुख के आकार वाला कलश लेकर खडी हुई । जमालीकुमार के दक्षिण-पूर्व (आग्नेय कोण) में, शृगार के घर के समान उत्तम वेषवाली एक उत्तम स्त्री, विचित्र सोने के दण्डवाले पखे लेकर खडी हुई ।

तएण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ को० सद्दवित्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसय, सरित्तय, सरिव्वय, सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेय, एगाभरण-वसणगहियणिज्जोय कोडुवियवरतरुणसहस्स सद्दावेह । तएण ते कोडुवियपुरिसा जाव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सरिसय, सरित्तय जाव सद्दावेति । तएण ते कोडुवियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुवियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठ-तुट्ठ ण्हाया, कयवलिकम्मा, कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता एगाभरण-वसणगहिय-णिज्जोया जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेत्ता एव वयासी—सदिसतु ण देवाणुप्पिया ! ज अम्मेहि करणिज्ज । तएण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया त कोडुवियवरतरुणसहस्स पि

एव वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया कयबलिकम्मा जाव गहियणिज्जोआ जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीय परिवहह । तएणं ते कोडुबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स जाव पडिसुणित्ता ण्हाया जाव गहिय-णिज्जोआ जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीय परिवहति । तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्म पुरिससहस्स-वाहिणि सीय दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठ-ट्ठ मगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया त जहा-सोत्थिय-सिरिवच्छ जाव दप्पणा, तयाणतर च णं पुण्णकलसभिगार जहा उववाइए, जाव गगणतलमणुलिहती पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया, एव जहा उववाइए तहेव भाणियव्व, जाव आलोय च करेमाणा जयजयसद्द च पउजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया । तयाणंतर च णं बहवे उग्गा भोगा जहा उववाइए जाव महापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता, जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ य मग्गओ य पासओ य अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया ।

कठिन शब्दार्थ-एगाभरण-एक सरीखे भूषण, णिज्जोया-योजित किये (नियुक्त किये), सीय परिवहह-शिविका वहन करो, सोत्थिय-स्वस्तिक, सिरिवच्छ-श्रीवत्स, दप्पणा-दर्पण, तदाणतर-इसके बाद, गगणतलमणुलिहति-गगन तल को स्पर्श करती, वग्गुरापरिक्खित्ता-घेरे से घिरा हुआ ।

भावार्थ-जमालीकुमार के पिताने कौटुम्बिक पुरुषो को बुला कर इस प्रकार कहा-"हे देवानुप्रियो ! समान त्वचावाले, समान उम्रवाले, समान रूप लावण्य और यौवन गुणो से युक्त तथा एक समान आभूषण और वस्त्र पहने हुए

एक हजार उत्तम युवक पुरुषों को बुलाओ।" सेवक पुरुषों ने स्वामी के वचन स्वीकार कर शीघ्र ही हजार पुरुषो को बुलाया। वे हजार पुरुष हर्षित और तुष्ट हुए। वे स्नानादि कर के एक समान आभूषण और वस्त्र पहन कर जमाली कुमार के पिता के पास आए और हाथ जोड कर वधाये,तथा इस प्रकार बोले-"हे देवानुप्रिय! हमारे योग्य जो काय हो वह कहिये। तब जमालीकुमार के पिताने उनसे कहा-"हे देवानुप्रियो! तुम सब जमालीकुमार की शिविका को उठाओ।" उन पुरुषो ने शिविका उठाई। हजार पुरुषो द्वारा उठाई हुई जमाली-कुमार की शिविका के सब से आगे ये आठ मगल अनुक्रम से चले। यथा-(१) स्वस्तिक, (२) श्रीवत्स, (३) नन्द्यावत, (४) वर्धमानक, (५) भद्रासन, (६) कलश, (७) मत्स्य और (८) दर्पण। इन आठ मगलो के पीछे पूर्ण कलश चला, इत्यादि औपपातिक सूत्र में कहे अनुसार यावत् गगनतल को स्पर्श करती हुई वैजयन्ती (ध्वजा) चली। लोग जय-जयकार का उच्चारण करते हुए अनुक्रम से आगे चले। इसके वाद उग्रकुल, भोगकुल में उत्पन्न पुरुष यावत् महापुरुषो के समूह जमालीकुमार के आगे पीछे और आसपास चलने लगे।

२५-तएणं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाया कय-वलिकम्मा जाव विभूसिए हत्थिक्खधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहि उद्धुव्वमाणीहि हय-गय-रह पवरजोह-कलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धिं सपरिवुडे, महयाभडचडगर जाव परिक्खित्ते जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ अणुगच्छइ। तएण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ मह आसा, आस-वरा, उभओ पासि णागा, णागवरा, पिट्ठओ रहा रहसगेल्ली।

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अब्भुग्गयभिंगारे, परिगहियतालियटे, ऊसवियसेयछत्ते, पवीइयसेयचामरवालवीयणाए, सव्विड्ढीए जाव णाइयरवेणं तयाणंतर च बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा जाव पुत्थयग्गाहा, जाव वीणग्गाहा, तयाणंतर च णं अट्ठसय गयाण, अट्ठसय तुरयाणं अट्ठसय रहाण, तयाणंतर च ण लउडअसि-कोतहत्थाण बहूणं पायत्ताणीणं पुरओ सपट्ठिय, तयाणंतर च ण बहवे राईसर-तलवरजाव सत्थवाहप्पभिइओ पुरओ सपट्ठिया खत्तियकुडग्गाम णयर मज्झमज्झेण जेणेव माहणकुडग्गामे णयरे, जेणेव बहुसालए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

कठिन शब्दार्थ-णागा-हाथी, रहा-रथ रहसगेल्ली-रथ समूह, अब्भुग्गयभिंगारे-आगे कलश, परिगहिय तालयटे-पखे ग्रहण कर, ऊसवियसेयछत्ते-ऊँचा श्वेत छत्र धारण किया हुआ, पवीइयसेयचामरबालवीयणाए-बगल मे श्वेत चामर और छोटे पखे बिजते हुए णाइतरवेण-नादित शब्द युक्त, पुत्थयगाहा-पुस्तकवाले, पहारेत्थ-प्रारम्भ हुए ।

भावार्थ-२५-जमालीकुमार के पिता ने स्नानादि किया, यावत् विभूषित होकर हाथी के उत्तम कधे पर चढा । कोरण्टक पुष्प की माला से युक्त छत्र धारण करते हुए, दो श्वेत चामरो से बिजाते हुए, घोडा, हाथी, रथ और सुभटो से युक्त, चतुरगिनी सेना सहित और महासुभटो के वृन्द से परिवृत जमालीकुमार के पिता, उसके पीछे चलने लगे । जमालीकुमार के आगे महान और उत्तम घोडे, दोनो ओर उत्तम हाथी, पीछे रथ और रथ का समूह चला । इस प्रकार ऋद्धि सहित यावत वादित्र के शब्दो से युक्त जमालीकुमार चलने लगा । उसके आगे कलश और तालवृन्त लिये हुए पुरुष चले । उसके सिर पर श्वेत छत्र धारण किया हुआ था । दोनो ओर श्वेत चामर और पखे बिजाये जा रहे थे । इनके पीछे बहुत से लकडीवाले, भालावाले, पुस्तकवाले यावत् बीणावाले

पुरुष चले। उनके पीछे एक सौ आठ हाथी, एक सौ आठ घोडे और एक सौ आठ रथ चले। उनके वाद लकडी, तलवार और भाला लिये हुए पदाति पुरुष चले। उनके पीछे वहुत-से युवराज, धनिक, तलवर, यावत सार्थवाह आदि चले। इस प्रकार क्षत्रियकुण्ड ग्राम नगर के वीच में चलते हुए नगर के वाहर वहुशालक उद्यान में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास जाने लगे।

२६-तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तियकुडग्गाम णयर मज्भमज्भेणं णिग्गच्छमाणस्स सिंघाडग-तिय-चउक्क जाव पहेसु वहवे अत्थत्थिया जहा उववाइए, जाव अभिणंदिया य अभित्थुणता य एव वयासी-'जय जय णंदा! धम्मेणं, जय जय णंदा! तवेणं, जय जय णदा! भद्द ते अभग्गेहिं णाण-दसण-चरित्तमुत्तमेहि, अजियाइ जिणाहि इदियाइ, जीय च पालेहि समण-धम्म, जियविग्घो वि य वसाहि त देव! सिद्धिमज्भे णिहणाहि य राग दोसमल्ले, तवेण धिइधणियवद्धकच्छे, मद्दाहि य अट्ठ कम्मसत्तू भ्काणेण उत्तमेणं सुक्केण, अप्पमत्तो हराहि आराहणपडाग च धीर! तेलोक्करगमज्भे, पावय वितिमिरमणुत्तर केवल च णाणं, गच्छ य मोक्ख पर पद जिणवरोवदिट्ठेण सिद्धिमग्गेण अकुडिलेणं, हता परीसहचमू, अभिभविय गामकटकोवसग्गाणं, धम्मे ते अविग्घमत्थु' त्ति कट्टु अभिणदति य अभिथुणति य।

कठिन शब्दार्थ-वहवे अत्थत्थि-वहुत से धन के अर्थी, अभित्थुणता-स्तुति करते हुए, अभग्गेहि-अखडित, अजियाइ जिणाहि-नही जीते को जीतो, जियविग्घो-विघ्नो को

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अब्भुग्गयभिंगारे, परिगहियतालियटे, ऊसवियसेयछत्ते, पवीइयसेयचामरवालवीयणाए, सव्विड्ढीए जाव णाइयरवेणं तयाणंतरं च बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा जाव पुत्थयग्गाहा, जाव वीणग्गाहा, तयाणंतरं च णं अट्ठसयं गयाणं, अट्ठसयं तुरयाणं अट्ठसयं रहाणं, तयाणंतरं च णं लउडअसि-कोंतहत्थाणं बहूणं पायत्ताणीणं पुरओ संपट्ठियं, तयाणंतरं च णं बहवे राईसर-तलवर-जाव सत्थवाहप्पभिइओ पुरओ संपट्ठिया खत्तियकुंडग्गामं णयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव माहणकुंडग्गामे णयरे, जेणेव बहुसालए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

कठिन शब्दार्थ-णागा-हाथी, रहा-रथ रहसंगेल्ली-रथ समूह, अब्भुग्गयभिंगारे-आगे कलश, परिगहिय तालयंट-पंखे ग्रहण कर, ऊसवियसेयछत्ते-ऊँचा श्वेत छत्र धारण किया हुआ, पवीइयसेयचामरबालवीयणाए-बगल मे श्वेत चामर और छोटे पंखे बिजते हुए, णाइतरवेण-नादित शब्द युक्त, पुत्थयग्गाहा-पुस्तकवाले, पहारेत्थ-प्रारम्भ हुए ।

भावार्थ-२५-जमालीकुमार के पिता ने स्नानादि किया, यावत् विभूषित होकर हाथी के उत्तम कंधे पर चढा । कोरण्टक पुष्प की माला से युक्त छत्र धारण करते हुए, दो श्वेत चामरो से बिंजाते हुए, घोडा, हाथी, रथ और सुभटो से युक्त, चतुरंगिनी सेना सहित और महासुभटो के वृन्द से परिवृत जमालीकुमार के पिता, उसके पीछे चलने लगे । जमालीकुमार के आगे महान और उत्तम घोडे, दोनो ओर उत्तम हाथी, पीछे रथ और रथ का समूह चला । इस प्रकार ऋद्धि सहित यावत् वादिन्त्र के शब्दो से युक्त जमालीकुमार चलने लगा । उसके आगे कलश और तालवृंत लिये हुए पुरुष चले । उसके सिर पर श्वेत छत्र धारण किया हुआ था । दोनो ओर श्वेत चामर और पंखे बिंजाये जा रहे थे । इनके पीछे बहुत से लकडीवाले, भालावाले, पुस्तकवाले यावत् वीणावाले

पुरुष चले । उनके पीछे एक सौ आठ हाथी, एक सौ आठ घोडे और एक सौ आठ रथ चले । उनके बाद लकडी, तलवार और भाला लिये हुए पदाति पुरुष चले । उनके पीछे बहुत-से युवराज, धनिक, तलवर, यावत सार्थवाह आदि चले । इस प्रकार क्षत्रियकुण्ड ग्राम नगर के बीच में चलते हुए नगर के बाहर बहुशालक उद्यान में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास जाने लगे ।

२६—तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तियकुडग्गाम णयर मज्झमज्झेणं णिग्गच्छमाणस्स सिंघाडग-तिय-चउक्क जाव पहेसु बहवे अत्थत्थिया जहा उववाइए, जाव अभिणंदिया य अभित्थुणता य एव वयासी—'जय जय णंदा ! धम्मेणं, जय जय णदा ! तवेणं, जय जय णदा ! भद्द ते अभग्गेहि णाण-दसण-चरित्तमुत्तमेहि, अजियाइ जिणाहि इदियाइ, जीय च पालेहि समण-धम्म, जियविग्घो वि य वसाहि त देव ! सिद्धिमज्झे णिहणाहि य राग दोसमल्ले, तवेण धिइधणियबद्धकच्छे, मद्दाहि य अट्ठ कम्मसत्तू झाणेण उत्तमेणं सुक्केण, अप्पमत्तो हराहि आराहणपडाग च धीर ! तेलोक्करगमज्झे, पावय वितिमिरमणुत्तर केवल च णाणं, गच्छ य मोक्ख पर पद जिणवरोवदिट्ठेणं सिद्धिमग्गेण अकुडिलेणं, हता परीसहचमू, अभिभविय गामकटकोवसग्गाणं, धम्मे ते अविग्घमत्थु' त्ति कट्टु अभिणदति य अभिथुणति य ।

कठिन शब्दार्थ—बहवे अत्थत्थि—बहुत से धन के अर्थी, अभित्थुणता—स्तुति करते हुए, अभग्गेहि—अखडित, अजियाइ जिणाहि—नही जीते को जीतो, जियविग्घो—विघ्नो को

जीतो, णिहणाहि-नष्ट करो, धितिघणियबद्धकच्छे-धैर्यरूपी कच्छ को दृढ़ता से बाँधकर, मद्दाहि-मदन कर, आराहणपडाग-आराधना रूपी पताका, तेलोक्करगमज्झे-त्रिलोक रूपी रग-मडप मे, पावय-पापरूप, अकुडिलेण-सरलता से, परिसहचमू-परिषह रूपी सेना, अभिभवियगामकटकोवसग्गाण-इन्द्रियो के प्रतिकूल कटक समान उपसर्गों को हराकर, अविग्घमत्थु-निर्विघ्न होवो।

भावार्थ-२६-क्षत्रियकुण्ड ग्राम के बीच से निकलते हुए जमालीकुमार को शृगाटक, त्रिक, चतुष्क यावत् राजमार्गों में बहुत-से धनार्थी और कामार्थी पुरुष, अभिनन्दन करते हुए एव स्तुति करते हुए इस प्रकार कहने लगे-"हे नन्द (आनन्द-दायक)! धर्म द्वारा तेरी जय हो। हे नन्द! तप से तुम्हारी जय हो। हे नन्द! तुम्हारा भद्र (कल्याण) हो। हे नन्द! अखण्डित उत्तम ज्ञान, दर्शन और चारित्र द्वारा अविजित ऐसी इन्द्रियो को जीतें और श्रमण धर्म का पालन करे। धैर्य रूपी कच्छ को मजबूत बाँध कर सर्व विघ्नो को जीते। इन्द्रियो को वश कर के परीषह रूपी सेनापर विजय प्राप्त करे। तप द्वारा रागद्वेष रूपी मल्लो पर विजय प्राप्त करे और उत्तम शुक्लध्यान द्वारा अष्ट कर्म रूपी शत्रुओ का मदन करे। हे धीर! तीन लोक रूपी विश्व मण्डप में आप आराधना रूपी पताका लेकर अप्रमत्तता पूर्वक विचरण करे और निर्मल विशुद्ध ऐसे अनुत्तर केवलज्ञान प्राप्त करे तथा जिनवरोपदिष्ट सरल सिद्धि मार्ग द्वारा परम पद रूप मोक्ष को प्राप्त करें। तुम्हारे धर्म मार्ग में किसी प्रकार का विघ्न नही हो।" इस प्रकार लोग अभिनन्दन और स्तुति करते है।

तएण से जमाली खत्तियकुमारे णयणमालासहस्सेहिं पिच्छिज्ज-माणे पिच्छिज्जमाणे एव जहा उववाइए कुणिओ, जाव णिग्गच्छइ; णिग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुडग्गामे णयरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताईए तित्थगराइसए पासइ,

पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणि सीय ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणिओ सियाओ पच्चोरुहइ । तएणं त जमालि खत्तियकुमार अम्मा-पियरो पुरओ काउ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो जाव णमसित्ता एव वयासी–एव खलु भते ! जमाली खत्तियकुमारे अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते जाव किमग ! पुणपासणयाए,-से जहा णामए उप्पले इ वा, पउमे इ वा, जाव सहस्सपत्ते इ वा पके जाए जले सवुड्ढे णोऽव-लिप्पइ पकरएण, णोऽवलिप्पइ जलरएण, एवामेव जमाली वि खत्तियकुमारे कामेहिं जाए, भोगेहि सवुड्ढे णो विलिप्पइ कामरएणं णो विलिप्पइ भोगरएणं णो विलिप्पइ मित्त-णाइ-णियगसयण-सवधिपरिजणेण । एस ण देवाणुप्पिया ! ससारभयुव्विग्गे भीए जम्मण-मरणेण, देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वतेइ, त एय ण देवाणुप्पियाण अम्हे सीसभिक्ख दलयामो, पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया ! सीसभिक्ख ।

कठिन शब्दार्थ–णोवलिप्पइ–लिप्त नही होता, पकरएण–पक की रज से, ससार-भयुव्विग्ग–ससार के भय से उद्विग्न हुआ, पडिच्छतु–ग्रहण करे ।

भावार्थ–औपपातिक सूत्र में वर्णित कोणिक के प्रसगानुसार जमालीकुमार, हजारो पुरुषो से देखाजाता हुआ ब्राह्मणकुण्ड ग्राम नगर के बाहर बहुशाल उद्यान में आया और तिथङ्कर भगवान के छत्र आदि अतिशयो को देखते ही सहस्रपुरुष-वाहिनी से नीचे उतरा । फिर जमालीकुमार को आगे करके उसके माता-पिता,

'श्रमण भगवान् महावीर स्वामी की सेवामें उपस्थित हुए और भगवान् को तीन बार प्रदक्षिणा करके इस प्रकार बोले-"हे भगवन् ! यह जमालीकुमार हमारा इकलौता, प्रिय और इष्ट पुत्र है। इसका नाम सुनना भी दुलभ है, तो दर्शन दुर्लभ हो इसमें तो कहना ही क्या। जिस प्रकार कीचड में उत्पन्न होने और पानी में बडा होने पर भी कमल, पानी और कीचड से निर्लिप्त रहता है, इसी प्रकार जमालीकुमार भी काम से उत्पन्न हुआ और भोगो में बडा हुआ, परन्तु वह काम में किंचित् भी आसक्त नहीं है। मित्र, ज्ञाति, स्वजन सम्बन्धी और परिजनो में लिप्त नहीं है। हे भगवन् ! यह जमालीकुमार ससार के भय से उद्विग्न हुआ है, जन्म मरण के भय से भयभीत हुआ है। यह आपके पास मुण्डित होकर अनगार धम स्वीकार करना चाहता है। अत हे भगवन् ! हम यह शिष्यरूपी भिक्षा देते है। आप इसे स्वीकार करे।

२७-तएण समणे भगव महावीरे जमालिं खत्तियकुमार एव वयासी-अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ! तएण से जमाली खत्तियकुमारे समणेण भगवया महावीरेणं एव वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठे समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो जाव णमसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसि-भाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्ला-लकार ओमुयइ। तएण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हसलक्ख-णेण पडसाडएण आभरण-मल्ला-लकार पडिच्छइ, आ० २ पडि-च्छित्ता हार-वारि जाव विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी जमालिं-खत्तियकुमार एव वयासी-घडियव्व जाया ! जइयव्व जाया ! परिक्कमियव्व जाया ! अस्सिं च णं अट्ठे, णो पमाएयव्व ति कट्टु

जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मा-पियरो समणं भगव महावीर वदति, णमसति, वदित्ता णमसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ।

कठिन शब्दार्थ-अहासुह-यथासुख (जैसा सुख हो वैसा करो), मा पडिबध-प्रतिबध (रुकावट) मत करो विणिम्मुयमाणी-विमोचन करती (डालती) हुई, घडियव्व-प्रयत्न करना चाहिये, जइयव्व-यत्न करना, पडिक्कमियव्व-पराक्रम करना ।

भावार्थ-२७-तत् पश्चात् श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने जमाली-क्षत्रिय कुमार से इस प्रकार कहा-"हे देवानुप्रिय ! जिस प्रकार तुम्हे सुख हो वैसा करो, किन्तु विलम्ब मत करो ।" भगवान् के ऐसा कहने पर जमाली क्षत्रिय कुमार हर्षित और तुष्ट हुआ और भगवान् को तीन बार प्रदक्षिणा कर यावत वन्दना नमस्कार कर, उत्तर पूर्व (ईशान कोण) में गया । उसने स्वयमेव आभरण, माला और अलङ्कार उतारे । उसकी माता ने उन्हे हस के चिन्हवाले पटशाटक (वस्त्र) में ग्रहण किया । फिर हार और जलधारा के समान आसू गिराती हुई अपने पुत्र से इस प्रकार बोली-"हे पुत्र ! सयम में प्रयत्न करना, सयम में पराक्रम करना । सयम पालन में किंचित् मात्र भी प्रमाद मत करना ।" इस प्रकार कहकर जमाली क्षत्रिय कुमार के माता पिता भगवान् को वन्दना नमस्कार कर के जिस दिशा से आये थे, उसी में दिशा से वापिस चले गये ।

२८-तएण से जमाली खत्तियकुमारे सयमेव पञ्चमुट्ठिय लोय करेइ, करित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, एव जहा उसभदत्तो तहेव पव्वइओ, णवर पचहि पुरिससएहिं सद्धिं तहेव जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, सा०

चरमाणे गामाणुग्गाम दूइज्जमाणे जेणेव सावत्थी णयरी, जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता अहापडिरूव उग्गह ओगिण्हइ, अ० ओगिण्हित्ता सजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। तएण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे जाव सुहसुहेणं विहरमाणे जेणेव चपा णयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव उग्गह ओगिण्हइ, अ० ओगिण्हित्ता सजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।

कठिन शब्दार्थ–अहापडिरूव–यथा प्रतिरूप–मुनियो के योग्य।

भावार्थ–३०–उस काल उस समय में श्रावस्ती नाम की नगरी थी–वर्णन। वहा कोष्ठक नामक उद्यान था–वणन यावत वनखण्ड तक। उस काल उस समय में चम्पा नाम की नगरी थी–वर्णन। पूर्णभद्र उद्यान था–वर्णन यावत् उसमें पृथ्वीशिलापट्ट था। एक बार वह जमाली अनगार पाच सौ साधुओ के साथ अनुक्रम से विहार करते हुए और ग्रामानुग्राम विचरते हुए श्रावस्ती नगरी के बाहर कोष्ठक उद्यान में आये और यथायोग्य अवग्रह ग्रहण करके सयम और तप द्वारा आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे। इधर भगवान् महावीर स्वामी अनुक्रम से विचरते हुए यावत सुखपूर्वक विहार करते हुए चम्पा नगरी के पूर्णभद्र उद्यान में पधारे और यथायोग्य अवग्रह ग्रहण करके तप सयम से आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे।

जमाली के मिथ्यात्व का उदय

३१–तएण तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहिं अरसेहि य

विरसेहि य अंतेहि य पंतेहि य लूहेहि य तुच्छेहि य कालाइक्कतेहि य, पमाणाइक्कतेहि य, सीएहि य पाण-भोयणेहि अण्णया कयाइ सरीरगसि विउले रोगायके पाउब्भूए, उज्जले, विउले, पगाढे, कक्कसे, कडुए, चडे, दुक्खे, दुग्गे, तिव्वे, दुरहियासे। पित्तज्जर-परिगयसरीरे, दाहवुक्कतिए या वि विहरइ। तएणं से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे णिग्गंथे सद्दावेइ स० सद्दावित्ता एव वयासी–तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम सेज्जासथारग-सथरह। तएण ते समणा णिग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठ विणएण पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जासथारग सथरति। तएण से जमाली अणगारे वलियतर वेयणाए अभिभूए समाणे दोच्च पि समणे णिग्गथे सद्दावेइ, सद्दा-वित्ता, दोच्च पि एव वयासी–मम ण देवाणुप्पिया ! सेज्जासथारए ण किं कडे, कज्जइ ? तएण ते समणा णिग्गथा जमालिं अणगार एव वयासी–णो खलु देवाणुप्पिया णं सेज्जासथारए कडे, कज्जइ।

कठिन शब्दार्थ–अरसेहिं–बिना रस वाले, विरसेहिं–खराब रस वाले, अतेहिं–भोजन के बाद बचा हुआ, पतेहिं–तुच्छ (हलका), लूहे–रूक्ष से, कालाइक्कतेहिं–जिसका काल बीत चुका ऐसे आहार से, पाउब्भूए–उत्पन्न हुआ, पगाढे–जोरदार दुग्गे–कष्ट साध्य, दुरहियासे–असह्य, पित्तजरपरिगयसरीर–शरीर मे पित्तज्वर व्याप्त हुआ, दाहवुक्कमि–जलन युक्त हुआ, सेज्जासथारग सथरह–बिछौना बिछाओ, कि कडे, कज्जई ?–क्या किया है, या कर रहे हो ?

भावार्थ–३१–जमाली अनगार को अरस, विरस, अन्त, प्रान्त, रूक्ष, तुच्छ, कालातिक्रान्त (भूख, प्यास का समय बीत जाने पर किया गया आहार),

प्रमाणातिक्रान्त (प्रमाण से कम या अधिक।) और ठण्डे पान भोजन से शरीर में महारोग हो गया। वह रोग, अत्यन्त दाह करने वाला, विपुल, प्रगाढ, कर्कश, कटुक, चण्ड (भयङ्कर), दु खरूप, कष्ट साध्य, तीव्र और असह्य था। उसका शरीर पित्तज्वर से व्याप्त होने से दाह युक्त था। वेदना से पीडित बने जमाली अनगार ने श्रमण निर्ग्रन्थो से कहा–"हे देवानुप्रियो! मेरे सोने के लिये सस्तारक (बिछौना) बिछाओ।" श्रमण-निग्र न्थो ने जमाली अनगार की बात, विनय पूर्वक स्वीकार की और बिछौना बिछाने लगे। जमाली अनगार वेदना से अत्यन्त व्याकुल थे, इसलिये उन्होने फिर श्रमण निग्र न्थो से पूछा–"हे देवानुप्रियो! क्या बिछौना बिछा दिया, या बिछा रहे हो?" तब श्रमण निग्रन्थो ने कहा–"हे देवानुप्रिय! बिछौना अभी बिछा नही है, बिछा रहे है।"

तएणं तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–ज णं समणे भगव महावीरे एव आइक्खइ, जाव एव परूवेइ–एव खलु चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, जाव णिज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे, त णं मिच्छा, इम च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जासथारए कज्जमाणे अकडे, सथरिज्जमाणे असथरिए, जम्हा णं सेज्जासथारए कज्जमाणे अकडे, सथरिज्जमाणे असथरिए तम्हा चलमाणे वि अचलिए, जाव णिज्जरिज्जमाणे वि अणिज्जिण्णे, एव सपेहेइ, सपेहित्ता समणे णिग्गथे सद्दावेइ, सम० सद्दावित्ता एव वयासी–ज णं देवाणुप्पिया! समणे भगव महावीरे एव आइक्खइ जाव परूवेइ–एव खलु चलमाणे चलिए त चेव सव्व जाव णिज्ज-रिज्जमाणे अणिजिण्णे। तएण तस्स जमालिस्स अणगारस्स एव

आइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स अत्थेगइया समणा णिग्गंथा एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति, अत्थेगइया समणा णिग्गंथा एयमट्ठं णो सद्दहंति, णो पत्तियंति, णो रोयंति । तत्थ णं जे ते समणा णिग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं सद्दहंति, पत्तियंति, रोयंति ते णं जमालिं चेव अणगारं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तत्थ णं जे ते समणा णिग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयं अट्ठं णो सद्दहंति, णो पत्तियंति, णो रोयंति ते णं जमालिस्स अणगारस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव चंपा णयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ।

कठिन शब्दार्थ–अज्झत्थिए–अध्यवसाय, चलमाणेचलिए–चलता हो वह चला, पच्चक्खमेव–प्रत्यक्ष ही, संपेहेइ–विचार करता है उवसंपज्जित्ताणं–आश्रय करके ।

भावार्थ–श्रमणों की यह-बात सुनने पर जमाली अनगार को इस प्रकार विचार हुआ–"श्रमण भगवान् महावीर स्वामी इस प्रकार कहते हैं यावत् प्ररूपणा करते हैं कि 'चलमान चलित है, उदीर्यमाण उदीरित है यावत् निर्जीर्यमाण निर्जीर्ण है,' परन्तु यह बात मिथ्या है । क्योंकि यह बात प्रत्यक्ष है कि जब तक बिछौना बिछाया जाता हो, तब तक 'बिछाया हुआ' नहीं है, इस कारण चलमान चलित नहीं, किन्तु अचलित है, यावत् निर्जीयमाण निर्जीर्ण नहीं, परंतु अनिर्जीर्ण

है ।" इस प्रकार विचार कर जमाली अनगार ने श्रमण-निग्रन्थो को बुलाकर इस प्रकार कहा—"हे देवानुप्रियो ! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी इस प्रकार कहते है यावत् प्ररूपणा करते है कि 'चलमान चलित कहलाता है' इत्यादि (पूर्ववत्), यावत् निर्जीयमाण निर्जीण नहीं, किन्तु अनिर्जीर्ण है ।" जमाली अनगार की इस बात पर कितने ही श्रमण निग्रथो ने श्रद्धा, प्रतीति और रुचि की तथा कितने ही श्रमण-निग्रन्थो ने श्रद्धा, प्रतीति और रुचि नहीं की । जिन श्रमण-निग्रन्थो ने जमाली अनगार की उपरोक्त बात पर श्रद्धा, प्रतीति एव रुचि की, वे जमाली अनगार के पास रहे और जिन्होने उनकी बात पर श्रद्धा, प्रतीति और रुचि नही की, वे जमाली अनगार के पास से—कोष्ठक उद्यान से निकल कर अनुक्रम से विचरते हुए एव ग्रामानुग्राम विहार करते हुए, चम्पा नगरी के बाहर पूर्णभद्र उद्यान में, श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास लौट आये और भगवान् को तीन वार प्रदक्षिणा करके एव वन्दना नमस्कार करके उनके आश्रय में विचरने लगे ।

विवेचन—'चलमान चलित यावत निर्जीयमाण निर्जीण'—यह भगवान का सिद्धान्त है । इसका सयुक्तिक विवेचन भगवती सूत्र के प्रथम शतक के प्रथम उद्देशक के प्रारम्भ मे कर दिया गया है । जमाली ने इस सिद्धान्त से विपरीत प्ररूपणा की । उनके पास रहने वाले कितने ही श्रमण निग्रन्थो ने इस सिद्धान्त पर श्रद्धा प्रतीति और रुचि की और कितने ही श्रमण निग्रन्थो ने इस सिद्धान्त पर श्रद्धा, प्रतीति, रुचि नही की । वे जमाली अनगार के पास से निकल कर श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पास चले आये ।

सर्वज्ञता का झूठा दावा

३२—तएण से जमाली अणगारे अण्णया कयावि ताओ रोगायकाओ विप्पमुक्के, हट्ठे जाए, अरोए बलियसरीरे, सावत्थीए णयरीए कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता

पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुग्गाम दूइज्जमाणे जेणेव चपा णयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते ठिच्चा समण भगव महावीर एव वयासी–जहा णं देवाणुप्पियाणं वहवे अतेवासी समणा णिग्गथा छउमत्था भवित्ता छउमत्थावक्कमणेण अवक्कता, णो खलु अह तहा छउमत्थे भवित्ता छउमत्थावक्कमणेण अवक्कते, अह णं उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेण अवक्कते ।

कठिन शब्दार्थ–अण्णया कयाइ–किसी अन्य दिन, वलियसरीरे–बलवान् शरीर वाले, छउमत्था–असर्वज्ञ, छउमत्थावक्कमणेण–असर्वज्ञ रहे हुए विचर रहे हैं ।

भावार्थ–३२–किसी समय जमाली अनगार पूर्वोक्त रोग से मुक्त हुआ, रोग रहित और बलवान् शरीर वाला हुआ । श्रावस्ती नगरी के कोष्ठक उद्यान से निकल कर अनुक्रम से विचरता हुआ एव ग्रामानुग्राम विहार करता हुआ चपा *नगरी के पूर्णभद्र उद्यान में आया । उस समय श्रमण भगवान् महावीर स्वामी* भी वहाँ पधारे हुए थे । वह श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास आया और भगवान् के न अति दूर और न अति समीप खडा रहकर इस प्रकार बोला– "जिस प्रकार आपके बहुत से शिष्य छद्मस्थ रहकर, छद्मस्थ विहार से विचरण कर रहे है, उस प्रकार मै छद्मस्थ विहार से विचरण नहीं करता , किन्तु उत्पन्न हुए केवलज्ञान केवलदर्शन को धारण करने वाला अरिहन्त, जिन, केवली होकर केवली विहार से विचरण कर रहा हूँ ।"

३३–तएण भगव गोयमे जमालि अणगार एव वयासी–णो

खलु जमाली ! केवलिस्स णाणे वा दंसणे वा सेलंसि वा थंभंसि वा थूभंसि वा आवरिज्जइ वा, णिवारिज्जइ वा जइ णं तुम जमाली ! उप्पण्णणाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते, तो णं इमाइं दो वागरणाइं वागरेहि—सासए लोए जमाली ! असासए लोए जमाली ! सासए जीवे जमाली ! असासए जीवे जमाली ! तएणं से जमाली अणगारे भगवया गोयमेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए जाव कलुससमावण्णे जाए या वि होत्था, णो संचायइ भगवओ गोयमस्स किंचि वि पमोक्खं आइक्खित्तए, तुसिणीए संचिट्ठइ ।

कठिन शब्दार्थ—सेलंसि—पर्वत से, आवरिज्जइ—ढंकता है, णिवारिज्जइ—निवारित होता है, कलुससमावण्णे—कलुषित भाव को प्राप्त हुआ ।

भावार्थ—३३—जमाली की बात सुनकर भगवान् गौतम स्वामी ने जमाली अनगार से इस प्रकार कहा—"हे जमाली ! केवली का ज्ञान दर्शन पर्वत, स्तम्भ और स्तूप आदि से आवृत और निवारित नहीं होता । हे जमाली ! यदि तू उत्पन्न केवलज्ञान दर्शन का धारण करने वाला अरिहन्त, जिन, केवली होकर केवली-विहार से विचरण करता है, तो इन दो प्रश्नों का उत्तर दे—(प्रश्न) हे जमाली ! क्या लोक शाश्वत है या अशाश्वत है ? हे जमाली ! क्या जीव शाश्वत है या अशाश्वत है ?

गौतम स्वामी के इन प्रश्नों को सुनकर जमाली शंकित और कांक्षित हुआ यावत् कलुषित परिणाम वाला हुआ । वह गौतम स्वामी के प्रश्नों का उत्तर देने में समर्थ नहीं हुआ । अतः मौन धारण कर चुपचाप खड़ा रहा ।

३४–'जमाली' त्ति समणे भगव महावीरे जमालिं अणगारं एव वयासी–अत्थि ण जमाली ! मम वहवे अंतेवासी समणा णिग्गथा छउमत्था, जे णं पभू एय वागरण वागरित्तए, जहा णं अहं, णो चेव णं एयप्पगार भास भासित्तए, जहा णं तुम ! सासए लोए जमाली ! ज णं कयाइ णासी, ण कयाइ ण भवइ, ण कयाइ ण भविस्सइ, भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे णिइए सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए णिच्चे । असासए लोए जमाली ! ज ओसप्पिणी भवित्ता उस्सप्पिणी भवइ, उस्सप्पिणी भवित्ता ओसप्पिणी भवइ । सासए जीवे जमाली ! ज ण कयाइ णासी, जाव णिच्चे । असासए जीवे जमाली ! ज णं णेरइए भवित्ता तिरिक्ख-जोणिए भवइ तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ, मणुस्से भवित्ता देवे भवइ ।

कठिन शब्दार्थ–एयप्पगार–इस प्रकार, अव्वए–अव्यय, अवट्ठिए–अवस्थित ।

भावार्थ–३४–इसके पश्चात् श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने जमाली अनगार को सम्बोधित करके कहा–'हे जमाली ! मेरे बहुत से श्रमण-निर्ग्रन्थ शिष्य छद्मस्थ है, परन्तु वे मेरे ही समान इन प्रश्नो का उत्तर देने में समर्थ हैं, किंतु जिस प्रकार तू कहता है कि 'मैं सर्वज्ञ अरिहन्त, जिन, केवली हूँ,' वे इस प्रकार की भाषा नहीं बोलते ।"

हे जमाली ! लोक शाश्वत है, क्योंकि 'लोक कदापि नहीं था, नहीं है और नहीं रहेगा'–यह बात नही है, किन्तु 'लोक था, है और रहेगा ।' लोक ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य है । हे जमाली ! लोक अशाश्वत भी है, क्योकि अवसर्पिणी काल होकर उत्सर्पिणी काल होता है ।

उत्सर्पिणी काल होकर अवसर्पिणी काल होता है।"

"हे जमाली ! जीव शाश्वत है, क्योंकि 'जीव कदापि नहीं था, नहीं है और नहीं रहेगा'-ऐसी बात नहीं है, किन्तु 'जीव था, है और रहेगा।' यावत जीव नित्य है। हे जमाली ! जीव अशाश्वत भी है। क्योंकि वह नैरयिक होकर तिर्यंच योनिक हो जाता है, तिर्यंच योनिक होकर मनुष्य हो जाता है और मनुष्य होकर देव हो जाता है।

३५-तएणं से जमाली अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स एव आइक्खमाणस्स जाव एव परूवेमाणस्स एय अट्ठ णो सद्दहइ, णो पत्तियइ, णो रोएइ, एयमट्ठ असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोए-माणे दोच्च पि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ आयाए अवक्कमइ, दोच्च पि आयाए अवक्कमित्ता बहूहि असब्भावुब्भा-वणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाण च परं च तदुभय च वुग्गाहे-माणे, वुप्पाएमाणे बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, तीस० छेदित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय-अपडिक्कते कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे तेरससागरोवम-ठिइएसु देवकिब्विसिएसु देवेसु देवकिब्विसियत्ताए उववण्णे।

कठिन शब्दार्थ-आइक्खमाणस्स-कही गई बात का, असब्भावुब्भावणाहि-असत्य भाव प्रकट करने से, मिच्छत्ताभिणिवेसेहि-मिथ्यात्वाभिनिवेश (असत्य के दृढ आग्रह से) वुग्गाहे-माणे-भ्रान्त करता हुआ, वुप्पाएमाणे-मिथ्याज्ञान वाला करता हुआ, अणालोइय-आलोचना नहीं किया हुआ।

भावार्थ-३५-इसके बाद जमाली अनगार इस प्रकार कहता यावत् प्ररू पणा करता हुआ और श्रमण भगवान महावीर स्वामी की बात पर श्रद्धा, प्रतीति, रुचि नही करता हुआ, अपितु अश्रद्धा, अप्रतीति और अरुचि करता हुआ, दूसरी बार भगवान् के पास से निकल गया। जमाली ने बहुत से असद्भूत भावो को प्रकट करके तथा मिथ्यात्व के अभिनिवेश से अपनी आत्मा को, पर को और उभय को भ्रान्त तथा मिथ्या ज्ञान वाले करता हुआ बहुत वर्षो तक श्रमण पर्याय का पालन किया। फिर अर्द्ध मास की सलेखना द्वारा अपने शरीर को कृश करके और अनशन द्वारा तीस भवतो का छेदन करके, पूर्ववत पाप की आलोचना प्रतिक्रमण किये विना ही काल के समय में काल करके लातक देवलोक में, तेरह सागरोपम की स्थितिवाले किल्विपिक देवो में, किल्विषिक देव रूप से उत्पन्न हुआ।

३६ प्रश्न-तएण भगव गोयमे जमालिं अणगार कालगय जाणित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पियाणं अतेवासी कुसिस्से जमाली णाम अणगारे, से ण भते ! जमाली अणगारे कालमासे काल किच्चा कहिं गए, कहि उववण्णे ?

३६ उत्तर-गोयमाइ ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी-एव खलु गोयमा ! मम अतेवासी कुसिस्से जमाली णाम अणगारे से ण तया मम एव आइक्खमाणस्स ४ एय अट्ठ णो सद्दहइ ३, एय अट्ठ असद्दहमाणे ३ दोच्च पि मम अतियाओ

आयाए अवक्कमइ, दोच्च ० अवक्कमित्ता बहूहि असब्भावुब्भा-णाहि त चेव जाव देवकिब्विसियत्ताए उववण्णे ।

कठिन शब्दार्थ–कुसिस्से–कुशिष्य ।

भावार्थ–३६ प्रश्न–जमाली अनगार को कालधम प्राप्त हुआ जानकर गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दना नमस्कार कर इस प्रकार पूछा–'हे भगवन् ! आप देवानुप्रिय का अतेवासी कुशिष्य जमाली अन-गार काल के समय काल करके कहाँ गया, कहाँ उत्पन्न हुआ ?'

३६ उत्तर–'हे गौतम ! इस प्रकार सम्बोधित करके श्रमण भगवान् महा-वीर स्वामी ने इस प्रकार कहा–'हे गौतम ! मेरा अन्तेवासी कुशिष्य जो जमाली अनगार था, वह जब मैं इस प्रकार कहता था यावत प्ररूपणा करता था, तब इस प्रकार की यावत् प्ररूपणा करते हुए मेरी बात पर श्रद्धा, प्रतीति, रुचि नही करता हुआ यावत काल के समय काल करके किल्विषिक देवो में उत्पन्न हुआ है ।

किल्विषी देवो का स्वरूप

३७ प्रश्न–कइविहा णं भते ! देवकिब्विसिया पण्णत्ता ?

३७ उत्तर–गोयमा ! तिविहा देवकिब्विसिया पण्णत्ता, त जहा–तिपलिओवमट्ठिइया, तिसागरोवमट्ठिइया, तेरससागरोवमट्ठिइया ।

३८ प्रश्न–कहि ण भते ! तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्विसिया परिवसति ?

३८ उत्तर–गोयमा ! उप्पिं जोइसियाणं हिट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु, एत्थ ण तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्विसिया परिवसति ।

३६ प्रश्न–कहिं णं भते ! तिसागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ?

३६ उत्तर–गोयमा ! उप्पिं सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं, हिट्ठिं सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु एत्थ णं तिसागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ।

४० प्रश्न–कहि णं भते ! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया देवा परिवसति ?

४० उत्तर–गोयमा ! उप्पिं बभलोगस्स कप्पस्स हिट्ठिं लतए कप्पे, एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठिईया देवकिव्विसिया देवा परिवसति ।

कठिन शब्दार्थ–उप्पिं–ऊँचा, हिट्ठि–नीचे ।

भावार्थ–३७ प्रश्न–हे भगवन् ! किल्विषिक देव कितने प्रकार के कहे गये है ?

३७ उत्तर–हे गौतम ! किल्विषिक देव तीन प्रकार के कहे गये हैं। यथा–तीन पल्योपम की स्थिति वाले, तीन सागरोपम की स्थिति वाले और तेरह सागरोपम की स्थितिवाले ।

३८ प्रश्न–हे भगवन् ! तीन पल्योपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव कहाँ रहते है ?

३८ उत्तर–हे गौतम ! ज्योतिषी देवो के ऊपर और सौधर्म एव ईशान देवलोक के नीचे तीन पल्योपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव रहते हैं ।

३६ प्रश्न–हे भगवन् ! तीन सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव कहाँ रहते ह ?

३६ उत्तर–हे गौतम ! सौधर्म और ईशान देवलोक के ऊपर तथा

सनत्कुमार और माहेन्द्र देवलोक के नीचे तीन सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव रहते हैं।

४० प्रश्न-हे भगवन् ! तेरह सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव कहाँ रहते ह ?

४० उत्तर-हे गौतम ! ब्रह्म देवलोक के ऊपर और लान्तक देवलोक के नीचे तेरह सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव रहते हैं।

४१ प्रश्न-देवकिब्बिसिया णं भंते ! केसु कम्मादाणेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति ?

४१ उत्तर-गोयमा ! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया, उवज्झायपडिणीया, कुलपडिणीया, गणपडिणीया, संघपडिणीया, आयरियउवज्झायाणं अयसकरा, अवण्णकरा, अकित्तिकरा, बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहिं य अप्पाणं परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा, वुप्पाएमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवकिब्बिसिएसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा-तिपलिओवमट्ठिइएसु वा, तिसागरोवमट्ठिइएसु वा, तेरससागरोवमट्ठिइएसु वा।

कठिन शब्दार्थ-कम्मादाणेसु-कर्म के कारण, उववत्तारो-उत्पन्न होते, पडिणिया-द्वेषी, अवण्णकरा-निन्दा करने वाले।

भावार्थ-४१ प्रश्न-हे भगवन् किल्विषिक देव किस कर्म के निमित्त से

किल्विषिक देवपने उत्पन्न होते है ?

४१ उत्तर–हे गौतम ! जो जीव आचार्य, उपाध्याय, कुल, गण और सघ के प्रत्यनीक (द्वेषी) होते है, आचार्य और उपाध्याय के अयश करनेवाले, अवर्णवाद वोलने वाले और अकीर्त्ति करने वाले होते है। बहुत असत्य अर्थ को प्रकट करने से, तथा मिथ्या कदाग्रह से अपनी आत्मा को, दूसरो को और उभय को भ्रान्त और दुर्बोध करने वाले जीव, बहुत वर्षो तक श्रमण-पर्याय का पालन कर, अकायस्थान (पापस्थान) की आलोचना और प्रतिक्रमण किये विना, काल के समय काल करके किन्ही किल्विषिक देवो में किल्विषिक देवपने उत्पन्न होते है। वे इस प्रकार है–तीन पल्योपम की स्थिति वाले, तीन सागर की स्थिति वाले और तेरह सागर की स्थिति वाले।

४२ प्रश्न–देवकिव्विसिया णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, भवक्खएणं, ठिइक्खएणं अणतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जति ?

४२ उत्तर–गोयमा ! जाव चत्तारि पंच णेरइय-तिरिक्ख-जोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं ससारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झति, वुज्झति, जाव अतं करेंति, अत्थेगइया अणाईयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टति।

भावार्थ–४२ प्रश्न–हे भगवन् ! वे किल्विषिक देव, आयु, भव और स्थिति का क्षय होने पर उस देवलोक से चवकर कहां जाते है, कहां उत्पन्न होते है ?

४२ उत्तर–हे गौतम ! कुछ किल्विषिक देव नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य और देव के चार, पांच भव करके और इतना ससार परिभ्रमण करके सिद्ध होते है, बुद्ध होते है यावत् समस्त दुःखो का अन्त करते है। और कितने ही

किल्विषिक देव अनादि, अनन्त और दीर्घ मार्ग वाले चार गति रूप ससार कान्तार (ससार रूपी अटवी) में परिभ्रमण करते हैं ।

विवेचन–देवो मे जो देव पाप के कारण चाण्डाल के समान होते हैं, उन्हे 'किल्वि षिक' कहते हैं । अर्थात् जिस प्रकार यहा चाण्डाल अपमानित होता है, उसी प्रकार जो देव, देवसभा मे अपमानित होते हैं, उन्हे 'किल्विषिक' कहते हैं । वे जब सभा मे उठकर कुछ बोलते हैं तो दो चार महर्द्धिक देव खडे होकर कहते है–"बस, मत बोलो, चुप रहो, बैठ जाओ," इत्यादि शब्द कहकर उनका अपमान करते है । कोई उनका आदर सत्कार नही करता ।

प्रश्न ४२ मे यह कहा गया है कि किल्विषी मरकर कहाँ उत्पन्न होते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर मे 'नारक, तिर्यञ्च मनुष्य और देव के चार पाच भव ग्रहण करके मोक्ष जाने का कहा गया, यह सामान्य कथन है । अन्यथा देव और नारक मरकर तुरन्त देव और नारक नही होते । वे वहा से मनुष्य या तिर्यञ्च मे उत्पन्न होते हैं । इसके पश्चात नारक या देवो मे उत्पन्न हो सकते हैं ।

जमाली का भविष्य

४३ प्रश्न–जमाली ण भते ! अणगारे अरसाहारे विरसाहारे अताहारे पताहारे लूहाहारे तुच्छाहारे अरसजीवी विरसजीवी जाव तुच्छजीवी उवसतजीवी पसतजीवी विवित्तजीवी ?

४३ उत्तर–हता, गोयमा ! जमाली ण अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी ।

४४ प्रश्न–जइ ण भते ! जमाली अणगारे अरसाहारे विरसा-हारे जाव विवित्तजीवी, कम्हा ण भते ! जमाली अणगारे कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे तेरससागरोवमट्ठिइएसु देवकिब्बिसिएसु

देवेसु देवकिव्विसियत्ताए उववण्णे ?

४४ उत्तर-गोयमा ! जमाली णं अणगारे आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए आयरिय-उवज्झायाण अयसकारए, अवण्ण-कारए, जाव वुप्पाएमाणे, जाव बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउ-णइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, तीस ० छेदित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे जाव उववण्णे ।

४५ प्रश्न-जमाली ण भते ! देवत्ताओ देवलोगाओ आउक्ख-एणं जाव कहिं उववज्जिहिइ ?

४५ उत्तर-गोयमा ! चतारि, पच तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइ ससार अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झिहिइ, जाव अत काहिइ ।

॥ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

॥ णवमसए तेत्तीसइमो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-अताहारे-खाने के बाद बचा हुआ आहार, पताहारे-तुच्छ आहार, उवसतजीवी-शान्त जीवन वाला, पसतजीवी-प्रशात जीवन वाला, विवित्तजीवी-विविक्त जीवी-स्त्री, पशु, पण्डक रहित स्थान का सेवन करने वाला ।

भावार्थ-४३ प्रश्न-हे भगवन् ! क्या जमाली अनगार अरसाहारी (रस रहित आहार करने वाला), विरसाहारी, अन्ताहारी, प्रान्ताहारी, रूक्षाहारी, तुच्छाहारी, अरसजीवी, विरसजीवी यावत् तुच्छजीवी, उपशान्त जीवन वाला,

प्रशान्त जीवन वाला और विविक्तजीवी (पवित्र और एकान्त जीवन वाला) था ?

४३ उत्तर-हाँ, गौतम ! जमाली अनगार अरसाहारी, विरसाहारी यावत् विविक्तजीवी था ।

४४ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि जमाली अनगार अरसाहारी, विरसाहारी यावत् विविक्तजीवी था, तो काल के समय काल करके वह लान्तक देवलोक में तेरह सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देवो में किल्विषिक देवपने क्यो उत्पन्न हुआ ?

४४ उत्तर-हे गौतम ! वह जमाली अनगार, आचार्य और उपाध्याय का प्रत्यनीक (द्वेषी) था । आचार्य और उपाध्याय का अपयश करने वाला और अवणवाद बोलने वाला था, यावत वह मिथ्याभिनिवेश द्वारा अपने आपको, दूसरो को और उभय को भ्रान्त और दुर्बोध करता था यावत बहुत वर्षो तक श्रमण-पर्याय का पालन कर, अधमासिक सलेखना द्वारा शरीर को कृश कर और तीस भक्त अनशन का छेदन कर, उस पापस्थानक की आलोचना और प्रतिक्रमण किये बिना काल के समय काल कर, लान्तक देवलोक में, तेरह सागरोपम की स्थितिवाले किल्विषिक देवो में किल्विषिक देव रूप से उत्पन्न हुआ ।

४५ प्रश्न-हे भगवन ! वह जमाली देव, देवपन और देवलोक से अपनी आयु क्षय होने पर यावत कहाँ उत्पन्न होगा ?

४५ उत्तर-हे गौतम ! तिर्यंच योनिक, मनुष्य और देव के चार पाच भव करके और इतना ससार परिभ्रमण करके सिद्ध होगा, बुद्ध होगा यावत समस्त दु खो का अन्त करेगा ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन ! यह इसी प्रकार है । ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत विचरते है ।

विवेचन-यद्यपि जमाली अनगार अरसाहारी विरसाहारी आदि था, कितु आचाय उपाध्याय का प्रत्यनीक होने से तथा असद्भावना और मिथ्यात्व के अभिनिवेश के कारण झूठी प्ररूपणा द्वारा स्वय तथा दूसरों को भ्रान्त करने से एव उस पाप स्थान की आलोचना

और प्रतिक्रमण किये बिना ही काल करने के कारण किल्विषिक देवों मे उत्पन्न हुआ । वहाँ से चवकर तिर्यञ्च, मनुष्य और देव के चार पाच भव कर के सिद्ध, बुद्ध यावत् मुक्त होगा ।

॥ नौवे शतक का तेतीसवॉ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ९ उद्देशक ३४

पुरुष और नोपुरुष का घातक

१ प्रश्न–तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे जाव एव वयासी–पुरिसे ण भते ! पुरिस हणमाणे किं पुरिस हणइ, णोपुरिस हणइ ?

१ उत्तर–गोयमा ! पुरिस पि हणइ, णोपुरिसे वि हणइ ।

प्रश्न–से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ–पुरिस पि हणइ, जाव णोपुरिसे वि हणइ ?

उत्तर–गोयमा ! तस्स ण एव भवइ–एव खलु अह एगपुरिस हणामि से ण एग पुरिस हणमाणे अणेगे जीवे हणइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ–पुरिस पि हणइ, जाव णोपुरिसे वि हणइ ।

२ प्रश्न–पुरिसे ण भते ! आस हणमाणे किं आस हणइ, णोआसे वि हणइ ?

२ उत्तर-गोयमा ! आसं पि हणइ, णोआसे वि हणइ ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं ?

उत्तर-अट्ठो तहेव, एवं हत्थि, सीहं, वग्घं जाव चित्तलगं । एए सव्वे इक्कगमा ।

३ प्रश्न-पुरिसे णं भंते ! अण्णयरं तसं पाणं हणमाणे किं अण्णयरं तसं पाणं हणइ, णोअण्णयरे तसे पाणे हणइ ?

३ उत्तर-गोयमा ! अण्णयरं पि तसं पाणं हणइ, णोअण्णयरे वि तसे पाणे हणइ ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-अण्णयरं पि तसं पाणं, णोअण्णयरे वि तसे पाणे हणइ ।

उत्तर-गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ एवं खलु अहं एगं अण्णयरं तसं पाणं हणामि, से णं एगं अण्णयरं तसं पाणं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! तं चेव । एए सव्वे वि एक्कगमा ।

कठिन शब्दार्थ-आसं-घोडे को, चित्तलग-चित्रल-एक जंगली जानवर विशेष, इक्कगमा-एक समान पाठ ।

भावार्थ-१ प्रश्न-उस काल उस समय में राजगृह नगर था । वहाँ गौतम स्वामी ने भगवान् से इस प्रकार पूछा-"हे भगवन् ! कोई पुरुष, पुरुष की घात करता हुआ, क्या पुरुष की ही घात करता है, अथवा नोपुरुष (पुरुष के सिवाय दूसरे जीवों) की घात करता है ?

१ उत्तर-हे गौतम ! वह पुरुष की भी घात करता है और नोपुरुष की भी।

प्रश्न-हे भगवन् ! इसका क्या कारण है ?

उत्तर-हे गौतम ! घात करने वाले उस पुरुष के मन में इस प्रकार का विचार होता है कि 'मैं एक पुरुष को मारता हूँ,' परन्तु वह एक पुरुष को मारता हुआ दूसरे अनेक जीवों को भी मारता है। इसलिये हे गौतम ! यह कहा गया है कि-'वह पुरुष को भी मारता है और नोपुरुष को भी मारता है।'

२ प्रश्न-हे भगवन् ! अश्व को मारता हुआ कोई पुरुष, अश्व को मारता है, या नोअश्व को ?

२ उत्तर-हे गौतम ! वह अश्व को भी मारता है और नोअश्व (अश्व के सिवाय दूसरे जीवों) को भी मारता है।

प्रश्न-हे भगवन् ! इसका क्या कारण है ?

उत्तर-हे गौतम ! इसका उत्तर पूर्ववत् जानना चाहिये। इसी प्रकार हाथी, सिंह, व्याघ्र यावत् चित्रल तक जानना चाहिए। इन सभी के लिये एक समान पाठ है।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! कोई पुरुष किसी एक त्रस जीव को मारता हुआ वह उस त्रस जीव को मारता है, या उसके सिवाय दूसरे त्रस जीवों को भी मारता है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! वह उस त्रस जीव को भी मारता है और उसके सिवाय दूसरे त्रस जीवों को भी मारता है।

प्रश्न-हे भगवन् ! इसका क्या कारण है ?

उत्तर-हे गौतम ! उस त्रस जीव को मारनेवाले पुरुष के मन में ऐसा विचार होता है कि-'मैं इस त्रस जीव को मारता हूँ,' परन्तु वह उस त्रस जीव को मारता हुआ उसके सिवाय दूसरे अनेक त्रस जीवों को भी मारता है, इसलिये हे गौतम ! पूर्वोक्त रूप से जानना चाहिये। इन सभी का एक समान पाठ है।

ऋषि-घातक अनंत जीवो का घातक

४ प्रश्न-पुरिसे णं भते ! इसि हणमाणे किं इसिं हणइ, णोइसिं हणइ ?

४ उत्तर-गोयमा ! इसि पि हणइ णोइसिं पि हणइ ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ-जाव णोइसिं पि हणइ ?

उत्तर-गोयमा ! तस्स णं एव भवइ-एव खलु अह एग इसिं हणामि, से णं एग इसि हणमाणे अणंते जीवे हणइ, से तेणट्ठेण णिक्खेवो ।

५ प्रश्न-पुरिसे णं भते ! पुरिस हणमाणे कि पुरिसवेरेणं पुट्ठे, णोपुरिसवेरेणं पुट्ठे ?

५ उत्तर-गोयमा ! णियम ताव पुरिसवेरेण पुट्ठे, अहवा पुरिस-वेरेण य णोपुरिसवेरेण य पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य णोपुरिसवेरेहि य पुट्ठे, एव आस, एव जाव चित्तलग, जाव अहवा चित्तलावेरेण य णोचित्तलावेरेहि य पुट्ठे ।

६ प्रश्न-पुरिसे ण भते ! इसिं हणमाणे कि इसिवेरेण पुट्ठे, णोइसिवेरेणं पुट्ठे ?

६ उत्तर-गोयमा ! णियम ताव इसिवेरेण य णोइसिवेरेहि य पुट्ठे ।

कठिन शब्दार्थ–इसि–ऋषि, पुट्ठे–स्पर्श करता है (बन्धता है), णिक्खेवो–उपसंहार।

भावार्थ–४ प्रश्न–हे भगवन् ! कोई पुरुष, ऋषि को मारता हुआ ऋषि को ही मारता है, या नोऋषि (ऋषि के सिवाय दूसरे जीवो) को भी मारता है ?

४ उत्तर–हे गौतम ! वह ऋषि को भी मारता है और नोऋषि को भी।

प्रश्न–हे भगवन् ! इसका क्या कारण है ?

उत्तर–हे गौतम ! उस मारने वाले पुरुष के मन में ऐसा विचार होता है कि 'मैं एक ऋषि को मारता हूँ,' परन्तु वह एक ऋषि को मारता हुआ अनन्त जीवो को मारता है। इस कारण पूर्वोक्त रूप से कहा गया है।

५ प्रश्न–हे भगवन ! पुरुष को मारता हुआ कोई व्यक्ति, क्या पुरुष वैर से स्पृष्ट होता है, या नोपुरुषवैर से ?

५ उत्तर–हे गौतम ! वह नियम से (निश्चित रूप से) पुरुष वैर से स्पृष्ट होता है। (१) अथवा पुरुष वैर से और नोपुरुष वैर से स्पृष्ट होता है। (२) अथवा पुरुषवैर से और नोपुरुष-वैरो से स्पृष्ट होता है। इसी प्रकार अश्व के विषय में यावत् चित्रल के विषय में भी जानना चाहिये। यावत् अथवा चित्रल वैर से और नोचित्रल-वैरो से स्पृष्ट होता है।

६ प्रश्न–हे भगवन् ! ऋषि को मारता हुआ कोई पुरुष, क्या ऋषि वैर से स्पृष्ट होता है, या नोऋषि वैर से स्पृष्ट होता है ?

६ उत्तर–हे गौतम ! वह नियम से ऋषि-वैर से और नोऋषि-वैरो से स्पृष्ट होता है।

विवेचन–कोई पुरुष किसी पुरुष को मारता है तो कभी केवल वह उसी का वध करता है, कभी उसके साथ दूसरे एक जीव का भी वध करता है और कभी उसके साथ अन्य अनेक जीवो का वध भी करता है। इस प्रकार तीन भग बनते हैं।

ऋषि की घात करता हुआ पुरुष, अन्य अनन्त जीवों की घात करता है। यह एक ही भग बनता है। क्योंकि ऋषि की घात करने मे अनन्त जीवो की घात होती है। इसका

कारण यह है कि ऋषि अवस्था मे वह सब विरत है। इसलिये अनन्त जीवो का रक्षक है। मर जाने के पश्चात वह अविरत हो जाता है। अविरत होकर वह अनन्त जीवो का घातक बनता है। इसलिये ऋषि की घात करनेवाला पुरुष, अन्य अनन्त जीवो का भी घातक होता है। अथवा जीवित रहता हुआ ऋषि, बहुत से प्राणियो को प्रतिबोध देता है। प्रतिबोध प्राप्त वे प्राणी क्रमश मोक्ष को प्राप्त होते है और मुक्त जीव अनन्त ससारी प्राणियो के अघातक होते है। इसलिये उन अनन्त जीवो की रक्षा मे ऋषि कारण है। इसलिये ऋषि की घात करने वाला पुरुष, अन्य अनन्त जीवो की भी घात करता है।

पुरुष को मारने वाला व्यक्ति नियम से पुरुष-वध के पाप से स्पृष्ट होता है। यह पहला भग है। उस पुरुष को मारते हुए यदि किसी दूसरे एक प्राणी की घात करता है, तो वह एक पुरुष वैर से और एक नोपुरुष वैर से स्पष्ट होता है। यह दूसरा भग है। यदि उस एक पुरुष की घात करते हुए अन्य अनेक प्राणियो की घात करता है, तो वह एक पुरुष वर से और बहुत नोपुरुष वैरो से' स्पृष्ट होता है। यह तीसरा भग है। हस्ती, अश्व आदि के वध मे भी सवत्र ये तीन भग पाये जाते हैं किन्तु ऋषि घात मे केवल एक तीसरा भग ही पाया जाता है।

शका—जो ऋषि मरकर मोक्ष मे चला जाता है, वह वहा अविरत नही बनता, इसलिये उस ऋषि की घात करने से वह घातक पुरुष, केवल ऋषि वर से ही स्पष्ट होता है। इसलिये प्रथम भग बन सकता है। तब तीसरा भग ही क्यो कहा गया ? यदि कोई इसका यह समाधान दे कि चरम शरीरी जीव तो निरुपक्रम आयुष्यवाला होता है, इसलिये उसकी घात नही हो सकती। अत अचरम शरीरी ऋषि की अपेक्षा केवल तीसरा भग ही बनता है, प्रथम भग नही, तो यह समाधान भी ठीक नही, क्योकि यद्यपि चरम शरीरी जीव निरुपक्रम आयुष्य वाला होता है, तथापि उसके वध के लिये प्रवृत्ति करनेवाले पुरुष को उसकी हिंसा का पाप लगता ही है और वह ऋषि वैर से स्पष्ट होता है। इस प्रकार प्रथम भग बन सकता है, तब केवल तीसरा भग ही कहने का क्या कारण है ?

समाधान—यद्यपि शङ्काकार का कथन ठीक है, तथापि जिस सोपक्रम आयुष्यवाले ऋषि का पुरुष कृत वध होता है, उसकी अपेक्षा से यह सूत्र कहा गया है। इसलिये तीसरा भग ही कहा गया है।

एकेन्द्रिय जीव और श्वासोच्छ्वास

७ प्रश्न–पुढविक्काइए ण भते ! पुढविक्काइय चेव आणमइ वा, पाणमइ वा, ऊसमइ वा, णीससइ वा ?

७ उत्तर–हता, गोयमा ! पुढविक्काइए पुढविक्काइय चेव आणमइ वा जाव णीससइ वा ।

८ प्रश्न–पुढविक्काइए ण भते ! आउक्काइय आणमइ, जाव णीससइ वा ?

८ उत्तर–हता, गोयमा ! पुढविक्काइए चेव आउक्काइय आणमइ, जाव णीससइ वा, एव तेउक्काइय, वाउक्काइय एव वणस्सइकाइय ।

९ प्रश्न–आउक्काइए ण भते ! पुढविक्काइय आणमइ वा, पाणमइ वा ?

९ उत्तर–एव चेव ।

१० प्रश्न–आउक्काइए णं भते ! आउक्काइय चेव आणमइ वा ?

१० उत्तर–एव चेव एव तेउ-वाउ-वणस्सइकाय ।

११ प्रश्न–तेउक्काइए णं भते ! पुढविक्काइय आणमइ वा ?

११ उत्तर–एव ।

प्रश्न–जाव वणस्सइकाइए णं भंते ! वणस्सइकाइयं चेव आणमइ वा ?

उत्तर–तहेव ।

१२ प्रश्न–पुढविक्काइए णं भंते ! पुढविक्काइयं चेव आणममाणे वा, पाणममाणे वा, ऊससमाणे वा, णीससमाणे वा कइकिरिए ?

१२ उत्तर–गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ।

१३ प्रश्न–पुढविक्काइए णं भंते ! आउक्काइयं आणममाणे वा ?

१३ उत्तर–एवं चेव, एवं जाव वणस्सइकाइयं, एवं आउक्काइएण वि सव्वे वि भाणियव्वा, एवं तेउक्काइएण वि, एवं वाउक्काइएण वि । जाव (प्रश्न) वणस्सइकाइए णं भंते ! वणस्सइकाइयं चेव आणममाणे वा–पुच्छा । (उत्तर) गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ।

१४ प्रश्न–वाउक्काइए णं भंते ! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कइकिरिए ?

१४ उत्तर–गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए; एवं कंदं एवं जाव (प्रश्न) बीयं पचालेमाणे वा पुच्छा ?

(उत्तर) गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ।

॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

॥ णवमसए चोत्तीसइमो उद्देसो समत्तो ॥

॥ णवम सय समत्त ॥

कठिन शब्दार्थ–आणमइ वा पाणमइ वा–श्वासोच्छ्वास के रूप में, पचालेमाणे–कम्पाता हुआ, पवाडेमाणे–गिराता हुआ ।

भावार्थ–७ प्रश्न–हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव, पृथ्वीकायिक जीवो को आभ्यन्तर और बाहरी श्वासोच्छ्वास के रूप में ग्रहण करते है और छोडते है ?

७ उत्तर–हां, गौतम ! पृथ्वीकायिक जीव, पृथ्वीकायिक जीवो को आभ्यन्तर और बाहरी श्वासोच्छ्वास के रूप में ग्रहण करते हैं और छोडते हैं ।

८ प्रश्न–हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव, अप्कायिक जीवो को आभ्यन्तर और बाहरी श्वासोच्छ्वास के रूप में ग्रहण करते और छोडते है ?

८ उत्तर–हां, गौतम ! पृथ्वीकायिक जीव, अप्कायिक जीवो को यावत् ग्रहण करते और छोडते हैं । इसी प्रकार अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीवो को भी यावत् ग्रहण करते और छोडते है ।

९ प्रश्न–हे भगवन् ! अप्कायिक जीव, पृथ्वीकायिक जीवों को आभ्यन्तर और बाहरी श्वासोच्छ्वास के रूप में ग्रहण करते और छोडते है ?

९ उत्तर–हां, गौतम ! पूर्वोक्त रूप से जानना चाहिये ।

१० प्रश्न–हे भगवन् ! अप्कायिक जीव, अप्कायिक जीवो को आभ्यन्तर और बाहरी श्वासोच्छ्वास के रूप में ग्रहण करते और छोडते है ?

१० उत्तर–हां, गौतम ! पूर्वोक्त रूप से जानना चाहिये । इसी प्रकार तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय के विषय में भी जानना चाहिये ।

११ प्रश्न–हे भगवन् ! तेजस्कायिक जीव, पृथ्वीकायिक जीवो को आभ्यन्तर और बाहरी श्वासोच्छवास के रूप में ग्रहण करते हैं ?

११ उत्तर–हाँ, गौतम ! पूर्वोक्त रूप से जानना चाहिये ।

प्रश्न–यावत् हे भगवन् ! वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक जीवो को आभ्यन्तर और बाहरी श्वासोच्छ्वास के रूप में ग्रहण करते और छोडते हैं ?

उत्तर–हाँ, गौतम ! पूर्वोक्त रूप से जानना चाहिये ।

१२ प्रश्न–हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीव, पृथ्वीकायिक जीवो को आभ्यन्तर और बाहरी श्वासोच्छ्वास के रूप में ग्रहण करते हुए और छोडते हुए कितनी क्रिया वाले होते हैं ?

१२ उत्तर–हे गौतम ! कदाचित तीन क्रिया वाले, कदाचित चार क्रिया वाले और कदाचित् पांच क्रिया वाले होते हैं ।

१३ प्रश्न–हे भगवन ! पृथ्वीकायिक जीव, अप्कायिक जीवो को आभ्यन्तर और बाहरी श्वासोच्छ्वास के रूप में ग्रहण करते और छोडते हुए कितनी क्रिया वाले होते हैं ?

१३ उत्तर–हे गौतम ! पूर्वोक्त रूप से जानना चाहिये । इसी प्रकार तेजस्कायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक के साथ भी कहना चाहिये । इसी प्रकार अप्कायिक जीवो के साथ पृथ्वीकायिक आदि सभी का कथन करना चाहिये । इसी प्रकार तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवो के साथ पृथ्वीकायिकादि का कथन करना चाहिए । यावत (प्रश्न) हे भगवन ! वनस्पति कायिक जीव, वनस्पतिकायिक जीवो को आभ्यन्तर और बाहरी श्वासोच्छवास के रूप में ग्रहण करते हुए और छोडते हुए कितनी क्रियावाले होते हैं ? (उत्तर) हे गौतम ! कदाचित् तीन क्रिया वाले, कदाचित चार क्रियावाले और कदाचित पाच क्रिया वाले होते हैं ।

१४ प्रश्न–हे भगवन् ! वायुकायिक जीव, वृक्ष के मूल को कम्पाते हुए और गिराते हुए कितनी क्रिया वाले होते हैं ?

१४ उत्तर-हे गौतम ! कदाचित् तीन क्रिया वाले, कदाचित् चार क्रिया वाले और कदाचित् पाच क्रिया वाले होते हैं। इसी प्रकार यावत् कन्द तक जानना चाहिये। इसी प्रकार यावत् (प्रश्न) बीज को कम्पाने आदि के सम्बन्ध में प्रश्न। (उत्तर) हे गौतम ! कदाचित् तीन क्रिया वाले, कदाचित् चार क्रिया वाले और कदाचित् पाच क्रिया वाले होते हैं।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है-ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीवो को श्वासोच्छ्वास रूप मे ग्रहण करते हैं और छोडते हैं। इसी प्रकार अप्कायिक आदि चारो स्थावर जीव भी पृथ्वीकायिक आदि पाचो स्थावर जीवो को श्वासोच्छ्वास रूप मे ग्रहण करते हैं और छोडते हैं। इन पाचो के ये पच्चीस सूत्र होते हैं और इनके क्रिया सम्बन्धी भी पच्चीस सूत्र होते हैं।

पृथ्वीकायिकादि जीव, पृथ्वीकायिकादि जीवो को श्वासोच्छ्वास रूप से ग्रहण करते हुए और छोडते हुए जब तक उनको पीडा उत्पन्न नही करते, तब तक कायिकादि तीन क्रियाएँ लगती हैं। जब पीडा उत्पन्न करते हैं तब पारितापनिकी सहित चार क्रियाएँ लगती हैं और जब उन जीवो की घात करते हैं, तब प्राणातिपातिकी सहित पाच क्रियाएँ लगती हैं।

वायुकायिक जीव, वृक्ष के मूल को तब कम्पित और पतन कर सकते हैं जब कि वृक्ष नदी के किनारे पर हो और उसका मूल पृथ्वी से ढका हुआ न हो।

॥ नौवे शतक का चोतीसवाँ उद्देशक समाप्त ॥

॥ नौवा शतक सम्पूर्ण ॥

शतक १०

१ गाहा—

१ दिसि २ संवुडअणगारे ३ आयट्ठी ४ सामहत्थि ५ देवि ६ सभा ।
७-३४ उत्तरअतरदीवा दसमम्मि सयम्मि चउत्तीसा ॥

कठिन शब्दार्थ—संवुडअणगारे—संवृत अनगार ।

भावार्थ—१ इस शतक के चौंतीस उद्देशक इस प्रकार है,—(१) दिशा के सम्बन्ध में पहला उद्देशक है, (२) संवृत अनगारादि के विषय में दूसरा उद्देशक है, (३) देवावासो को उल्लघन करने में देवो की आत्मऋद्धि (स्वशक्ति) के विषय में तीसरा उद्देशक है, (४) श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के श्याम हस्ती नामक शिष्य के प्रश्नो के सम्बन्ध में चौथा उद्देशक है (५) चमर आदि इन्द्रो की अग्रमहिषियो के सम्बन्ध में पाचवाँ उद्देशक है (६) सुधर्मा सभा के विषय में छठा उद्देशक है (७-३४) उत्तर दिशा के अट्ठाईस अन्तरद्वीपो के विषय में सातवे से लेकर चौतीसवे तक अट्ठाईस उद्देशक है ।

उद्देशक १

दिशाओ का स्वरूप

२ प्रश्न–रायांगहे जाव एव वयासी–किमिय भते ! 'पाईणा' ति पवुच्चइ ?

२ उत्तर–गोयमा ! जीवा चेव अजीवा चेव ।

३ प्रश्न–किमिय भते ! 'पडीणा' ति पवुच्चइ ?

३ उत्तर–गोयमा ! एव चेव, एव दाहिणा एवं उदीणा एवं उड्ढा एव अहो वि ।

४ प्रश्न–कइ णं भते ! दिसाओ पण्णत्ताओ ?

४ उत्तर–गोयमा ! दस दिसाओ पण्णत्ताओ, त जहा– १ पुरत्थिमा, २ पुरत्थिमदाहिणा, ३ दाहिणा, ४ दाहिणपच्चत्थिमा ५ पच्चत्थिमा, ६ पच्चत्थिमुत्तरा, ७ उत्तरा, ८ उत्तरपुरत्थिमा, ९ उड्ढा, १० अहो ।

५ प्रश्न–एयासि णं भते ! दसण्ह दिसाण कइ णामधेज्जा पण्णत्ता ?

५ उत्तर–गोयमा ! दस णामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा–
१-इदा २-अग्गेयी ३ जमा य ४ णेरई ५ वारुणी य ६ वायव्वा ।
७ सोमा ८ ईसाणी य ९ विमला य १० तमा य बोद्धव्वा ।

कठिन शब्दार्थ--किमिय-किम-क्या इय-यह, पाईणा-पूव दिशा, पवुच्चई-कहलाती है, पडिणा-पश्चिम दिशा, दाहिणा-दक्षिण दिशा, उदीणा-उत्तर दिशा, पुरत्थिमा-पूव दिशा, पच्चत्थिमा-पश्चिम दिशा, एयासिणे-इन, जमा-याम्या (दक्षिण) दिशा, सोमा-उत्तर, विमला-ऊर्द्ध दिशा, तमा-अधो दिशा ।

भावार्थ-२ प्रश्न-राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा-हे भगवन् ! यह पूर्व दिशा क्या कहलाती है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! यह जीव रूप भी कहलाती है और अजीव रूप भी कहलाती है ।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! यह पश्चिम दिशा क्या कहलाती है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! पूर्व दिशा के समान जानना चाहिये । इसी प्रकार दक्षिण दिशा, उत्तर दिशा, ऊर्ध्व दिशा और अधो दिशा के विषय में भी जानना चाहिये ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! दिशाएँ कितनी कही गई हैं ?

४ उत्तर-हे गौतम ! दिशाएँ दस कही गई हैं । यथा-१ पूर्व, २ पूर्व-दक्षिण (आग्नेय कोण), ३ दक्षिण, ४ दक्षिणपश्चिम (नैऋत्य कोण), ५ पश्चिम, ६ पश्चिमोत्तर (वायव्य कोण) ७ उत्तर, ८ उत्तरपूर्व (ईशान कोण) ९ ऊर्ध्व दिशा और १० अधो दिशा ।

५ प्रश्न-हे भगवन् ! इन दस दिशाओं के कितने नाम कहे गये हैं ?

५ उत्तर-हे गौतम ! दस नाम कहे गये हैं । यथा-१ ऐन्द्री (पूर्व), २ आग्नेयी (अग्नि कोण) ३ याम्या (दक्षिण), ४ नैर्ऋती (नैर्ऋत्य कोण) ५ वारुणी (पश्चिम), ६ वायव्य (वायव्य कोण) ७ सौम्या (उत्तर) ८ ऐशानी (ईशान कोण), ९ विमला (ऊर्ध्वदिशा) १० तमा (अधो दिशा) ।

६ प्रश्न-इंदा ण भंते ! दिसा किं-१ जीवा, २ जीवदेसा, ३ जीवपएसा, ४ अजीवा, ५ अजीवदेसा, ६ अजीवपएसा ?

६ उत्तर-गोयमा ! जीवा वि, त चेव जाव अजीवपएसा वि। जे जीवा ते णियमा एगिंदिया, बेइंदिया, जाव पचिदिया, अणिंदिया। जे जीवदेसा ते णियमा एगिंदियदेसा, जाव अणिंदियदेसा। जे जीवपएसा ते एगिदियपएसा बेइंदियपएसा, जाव अणिंदियपएसा। जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा-रूवि अजीवा य अरूविअजीवा य। जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा-खधा, खधदेसा, खधपएसा, परमाणुपोग्गला। जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, त जहा-१ णोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, २ धम्मत्थिकायस्स पएसा, ३ णोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे, ४ अधम्मत्थिकायस्स पएसा, ५ णोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे, ६ आगासत्थिकायस्स पएसा, ७ अद्धासमए।

७ प्रश्न-अग्गेयी णं भते ! दिसा कि जीवा, जीवदेसा, जीवपएसा-पुच्छा।

७ उत्तर-गोयमा ! १ णोजीवा जीवदेसा वि, २ जीवपएसा वि १ अजीवा वि, २ अजीवदेसा वि, ३ अजीवपएसा वि। जे जीवदेसा ते णियमा एगिदियदेसा। १ अहवा एगिदियदेसा य बेइंदियस्स देसे, २ अहवा एगिदियदेसा य बेइंदियस्स देसा य, ३ अहवा एगिदियदेसा य बेइंदियाण य देसा। १ अहवा एगिं-

कठिन शब्दार्थ–किमिय–किम्–क्या इय–यह, पाईणा–पूर्व दिशा, पवुच्चई–कहलाती है, पडिणा–पश्चिम दिशा, दाहिणा–दक्षिण दिशा, उदीणा–उत्तर दिशा, पुरत्थिमा–पूर्व दिशा, पच्चत्थिमा–पश्चिम दिशा, एयासिणे–इन, जमा–याम्या (दक्षिण) दिशा, सोमा–उत्तर, विमला–ऊर्द्ध दिशा, तमा–अधो दिशा ।

भावार्थ–२ प्रश्न–राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत् इस प्रकार पूछा–हे भगवन् ! यह पूर्व दिशा क्या कहलाती है ?

२ उत्तर–हे गौतम ! यह जीव रूप भी कहलाती है और अजीव रूप भी कहलाती है ।

३ प्रश्न–हे भगवन् ! यह पश्चिम दिशा क्या कहलाती है ?

३ उत्तर–हे गौतम ! पूर्व दिशा के समान जानना चाहिये । इसी प्रकार दक्षिण दिशा, उत्तर दिशा, ऊर्ध्व दिशा और अधो दिशा के विषय में भी जानना चाहिये ।

४ प्रश्न–हे भगवन् ! दिशाएँ कितनी कही गई हैं ?

४ उत्तर–हे गौतम ! दिशाएँ दस कही गई हैं । यथा–१ पूर्व, २ पूर्व-दक्षिण (आग्नेय कोण), ३ दक्षिण, ४ दक्षिणपश्चिम (नैऋत्य कोण), ५ पश्चिम, ६ पश्चिमोत्तर (वायव्य कोण) ७ उत्तर, ८ उत्तरपूर्व (ईशान कोण) ९ ऊर्ध्व दिशा और १० अधो दिशा ।

५ प्रश्न–हे भगवन् ! इन दस दिशाओ के कितने नाम कहे गये हैं ?

५ उत्तर–हे गौतम ! दस नाम कहे गये हैं । यथा–१ ऐन्द्री (पूर्व), २ आग्नेयी (अग्नि कोण) ३ याम्या (दक्षिण), ४ नैर्ऋती (नैर्ऋत्य कोण) ५ वारुणी (पश्चिम), ६ वायव्य (वायव्य कोण) ७ सौम्या (उत्तर) ८ ऐशानी (ईशान कोण), ९ विमला (ऊर्ध्वदिशा) १० तमा (अधो दिशा) ।

६ प्रश्न–इंदा णं भंते ! दिसा किं–१ जीवा, २ जीवदेसा, ३ जीवपएसा, ४ अजीवा, ५ अजीवदेसा, ६ अजीवपएसा ?

भावार्थ-६ प्रश्न-हे भगवन ! ऐन्द्री (पूर्व) दिशा-१ जीव रूप है, २ जीव के देश रूप है, ३ जीव के प्रदेश रूप है, अथवा ४ अजीव रूप है, ५ अजीव के देश रूप है, ६ या अजीव के प्रदेश रूप है ?

६ उत्तर-हे गौतम ! ऐन्द्री दिशा जीव रूप भी है, इत्यादि पूर्वोक्त रूप से जानना चाहिये, यावत् वह अजीव प्रदेश रूप भी है। उसमें जो जीव है वे एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय यावत पचेन्द्रिय तथा अनिन्द्रिय (केवलज्ञानी) है। जो जीव के देश है, वे एकेन्द्रिय जीव के देश है यावत अनिन्द्रिय जीव के देश है। जो जीव प्रदेश है, वे नियमत एकेन्द्रिय जीव के प्रदेश है, बेइन्द्रिय जीव के प्रदेश है यावत् अनिन्द्रिय जीव के प्रदेश है। जो अजीव है, वे दो प्रकार के है। यथा-रूपी अजीव और अरूपी अजीव। रूपी अजीवो के चार भेद है। यथा-स्कन्ध, स्कन्ध देश, स्कन्ध प्रदेश और परमाणु पुदगल। अरूपी अजीवो के सात भेद है। यथा-१ स्कन्ध रूप धर्मास्तिकाय नहीं, किन्तु धर्मास्तिकाय का देश है। २ धर्मास्तिकाय के प्रदेश है। ३ अधर्मास्तिकाय नहीं, किन्तु अधर्मास्तिकाय का देश है। ४ अधर्मास्तिकाय के प्रदेश है। ५ आकाशास्तिकाय नहीं, किन्तु आकाशास्तिकाय का एक देश है। ६ आकाशास्तिकाय के प्रदेश है। ७ अद्धासमय अर्थात काल है।

७ प्रश्न-हे भगवन ! आग्नेयी दिशा क्या जीव रूप है, जीव देश रूप है, जीव प्रदेश रूप है, इत्यादि प्रश्न।

७ उत्तर-हे गौतम ! १ जीव नहीं, किन्तु जीव केदे श, २ जीव के प्रदेश, ३ अजीव, ४ अजीव के देश और ५ अजीव प्रदेश भी है। जीव के जो देश है, वे नियम से एकेन्द्रियो के देश है अथवा एकेन्द्रियो के बहुत देश और बेइन्द्रिय का एक देश है। अथवा एकेन्द्रियो के बहुत देश और बेइन्द्रिय के बहुत देश है। अथवा एकेन्द्रियो के बहुत देश और बहुत बेइन्द्रियो के बहुत देश। अथवा एकेन्द्रियो के बहुत देश और एक तेइन्द्रिय का एक देश। इस प्रकार तीन भग तेइन्द्रिय के साथ कहना चाहिये। इसी प्रकार यावत् अनिन्द्रिय तक के भी तीन-तीन भग

दियदेसा य तेइदियस्स देसे य। एव चेव तियभगो भाणियव्वो। एव जाव अणिदियाणं तियभगो। जे जीवपएसा ते णियमा एगिंदियपएसा। अहवा एगिदियपएसा य वेइदियस्स पएसा, अहवा एगिदियपएसा य वेइदियाण य पएसा। एवं आइल्लविरहिओ जाव अणिदियाणं। जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा–रूविअजीवा य अरूविअजीवा य। जे अरूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा–खधा, जाव परमाणुपोग्गला। जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, त जहा–१ णोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, २ धम्मत्थिकायस्स पएसा, एव अहम्मत्थिकायस्स वि, जाव ६ आगासत्थिकायस्स पएसा, ७ अद्धासमए। विदिसासु णत्थि जीवा, देसे भगो य होइ सव्वत्थ।

८ प्रश्न–जमा ण भते ! दिसा कि जीवा ?

८ उत्तर–जहा इदा तहेव णिरवसेसा। णेरई य जहा अग्गेयी। वारुणी जहा इदा। वायव्वा जहा अग्गेयी। सोमा जहा इदा। ईसाणी जहा अग्गेयी। विमलाए जीवा जहा अग्गेयीए। अजीवा जहा इदा। एव तमाए वि, णवर अरूवि छव्विहा, अद्धासमयो ण भण्णइ।

कठिन शब्दार्थ–इदा–पूर्व दिशा, अद्धासमए–अद्धासमय (काल)।

इन दिशाओ को क्रमश आग्नेयी, याम्या, नैऋती, वारुणी, वायव्या, सौम्या और ऐशानी कहते हैं। प्रकाश युक्त होने से ऊध्व दिशा को 'विमला कहते है और अधकार युक्त होने से अधो दिशा को 'तमा' कहते हैं।

पूव, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण, ये चारो दिशाएँ गाडी के उद्धि (ओढण) के आकार हैं। अर्थात मेरु पवत के मध्य भाग मे आठ रुचक प्रदेश है। चार ऊपर की ओर और चार नीचे की ओर गोस्तनाकार हैं। यहा से दस दिशाएँ निकली हैं। पूव पश्चिम उत्तर, दक्षिण, ये चार दिशाएँ मूल मे दो दो प्रदेशी निकली हैं और आगे दो दो प्रदेश की वद्धि होती हुई लोकात तक एव आलोक मे चलीगई है। लोक मे असख्यात प्रदेश वद्धि हुई है और अलोक मे अनन्त प्रदेश वद्धि हुई है। अत इनका आकार गाडी के ओढण के समान है। आग्नेयी, नैऋती, वायव्य और ईशान, ये चार विदिशाएँ एक-एक प्रदेशी निकली है और लोकान्त तक एक प्रदेशी ही चली गई हैं। इनका आकार मुक्तावली (मोतियो की लडी) के समान है। ऊध्व दिशा और अधो दिशा चार चार प्रदेशी निकली हैं और लोकात तक एव अलोक मे चली गई है। ये रुचकाकार हैं। पूव दिशा समस्त धर्मास्तिकाय रूप नही है, किन्तु धमास्तिकाय का एक देश है और असख्यात प्रदेश रूप है। इसी प्रकार अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय का एक देश और असख्यात प्रदेश रूप है और अद्धा समय रूप है। इस प्रकार अरूपी अजीव रूप सात प्रकार की पूव दिशा है।

अग्नेयी विदिशा जीव रूप नही है। क्योकि सभी विदिशाओ की चौडाई एक एक प्रदेश रूप है, क्योकि वे एक प्रदेशी ही निकली है और अत तक एक प्रदेशी ही रही हैं। एक प्रदेश मे जीव का समावेश नही हो सकता। क्योकि जीव की अवगाहना असख्य प्रदेशात्मक है। पूव दिशा के समान शेष तीनो दिशाओ का कथन जानना चाहिये और आग्नेयी विदिशा के समान शेष तीनो विदिशाओ का कथन जानना चाहिये।

समय का व्यवहार गतिमान सूय के प्रकाश पर अवलम्बित है। वह गतिमान् सूय का प्रकाश तमा (अधो) दिशा मे नही है। इसलिये वहा अद्धा समय (काल) नही है। यद्यपि विमला (ऊध्व) दिशा के विषय मे भी गतिमान सूय का प्रकाश न होने से अद्धा समय का व्यवहार सभव नही है, तथापि मेरु पव के स्फटिक काण्ड मे गतिमान सूय के प्रकाश का सक्रम होता है, इसलिय वहा समय का व्यवहार हो सकता है।

कहना चाहिये । जीव के जो प्रदेश ह वे नियम से एकेन्द्रियो के प्रदेश हे अथवा एकेन्द्रियो के बहुत प्रदेश और एक बेइन्द्रिय के बहुत प्रदेश । अथवा एकेन्द्रियो के बहुत प्रदेश और बहुत बेइन्द्रियो के बहुत प्रदेश । इस प्रकार सभी जगह प्रथम भग के सिवाय दो दो भग जानना चाहिये । इस प्रकार यावत अनिन्द्रिय तक जानना चाहिये । अजीवो के दो भेद है । यथा-रूपी अजीव और अरूपी अजीव । रूपी अजीव के चार भेद है । स्कन्ध, स्कन्ध देश, स्कन्ध प्रदेश और परमाणु पुदगल है । अरूपी अजीव के सात भेद है । यथा-१ धर्मास्तिकाय नही, किन्तु धर्मास्तिकाय का देश २ धर्मास्तिकाय के प्रदेश ३ अधर्मास्तिकाय नही, किन्तु अधर्मास्तिकाय का देश ४ अधर्मास्तिकाय के प्रदेश ५ आकाशास्तिकाय नहीं, किन्तु आकाशास्तिकाय का देश, ६ आकाशास्तिकाय के प्रदेश, और ७ अद्धा समय। विदिशाओ में जीव नही है, इसलिये सवत्र देश और प्रदेश विषयक भग होते है ।

८ प्रश्न-हे भगवन ! याम्या (दक्षिण) दिशा क्या जीव रूप है, इत्यादि प्रश्न ।

८ उत्तर-हे गौतम ! एन्द्री दिशा के समान सभी कथन जानना चाहिये । आग्नेयी विदिशा का कथन नैऋतीविदिशा के समान है । वारुणी (पश्चिम) दिशा का कथन ऐन्द्री दिशा के समान है । वायव्यविदिशा का कथन आग्नेयी विदिशा के समान है । सौम्या (उत्तर) दिशा का कथन ऐन्द्री दिशा के समान है और ऐशानी विदिशा का कथन आग्नेयी विदिशा के समान है । विमला (ऊध्व) दिशा में जीवो का कथन आग्नेयी दिशा के समान है और अजीवो का कथन एन्द्री दिशा में कथित अजीवो की तरह है । इसी प्रकार तमा (अधो) दिशा का कथन भी जानना चाहिये । परन्तु इतनी विशेषता ह कि तमा दिशा में अरूपी अजीवो के छह भेद है । क्योकि उसमें अद्धासमय (काल) नही है ।

विवेचन-पूव दिशा जीव रूप है । क्योकि उसमे एकेन्द्रिय आदि जीव रहे हुए है । उसमे पुदगलास्तिकाय आदि अजीव पदाथ रहे हुए है, इसलिये वह अजीव रूप भी है ।

दिशाओ के दस नाम कहे गये हैं । पूव दिशा का स्वामी इन्द्र है । इसलिये उसे 'एन्द्री' कहते हैं । इसी प्रकार अग्नि, यम, नैऋती, वरुण, वायु सोम और ईशान देव स्वामी होने से

शतक १० उद्देशक २

कषाय भाव मे साम्परायिकी क्रिया

१ प्रश्न–रायगिहे जाव एव वयासी–सवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स वीयीपथे ठिच्चा पुरओ रूवाइ णिज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइ अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइ अवलोएमाणस्स, उड्ढ रूवाइ आलोएमाणस्स, अहे रूवाणि आलोएमाणस्स तस्स ण भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइयाकिरियाकज्जइ ?

१ उत्तर–गोयमा ! सवुडस्स णं अणगारस्स वीयीपथे ठिच्चा जाव तस्स ण णो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ।

प्रश्न–से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ जाव संपराइया किरिया कज्जइ ?

उत्तर–गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा० एव जहा सत्तमसए पढमोद्देसए जाव से णं उस्सुत्तमेव रियइ से तेणट्ठेणं जाव से संपराइया किरिया कज्जइ ।

२ प्रश्न–सवुडस्स ण भंते ! अणगारस्स अवीयीपथे ठिच्चा पुरओ रूवाइ णिज्झायमाणस्स जाव तस्स ण भंते किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ? पुच्छा ।

णेरइया णं भते ! कि दुक्ख वेयण वेदेंति, सुह वेयणं वेदेंति, अदुक्खमसुह वेयणं वेदेंति ? गोयमा ! दुक्ख पि वेयण वेदेति, सुह पि वेयण वेदेति, अदुक्खमसुह पि वेयण वेदेंति ।

कठिन शब्दाथ–जोणी–योनि–जीवो का उत्पत्ति स्थान, अदुक्ख–दु ख नही असुह–सुख नही ।

भावाथ–३ प्रश्न–हे भगवन् ! योनि कितने प्रकार की कही गई है ?

३ उत्तर–हे गौतम ! योनि तीन प्रकार की कही गई है । यथा–शीत, उष्ण और शीतोष्ण । यहाँ प्रज्ञापना सूत्र का नौवा 'योनि पद' सम्पूण कहना चाहिये ।

४ प्रश्न–हे भगवन ! वेदना कितने प्रकार की कही गई है ?

४ उत्तर–हे गौतम ! वेदना तीन प्रकार की कही गई है । यथा–शीत, उष्ण और शीतोष्ण । इस प्रकार यहा प्रज्ञापना सूत्र का सम्पूर्ण पैंतीसवा वेदना पद कहना चाहिये, यावत् हे भगवन् ! क्या नैरयिक जीव दु ख रूप वेदना वेदते हैं, या सुख रूप वेदना वेदते है, या अदु ख-असुख रूप वेदना वेदते हैं ? हे गौतम ! नैरयिक जीव, दु.खरूप वेदना भी वेदते हैं, सुखरूप वेदना भी वेदते हैं और अदु ख असुख रूप वेदना भी वेदते हैं ।

विवेचन–योनि शब्द 'यु मिश्रणे' धातु से बना है । इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है– "युवन्ति अस्यामिति 'योनि ' अर्थात जिसमे तजस कामण शरीरवाले जीव, औदारिकादि शरीर योग्य पुदगल स्कन्ध के समुदाय के साथ मिश्रित हाते हैं, उस योनि' कहते हैं । अर्थात जीवो के उत्पत्ति स्थान को योनि कहते हैं । वह योनि प्रत्येक जीवनिकाय के वण, ग ध रस, स्पश के भेद से [illegible] है । यथा–पथ्वीकाय अप्काय, तेउकाय और वायुकाय प्रत्येक की सात सात [illegible] स्पति की दस लाख साधारण वनस्पति (अनन्त) काय की [illegible] ।२ चतुरिन्द्रिय प्रत्येक की दो दो लाख, देव,

शतक १० उद्देशक २

कषाय भाव मे साम्परायिकी क्रिया

१ प्रश्न–रायगिहे जाव एव वयासी–सवुडस्स णं भते ! अणगारस्स वीयीपथे ठिच्चा पुरओ रूवाइ णिज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइ अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइ अवलोएमाणस्स, उड्ढ रूवाइ आलोएमाणस्स, अहे रूवाणि आलोएमाणस्स तस्स ण भते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ सपराइयाकिरियाकज्जइ ?

१ उत्तर–गोयमा ! सवुडस्स ण अणगारस्स वीयीपथे ठिच्चा जाव तस्स ण णो इरियावहिया किरिया कज्जइ, सपराइया किरिया कज्जइ ।

प्रश्न–से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जाव सपराइया किरिया कज्जइ ?

उत्तर–गोयमा ! जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा० एव जहा सत्तमसए पढमोद्देसए जाव से णं उस्सुत्तमेव रियइ से तेणट्ठेणं जाव से सपराइया किरिया कज्जइ ।

२ प्रश्न–सवुडस्स ण भते ! अणगारस्स अवीयीपथे ठिच्चा पुरओ रूवाइ णिज्झायमाणस्स जाव तस्स ण भते कि इरिया वहिया किरिया कज्जइ ? पुच्छा ।

शरीर

९ प्रश्न–कइ णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ?

९ उत्तर–गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा–१ ओरालिए जाव ५ कम्मए ।

१० प्रश्न–ओरालियसरीरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

१० उत्तर–एवं ओगाहणासंठाणं णिरवसेसं भाणियव्वं, जाव 'अप्पाबहुगं' ति ।

॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

॥ दसमसए पढमो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ–ओरालिए–औदारिक शरीर ।

भावार्थ–९ प्रश्न–हे भगवन् ! शरीर कितने प्रकार के कहे गये हैं ?

९ उत्तर–हे गौतम ! शरीर पांच प्रकार के कहे गये हैं । यथा–औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस् और कार्मण ।

१० प्रश्न–हे भगवन् ! औदारिक शरीर कितने प्रकार का कहा गया है ?

१० उत्तर–हे गौतम ! यहां प्रज्ञापना सूत्र के अवगाहना संस्थान नामक इक्कीसवें पद में वर्णित अल्प बहुत्व तक सारा वर्णन कहना चाहिये ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है–ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन–औदारिक आदि पांच शरीर हैं । इनका संस्थान, प्रमाण पुद्गल चय पारस्परिक संयोग अल्प बहुत्व इन द्वारों से विस्तृत वर्णन प्रज्ञापना सूत्र के इक्कीसवें अवगाहना संस्थान पद में है । अल्प बहुत्व तक का सारा वर्णन यहां कहना चाहिये ।

॥ दसवें शतक का प्रथम उद्देशक सम्पूर्ण ॥

नारक और तिर्यंचपञ्चेन्द्रिय की चार चार लाख, और मनुष्य की चौदह लाख योनि है। सब मिलाकर चौरासी लाख योनि होती है। यद्यपि व्यक्ति भेद की अपक्षा से अनन्त जीव होने से अनन्त योनिया होती है, तथापि समान वण, गन्ध, रस, स्पशवाली वहुतसी योनियाँ होने पर भी सामान्यतया जाति रूप से एक योनि गिनी जाती है। इसलिये चौरासी लाख ही योनिया होती हैं। जैसा कि कहा है–

"समवण्णाई समेया वहवे वि हु जोणिभेय लक्खा उ।
सामण्णा घेप्पति हु एक्कजोणीए गहणेण" ॥

अर्थात समान वर्णादि सहित योनि के अनेक लाख भेद होते हैं, तथापि सामान्य रूप से एक योनि के ग्रहण द्वारा उन समान वर्णादि वाली सब योनियो का ग्रहण हो जाता है।

यहा योनि के सामान्यतया तीन भेद कहे गये हैं यथा–शीतयोनि, उष्णयोनि और शीतोष्णयोनि। शीत स्पश के परिणाम वाली शीतयोनि और उष्ण स्पश के परिणाम वाली उष्णयोनि तथा शीत और उष्ण उभय स्पश के परिणाम वाली शीतोष्णयोनि कहलाती है।

देव और गभज जीवो के शीतोष्ण योनि, तेउकाय के उष्ण योनि और नैरयिक जीवो के शीत और उष्ण दोनों प्रकार की योनि तथा शेप जीवो के तीनो प्रकार की योनि होती है।

दूसरी तरह से योनि के तीन भेद कहे गये हैं। यथा–सचित्त, अचित्त और मिश्र। जीव प्रदेशो से सम्बन्ध वाली योनि सचित्त और सवथा जीव रहित योनि अचित्त कहलाती है। अशत जीव प्रदेश सहित और अशत जीव प्रदेश रहित योनि सचित्ताचित्त (मिश्र) कहलाती है।

देव और नारक जीवो की अचित्तयोनि होती है। गभज जीवो की सचित्ताचित्त योनि हाती है और शेप जीवो की तीना प्रकार की योनि होती है।

दूसरे प्रकार से यानि के तीन भेद कह गये हैं। यथा–सवत, विवत और सवृतविवृत। जो उत्पत्ति स्थान ढका हुआ (गुप्त) हो उसे 'सवत यानि' और जो उत्पत्ति स्थान खुला हुआ हो उसे 'विवत योनि' तथा जो कुछ ढका हुआ और कुछ खुला हुआ हो, उसे 'सवत विवत' योनि कहते हैं।

नैरयिक, देव और एकेन्द्रिय जीवो के सवृत यानि, गभज जीवो के सवत विवत योनि और शेप जीवो के विवत योनि होती है।

णेरइया णं भंते ! किं दुक्खं वेयणं वेदेंति, सुहं वेयणं वेदेंति, अदुक्खमसुहं वेयणं वेदेंति ? गोयमा ! दुक्खं पि वेयणं वेदेंति, सुहं पि वेयणं वेदेंति, अदुक्खमसुहं पि वेयणं वेदेंति ।

कठिन शब्दार्थ-जोणी-योनि-जीवो का उत्पत्ति स्थान, अदुक्ख-दु ख नही असुहं-सुख नही ।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! योनि कितने प्रकार की कही गई है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! योनि तीन प्रकार की कही गई है । यथा-शीत, उष्ण और शीतोष्ण । यहाँ प्रज्ञापना सूत्र का नौवा 'योनि पद' सम्पूर्ण कहना चाहिये ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! वेदना कितने प्रकार की कही गई है ?

४ उत्तर-हे गौतम ! वेदना तीन प्रकार की कही गई है । यथा-शीत, उष्ण और शीतोष्ण । इस प्रकार यहा प्रज्ञापना सूत्र का सम्पूर्ण पैतीसवा वेदना पद कहना चाहिये, यावत् हे भगवन् ! क्या नैरयिक जीव दु ख रूप वेदना वेदते है, या सुख-रूप वेदना वेदते है, या अदु ख असुख रूप वेदना वेदते है ? हे गौतम ! नैरयिक जीव, दु खरूप वेदना भी वेदते है, सुखरूप वेदना भी वेदते है और अदु ख असुख रूप वेदना भी वेदते है ।

विवेचन-योनि शब्द 'यु मिश्रणे' धातु से बना है । इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है-"युवन्ति अस्यामिति 'योनि ' अथात जिसमे तजस कामण शरीरवाले जीव, औदारिकादि शरीर योग्य पुदगल स्कन्ध के समुदाय के साथ मिश्रित होते है उसे योनि ' कहते हैं । अर्थात जीवो के उत्पत्ति स्थान को योनि कहते हैं । वह योनि प्रत्यक जीवनिकाय के वण ग ध रस, स्पश के भेद से अनेक प्रकार की है । यथा-पृथ्वीकाय अप्काय, तेउकाय और वायुकाय प्रत्येक की सात सात लाख, प्रत्येक वनस्पति की दस लाख साधारण वनस्पति (अनन्त) काय की चौदह लाख, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, और चतुरिन्द्रिय प्रत्येक की दो दो लाख देव,

होती है ।

वेदना के दो भेद हैं । यथा–निदा और अनिदा । मन के विवेक सहित जो वेदना वेदी जाय वह 'निदा' वेदना है और जो मन के विवेक पूवक न वेदी जाय वह 'अनिदा' वेदना है ।

नैरयिक, भवनपति, वाणव्यन्तर, तिर्यन्पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य–इन चोदह दण्डक के जीव दोनो प्रकार की वेदना वेदते हैं । अर्थात सन्नीभूत निदा वेदना वेदते हैं और असज्ञीभूत अनिदा वेदना वेदते हैं । पाच स्थावर और तीन विक्लेन्द्रिय असज्ञीभूत एक अनिदा वेदना वेदते हैं । ज्योतिषी और वैमानिक देवो मे दो भेद हैं । यथा–मायी मिथ्यादष्टि और अमायी-समदृष्टि । मायी मिथ्यादृष्टि अनिदा वेदना वेदते है और अमायी समदृष्टि निदा वेदना वेदते हैं ।

वेदना सम्बन्धी विस्तृत वर्णन प्रज्ञापना सूत्र के पतीसवे पद मे है ।

भिक्षु प्रतिमा और आराधना

५–मासिय ण भते ! भिक्खुपडिम पडिवण्णस्स अणगारस्स णिच्च वोसट्ठे काए चियत्ते देहे–एव मासिया भिक्खुपडिमा णिरवसेसा भाणियव्वा, जहा दसाहि जाव 'आराहिया भवइ' ।

६–भिक्खू य अण्णयर अकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता से ण तस्स ठाणस्स अणालोइया अपडिक्कते काल करेइ, णत्थि तस्स आराहणा, से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ अत्थि तस्स आराहणा । भिक्खू य अण्णयर अकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता तस्स ण एव भवइ–'पच्छा वि ण अह चरिमकालसमयसि एयस्स ठाणस्स आलोएस्सामि जाव पडिक्कमिस्सामि, से ण तस्स ठाणस्स

अन्य प्रकार से योनि के तीन भेद कहे गये हैं। यथा-कूर्मोन्नता, शखावर्त्ता और वशीपत्रा। जो योनि कछुए की पीठ के समान उन्नत हो, उसे 'कूर्मोन्नता' योनि कहते है। जो योनि शख के समान आवर्त्तवाली हो, उसे 'शखावर्त्ता' योनि कहते हैं। बास के दो पत्तो के समान सम्पुट मिले हुए हो, उसे 'वशीपत्रा' योनि कहते हैं।

चक्रवर्ती की श्रीदेवी के शखावर्त्ता योनि होती है। उसमे बहुत से जीव और जीव के साथ सम्बन्ध वाले पुद्गल आते हैं और गर्भ रूप मे उत्पन्न होते हैं। सामान्यत चय (वृद्धि) और विशेषत उपचय को प्राप्त होते है, किन्तु अति प्रबल कामाग्नि के परिताप से नष्ट हो जाने के कारण गर्भ की निष्पत्ति नही होती-इस प्रकार प्राचीन आचार्यों का कथन है। तीर्थकर, चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव-इन उत्तम पुरुषो की माता के कूर्मोन्नता योनि होती है। शेष सभी ससारी जीवो की माता के वशीपत्रा योनि होती है।

योनि सम्बन्धी विस्तृत विवेचन और अल्पबहुत्व आदि प्रज्ञापना सूत्र के नौवे 'योनि पद' मे है।

जो वेदी जाय उसे 'वेदना' कहते है। उसके तीन भेद हैं। यथा-शीत वेदना, उष्ण वेदना और शीतोष्ण वेदना। नरक मे शीत और उष्ण दो प्रकार की वेदना पाई जाती है। शेष २३ दण्डको मे तीनो वेदनाएँ पाई जाती हैं। दूसरी प्रकार से वेदना चार प्रकार की कही गई है। यथा-द्रव्य से वेदना, क्षेत्र से वेदना काल से वेदना और भाव से वेदना। चौवीस दण्डक मे चारो प्रकार की वेदना पाई जाती है।

वेदना के तीन भेद है। यथा-शारीरिक वेदना, मानसिक वेदना और शारीरिक मानसिक वेदना। पाच स्थावर और तीन विकलेन्द्रिय, इन आठ दण्डको मे एक शारीरिक वेदना पाई जाती है। शेप सोलह दण्डको मे तीनो प्रकार की वेदना पाई जाती है।

पुन -वेदना के तीन भेद हैं। यथा-सातावेदना, असातावेदना और साताअसातावेदना। चौवीस दण्डक मे यह तीनो प्रकार की वेदना पाई जाती है।

पुन -वेदना के तीन भेद हैं। यथा-दु खा वेदना सुखा वेदना और अदु खसुखा वेदना। तीनो प्रकार की वेदना चौवीस ही दण्डक मे पाई जाती है।

वेदना के दो भेद हैं। यथा-आभ्युपगमिकी और औपक्रमिकी। स्वय कष्ट को अगीकार करना जसे-केश लोच आदि 'आभ्युपगमिकी' वेदना है। स्वभाव से उदय मे आने वाली वेदना,-ज्वरादि औपक्रमिकी' वेदना है। तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य मे यह दोनो प्रकार की वेदना होती है। शेप बाईस दण्डक मे एक औपक्रमिकी वेदना

और प्रतिक्रमण करके काल करे, तो उसके आराधना होती है। कदाचित किसी भिक्षु के द्वारा अकृत्यस्थान का सेवन होगया हो और बाद में उसके मन में यह विचार उत्पन्न हो कि 'मैं अपने अन्तिम समय में इस अकृत्य स्थान की आलोचना करूँगा यावत् तप रूप प्रायश्चित्त स्वीकार करूँगा,' परन्तु वह उस अकृत्यस्थान की आलोचना और प्रतिक्रमण किये बिना ही काल कर जाय, तो उसके आराधना नहीं होती। यदि वह आलोचना और प्रतिक्रमण करके काल करे, तो आराधना होती है। कदाचित् किसी भिक्षु के द्वारा अकृत्यस्थान का सेवन हो गया हो और उसके बाद वह यह सोचे कि 'जब कि श्रमणोपासक भी काल के समय काल करके किसी एक देवलोक में उत्पन्न हो जाते हैं, तो क्या मैं अणपन्निक देव भी नहीं हो सकूंगा'–यह सोचकर यदि वह उस अकृत्य-स्थान की आलोचना और प्रतिक्रमण किये बिना ही काल कर जाय, तो उसके आराधना नहीं होती। यदि अकृत्यस्थान की आलोचना और प्रतिक्रमण करके काल करता है, तो उसके आराधना होती है।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है। हे भगवन्! यह इसी प्रकार है। ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत विचरते है।

विवेचन–साधु के अभिग्रह विशेष को 'भिक्षु प्रतिमा' कहते है। वे बारह हैं–एक मास से लेकर सात मास तक सात प्रतिमाएँ हैं। आठवी, नौवी और दसवी प्रतिमाएँ प्रत्येक सात दिन रात्रि की होती हैं, ग्यारहवी एक अहोरात्र की होती है और बारहवी केवल एक रात्रि की होती है। इनका विस्तत विवेचन दशाश्रुतस्क ध की सातवी दशा मे है।

॥ दसवें शतक का द्वितीय उद्देशक सम्पूर्ण ॥

अणालोइय अपडिक्कते जाव णत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ अत्थि तस्स आराहणा। भिक्खू य अण्णयर अकिच्चठाणं पडिसेवित्ता तस्सण एव भवइ–'जइ ताव समणोवासगा वि कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति, किमग ! पुण अह अणपण्णियदेवत्तणपि णो लभिस्सामि' त्ति कट्टु से ण तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कते काल करेइ णत्थि तस्स आराहणा, से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ अत्थि तस्स आराहणा।

॥ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

॥ दसमसए बीओ उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ–पडिवण्णस्स–प्रतिपन्न (जो पहले स्वीकार कर चुका है) के, वोसट्ठे–छोडा हुआ, चियत्ते–त्यागा हुआ अकिच्चट्ठाण–अकृत्य स्थान–पाप स्थान, पच्छावि–बाद मे, चरिमकालसमयसि–अतिम काल के समय, आलोएस्सामि–आलोचना करूँगा, आराहणा–आराधना, उववत्तारो–उत्पन्न होने वाले।

भावार्थ–५–जिस अनगार ने मासिक भिक्षु प्रतिमा अगीकार की है, तथा जिसने शरीर के ममत्व का और शरीर-सस्कार का त्याग कर दिया है, इत्यादि मासिक भिक्षु प्रतिमा सम्बन्धी सभी वणन यहाँ दशाश्रुतस्कन्ध में बताये अनुसार यावत् बारहवीं भिक्षु-प्रतिमा तक सभी वणन-यावत उसके आराधना होती है–तक कहना चाहिये।

६–यदि किसी भिक्षु के द्वारा किसी अकृत्य स्थान का सेवन हो गया हो और यदि वह उस अकृत्य स्थान की आलोचना तथा प्रतिक्रमण किये बिना ही काल कर जाय, तो उसके आराधना नहीं होती। यदि अकृत्य स्थान की वह आलोचना

देवो के मध्य मे होकर निकलने की क्षमता

२ प्रश्न-अप्पड्ढीए णं भते ! देवे से महड्ढियस्स देवस्स मज्झ-मज्झेण वीइवएज्जा ?

२ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे।

३ प्रश्न-समिड्ढीए ण भते ! देवे समड्ढीयस्स देवस्स मज्झ-मज्झेणं वीइवएज्जा ?

३ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे, पमत्त पुण वीइवएज्जा।

४ प्रश्न-मे ण भते ! कि विमोहित्ता पभू, अविमोहित्ता पभू ?

४ उत्तर-गोयमा ! विमोहित्ता पभू णो अविमोहेत्ता पभू।

५ प्रश्न-से भते ! कि पुव्वि विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा।

५ उत्तर-गोयमा ! पुव्वि विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, णो पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा।

कठिन शब्दार्थ-अप्पड्ढीए-अल्प ऋद्धि से, वीइवएज्जा-जाता है-उल्लघन करता है, विमोहित्ता-विमोहित करके।

भावार्थ-२ प्रश्न-हे भगवन् ! क्या अल्पऋद्धिक (अल्प शक्ति वाला) देव महर्द्धिक (महा शक्ति वाला) देव के बीच में से होकर जा सकता है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, (वह उनके बीचोबीच होकर नहीं जा सकता)।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! समर्द्धिक (समान शक्तिवाला) देव, समर्द्धिक देव के

शतक १० उद्देशक ३

देव की उल्लंघन शक्ति

१ प्रश्न–रायगिहे जाव एव वयासी–आइड्ढीए ण भते ! देवे जाव चत्तारि, पच देवावासतराइ वीइक्कते, तेण पर परिड्ढीए ?

१ उत्तर–हता, गोयमा ! आयड्ढीए ण त चेव, एव असुर-कुमारे वि । णवर असुरकुमारावासतराइ, सेस त चेव । एव एएणं कमेणं जाव थणियकुमारे, एव वाणमतरे, जोइस-वेमाणिए, जाव तेण पर परिड्ढीए ।

कठिन शब्दार्थ–आइडढीए–आत्मऋद्धि (स्वय की शक्ति) से, परिडढीए–दूसरे की की ऋद्धि से ।

भावार्थ–१ प्रश्न–राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत इस प्रकार पूछा–हे भगवन् ! देव, अपनी शक्ति द्वारा यावत् चार-पाच देवावासो का उल्लघन करता है और इसके बाद दूसरे की शक्ति द्वारा उल्लघन करता है ?

१ उत्तर–हाँ, गौतम ! देव अपनी शक्ति द्वारा चार-पाच देवावासो का उल्लघन करता है और उसके बाद दूसरी शक्ति (वैक्रिय की शक्ति) द्वारा उल्ल-घन करता है । इसी प्रकार असुरकुमारो के विषय में भी जानना चाहिये, परन्तु वे अपनी शक्ति द्वारा असुरकुमारो के आवासो का उल्लघन करते हैं । शेष पूर्व वत जानना चाहिये । इसी प्रकार इसी अनुक्रम से यावत स्तनित कुमार, वाण-व्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक पयन्त जानना चाहिये, यावत 'वे अपनी शक्ति से चार पाच आवासो का उल्लघन करते हैं, इसके बाद दूसरी शक्ति (स्वा-भाविक शक्ति के अतिरिक्त वैक्रिय शक्ति) से उल्लघन करते हैं ।

देवो के मध्य मे होकर निकलने की क्षमता

२ प्रश्न–अप्पड्ढीए णं भंते ! देवे से महड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेण वीइवएज्जा ?

२ उत्तर–णो इणट्ठे समट्ठे।

३ प्रश्न–समिड्ढीए णं भंते ! देवे समड्ढीयस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?

३ उत्तर–णो इणट्ठे समट्ठे, पमत्त पुण वीइवएज्जा।

४ प्रश्न–से णं भंते ! किं विमोहित्ता पभू, अविमोहित्ता पभू ?

४ उत्तर–गोयमा ! विमोहित्ता पभू णो अविमोहेत्ता पभू।

५ प्रश्न–से भंते ! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा।

५ उत्तर–गोयमा ! पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, णो पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा।

कठिन शब्दार्थ–अप्पडढीए–अल्प ऋद्धि से, वीइवएज्जा–जाता है–उल्लघन करता है विमोहित्ता–विमोहित करके।

भावार्थ–२ प्रश्न–हे भगवन् ! क्या अल्पऋद्धिक (अल्प शक्ति वाला) देव महर्द्धिक (महा शक्ति वाला) देव के बीच में से होकर जा सकता है ?

२ उत्तर–हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, (वह उनके बीचोबीच होकर नही जा सकता)।

३ प्रश्न–हे भगवन् ! समर्द्धिक (समान शक्तिवाला) देव, समर्द्धिक देव के

शतक १० उद्देशक ३

देव की उल्लंघन शक्ति

१ प्रश्न–रायगिहे जाव एव वयासी–आइड्ढीए ण भते ! देवे जाव चत्तारि, पच देवावासतराइ वीइक्कते, तेण पर परिड्ढीए ?

१ उत्तर–हता, गोयमा ! आयड्ढीए ण त चेव, एव असुरकुमारे वि । णवर असुरकुमारावासतराइ, सेस त चेव । एव एएणं कमेणं जाव थणियकुमारे, एव वाणमतरे, जोइस-वेमाणिए, जाव तेण पर परिड्ढीए ।

कठिन शब्दार्थ–आइडढीए–आत्मऋद्धि (स्वय की शक्ति) से, परिडढीए–दूसरे की की ऋद्धि से ।

भावार्थ–१ प्रश्न–राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत इस प्रकार पूछा–हे भगवन् ! देव, अपनी शक्ति द्वारा यावत् चार-पाच देवावासो का उल्लघन करता है और इसके बाद दूसरे की शक्ति द्वारा उल्लघन करता है ?

१ उत्तर–हाँ, गौतम ! देव अपनी शक्ति द्वारा चार-पाच देवावासो का उल्लघन करता है और उसके बाद दूसरी शक्ति (वैक्रिय की शक्ति) द्वारा उल्लघन करता है । इसी प्रकार असुरकुमारो के विषय में भी जानना चाहिये, परन्तु वे अपनी शक्ति द्वारा असुरकुमारो के आवासो का उल्लघन करते हैं । शेष पूर्ववत जानना चाहिये । इसी प्रकार इसी अनुक्रम से यावत स्तनित कुमार, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिये, यावत् 'वे अपनी शक्ति से चार पाच आवासो का उल्लघन करते हैं, इसके बाद दूसरी शक्ति (स्वाभाविक शक्ति के अतिरिक्त वैक्रिय शक्ति) से उल्लघन करते हैं ।

कुमारस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?

९ उत्तर–णो इणट्ठे समट्ठे। एव असुरकुमारेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जहा ओहिएण देवेण भणिया। एव जाव थणियकुमारेण, वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएण एव चेव।

१० प्रश्न–अप्पड्ढिए ण भते ! देवे महिड्ढियाए देवीए मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?

१० उत्तर–णो इणट्ठे समट्ठे।

११ प्रश्न–समड्ढिए ण भते ! देवे समड्ढियाए देवीए मज्झमज्झेण ० ?

११ उत्तर–एव तहेव देवेण य देवीए य दडओ भाणियव्वो, जाव वेमाणियाए।

१२ प्रश्न–अप्पड्ढिया ण भते ! देवि महड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण ० ?

१२ उत्तर–एव एसो वि तईओ दडओ भाणियव्वो, जाव (प्र०) 'महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पड्ढियस्स वेमाणियस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? (उ०) हता, वीइवएज्जा।

१३ प्रश्न–अप्पड्ढिया ण भते ! देवी महड्ढियाए देवीए मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?

१३ उत्तर–णो इणट्ठे समट्ठे। एव समड्ढिया देवी समड्ढियाए

बीच में होकर जा सकता है ?

३ उत्तर–हे गौतम ! यह अथ समथ नहीं, परन्तु वह प्रमत्त (असावधान) हो तो जा सकता है ।

४ प्रश्न–हे भगवन् ! क्या वह देव, उस सामनेवाले देव को विमोहित करके जाता है, या विमोहित किये बिना जाता है ?

४ उत्तर–हे गौतम ! वह देव, सामने वाले देव को विमोहित करके जा सकता है, विमोहित किये बिना नही जा सकता ।

५ प्रश्न–हे भगवन् ! क्या वह देव, उसे पहले विमोहित करता है और पीछे जाता है, अथवा पहले जाता है और पीछे विमोहित करता है ?

५ उत्तर– हे गौतम ! वह देव, उसे पहले विमोहित करता है और पीछे जाता है, परन्तु पहले जाकर पीछे विमोहित नहीं करता ।

६ प्रश्न–महिड्ढीए ण भंते ! देवे अप्पड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेण वीइवएज्जा ?

६ उत्तर–हता, वीइवएज्जा ।

७ प्रश्न–से भंते ! कि विमोहित्ता पभू , अविमोहित्ता पभू ?

७ उत्तर–गोयमा ! विमोहित्ता वि पभू , अविमोहेत्ता वि पभू ।

८ प्रश्न–से भंते ! कि पुव्वि विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?

८ उत्तर–गोयमा ! पुव्वि वा विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा, पुव्वि वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ।

९ प्रश्न–अप्पड्ढिए ण भंते ! असुरकुमारे महड्ढियस्स असुर-

कुमारस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?

६ उत्तर–णो इणट्ठे समट्ठे। एव असुरकुमारेण वि तिण्णि आला-वगा भाणियव्वा जहा ओहिएण देवेण भणिया। एव जाव थणिय-कुमारेण, वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएण एव चेव।

१० प्रश्न–अप्पड्ढिए ण भते ! देवे महिड्ढियाए देवीए मज्झ-मज्झेण वीइवएज्जा ?

१० उत्तर–णो इणट्ठे समट्ठे।

११ प्रश्न–समड्ढिए ण भते ! देवे समड्ढियाए देवीए मज्झ-मज्झेण ० ?

११ उत्तर–एव तहेव देवेण य देवीए य दडओ भाणियव्वो. जाव वेमाणियाए।

१२ प्रश्न–अप्पड्ढिया ण भते ! देवि महड्ढियस्स देवस्स मज्झ-मज्झेण ० ?

१२ उत्तर–एव एसो वि तईओ दडओ भाणियव्वो, जाव (प्र०) 'महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पड्ढियस्स वेमाणियस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? (उ०) हता, वीइवएज्जा।

१३ प्रश्न–अप्पड्ढिया ण भते ! देवी महड्ढियाए देवीए मज्झ-मज्झेण वीइवएज्जा ?

१३ उत्तर–णो इणट्ठे समट्ठे। एव समड्ढिया देवी समड्ढियाए

देवीए तहेव, महिड्ढिया वि देवी अप्पड्ढियाए देवीए तहेव, एव एक्केक्के तिण्णि तिण्णि अलावगा भाणियव्वा, जाव-(प्र०) महड्ढिया ण भते ! वेमाणिणी अप्पड्ढियाए वेमाणिणीए मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? (उ०) हता, वीइवएज्जा । सा भते ! कि विमोहित्ता पभू० ? तहेव जाव पुव्वि वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा । एए चत्तारि दडगा ।

भावार्थ–६ प्रश्न–हे भगवन् ! क्या महर्द्धिक देव, अल्प ऋद्धिक देव के ठीक मध्य में होकर जा सकता है ?

६ उत्तर–हाँ, गौतम ! जा सकता है।

७ प्रश्न–हे भगवन ! वह महर्द्धिक देव, उस अल्प ऋद्धिक देव को विमोहित करके जाता है अथवा विमोहित किये बिना जाता है ?

७ उत्तर–हे गौतम ! विमोहित करके भी जा सकता है और विमोहित किये बिना भी जा सकता है ।

८ प्रश्न–हे भगवन् ! वह महर्द्धिक देव, उसे पहले विमोहित करके पीछे जाता है, अथवा पहले जाता है और पीछे विमोहित करता है ?

८ उत्तर–हे गौतम ! वह महर्द्धिक देव पहले विमोहित करके पीछे भी जा सकता है और पहले जाकर पीछे भी विमोहित कर सकता है ।

९ प्रश्न–हे भगवन् ! अल्प ऋद्धिक असुरकुमार देव, महर्द्धिक असुरकुमार देव के बीचोबीच होकर जा सकता है ?

९ उत्तर–हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं । इस प्रकार सामान्य देव की तरह असुरकुमार के भी तीन अलापक कहने चाहिए । इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमार तक कहना चाहिए, तथा वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक देवो के विषय में भी इसी प्रकार कहना चाहिए ।

१० प्रश्न—हे भगवन् ! अल्पऋद्धिक देव, महर्द्धिक देवी के मध्य में होकर जा सकता है ?

१० उत्तर—हे गौतम ! यह अथ समथ नहीं।

११ प्रश्न—हे भगवन् ! समऋद्धिक देव, समऋद्धिक देवी के मध्य में होकर जा सकता है ?

११ उत्तर—हे गौतम ! पूर्वोक्त प्रकार से देव के साथ देवी का भी दण्डक कहना चाहिये, यावत वैमानिक पर्यंत इसी प्रकार कहना चाहिये।

१२ प्रश्न—हे भगवन् ! अल्पऋद्धिक देवी, महर्द्धिक देव के मध्य में होकर जा सकती है ?

१२ उत्तर—हे गौतम ! यह अर्थ समथ नहीं, इस प्रकार यहाँ तीसरा दण्डक कहना चाहिये, यावत (प्रश्न) हे भगवन ! महर्द्धिक वैमानिक देवी, अल्पऋद्धिक वैमानिक देव के बीच में से निकलकर जा सकता है ? (उत्तर) हाँ, गौतम ! जा सकती है।

१३ प्रश्न—हे भगवन ! अल्पऋद्धिक देवी महर्द्धिक देवी के मध्य में से चलकर जा सकती है ?

१३ उत्तर—हे गौतम ! यह अथ समथ नहीं। इस प्रकार समऋद्धिक देवी का, समऋद्धिक देवी के साथ तथा महर्द्धिक देवी का, अल्पऋद्धिक देवी के साथ, उपर्युक्त रूप से आलापक कहना चाहिये। इस प्रकार एक-एक के तीन-तीन आलापक कहना चाहिये, यावत (प्रश्न) हे भगवन् ! महर्द्धिक वैमानिक देवी, अल्पऋद्धिक वैमानिक देवी के मध्य में होकर जा सकती है ? (उत्तर) हाँ गौतम ! जा सकती है, यावत (प्रश्न) हे भगवन् ! क्या वह महर्द्धिक देवी, उसे विमोहित करके जा सकती है, अथवा विमोहित किये बिना जा सकती है, तथा पहले विमोहित करके पीछे जाती है, अथवा पहले जाकर पीछे विमोहित करती है ? (उत्तर) हे गौतम ! पूर्वोक्त रूप से जानना चाहिये, यावत् 'पहले जाती है और पीछे भी विमोहित करती है,' तक कहना चाहिये। इस प्रकार

चार दण्डक कहने चाहिये ।

विवेचन–१ अल्प ऋद्धिक महर्द्धि के साथ २ समऋद्धिक समऋद्धिक के साथ और ३ महर्द्धिक अल्प ऋद्धिक के साथ–ये तीन आलापक होते हैं । ये तीन आलापक असुरकुमार से वैमानिक तक कहने चाहिये । १ इन तीन आलापकों से युक्त सामान्य देव का सामान्य देव के साथ एक दण्डक होता है, इसी प्रकार २ इन तीन आलापकों से युक्त वैमानिक पर्यन्त देव का देवी के साथ दूसरा दण्डक होता है, ३ इसी तरह वैमानिक पर्यन्त देवी का देव के साथ तीसरा दण्डक होता है और ४ इसी तरह वैमानिक पर्यन्त देवी का देवी के साथ चौथा दण्डक होता है ।

विमोहित करने का अर्थ है–'विस्मित करना' अर्थात् महिका (धूम्र) आदि के द्वारा अन्धकार कर देना । उस अन्धकार को देखकर सामने वाला देव, विस्मय में पड़ जाता है कि यह क्या है ? उसी समय उसके न देखते हुए ही बीच में से निकल जाना 'विमोहित कर निकल जाना–' कहलाता है ।

अश्व की खु-खु ध्वनि और भाषा के भेद

१४ प्रश्न–आसस्स णं भंते ! धावमाणस्स किं 'खु खु' त्ति करेइ ?

१४ उत्तर–गोयमा ! आसस्स णं धावमाणस्स हिययस्स य जगयस्स य अंतरा एत्थ णं कक्कडए × णामं वाए समुच्छइ, जेणं आसस्स धावमाणस्स 'खु खु' त्ति करेइ ।

कठिन शब्दार्थ–आसस्स–अश्व (घोडे) के, धावमाणस्स–दौडते हुए के, हिययस्स–हृदय के जगयस्स–यकृत (लीवर) का कक्कडए–ककट, समुच्छइ–उत्पन्न होता है ।

भावार्थ–१४ प्रश्न–हे भगवन् ! जब घोडा दौडता है, तब 'खु खु' शब्द क्यों करता है ?

१४ उत्तर–हे गौतम ! जब घोडा दौडता है, तब उसके हृदय और

× पाठ भेद–' कब्बडए ।'

यकृत् के बीच में कर्कट नामक वायु उत्पन्न होती है, इससे दौडता हुआ घोडा 'खु-खु' शब्द करता है।

१५ प्रश्न–अह भंते ! आसइस्सामो, सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो णिसिइस्सामो, तुयट्टिस्सामो–

"आमंतणी आणवणी जायणी तह पुच्छणी य पण्णवणी।
पच्चक्खाणी भासा, भासा इच्छाणुलोमा य ॥
अणभिग्गहिया भासा भासा य, अभिग्गहम्मि बोद्धव्वा।
संसयकरणी भासा, वोयडमव्वोयडा चेव" ॥

पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ?

हंता, गोयमा ! आसइस्सामो, तं चेव जाव ण एसा भासा मोसा।

॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

॥ दसमे सए तईओ उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ–आसइस्सामो–आश्रय करेंगे, सइस्सामो–शयन करेंगे, चिट्ठिस्सामो–खडे रहेंगे, णिस्सइस्सामो–बैठेंगे, तुयट्टिस्सामो-लेटेंगे, आमंतणी–आमन्त्रणदेनेवाली, आणवणी–आज्ञापनी, जायणी–याचना करने वाली, इच्छाणुलोमा–इच्छानुलोमा, वोयडमव्वोयडा–व्याकृता अव्याकृता।

भावार्थ–१५ प्रश्न–हे भगवन् ! १ आमन्त्रणी, २ आज्ञापनी, ३ याचनी, ४ पृच्छनी, ५ प्रज्ञापनी, ६ प्रत्याख्यानी, ७ इच्छानुलोमा, ८ अनभिगृहीता, ९ अभिगृहीता, १० संशयकरणी, ११ व्याकृता और १२ अव्याकृता, इन बारह

प्रकार की भाषाओ में–'हम आश्रय करेंगे, शयन करेंगे, खडे रहेंगे, बैठेंगे और लेटेंगे,' इत्यादि भाषा, क्या प्रज्ञापनी भाषा कहलाती है और ऐसी भाषा मृषा (असत्य) नहीं कहलाती ?

१५ उत्तर–हाँ, गौतम ! उपरोक्त प्रकार की भाषा प्रज्ञापनी भाषा है और वह भाषा मृषा नहीं कहलाती।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन ! यह इसी प्रकार है– ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते है।

विवेचन–सत्या, असत्या, सत्यामृषा और असत्यामृषा, इस प्रकार भाषा के मूल चार भेद है। लौकिक व्यवहार की प्रवति का कारण होने से असत्यामृषा भाषा को 'व्यवहार भाषा' कहते है। इसके बारह भेद हैं। यथा–

१ आमन्त्रणी–आमन्त्रण करना अर्थात् किसी को सम्बोधित करना। जैसे–हे भग वन ! हे देवदत्त ! इत्यादि।

२ आज्ञापनी–दूसरे को किसी काय मे प्रेरित करने वाली भाषा 'आज्ञापनी' कह लाती है। जैसे–जाओ, लाओ अमुक काय करो, इत्यादि।

३ याचनी–याचना करने के लिये कही जाने वाली भाषा।

४ पच्छनी–अज्ञात तथा सदिग्ध पदार्थो को जानने के लिय प्रयुक्त भाषा।

५ प्रज्ञापनी–उपदेश देने रूप भाषा 'प्रज्ञापनी' है। यथा–प्राणियो की हिंसा से निवत पुरुष भवान्तर मे दीर्घायु और नीरोग शरीर होता है।

६ प्रत्याख्यानी–निषेधात्मक भाषा 'प्रत्याख्यानी' कहलाती है।

७ इच्छानुलोमा–दूसरे की इच्छा का अनुसरण करना। जसे–किसी के द्वारा पूछा जाने पर उत्तर देना कि जो तुम करते हो, वह मुझे भी अभीष्ट है।

८ अनभिगृहीता–प्रतिनियत (निश्चित) अथ का ज्ञान न होने पर उसके लिये बोलना 'अनभिगृहीता है।'

९ अभिगृहीता–प्रतिनियत अथ का बोध कराने वाली भाषा 'अभिगृहीता' है।

१० सशयकरणी–अनेक अर्थो के वाचक शब्दो का जहा प्रयोग किया गया हो और जिसे सुनकर श्रोता सशय मे पड जाय, वह भाषा सशयकरणी' है। जैसे–'सैन्धव शब्द सुनकर श्रोता सशय मे पड जाता है कि नमक लाया जाय या घोडा (क्योकि सैन्धव शब्द के

दा अर्थ हैं—घोडा और नमक)

११ व्याकृता—स्पष्ट अर्थ वाली भाषा व्याकृता कहलाती है।

१२ अव्याकृता—अस्पष्ट उच्चारण वाली अथवा अति गभीर अर्थ वाली भाषा।

'हम आश्रय करेंगे' इत्यादि भाषा यद्यपि भविष्यत्कालीन है, तथापि वर्तमान सामीप्य होने से प्रज्ञापनी भाषा है और वह असत्य नहीं है। इसी प्रकार आमन्त्रणी आदि के विषय में जानना चाहिये।

॥ दसवें शतक का तृतीय उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १० उद्देशक ४

चमरेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव

१—तेण कालेण तेण समएण वाणियग्गामे णयरे होत्था, वण्णओ। दूइपलासए चेइए। सामी समोसढे। जाव परिसा पडिगया। तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णाम अणगारे, जाव उड्ढजाणू जाव विहरइ। तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सामहत्थी णाम अणगारे पगइभद्दए, जहा रोहे, जाव उड्ढजाणू जाव विहरइ। तएण से सामहत्थी अणगारे जायसड्ढे जाव उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता भगवं गोयमं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासमाणे एवं

वयासी ।

२ प्रश्न-अत्थि ण भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार-रण्णो तायत्तीसगा देवा ?

२ उत्तर-हंता, अत्थि ।

प्रश्न-से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ-'चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा' ?

उत्तर-एवं खलु सामहत्थी ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे कायंदी णाम णयरी होत्था । वण्णओ । तत्थ ण कायंदीए णयरीए तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया परिवसंति, अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा, उवलद्ध-पुण्णपावा, वण्णओ जाव विहरंति । तएण ते तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया पुव्विं उग्गा उग्गविहारी, संविग्गा, संविग्ग-विहारी भवित्ता, तओ पच्छा पासत्था, पासत्थविहारी, ओसण्णा, ओसण्णविहारी, कुसीला, कुसीलविहारी, अहाच्छंदा, अहाच्छंद-विहारी, बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेंति, अत्ताणं झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडि-क्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगदेवत्ताए उववण्णा ।

कठिन शब्दार्थ–जाय सड्ढे–श्रद्धावाले, सहाया–सहायता करनेवाले, उग्ग –उग्र (उदार भाववाले), उग्गविहारी–उग्र विहारी (उदार आचारवाले) ।

भावार्थ–१ उस काल उस समय वाणिज्यग्राम नामक नगर था । उस समय श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के ज्येष्ठ अन्तेवासी (शिष्य) इन्द्र-भूति नामक अनगार थे । वे ऊर्ध्वजानु यावत विचरते थे । उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के शिष्य 'श्यामहस्ती' अनगार थे । वे गौतम स्वामी के पास आकर, उन्हे तीन बार प्रदक्षिणा एव वन्दना नमस्कार करके पर्युपासना करते हुए इस प्रकार बोले–

२ प्रश्न–हे भगवन् ! क्या असुरकुमारो के राजा, असुरकुमारो के इन्द्र चमर के त्रायस्त्रिंशक देव है ?

२ उत्तर–हाँ, श्यामहस्ती ! चमरेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव है ।

प्र० हे भगवन ! क्या कारण है इसका कि असुरेन्द्र असुरकुमारेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव है ?

उ० हे श्यामहस्ती ! उन त्रायस्त्रिंशक देवो का वर्णन इस प्रकार है ।

उस काल उस समय इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में काकन्दी नाम की नगरी थी (वणन) । उस काकन्दी नगरी में एक दूसरे की परस्पर सहायता करने वाले तेतीस श्रमणोपासक गृहपति रहते थे । वे धनिक यावत अपरिभूत थे । वे जीवाजीव के ज्ञाता और पुण्य-पाप के जानने वाले थे । वे परस्पर सहा-यक तेतीस श्रमणोपासक गृहपति, पहले उग्र, उग्रविहारी, सविग्न, सविग्नविहारी थे, परन्तु पीछे पासत्थ (पाइवस्थ), पासत्थविहारी, अवसन्न, अवसन्नविहारी, कुशील, कुशीलविहारी, यथाछन्द और यथाछन्दविहारी होगये । बहुत वर्षो तक श्रमणो-पासक पर्याय का पालन कर, अर्धमासिक सलेखना द्वारा शरीर को कृश कर, तीस भक्तो का अनशन द्वारा छेदन कर के और उस प्रमाद स्थान की आलोचना और प्रतिक्रमण किये बिना ही काल के समय काल कर वे असुरकुमारराज असुरकुमा-रेन्द्र चमर के त्रायस्त्रिंशक देवपने उत्पन्न हुए है ।

३–जप्पभिइ च ण भंते ! ते काकंदगा तायत्तीसं सहाया गाहा-वई समणोवासगा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्ती-सगदेवत्ताए उववण्णा तप्पभिइ च ण भंते ! एव वुच्चइ–'चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा ? तएण भगवं गोयमे सामहत्थिणा अणगारेण एव वुत्ते समाणे संकिए, कंखिए, वितिगिच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता सामहत्थिणा अणगा-रेण सद्धि जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ । तेणेव उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ णमसइ । वदित्ता, णम-सित्ता एव वयासी–

४ प्रश्न–अत्थि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा तायत्तीसगा देवा ?

४ उत्तर–हंता, अत्थि ।

प्रश्न–से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ–एव त चेव सव्व भाणि-यव्व, जाव 'तप्पभिइ च ण एव वुच्चइ–चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा तायत्तीसगा देवा ?

उत्तर–णो इणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगाण देवाण सासए णामधेज्जे पण्णत्ते, ज ण कयाइ, णासी, ण कयाइ ण भवइ, ण कयाइ ण भविस्सइ, जाव णिच्चे अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए, अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति ।

कठिन शब्दार्थ–सकिए–शकित हुए, कखिए–काक्षित, वितिगिच्छिए–अत्यत सन्देह युक्त, अव्वोच्छित्तिणयट्ठाए–अव्युच्छित्ति नय (द्रव्यार्थिक नय) के अर्थ से, तप्पभिइ तब से।

भावार्थ–३–(श्यामहस्ती, गौतम स्वामी से पूछते हैं) हे भगवन् ! क्या जब से वे काकन्दी निवासी, परस्पर सहायता करने वाले तेतीस श्रमणोपासक, असुरकुमारराज असुरेन्द्र चमर के त्रायस्त्रिंशक देवपने उत्पन्न हुए हैं, तब से ऐसा कहा जाता है कि असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर के त्रायस्त्रिंशक देव हैं ? (अर्थात् क्या इस से पहले त्रायस्त्रिंशक देव नही थे ?) श्यामहस्ती अनगार के इस प्रश्न को सुनकर गौतमस्वामी शकित, काक्षित और अत्यन्त सदिग्ध हुए। वे वहाँ से उठे और श्यामहस्ती अनगार के साथ श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास आये। भगवान् को वन्दना नमस्कार करके गौतमस्वामी ने इस प्रकार पूछा–

४–हे भगवन् ! क्या असुरेन्द्र, असुरकुमारराज चमर के त्रायस्त्रिंशक देव हैं ?

४ उत्तर–हा, गौतम है।

प्रश्न–हे भगवन् ! ऐसा किस कारण से कहते हैं कि चमर के त्रायस्त्रिंशक देव हैं, इत्यादि पूर्व कथित त्रायस्त्रिंशक देवो का सब सम्बन्ध कहना चाहिये, यावत् काकन्दी निवासी श्रमणोपासक त्रायस्त्रिंशक देवपने उत्पन्न हुए। तब से लेकर ऐसा कहा जाता है कि चमरेन्द्र के त्रायस्त्रिंशक देव हैं ? क्या इसके पहले वे नहीं थे ?

उत्तर–हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं। असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर के त्रायस्त्रिंशक देवो के नाम शाश्वत कहे गये हैं। इसलिये वे कभी नहीं थे–ऐसा नही, और नहीं रहेगे–ऐसा भी नहीं। वे नित्य हैं, अव्युच्छित्तिनय (द्रव्यार्थिक नय) की अपेक्षा पहले वाले चवते हैं और दूसरे उत्पन्न होते हैं। उनका विच्छेद कभी नही होता।

विवेचन–जो देव मन्त्री और पुरोहित का कार्य करते हैं, वे 'त्रायस्त्रिंशक' कहलाते हैं। काकन्दी नगरी मे तेतीस श्रमणोपासक रहते थे। वे परस्पर एक दूसरे की सहायता करते थे। वे गृहपति अर्थात् कुटुम्ब के नायक थे। वे उग्र (उदार भाव वाले)

और उग्रविहारी (उदार आचार वाले) थे। वे पहले तो सविग्न (मोक्ष प्राप्ति के इच्छुक एव ससार से भयभीत) और सविग्न विहारी (मोक्ष के अनुकूल आचरण करने वाले) थ, किन्तु पीछे वे पासत्थ (पार्श्वस्थ-ज्ञानादि से बहिर्भूत) और पासत्थविहारी (जीवन पर्यन्त ज्ञान आदि से बहिर्भूत प्रवृति करने वाले) अवसन्न (उत्तम आचार का पालन करने मे थके हुए-आलसी) और अवसन्न विहारी (जीवन पर्यन्त शिथिलाचारी), कुशील (ज्ञानादि आचार की विराधना करने वाले) और कुशील विहारी (जीवन पर्यन्त ज्ञानादि आचार की विराधना करने वाले), यथाछन्द (आगम से विपरीत अपनी इच्छानुसार प्रवत्ति करने वाले-स्वच्छन्दी) और यथाछन्दविहारी (जीवन पर्यन्त स्वच्छन्दी) हो गये थे। इससे काल के समय काल करके वे चमरेन्द्र के त्रायस्त्रिशक देवपने उत्पन्न हुए। यह कथानक वर्त्तमान के त्रायस्त्रिशक देवो का है। इसी प्रकार अनादिकाल स त्रायस्त्रिशक देवो के स्थान मे नवीन जीव उत्पन्न होते रहते ह और पुराने चवते जाते ह।

बलिन्द्र के त्रायस्त्रिशक देव

५ प्रश्न-अत्थि णं भते ! बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयण-रण्णो तायत्तीसगा देवा तायत्तीसगा देवा ?

५ उत्तर-हता, अत्थि।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ-'बलिस्स वइरोयणिंदस्स जाव तायत्तीसगा देवा तायत्तीसगा देवा ?

उत्तर-एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेणं समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विभेले णाम सण्णिवेसे होत्था, वण्णओ। तत्थ ण विभेले सण्णिवेसे जहा चमरस्स जाव उववण्णा।

प्रश्न-जप्पभिइ च ण भते ! विभेलगा तायत्तीस सहाया गाहावई

समणोवासगा वलिस्स वइरोयणिदस्स सेस त चेव जाव णिच्चे अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए, अण्णे चयति अण्णे उववज्जति ।

६ प्रश्न–अत्थि णं भते ! धरणस्स णागकुमारिदस्स णागकुमार-रण्णो तायत्तीसगा देवा ?

६ उत्तर–हता अत्थि ।

प्रश्न–से केणट्ठेण जाव तायत्तीसगा देवा तायत्तीसगा देवा ?

उत्तर–गोयमा ! धरणस्स णागकुमारिदस्स णागकुमाररण्णो तायत्तीसगाणं देवाणं सासए णामधेज्जे पण्णत्ते, ज ण कयाई णासी, जाव अण्णे चयति अण्णे उववज्जति । एव भूयाणदस्स वि एव जाव महाघोसस्स ।

कठिन शब्दार्थ–सण्णिवेसे–सन्निवेश, जप्पभिइ–जव से ।

भावार्थ–५ प्रश्न–हे भगवन् ! वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज वलि के त्रायस्त्रि-शक देव है ?

५ उत्तर–हां, गौतम ! है ।

प्रश्न–हे भगवन् ! ऐसा किस कारण से कहते है कि वैरोचनेन्द्र वैरोचन-राज वलि के त्रायस्त्रिशक देव है ?

उत्तर–हे गौतम ! वलि के त्रायस्त्रिशक देवो का वर्णन इस प्रकार है,–उस काल उस समय इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में विभेल नाम का सन्निवेश (कस्वा) था (वर्णन) । उस विभेल सन्निवेश में परस्पर सहायता करने वाले तेतीस श्रमणोपासक थे, इत्यादि जैसा वर्णन चमरेन्द्र के लिये कहा है, वैसा यहां भी जानना चाहिये । यावत् वे त्रायस्त्रिशक देवपने उत्पन्न हुए । जब से वे विभेल सन्निवेश निवासी परस्पर सहायक तेतीस गृहपति श्रमणोपासक, वलि के

त्रायस्त्रिशक देव पने उत्पन्न हुए, तब से क्या ऐसा कहा जाता है कि बलि के त्रायस्त्रिशक देव है, इत्यादि पूर्वोक्त सभी वर्णन कहना चाहिये। यावत 'वे नित्य है, अव्युच्छित्ति नय की अपेक्षा पुराने चवते है और नये उत्पन्न होते है' –तक कहना चाहिये।

६ प्रश्न–हे भगवन्! नागकुमारेन्द्र नागकुमार राज धरण के त्रायस्त्रिशक देव है?

६ उत्तर–हाँ, गौतम! है।

प्रश्न–हे भगवन! किस कारण से कहते है कि नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज धरण के त्रायस्त्रिक देव है?

उत्तर–हे गौतम! नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज धरण के त्रायस्त्रिशक देवो के नाम शाश्वत कहे गये है। 'वे कभी नही थे'–ऐसा नहीं, 'नहीं रहेंगे'– ऐसा भी नही, यावत पुराने चवते है और नये उत्पन्न होते है। इसी प्रकार भूतानन्द यावत् महाघोष इन्द्र के त्रायस्त्रिशक देवो के विषय में जानना चाहिये।

शक्रेन्द्र के त्रायस्त्रिशक देव

७ प्रश्न–अत्थि ण भते! सक्कस्स देविदस्स, देवरण्णो पुच्छा?

७ उत्तर–हता अत्थि। (प्र०) से केणट्ठेण जाव तायत्तीसगा देवा तायत्तीसगा देवा? (उ०) एव खलु गोयमा! तेण कालेण तेण समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे पलासए णाम सण्णिवेसे होत्था। वण्णओ। तत्थ ण पलासए सण्णिवेसे तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव विहरति।

तएण ते तायत्तीम महाया गाहावई समणोवासया पुव्वि पि पच्छा वि उग्गा, उग्गविहारी, सविग्गा, सविग्गविहारी वहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणति पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसेंति, भूसित्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेति, छेदित्ता आलोइयपडिक्कता समाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा जाव उववण्णा। जप्पभिइ च ण भते! पालासिगा तायत्तीस महाया गाहावई समणोवासगा, सेस जहा चमरस्स जाव अण्णे उववज्जति।

८ प्रश्न–अत्थि ण भते! ईसाणस्स० ?

८ उत्तर–एव जहा सक्कस्स, णवर चपाए णयरीए जाव उववण्णा। जप्पभिइ च ण भते! चपिज्जा तायत्तीस सहाया, सेस त चेव जाव अण्णे उववज्जति।

९ प्रश्न–अत्थि णं भते सणकुमारस्स देविदस्स देवरण्णो पुच्छा ?

९ उत्तर–हता अत्थि। (प्र०) से केणट्ठेण ? (उ०) जहा धरणस्स तहेव, एव जाव पाणयस्स, एव अच्चुयस्स जाव अण्णे उववज्जति।

॥ सेव भते! सेव भते! त्ति ॥

॥ दसमे सए चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥

७ प्रश्न-हे भगवन ! देवेन्द्र देवराज शक्र के त्रायस्त्रिशक देव हैं ?

७ उत्तर-हाँ, गौतम ! हैं।

प्रश्न-हे भगवन ! ऐसा किस कारण से कहते हैं कि देवेन्द्र देवराज शक्र के त्रायस्त्रिशक देव हैं।

उत्तर-हे गौतम ! शक्र के त्रायस्त्रिशक देवों का सम्बन्ध इस प्रकार है-

उस काल उस समय में इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में पलाशक नाम का सन्निवेश था (वर्णन)। वहाँ परस्पर सहायता करने वाले तेतीस श्रमणोपासक रहते थे। इत्यादि पूर्वोक्त वर्णन कहना चाहिये। वे तेतीस श्रमणोपासक पहले भी और पीछे भी उग्र, उग्रविहारी, सविग्न और सविग्न विहारी होकर बहुत वर्षों तक श्रमणोपासक पर्याय का पालन कर, मासिक सलेखना द्वारा शरीर को कृश कर, साठ भक्त अनशन का छेदन कर, आलोचना और प्रतिक्रमण कर और काल के अवसर समाधिपूर्वक काल करके, शक्र के त्रायस्त्रिशक देवपने उत्पन्न हुए हैं, इत्यादि सारा वर्णन चमरेन्द्र के समान कहना चाहिये। यावत 'पुराने चवते हैं, और नये उत्पन्न होते हैं'-तक कहना चाहिये।

८ प्रश्न-हे भगवन ! देवेन्द्र देवराज ईशान के त्रायस्त्रिशक देव हैं ?

८ उत्तर-हे गौतम ! शक्रेन्द्र के सामान ईशानेन्द्र का भी वर्णन जानना चाहिये। इसमें इतनी विशेषता है कि ये श्रमणोपासक चम्पा नगरी में रहते थे। शेष सारा वर्णन शक्रेन्द्र के समान जानना चाहिये।

९ प्रश्न-हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज सनत्कुमार के त्रायस्त्रिशक देव हैं ?

९ उत्तर-हाँ गौतम ! हैं।

प्रश्न-हे भगवन् ! इसका क्या कारण है कि देवेन्द्र देवराज सनत्कुमार के त्रायस्त्रिशक देव हैं ?

उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार धरणेन्द्र के विषय में कहा है, उसी प्रकार सनत्कुमार के विषय में भी जानना चाहिए। इसी प्रकार यावत प्राणत तक जानना चाहिए और इसी प्रकार अच्युत तक जानना चाहिए, यावत 'पुराने चवते हैं और

नए उत्पन्न होते हैं'–तक जानना चाहिए।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन–भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक–ये चार प्रकार के देव हैं। इनमें से भवनपति और वैमानिक देवो मे तो त्रायस्त्रिशक देव होते हैं, किंतु वाणव्यन्तर और ज्योतिषी देवो मे त्रायस्त्रिशक देव नहीं होते, इसलिए भवनपति और वैमानिक देवो के ही त्रायस्त्रिशक देवो का वर्णन आया है।

॥ इति दशवें शतक का चतुर्थ उद्देशक समाप्त ॥

शतक १० उद्देशक ५

चमरेन्द्र का परिवार

१–तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे। गुणसिलए चेइए, जाव परिसा पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जाइसपण्णा कुलसपण्णा जहा अट्ठमे सए सत्तमुद्देसए जाव विहरंति। तएणं ते थेरा भगवंतो जायसड्ढा जायससया जहा गोयमसामी, जाव पज्जुवासमाणा एवं वयासी–

२ प्रश्न–चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो कइ

अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

२ उत्तर–अज्जो ! पच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा–१ काली, २ रायी, ३ रयणी, ४ विज्जु, ५ मेहा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए अट्ठ ट्ठ देवीसहस्स परिवारो पण्णत्तो ।

३ प्रश्न–पभू ण भते ! ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ अट्ठ-ट्ठ देवीसहस्साइ परिवार विउव्वित्तए ?

३ उत्तर–एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तालीस देवीसहस्सा, सेत्त तुडिए ।

४ प्रश्न–पभू ण भते ! चमरे असुरिदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए, चमरंसि सीहासणसि तुडिएण सद्धिं दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ?

४ उत्तर–णो इणट्ठे समट्ठे ।

प्रश्न–से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ–'णो पभू चमरे असुरिदे चमरचचाए रायहाणीए जाव विहरित्तए' ?

उत्तर–अज्जो ! चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए, माणवए चेइयखभे वइरामएसु गोल वट्ट-समुग्गएसु बहूओ जिणसकहाओ सण्णिक्खित्ताओ चिट्ठति जाओ ण चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अण्णेसिं च बहूणं असुरकुमाराण देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ, वद-

णिज्जाओ णमंसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जाओ भवति, तेसिं पणिहाए णो पभू, से तेणट्ठेण अज्जो ! एव वुच्चइ-'णो पभू चमरं असुरिंदे जाव चमरचचाए जाव विहरित्तए'। (प्र०) पभू ण अज्जो ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि । सीहासणसि चउसट्ठीए सामाणीयसाहस्सीहिं तायत्तीसाए जाव अण्णेसिं च वहूणं असुरकुमारेहि देवेहि य देवीहिं य सद्धिं सपरिवुडे महयाहय-जाव भुजमाणे विहरित्तए ? (उ०) केवल परियारिड्ढीए, णो चेव ण मेहुणवत्तिय ।

कठिन शब्दार्थ-अग्गमहिसी-अग्रमहिषी-पटरानी, एवामेव-इसी प्रकार, तुडिए-त्रुटिक-वर्ग, वइरामएसु-वज्रमय, गोलवट्टसमुग्गएसु-वर्त्ताकार गोल डिब्बो मे जिणसकहाओ-जिनसक्थि-जिनेन्द्र भगवान की अस्थियां, अच्चणिज्जा-अर्चनीय, पणिहाए-प्रणिधान मे ।

भावार्थ-१-उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था । वहां गुणशीलक नामक उद्यान था । (वहां श्रमण भगवान् महावीर स्वामी समवसरे) यावत परिषद् धर्मोपदेश सुनकर लौट गई । उस काल उस समय श्रमण भगवान महावीर स्वामी के बहुत-से अन्तेवासी (शिष्य) स्थविर भगवान जाति सम्पन्न इत्यादि आठवे शतक के सातवे उद्देशक में कहे अनुसार विशेषण विशिष्ट यावत् विचरते थे । वे स्थविर भगवान जानने की श्रद्धावाले यावत् सशय वाले होकर गौतम स्वामी के समान पर्युपासना करते हुए इस प्रकार बोले-

२ प्रश्न-हे भगवन् ! असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर के कितनी अग्र महिषियां (पटरानियां) कही गई है ?

२ उत्तर-हे आर्यो ! चमरेन्द्र के पांच अग्रमहिषियां कही गई है । यथा-

अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

२ उत्तर-अज्जो ! पच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा-१ काली, २ रायी, ३ रयणी, ४ विज्जु, ५ मेहा। तत्थ णं एग-मेगाए देवीए अट्ठ ट्ठ देवीसहस्स परिवारो पण्णत्तो।

३ प्रश्न-पभू ण भते ! ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ अट्ठ-ट्ठ देवीसहस्साइ परिवार विउव्वित्तए ?

३ उत्तर-एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तालीस देवीमहस्सा, सेत्त तुडिए।

४ प्रश्न-पभू ण भते ! चमरे असुरिदे असुरकुमारराया चमर-चचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए, चमरम्मि सीहासणंसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ?

४ उत्तर-णो इणट्ठे समट्ठे।

प्रश्न-से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ-'णो पभू चमरे असुरिदे चमरचचाए रायहाणीए जाव विहरित्तए' ?

उत्तर-अज्जो ! चमरस्स ण असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए, माणवए चेइयखभे वइ-रामएसु गोल वट्ट-समुग्गएसु वहूओ जिणसकहाओ सण्णिक्खित्ताओ चिट्ठति जाओ ण चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अण्णेसिं च वहूणं असुरकुमाराण देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ, वद-

णिज्जाओ णमसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जाओ भवति, तेसि पणिहाए णो पभू, से तेणट्ठेण अज्जो ! एव वुच्चइ–'णो पभू चमरं असुरिंदे जाव चमरचचाए जाव विहरित्तए'। (प्र०) पभू ण अज्जो ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरसि । सीहासणसि चउसट्ठीए सामाणीयसाहस्सीहिं तायत्तीसाए जाव अण्णेसिं च बहूण असुरकुमारेहिं देवेहि य देविहिं य सद्धि सपरिवुडे महयाहय–जाव भुजमाणे विहरित्तए ? (उ०) केवल परियारिड्ढीए, णो चेव ण मेहुणवत्तिय ।

कठिन शब्दार्थ–अग्गमहिसी–अग्रमहिषी–पटरानी, एवामेव–इसी प्रकार, तुडिए–त्रुटिक–वर्ग, वइरामएसु–वज्रमय, गोलवट्टसमुग्गएसु–वत्ताकार गाल डिब्बो मे जिणसकहाओ–जिनसक्थि–जिनेन्द्र भगवान की अस्थिया, अच्चणिज्जा–अचनीय, पणिहाए–प्रणिधान मे ।

भावार्थ–१–उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था । वहाँ गुणशीलक नामक उद्यान था । (वहाँ श्रमण भगवान् महावीर स्वामी समवसरे) यावत परिषद् धर्मोपदेश सुनकर लौट गई । उस काल उस समय श्रमण भगवान महावीर स्वामी के बहुत-से अन्तेवासी (शिष्य) स्थविर भगवान जाति सम्पन्न इत्यादि आठवे शतक के सातवे उद्देशक में कहे अनुसार विशेषण विशिष्ट यावत् विचरते थे । वे स्थविर भगवान् जानने की श्रद्धावाले यावत् सशय वाले होकर गौतम स्वामी के समान पर्युपासना करते हुए इस प्रकार बोले–

२ प्रश्न–हे भगवन ! असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर के कितनी अग्रमहिषियां (पटरानियां) कही गई ह ?

२ उत्तर–हे आर्यो ! चमरेन्द्र के पांच अग्रमहिषियां कही गई हैं । यथा–

१ काली २ राजी ३ रजनी ४ विद्युत् और ५ मेघा। इनमें सेएक-एक अग्रमहिषी के आठ-आठ हजार देवियो का परिवार कहा गया है ।

३ प्रश्न–हे भगवन ! क्या एक-एक देवी आठ-आठ हजार देवियो के परिवार की विकुर्वणा कर सकती है ?

३ उत्तर–हे आर्यो ! हाँ, कर सकती है । इस प्रकार पूर्वापर सब मिल कर पाच अग्रमहिषियो का परिवार चालिस हजार देवियाँ है । यह एक त्रुटिक (वग) कहलाता है ।

४ प्रश्न–हे भगवन ! क्या असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर अपनी चमर चञ्चा राजधानी की सुधर्मासभा में, चमर नामक सिंहासन पर बैठकर, उस त्रुटिक (देवियो के परिवार) के साथ भोगने योग्य दिव्य-भोगो को भोगने में समर्थ है ?

४ उत्तर–हे आर्यो ! यह अर्थ समथ नही ।

प्रश्न–हे भगवन् ! क्या कारण है कि 'चमरचञ्चा राजधानी में वह असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर दिव्य-भोग भोगने में समथ नही है ।

उत्तर–हे आर्यो ! असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर की चमरचञ्चा राजधानी की सुधर्मा नामक सभा में, माणवक चैत्यस्तम्भ में, वज्रमय गोल डिब्बो में जिन भगवान की बहुत सी अस्थियाँ है, जो कि असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर के लिए तथा बहुत-से असुरकुमार देव और देवियो के लिए अचनीय, वन्दनीय, नमस्करणीय, पूजनीय तथा सत्कार व सम्मान करने योग्य है। वे कल्याणकारी, मगलकारी, देवस्वरूप, चैत्यरूप पर्युपासना करने के योग्य है । इसलिए उन जिन भगवान् की अस्थियो के प्रणिधान (सन्निधान–समीप) में वह असुरेन्द्र, अपनी राजधानी की सुधर्मासभा में यावत् भोग भोगने में समर्थ नही है । इसलिए हे आर्यो ! ऐसा कहा गया है कि 'असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर चमरचञ्चा राजधानी में यावत् भोग भोगने में समर्थ नहीं है । परन्तु हे आर्यो । वह असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर, चमरचञ्चा राजधानी की सुधर्मा सभा में चमर नामक

सिंहासन पर बैठकर चौसठ हजार सामानिक देव, त्रायस्त्रिशक देव और दूसरे बहुत से असुरकुमार देव और देवियों के साथ प्रवृत्त होकर निरन्तर होने वाले नाट्य गीत और वादिन्त्रो के शब्दो द्वारा, केवल परिवार की ऋद्धि से भोग भोगने में समर्थ है, परन्तु मैथुन-निमित्तक भोग भोगने में समर्थ नहीं है।

५ प्रश्न–चमरस्स ण भते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

५ उत्तर–अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा–१ कणगा २ कणगलया ३ चित्तगुत्ता ४ वसुधरा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे पण्णत्ते (प्र०) पभू ण ताओ एगमेगाए देवीए अण्ण एगमेग देवीसहस्स परिवार विउव्वित्तए ? (उ०) एवामेव सपुव्वावरेण चत्तारि देवीसहस्सा । सेत्त तुडिए ।

६ प्रश्न–पभू ण भते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए सोमसि सीहासणसि तुडिएण ?

६ उत्तर–अवसेस जहा चमरस्स, णवर परिवारो जहा सूरियाभस्स, सेस त चेव, जाव णो चेव ण मेहुणवत्तिय ।

७ प्रश्न–चमरस्स ण भते ! जाव रण्णो जमस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

७ उत्तर-एव चेव, णवर जमाए रायहाणीए, सेस जहा सोमस्स, एव वरुणस्स वि, णवर वरुणाए रायहाणीए, एव वेसमणस्स वि, णवर वेसमणाए रायहाणीए, सेस त चेव, जाव मेहुणवत्तिय ।

५ प्रश्न-हे भगवन् ! असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर के लोकपाल सोम महाराजा के कितनी अग्रमहिषियाँ कही गई हैं ?

५ उत्तर-हे आर्यो ! उनके चार अग्रमहिषियाँ कही गई हैं । यथा-कनका, कनकलता, चित्रगुप्ता और वसुधरा । इनमें से प्रत्येक देवी का एक एक हजार देवियो का परिवार है । इनमें से प्रत्येक देवी, एक-एक हजार देवियो के परिवार की विकुवणा कर सकती है । इस प्रकार पूर्वापर सब मिल कर चार हजार देवियाँ होती हैं । यह एक त्रुटिक (देवियो का वर्ग) कहलाता है ।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! क्या असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर का लोकपाल सोम नामक महाराजा, अपनी सोमा राजधानी की सुधर्मासभा में, सोम नामक सिंहासन पर बैठकर उस त्रुटिक के साथ भोग भोगने में समर्थ है ?

६ उत्तर-हे आर्यो ! जिस प्रकार चमर के सम्बन्ध में कहा गया, उसी प्रकार यहाँ भी जानना चाहिये, परन्तु इसका परिवार राजप्रश्नीय सूत्र में वर्णित सूर्याभ देव के समान जानना चाहिये । शेष सब पूर्ववत् जानना चाहिये, यावत वह सोमा राजधानी में मैथुन-निमित्तक भोग भोगने में समर्थ नहीं है ।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! उस चमर के लोकपाल यम महाराजा के कितनी अग्रमहिषियाँ कही गई है ?

७ उत्तर-हे आर्यो ! जिस प्रकार सोम महाराजा का कहा, उसी प्रकार यम महाराजा का कहना चाहिये, किन्तु इतनी विशेषता है कि यम लोकपाल के यमा नामक राजधानी है । इसी प्रकार वरुण और वैश्रमण का भी कहना चाहिये, किन्तु वरुण के वरुणा राजधानी है और वैश्रमण के वैश्रमणा राजधानी है । शेष

सब पूर्ववत जानना चाहिए, यावत 'वे वहां मैथुननिमित्तक भोग भोगने में समर्थ नहीं है ।

बलीन्द्र का परिवार

८ प्रश्न-बलिस्स ण भते ! वइरोयणिदस्स पुच्छा ?

८ उत्तर-अज्जो ! पच अग्गमहिमीओ पण्णत्ताओ, त जहा-१ सुभा २ णिसुभा ३ रभा ४ णिरभा ५ मयणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए अट्ठ-ट्ठ०, सेस जहा चमरस्स, णवर बलिचचाए रायहाणीए, परिवारो जहा मोउद्देसए सेस त चेव, जाव मेहुणवत्तिय ।

९ प्रश्न-बलिस्स ण भते ! वइरोयणिदस्स, वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

९ उत्तर-अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ । त जहा-१ मीणगा २ सुभद्दा ३ विजया ४ असणी । तत्थ णं एगमेगाए देवीए, सेस जहा चमरसोमस्स एव जाव वेसमणस्स ।

कठिनशब्दार्थ-मोउद्देसए-मोका नगरी के उद्देशक के अनसार ।

भावार्थ-८ प्रश्न-हे भगवन् ! वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बलि के कितनी अग्रमहिषियां कही गई है ?

८ उत्तर-हे आर्यो ! पाँच अग्रमहिषिया कही गई है । यथा-सुभा, निसुम्भा, रम्भा, निरम्भा और मदना । इनमें प्रत्येक देवी के आठ-आठ हजार

देवियो का परिवार है, इत्यादि सारा वणन चमरेन्द्र के समान जानना चाहिए, परन्तु बलीन्द्र के बलिचञ्चा राजधानी है। इसका परिवार तृतीय शतक के प्रथम उद्देशक में कहे अनुसार तथा शेष सब वणन पूववत् जानना चाहिए, यावत 'वह मैथुन निमित्तक भोग भोगने में समथ नही है।

९ प्रश्न–हे भगवन ! वैरोचनेन्द्र वैरोचनराज बलि के लोकपाल सोम-महाराजा के कितनी अग्रमहिषियाँ है ?

९ उत्तर–हे आर्या ! चार अग्रमहिषियाँ है। यथा–मेनका, सुभद्रा, विजया और अशनी। इनकी एक एक देवी का परिवार आदि सारा वणन चमर के सोम नामक लोकपाल के समान जानना चाहिए। इसी प्रकार यावत् वैश्रमण तक जानना चाहिए।

१० प्रश्न–धरणस्स ण भते ! णागकुमारिदस्स णागकुमार-रण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

१० उत्तर–अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा–१ इला २ सुक्का ३ सतारा ४ सोदामिणी ५ इदा ६ घण-विज्जुया। तत्थ ण एगमेगाए देवीए छ छ देवीसहस्सा परिवारो पण्णत्तो।

११ प्रश्न–पभू ण भते ! ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ छ छ देविसहस्साइ परिवार विउव्वित्तए ?

११ उत्तर–एवामेव सपुव्वावरेण छत्तीसाइ देविसहस्साइ, सेत्त तुडिए। (प्र०) पभू ण भते ! धरणे० ? (उ०) सेस त चेव, णवर

धरणाए रायहाणीए, धरणसि सीहासणसि, सम्रो परिवारो, सेस त चेव ।

१२ प्रश्न–धरणस्स ण भते ! णागकुमारिंदस्स लोगपालस्स कालवालस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

१२ उत्तर–अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा–१ असोगा २ विमला ३ सुप्पभा ४ सुदसणा । तत्थ णं एगमेगाए० अवसेस जहा चमरलोगपालाण । एव सेसाण तिण्ह वि ।

१३ प्रश्न–भूयाणिंदस्स भते ! पुच्छा ।

१३ उत्तर–अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा–१ रूया २ रूयसा ३ सुरूया ४ रूयगावई ५ रूयकता ६ रूयप्पभा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए० अवसेस जहा धरणस्स।

१४ प्रश्न–भूयाणदस्स ण भते ! णागवित्तस्स पुच्छा ?

१४ उत्तर–अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा–१ सुणदा, २ सुभद्दा, ३ सुजाया, ४ सुमणा । तत्थ ण एग-मेगाए० अवसेस जहा चमरलोगपालाण । एव सेसाण तिण्ह वि लोगपालाण । जे दाहिणिल्ला इदा तेसिं जहा धरणिंदस्स, लोग-पालाण वि तेसिं जहा धरणस्स लोगपालाण । उत्तरिल्लाण इदाणं जहा भूयाणदस्स, लोगपालाण वि तेसिं जहा भूयाणदस्स लोग-

पालाणं, णवर इदाण सव्वेसि रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिम-णामगाणि, परिवारो जहा तइए सए पढमे उद्देसए। लोगपालाण सव्वेसि रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परिवारो जहा चमरस्स लोगपालाणं।

कठिन शब्दार्थ-रायहाणीओ-राजधानिया, सपुव्वावरेण-पहले और पीछे का सब मिलाकर, सारिसणामगाणि-समान नाम, परिवारा-परिवार।

भावार्थ-१० प्रश्न-हे भगवन्! नागकुमारेन्द्र नागकुमारराज, धरण के कितनी अग्रमहिषियाँ कही गई है?

१० उत्तर-हे आर्यो! उसके छह अग्रमहिषियाँ कही गई है। यथा-इला, शुक्रा, सतारा, सौदामिनी, इन्द्रा, घनविद्युत। इन प्रत्येक देवियो के छह छह हजार देवियो का परिवार कहा गया है।

११ प्रश्न-हे भगवन! इनमें से प्रत्येक देवी, अन्य छह छह हजार देवियो के परिवार की विकुर्वणा कर सकती है?

११ उत्तर-हाँ, आर्यो! कर सकती है। ये पूर्वापर सब मिलाकर छत्तीस हजार देवियो की विकुर्वणा कर सकती है। इस प्रकार यह इन देवियो का त्रुटिक कहा गया है।

प्रश्न-हे भगवन! धरणेन्द्र यावत् भोग भोगने में समर्थ है, इत्यादि प्रश्न?

उत्तर-पूर्ववत जानना चाहिए, यावत वह वहाँ मैथुन निमित्तक भोग भोगने में समर्थ नही है, इसमें इतनी विशेषता है कि राजधानी का नाम धरणा, धरण सिंहासन के विषय में स्व परिवार, शेष सब पूर्ववत् कहना चाहिये।

१२ प्रश्न-हे भगवन! नागकुमारेन्द्र, नागकुमारराज, धरण के लोकपाल कालवाल नामक महाराजा के कितनी अग्रमहिषियाँ कही गई है?

१२ उत्तर–हे आर्यो ! उसके चार अग्रमहिषियां कही गई है । यथा–अशोका, विमला, सुप्रभा और सुदशना । इनमें से एक-एक देवी का परिवार आदि वर्णन चमर के लोकपाल के समान कहना चाहिए । इसी प्रकार शेष तीन लोकपालो के विषय में भी कहना चाहिए ।

१३ प्रश्न–हे भगवन् ! भूतानन्द के कितनी अग्रमहिषियां कही गई है ?

१३ उत्तर–हे आर्यो ! उसके छह अग्रमहिषियां कही गई है । यथा–रूपा, रूपाशा, सुरूपा, रूपकावती, रूपकान्ता, रूपप्रभा । इनमें प्रत्येक देवी के परिवार आदि का वर्णन धरणेन्द्र के समान जानना चाहिए ।

१४ प्रश्न–हे भगवन ! भूतानन्द के लोकपाल नागवित्त के कितनी अग्रमहिषियां कही गई है ?

१४ उत्तर–हे आर्यो ! उसके चार अग्रमहिषियां कही गई है । यथा–सुनन्दा, सुभद्रा, सुजाता, सुमना । इनमें प्रत्येक देवी के परिवार आदि का वर्णन चमरेन्द्र के लोकपाल के समान और इसी प्रकार शेष तीन लोकपालो के विषय में भी जानना चाहिये ।

दक्षिण दिशा के इन्द्रो का कथन धरणेन्द्र के समान और उनके लोकपालो का कथन धरणेन्द्र के लोकपालो की तरह जानना चाहिये ।

उत्तर दिशा के इन्द्रो का कथन भूतानन्द के समान और उनके लोकपालो का कथन भूतानन्द के लोकपालो के समान जानना चाहिये । परन्तु इतनी विशेषता है कि सब इन्द्रो की राजधानियो का और सिंहासनो का नाम इन्द्र के नाम के समान जानना चाहिये । उनके परिवार का वणन तीसरे शतक के पहले उद्देशक में कहे अनुसार जानना चाहिये । सभी लोकपालो की राजधानियो और सिंहासनो का नाम लोकपाल के नाम के अनुसार जानना चाहिये और उनके परिवार का वणन चमरेन्द्र के लोकपालो के परिवार के वर्णन के समान जानना चाहिये ।

व्यन्तरेन्द्रो का परिवार

१५ प्रश्न–कालस्स णं भते ! पिसायिदस्स पिसायरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

१५ उत्तर–अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा–१ कमला २ कमलप्पभा ३ उप्पला ४ सुदसणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देविसहस्स, सेस जहा चमरलोगपालाण । परिवारो तहेव, णवर कालाए रायहाणीए, कालसि सीहासणसि, सेस त चेव, एव महाकालस्स वि ।

१६ प्रश्न–सुरूवस्स णं भते ! भूतिदस्स भूतरण्णो पुच्छा ।

१६ उत्तर–अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा–१ रूववई २ बहुरूवा ३ सुरूवा ४ सुभगा । तत्थ ण एगमेगाए, सेस जहा कालस्स । एव पडिरूवस्स वि ।

१७ प्रश्न–पुण्णभद्दस्स ण भते ! जक्खिदस्स पुच्छा ।

१७ उत्तर–अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा–१ पुण्णा २ बहुपुत्तिया ३ उत्तमा ४ तारया । तत्थ ण एगमेगाए, सेस जहा कालस्स । एव माणिभद्दस्स वि ।

१८ प्रश्न–भीमस्स ण भते ! रक्खसिंदस्स पुच्छा ?

१८ उत्तर–अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा–

१ पउमा २ पउमावती ३ कणगा ४ रयणप्पभा । तत्थ ण एग-मेगाए सेस जहा कालस्स । एव महाभीमस्स वि ।

कठिन शब्दाथ–पिसाइदस्स–पिशाचेन्द्र का, भूइदस्स–भूतेन्द्र का ।

भावार्थ– १५ प्रश्न–हे भगवन ! पिशाचेन्द्र पिशाचराज काल के कितनी अग्रमहिषियाँ कही गई हैं ?

१५ उत्तर–हे आर्यो ! उसके चार अग्रमहिषियाँ कही गई हैं, यथा–कमला, कमलप्रभा, उत्पला और सुदर्शना । इनमें से प्रत्येक देवी के एक एक हजार देवियो का परिवार है । शेष सब वणन चमरेन्द्र के लोकपालो के समान जानना चाहिए और परिवार भी उसी के समान जानना चाहिये । परन्तु विशेषता यह है कि इसके कालानाम की राजधानी और काल नाम का सिंहासन है । शेष सब वर्णन पहले के समान जानना चाहिये । इसी प्रकार महाकाल के विषय में भी जानना चाहिये ।

१६ प्रश्न–हे भगवन् ! भूतेन्द्र भूतराज सुरूप के कितनी अग्रमहिषियाँ कही गई हैं ?

१६ उत्तर–हे आर्या ! चार अग्रमहिषियाँ कही गई हैं । यथा रूपवती, बहुरूपा, सुरूपा और सुभगा । इन में प्रत्येक देवी के परिवार आदि का वर्णन कालेन्द्र के समान जानना चाहिये । इसी प्रकार प्रतिरूपेन्द्र के विषय में भी जानना चाहिये ।

१७ प्रश्न–हे भगवन ! यक्षेन्द्र यक्षराज पूर्णभद्र के कितनी अग्रमहिषियाँ कही गई हैं ?

१७ उत्तर–हे आर्यो ! चार अग्रमहिषिया कही हैं । यथा–पूर्णा, बहु-पुत्रिका, उत्तमा और तारका । प्रत्येक देवी के परिवार आदि का वणन कालेन्द्र के समान जानना चाहिये । इसी प्रकार माणिभद्र के विषय में भी जानना चाहिये ।

१८ प्रश्न–हे भगवन् ! राक्षसेन्द्र राक्षसराज भीम के कितनी अग्र-

विमला, सुस्वरा और सरस्वती। प्रत्येक देवी के परिवार का वर्णन पूववत जानना चाहिए। इसी प्रकार गीतयश इन्द्र के विषय में भी जानना चाहिये। इन सभी इन्द्रो का शेष सब वर्णन कालेन्द्र के समान जानना चाहिये। राजधानियो और सिंहासनो का नाम इन्द्रो के नाम के समान तथा शेष वर्णन पूर्ववत् जानना चाहिये।

विवेचन–इस सूत्र मे वाणव्यतर देवो के इन्द्र–किनर, किम्पुरुष, सत्पुरुष, महापुरुष, अतिकाय, महाकाय, गीतरति, और गीतयश –इन आठ इन्द्रो की अग्रमहिषियाँ और उन के परिवार का वणन किया गया है।

वाणव्यन्तर इन्द्रो के लोकपाल नही होते। इसलिए उनका वणन नही आया है।

ज्योतिषेन्द्र का परिवार

२३ प्रश्न–चदस्स ण भते! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो पुच्छा।

२३ उत्तर–अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा–१ चदप्पभा २ दोसिणाभा ३ अच्चिमाली ४ पभकरा। एव जहा जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए तहेव सूरस्स वि १ सूरप्पभा २ आयवाभा ३ अच्चिमाली ४ पभकरा। सेस त चेव, जाव णो चेव णं मेहुणवत्तिय।

२४ प्रश्न–इगालस्स ण भते! महग्गहस्स कइ अग्गमहिसीओ पुच्छा।

२४ उत्तर–अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा–१ विजया २ वेजयती ३ जयती ४ अपराजिया। तत्थ ण

एगमेगाए देवीए सेस त चेव चदस्स णवर इगालवडेंसए विमाणे इगालगसि सीहासणमि सेस त चेव, एव वियालगस्स वि । एव अट्ठासीतीए वि महागहाण भाणियव्व, जाव भावकेउस्स, णवर वडेंसगा सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, सेस त चेव ।

कठिन शब्दार्थ–मेहुणवत्तिय–मैथुन निमित्तक ।

भावार्थ–२३ प्रश्न–हे भगवन् ! ज्योतिषीन्द्र ज्योतिषीराज चन्द्र के कितनी अग्रमहिषियाँ कही गई हैं ?

२३ उत्तर–हे आर्यो ! चार अग्रमहिषियाँ कही गई हैं । यथा–चन्द्रप्रभा, ज्योत्स्नाभा, अर्चिमाली और प्रभकरा, इत्यादि जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति के 'ज्योतिषी' नामक दूसरे उद्देशक में कहे अनुसार जानना चाहिये । इसी प्रकार सूर्य के विषय में भी जानना चाहिये । सूर्य के चार अग्रमहिषियो के नाम ये हैं–सूर्यप्रभा, आतपाभा, अर्चिमाली, और प्रभकरा, इत्यादि पूर्वोक्त सब कहना चाहिये, यावत वे अपनी राजधानी में सिंहासन पर मैथुननिमित्तक भोग भोगने में समर्थ नहीं है ।

२४ प्रश्न–हे भगवन ! अगार नामक महाग्रह के कितनी अग्रमहिषियाँ कही गई हैं ?

२४ उत्तर–हे आर्यो ! चार अग्रमहिषिया कही गई हैं । यथा–विजया, वैजयन्ती, जयन्ती, और अपराजिता । इनकी प्रत्येक देवी के परिवार का वर्णन चन्द्रमा के समान जानना चाहिये, परन्तु इतनी विशेषता है कि इसके विमान का नाम अगारावतसक और सिंहासन का नाम अगारक है । इसी प्रकार व्याल नामक ग्रह के विषय में भी जानना चाहिये । इसी प्रकार ८८ महाग्रहो के विषय में यावत भावकेतु ग्रह तक जानना चाहिये । परन्तु अवतसक और सिंहासन का नाम इन्द्र के नाम के समान है, शेष वर्णन पूर्ववत जानना चाहिये ।

विवेचन–यहा ज्योतिषी देवो के इन्द्र, चन्द्र और सूर्य तथा ८८ महाग्रहो की अग्र

महिपिया आदि का वणन दिया गया है । ज्योतिषी इन्द्रो के भी लोकपाल नही होते, इसलिए उनका वणन नही आया है ।

२५ प्रश्न–सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो पुच्छा ?

२५ उत्तर–अज्जो ! अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा–१ पउमा २ सिवा ३ सेया ४ अजु ५ अमला ६ अच्छरा ७ णवमिया ८ रोहिणी । तत्थ ण एगमेगाए देवीए सोलस सोलस देवीसहस्सा परिवारो पण्णत्तो । (प्र०) पभू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ सोलस सोलस देविसहस्साइ परिवार विउव्वित्तए ? (उ०) एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठावीसुत्तर देविसयसहस्स परिवार विउव्वित्तए, सेत्त तुडिए ।

२६ प्रश्न–पभू ण भंते ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कसि सीहासणसि तुडिएण सद्धि, सेस जहा चमरस्स, णवर परिवारो जहा मोउद्देसए ।

२७ प्रश्न–सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ पुच्छा ।

२७ उत्तर–अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा–१ रोहिणी २ मदणा ३ चित्ता ४ सोमा । तत्थ ण एगमेगा० सेस जहा चमरलोगपालाण, णवर सयपभे विमाणे, सभाए सुहम्माए,

सोमसि सीहासणंसि, सेस त चेव, एव जाव-वेसमणस्स, णवर विमाणाइ जहा तइयसए ।

२८ प्रश्न-ईसाणस्स ण भते ! पुच्छा ।

२८ उत्तर-अज्जो ! अट्ठ अग्गमहिमीओ पण्णत्ताओ, त जहा-१ कण्हा २ कण्हराई ३ रामा ४ रामरक्खिया ५ वसू ६ वसुगुत्ता ७ वसुमित्ता ८ वसुधरा । तत्थ ण एगमेगाए सेस जहा सक्कस्स ।

२९ प्रश्न-ईसाणस्स णं भते ! देविंदस्स सोमस्स महारण्णो कइ अग्गमहिमीओ पुच्छा ।

२९ उत्तर-अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिमीओ पण्णत्ताओ । त जहा-१ पुढवी २ राई ३ रयणी ४ विज्जू । तत्थ ण० सेस जहा सक्कस्स लोगपालाण, एव जाव वरुणस्स, णवर विमाणा जहा चउत्थसए, सेम त चेव, जाव णो चेव ण मेहुणवत्तिय ।

॥ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

॥ दसमसए पचमो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-विउव्वित्तए-वैक्रिय करने के लिये ।

भावार्थ-२५ प्रश्न-हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज शक्र के कितनी अग्र महिषियाँ कही गई है ?

२५ उत्तर-हे आर्यो ! आठ अग्रमहिषियाँ कही गई है । यथा-पद्मा, शिवा, श्रेया, अञ्जू, अमला, अप्सरा, नवमिका और रोहिणी । इनमें से

प्रत्येक देवी का सोलह हजार देवियो का परिवार है। इनमें से प्रत्येक देवी, दूसरी सोलह हजार देवियो के परिवार की विकुवणा कर सकती ह। इसी प्रकार पूर्वापर मिलाकर एकलाख अट्ठाईस हजार देवियो के परिवार की विकुवणा कर सकती ह । यह एक त्रुटिक कहा गया है ।

२६ प्रश्न–हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज शक्र, सौधम देवलोक के सौधर्मावतसक विमान में, सुधर्मा सभा में, शक्र नामक सिहासन पर बठकर उस त्रुटिक के साथ भोग भोगने में समथ है ?

२६ उत्तर–हे आर्यो ! इसका सभी वणन चमरेन्द्र के समान जानना चाहिये, परन्तु इसके परिवार का वर्णन तीसरे शतक के प्रथम उद्देशक में कहे अनुसार जानना चाहिये ।

२७ प्रश्न–हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज शक्र के लोकपाल सोम महाराजा के कितनी अग्रमहिषियां कही गई ह ?

२७ उत्तर–हे आर्यो ! चार अग्रमहिषियां कही गई हे । यथा–रोहिणी, मदना, चित्रा और सोमा । इनमें से प्रत्येक देवी के परिवार का वणन चमरेन्द्र के लोकपालो के समान जानना चाहिये, परन्तु इतनी विशेषता ह कि स्वयप्रभ नामक विमान में, सुधर्मासभा में सोम नामक सिहासन पर बठकर यावत भोग भोगने में समथ नहीं, इत्यादि पूववत जानना चाहिये । इसी प्रकार यावत वैश्रमण तक जानना चाहिये, परन्तु उसके विमान आदि का वणन तृतीय शतक के सातवे उद्देशक में कहे अनुसार जानना चाहिये ।

२८ प्रश्न–हे भगवन ! देवेन्द्र देवराज ईशान के कितनी अग्रमहिषियां कही गई है ?

२८ उत्तर–हे आर्यो ! आठ अग्रमहिषियां कही गई ह । यथा–कृष्णा, कृष्णराजि, रामा, रामरक्षिता, वसु, वसुगुप्ता, वसुमित्रा और वसुन्धरा। इन देवियो के परिवार आदि का वर्णन शक्रेन्द्र के समान जानना चाहिये ।

२९ प्रश्न–हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज ईशान के सोम नामक लोकपाल

के कितनी अग्रमहिषियाँ कही गइ है ?

२९ उत्तर–हे आर्यो ! चार अग्रमहिषियाँ कही है । यथा–पृथ्वी, रात्रि, रजनी, और विद्युत् । शेष वर्णन शक्र के लोकपालो के समान है । इसी प्रकार यावत वरुण तक जानना चाहिये । परन्तु विमानो का वणन चौथे शतक के पहले दूसरे तीसरे और चौथे उद्देशक के उल्लेखानुसार जानना चाहिये । शेष पूववत्, यावत् वह मैथुन निमित्तक भोग भोगने में समथ नही है।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन ! यह इसी प्रकार है– ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते है ।

विवेचन–वैमानिक देवो मे केवल पहले और दूसरे देवलोक तक ही देविया उत्पन्न होती हैं । इसलिये यहा पहले और दूसरे देवलोक के इन्द्र तथा उनके लोकपाल आदि की अग्रमहिषियो का वणन किया गया है ।

॥ दशवें शतक का पाँचवाँ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १० उद्देशक ६

शक्रेन्द्र की सभा एवं ऋद्धि

१ प्रश्न–कहि ण भते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?

१ उत्तर–गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्पभाए एव जहा रायप्पसणइज्जे, जाव पच वडेंसगा

पण्णत्ता, त जहा–१ असोगवडेंसए, जाव मज्झे ५ सोहम्मवडेंसए। से णं सोहम्मवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइ आयामविक्खभेणं,

"एव जह सूरियाभे तहेव माणं तहेव उववाओ।
सक्कस्स य अभिसेओ तहेव जह सूरियाभस्स ॥१॥
अलकारअच्चणिया तहेव जाव आयरक्ख त्ति।"

दो सागरोवमाइ ठीई।

२ प्रश्न–सक्केण भते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढिए, जाव केमहासोक्खे।

२ उत्तर–गोयमा ! महिड्ढिए जाव महासोक्खे। से ण तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साण जाव विहरइ, एव महिड्ढिए जाव महासोक्खे सक्के देविंदे देवराया।

॥ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

॥ दसमसए छट्ठओ उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ वडेंसगा–अवतसक–महल, महासोक्खे–महान सुखवाला।

भावार्थ–१ प्रश्न–हे भगवन ! देवेन्द्र देवराज शक्र की सुधर्मा सभा कहाँ है ?

१ उत्तर–हे गौतम ! इस जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दक्षिण दिशा में, इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुसम रमणीय भूमि-भाग से बहुत कोटाकोटि योजन दूर ऊँचाई में, सौधर्म नामक देवलोक में सुधर्मा सभा है। इत्यादि 'राजप्रश्नीय'

सूत्र के अनुसार यावत् पांच अवतसक विमान कहे गये है। यथा–अशोकावतसक, यावत् मध्य में सौधर्मावतसक विमान है। उसकी लम्बाई और चौडाई साढे बारह लाख योजन है। शक्र का उपपात, अभिषेक, अलङ्कार और अर्चनिका यावत् आत्मरक्षक इत्यादि सारा वणन सूर्याभ देव के समान जानना चाहिये, किन्तु प्रमाण जो शक्रेन्द्र का है वही कहना चाहिये। शक्रेन्द्र की स्थिति दो सागरोपम की है।

२ प्रश्न–हे भगवन्! देवेन्द्र देवराज शक्र कितना महाऋद्धिशाली और कितना महासुखी है?

२ उत्तर–हे गौतम! वह महाऋद्धिशाली यावत् महासुखी है। वह बत्तीस लाख विमानो का स्वामी है, यावत् विचरता है। देवेन्द्र देवराज शक्र इस प्रकार की महाऋद्धि और महासुखवाला है।

हे भगवन्! यह इसी प्रकार है। हे भगवन्! यह इसी प्रकार है। ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत विचरते है।

विवेचन–सूर्याभ देव का वणन राजप्रश्नीय सूत्र मे बहुत विस्तार के साथ किया गया है। यहा शक्रेन्द्र के उपपात आदि के वणन के लिये उसी का अतिदेश किया गया है। अत इसका वणन सूर्याभ देव के समान जानना चाहिये।

॥ दसवे शतक का छठा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १० उद्देशक ७-३४

एकोरुक आदि अन्तर द्वीप

१ प्रश्न–कहि ण भंते! उत्तरिल्लाण एगोरुयमणुस्साण एगोरुयदीवे णाम दीवे पण्णत्ते?

१ उत्तर-एव जहा जीवाभिगमे तहेव णिरवसेस, जाव सुद्धदतदीवो त्ति । एए अट्ठावीस उद्देसगा भाणियव्वा ।

॥ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

॥ दसमसए सत्तमादि चोत्तीसइमपज्जता अट्ठावीस उद्देसा समत्ता ॥

॥ समत्त दसम सय ॥

कठिन शब्दार्थ-कहिण-कहाँ ।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन ! उत्तर दिशा में रहने वाले एकोरुक मनुष्यो का एकोरुक नामक द्वीप कहाँ है ?

१ उत्तर-हे गौतम ! एकोरुप द्वीप से लगाकर यावत शुद्धदन्त द्वीप तक समस्त अधिकार जीवाभिगम सूत्र में कहे अनुसार कहना चाहिये । प्रत्येक द्वीप के विषय में एक एक उद्देशक है । इस प्रकार अट्ठाईस द्वीपो के अट्ठाईस उद्देशक होते है ।

हे भगवन ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत विचरते है ।

विवेचन-दक्षिण दिशा मे अट्ठाईस अन्तरद्वीप हैं और इसी प्रकार उत्तर दिशा मे भी अट्ठाईस अतरद्वीप है । दक्षिण दिशा के अन्तरद्वीपो का वर्णन पहले नौवे शतक मे हो गया है । उसी के अनुसार उत्तर दिशा के अतरद्वीपो का वर्णन भी जानना चाहिये । इन सब के विस्तृत वर्णन के लिये जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति के पहले उद्देशक का अतिदेश किया गया है ।

॥ दसवें शतक के ७ से ३४ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

॥ दसवा शतक सम्पूर्ण ॥

शतक ११

१–उप्पल सालु पलासे कुभी नाली य पउम कण्णिय ।
णलिण सिव लोग काला-लभिय दस दो य एक्कारे ॥

भावार्थ–१–ग्यारहवें शतक में बारह उद्देशक हैं। यथा–१ उत्पल, २ शालूक, ३ पलाश, ४ कुम्भी, ५ नाडीक, ६ पद्म, ७ कर्णिका, ८ नलिन, ९ शिव-राजर्षि, १० लोक, ११ काल और १२ आलभिक ।

उद्देशक 1

उत्पल के जीव

२ तेण कालेण तेणं समएणं रायगिहे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी–

प्रश्न–उप्पले णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ?

२ उत्तर–गोयमा ! एगजीवे, णो अणेगजीवे । तेण पर जे अण्णे जीवा उववज्जति तेणं णो एगजीवे, अणेगजीवे ।

३ प्रश्न–ते णं भंते ! जीवा कओहितो उववज्जति ? किं णेरइएहितो उववज्जति, तिरि० मणु० देवेहितो उववज्जति ?

३ उत्तर-गोयमा ! णो णेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्ख-जोणिएहितो वि उववज्जति मणुस्सेहितो० देवेहिंतो वि उववज्जति । एव उववाओ भाणियव्वो जहा वक्कतीए वणस्सइकाइयाण जाव ईसाणेति ।

४ प्रश्न-ते णं भते ! जीवा एगसमए णं केवइआ उववज्जति ?

४ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति ।

५ प्रश्न-ते णं भते ! जीवा समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा केवइकालेण अवहीरति ?

५ उत्तर-गोयमा ! ते णं असखेज्जा समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा असखेज्जाहि उस्सप्पिणिओसप्पिणिहि अवहीरति, णो चेव णं अवहिया सिया ।

६ प्रश्न-तेसि ण भते ! जीवाण केमहालिआ सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

६ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण साइरेग जोयणसहस्स ।

कठिन शब्दार्थ-कओहिंतो-कहा से, केवइआ-कितने, अवहीरमाणा-अपहृत किये जाते हुए, केमहालिआ-कितनी बडी ।

भावार्थ-२ उस काल उस समय में, राजगृह नगर में पर्युपासना करते हुए गौतम स्वामी यावत इस प्रकार बोले-

प्रश्न-हे भगवन् ! एक पत्ते वाला उत्पल (कमल) एक जीव वाला है, या अनेक जीवो वाला ?

१ उत्तर-हे गौतम ! एक पत्र वाला उत्पल एक जीव वाला है, अनेक जीवो वाला नहीं। जब उस उत्पल में दूसरे जीव (जीवाश्रित पत्ते आदि अवयव) उत्पन्न होते है, तब वह एक जीव वाला नहीं रह कर अनेक जीव वाला होता है।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! उत्पल में वे जीव कहाँ से आकर उत्पन्न होते है ? नैरयिक से, तिर्यञ्च से, मनुष्य से या देव से आकर उत्पन्न होते है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! वे जीव नरक से आकर उत्पन्न नही होते, वे तिर्यञ्च से, मनुष्य से या देव से आकर उत्पन्न होते है। यहा प्रज्ञापना सूत्र के छठे व्युत्क्रान्तिपद के 'वनस्पतिकायिक जीवो में यावत् ईशान देवलोक तक के जीवो का उपपात होता है'-तक कहना चाहिये।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! उत्पल में वे जीव एक समय में कितने उत्पन्न होते है ?

४ उत्तर-हे गौतम ! वे जीव, एक समय में जघन्य एक दो या तीन और उत्कृष्ट सख्यात या असख्यात उत्पन्न होते है।

५ प्रश्न-हे भगवन ! उन उत्पल के जीवो को प्रतिसमय निकाला जाय तो कितने काल में वे पूरे निकाले जा सकते है ?

५ उत्तर-हे गौतम ! उत्पल के उन असख्यात जीवो में से प्रतिसमय एक-एक जीव निकाला जाय, तो असख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल बीत जाय तो भी वे सम्पूण रूप से नहीं निकाले जा सकते। इस प्रकार किसी ने किया नहीं और कर भी नहीं सकता।

६ प्रश्न-हे भगवन ! उन उत्पल के जीवो के शरीर की अवगाहना कितनी बडी होती है ?

६ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अगुल के असख्यातवे भाग और उत्कृष्ट कुछ अधिक एक हजार योजन होती है।

विवेचन-जब उत्पल एक पत्र वाला होता है, तब उसकी वह अवस्था किशलय

अवस्था से ऊपर की होती है। जब उसके अधिक पत्त उत्पन्न होते ह तब वह अनेक जीव वाला हो जाता है। उसमे वे जीव नरक गति से आकर उत्पन्न नही ह.ते, शष तीन गतियो से आकर उत्पन्न हाते हैं। वे एक समय मे जघन्य एक दो या तीन, उत्कृष्ट सख्यात या असख्यात उत्पन्न होते हैं। उन असख्यातो का परिमाण बताने के लिय कहा गया है कि यदि उनमे से प्रति समय एक एक जीव निकाला जाय तो असख्यात उत्सर्पिणी और अव सर्पिणी पूरी हो जाने पर भी वे निर्लेप नही हो सकते, अर्थात सम्पूण रूप से नही निकाले जा सकते। किसी ने ऐसा कभी किया नही और कर भी नही सकता, क्योकि इतने समय तक न तो वे वनस्पति के जीव रहते हैं और न गणना करने वाला ही रहता है। इन जीवा के शरीर की अवगाहना जघन्य अगुल के असख्य भाग जितनी और उत्कृष्ट कुछ अधिक हजार योजन की होती है।

यहा टीका मे प्रथम उद्देशक के अथ सग्रह की गाथाएँ दी गई हैं। वे इस प्रकार हैं-

उववाओ परिमाण, अवहारुच्चत्त बध वेदे य।
उदए उदीरणाए लेस्सा दिट्ठि य णाणे य ॥१॥
जोगुवओगे वण्ण रसमाई, ऊसासगे य आहारे।
विरई किरिया बधे, सण्ण कसायित्थि बधे य ॥२॥
सण्णिदिय अणुबधे, सवेहाहार ठिइ समुग्घाए।
चयण मूलादीसु य, उववाओ सव्व जीवाण ॥३॥

अथ-१ उपपात, २ परिमाण, ३ अपहार, ४ ऊँचाई-अवगाहना ५ बध ६ वेद ७ उदय ८ उदीरणा ९ लेश्या १० दष्टि ११ ज्ञान १२ योग १३ उपयोग १४ वण १५ रसादि १६ उच्छ्वास १७ आहार १८ विरति १९ क्रिया २० बधक २१ सज्ञा २२ कषाय २३ स्त्री वेदादि २४ बध २५ सज्ञी २६ इन्द्रिय २७ अनुबध २८ सवेध २९ आहार ३० स्थिति ३१ समुद्घात ३२ च्यवन और ३३ सभी जीवो का मूलादि मे उपपात।

इन द्वारो मे से उपपात, परिमाण, अपहार और ऊँचाई अर्थात् शरीर की अवगाहना-इन चार द्वारो का वणन ऊपर किया गया है शेष द्वारो का वणन आगे किया जायगा।

७ प्रश्न-ते ण भते! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बधगा अबधगा?

७ उत्तर-गोयमा ! णो अवधगा, वधए वा, वधगा वा । एव जाव अतराइयस्म ।

८ प्रश्न-णवर आउयस्स पुच्छा ।

८ उत्तर-गोयमा ! १ वधए वा, २ अवधए वा, ३ वधगा वा, ४ अवधगा वा, ५ अहवा वधए य अवधए य, ६ अहवा वधए य अवधगा य, ७ अहवा वधगा य अवधए य, ८ अहवा वधगा य अवधगा य एते अट्ठ भगा ।

९ प्रश्न-ते ण भते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेयगा अवेयगा ?

९ उत्तर-गोयमा ! णो अवेयगा, वेयए वा वेयगा वा । एव जाव अतराइयस्म ।

१० प्रश्न-ते णं भते ! जीवा किं सायावेयगा असायावेयगा ?

१० उत्तर-गोयमा ! सायावेयए वा असायावेयए वा अट्ठ भगा ।

११ प्रश्न-ते ण भते ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदई अणुदई ?

११ उत्तर-गोयमा ! णो अणुदई, उदई वा उदइणो वा । एव जाव अतराइयस्स ।

१२ उत्तर-ते ण भते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदीरगा अणुदीरगा ?

१२ उत्तर-गोयमा ! णो अणुदीरगा, उदीरए वा उदीरगा वा । एव जाव अतराइयस्स । णवर वेयणिज्जा उएसु अट्ठ भगा ।

कठिनशब्दार्थ-सायावेयगा सातावेदक-सुख का अनुभव करने वाले ।

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन ! वे उत्पल के जीव, ज्ञानावरणीय कर्म के बधक है या अबन्धक ?

७ उत्तर-हे गौतम ! वे ज्ञानावरणीय कर्म के अबन्धक नही, बधक है । एक जीव हो, तो एक बधक है और अनेक जीव हो, तो अनेक बधक है । इस प्रकार आयुष्य को छोड कर अन्तराय कर्म तक समझना चाहिये ।

८ प्रश्न-हे भगवन ! वे जीव, आयुष्यकर्म के बन्धक है या अबन्धक ?

८ उत्तर-हे गौतम ! उत्पल का एक जीव बधक है, २ एक जीव अबधक है, ३ अनेक जीव बधक है, ४ अनेक जीव अबन्धक है । ५ अथवा एक जीव बन्धक और एक जीव अबन्धक है, ६ अथवा एक बन्धक और अनेक अबन्धक है, ७ अथवा अनेक बन्धक और एक अबन्धक है, ८ अथवा अनेक बन्धक और अनेक अबन्धक है,-इस प्रकार ये आठ भग होते है ।

९ प्रश्न-हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव ज्ञानावरणीय कर्म के वेदक है, या अवेदक है ?

९ उत्तर-हे गौतम ! वे अवेदक नही, वेदक है । एक जीव हो तो एक जीव वेदक है और अनेक जीव हो, तो अनेक जीव वेदक है । इसी प्रकार यावत् अन्तराय कर्म तक जानना चाहिये ।

१० प्रश्न-हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव साता वेदक है या असाता वेदक है ?

१० उत्तर-हे गौतम ! एक जीव साता वेदक है या एक जीव असाता

वेदक है । इत्यादि पूर्वोक्त आठ भग जानने चाहिये ।

११ प्रश्न–हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव ज्ञानावरणीय कर्म के उदय वाले है या अनुदय वाले ?

११ उत्तर–हे गौतम ! वे जीव, ज्ञानावरणीय-कर्म के अनुदय वाले नहीं, परन्तु एक एक जीव हो तो एक और अनेक जीव हो, तो अनेक (–सभी जीव) उदय वाले है । इसी प्रकार यावत अन्तराय कर्म तक जानना चाहिये ।

१२ प्रश्न–हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव, ज्ञानावरणीय-कर्म के उदीरक है या अनुदीरक ?

१२ उत्तर–हे गौतम ! वे अनुदीरक नहीं, परन्तु एक जीव हो तो एक और अनेक जीव हो तो अनेक जीव उदीरक है । इसी प्रकार यावत् अन्तराय-कर्म तक जानना चाहिये । परन्तु इतनी विशेषता है कि वेदनीय-कर्म और आयुष्य-कर्म में पूर्वोक्त आठ भग कहने चाहिये ।

विवेचन–उत्पल के प्रारम्भ मे जब वह एक ही पत्त वाला होता है तब एक ही जीव होने से एक जीव ज्ञानावरणीय आदि कर्मो का बन्धक होता है, परन्तु जब वह अनेक पत्तो वाला हो जाता है तब उसमे अनेक जीव होने से अनेक जीव बन्धक होते हैं । आयुष्य कर्म तो सम्पूर्ण जीवन मे एक ही बार बधता है उस बधकाल के अतिरिक्त जीव आयुष्य कर्म का अबधक होता है । इसलिये आयुष्य कर्म के बन्धक और अबन्धक की अपेक्षा आठ भग होते हैं अर्थात असयोगी चार और द्विक सयोगी चार भग होते हैं ।

वेदक द्वार मे भी एकवचन और बहुवचन की अपेक्षा दो भग होते हैं । परन्तु साता-वेदनीय और असातावेदनीय की अपेक्षा पूर्वोक्त आठ भग होते हैं । उदीरणाद्वार मे छह कर्मो मे दो भग होते हैं और वेदनीय तथा आयुष्य कर्म के पूर्वोक्त आठ भग होते हैं ।

१३ प्रश्न–ते ण भते ! जीवा किं कण्हलेसा णीललेसा काउलेसा तेउलेसा ?

१३ उत्तर–गोयमा ! कण्हलेसे वा जाव तेउलेसे वा कण्ह-

लेस्सा वा णीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा । अहवा कण्हलेसे य णीललेस्से य, एव एए दुयासजोग-तियासजोग-चउक्क-सजोगेणं असीती भगा भवति ।

१४ प्रश्न–ते ण भते ! जीवा किं सम्मद्दिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ?

१४ उत्तर–गोयमा ! णो सम्मद्दिट्ठी णो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी वा मिच्छादिट्ठीणो वा ।

१५ प्रश्न–ते ण भते ! जीवा किं णाणी अण्णाणी ?

१५ उत्तर–गोयमा ! णो णाणी, अण्णाणी वा अण्णाणिणो वा ।

१६ प्रश्न–ते ण भते ! जीवा कि मणजोगी, वयजोगी, काय-जोगी ?

१६ उत्तर–गोयमा ! णो मणजोगी, णो वयजोगी, कायजोगी वा, कायजोगिणो वा ।

कठिन शब्दार्थ–असीती–अस्सी ।

भावार्थ–१३ प्रश्न–हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव, कृष्ण लेश्या वाले, नील-लेश्या वाले, कापोत-लेश्या वाले या तेजो-लेश्या वाले होते हैं ?

१३ उत्तर–हे गौतम ! एक जीव कृष्ण-लेश्या वाला यावत् एक जीव तेजो-लेश्या वाला होता है । अथवा अनेक जीव कृष्ण लेश्या वाले या अनेक जीव नील-लेश्या वाले, या अनेक जीव कापोत-लेश्या वाले अनेक जीव तेजो लेश्या

वाले होते है । अथवा एक जीव कृष्णलेश्या वाला और एक जीव नीललेश्या वाला होता है । इस प्रकार द्विक सयोगी, त्रिकसयोगी और चतु सयोगी सब मिलकर अस्सी भग होते है ।

१४ प्रश्न–हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव सम्यग्दृष्टि है, मिथ्यादृष्टि है अथवा सम्यग्मिथ्यादृष्टि है ?

१४ उत्तर–हे गौतम ! वे सम्यग्दृष्टि नही, सम्यग्मिथ्यादृष्टि भी नहीं, वे एक हो या अनेक, सभी जीव मिथ्यादृष्टि ही है ।

१५ प्रश्न–हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव ज्ञानी है, अथवा अज्ञानी ?

१५ उत्तर–हे गौतम ! वे ज्ञानी नही, परन्तु एक हो या अनेक, सभी जीव अज्ञानी है ।

१६ प्रश्न–हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव मनयोगी, वचन-योगी और काय योगी है ?

१६ उत्तर–हे गौतम ! वे मन योगी नहीं, वचन योगी भी नहीं, वे एक हो या अनेक–सभी जीव काययोगी है ।

विवेचन–उत्पल वनस्पतिकायिक है, इसलिय उसमे पहले की चार लेश्याएँ पाई जाती है । एक मयोगी एक जीव के चार और अनेक जीवा के चार, य एक सयागी (अस-योगी) आठ भग होते हैं । द्विक सयोगी मे एक और अनेक की चतुभगी होती है । कृष्णादि चार लेश्याओ के छह द्विक सयोग हात हैं । इन छह को पूर्वोक्त चतुर्भगी से गुणा करने पर चौवीम भग होते है । चार लेश्या के त्रिकसयागी आठ विकल्प होते हैं । इनको पूर्वोक्त चतु-भगी के साथ गुणा करने से त्रिक सयोगी बत्तीस भग होते है । चतु सयोगी सालह भग होते है । य सब मिलकर अस्सी भग होते है । वे इस प्रकार है–

असयोगी आठ भग–

१ कृष्ण का एक, २ नील का एक, ३ कापात का एक, ४ तेजो का एक
५ कृष्ण के बहुत ६ नील के बहुत ७ कापोत के बहुत और ८ तेजो के बहुत,

द्विक सयोगी २४ भग

१ कृष्ण का एक, नील का एक । ३ कृष्ण क बहुत, नील का एक ।
२ कृष्ण का एक, नील के बहुत । ४ कृष्ण के बहुत, नील के बहुत ।

५ कृष्ण का एक, कापोत का एक ।
६ कृष्ण का एक, कापोत के बहुत ।
७ कृष्ण के बहुत, कापोत का एक ।
८ कृष्ण के बहुत, कापोत के बहुत ।
९ कृष्ण का एक, तेजो का एक ।
१० कृष्ण का एक, तेजो के बहुत ।
११ कृष्ण के बहुत, तेजो का एक ।
१२ कृष्ण के बहुत, तेजो के बहुत ।
१३ नील का एक, कापोत का एक ।
१४ नील का एक, कापोत के बहुत ।
१५ नील के बहुत, कापोत का एक ।
१६ नील के बहुत, कापोत के बहुत ।
१७ नील का एक, तेजो का एक ।
१८ नील का एक तेजो के बहुत ।
१९ नील के बहुत, तेजो का एक ।
२० नील के बहुत तेजो के बहुत ।
२१ कापोत का एक, तेजो का एक ।
२२ कापोत का एक, तेजो के बहुत ।
२३ कापोत के बहुत, तेजो का एक ।
२४ कापोत के बहुत, तेजो के बहुत ।

त्रिक संयोगी ३२ भंग—

१ कृष्ण का एक, नील का एक, कापोत का एक ।
२ कृष्ण का एक, नील का एक, कापोत के बहुत ।
३ कृष्ण का एक, नील के बहुत, कापोत का एक ।
४ कृष्ण का एक, नील के बहुत, कापोत के बहुत ।
५ कृष्ण के बहुत, नील का एक, कापोत का एक ।
६ कृष्ण के बहुत, नील का एक, कापोत के बहुत ।
७ कृष्ण के बहुत, नील के बहुत, कापोत का एक ।
८ कृष्ण के बहुत नील के बहुत, कापोत के बहुत ।
९ कृष्ण का एक, नील का एक, तेजो का एक ।
१० कृष्ण का एक, नील का एक, तेजो के बहुत ।
११ कृष्ण का एक, नील के बहुत, तेजो का एक ।
१२ कृष्ण का एक, नील के बहुत, तेजो का एक ।
१३ कृष्ण के बहुत, नील का एक, तेजो का एक ।
१४ कृष्ण के बहुत, नील का एक, तेजो के बहुत ।
१५ कृष्ण के बहुत, नील के बहुत, तेजो का एक ।
१६ कृष्ण के बहुत, नील के बहुत, तेजो के बहुत ।
१७ कृष्ण का एक, कापोत का एक, तेजो का एक ।

१८ कृष्ण का एक, कापोत का एक, तेजो के बहुत ।
१९ कृष्ण का एक कापोत के बहुत, तेजो का एक ।
२० कृष्ण का एक, कापोत के बहुत तेजो के बहुत ।
२१ कृष्ण के बहुत, कापोत का एक तेजो का एक ।
२२ कृष्ण के बहुत, कापोत का एक, तेजा के बहुत ।
२३ कृष्ण के बहुत, कापोत के बहुत, तेजो का एक ।
२४ कृष्ण के बहुत, कापोत के बहुत, तेजो के बहुत ।
२५ नील का एक, कापोत का एक, तेजो का एक ।
२६ नील का एक, कापोत का एक, तेजो के बहुत ।
२७ नील का एक, कापोत के बहुत, तेजो का एक ।
२८ नील का एक, कापात के बहुत, तेजो के बहुत ।
२९ नील के बहुत, कापोत का एक तेजो का एक ।
३० नील के बहुत, कापोत का एक, तेजो के बहुत ।
३१ नील के बहुत, कापोत के बहुत, तेजो का एक ।
३२ नील के बहुन, कापोत के बहुत, तेजो के बहुत ।

चतु सयोगी १६ भग–

१ कृष्ण का एक, नील का एक, कापोत का एक तेजो का एक ।
२ कृष्ण का एक नील का एक, कापोन का एक, तेजो के बहुत ।
३ कृष्ण का एक नील का एक कापोत के बहुत तेजा का एक ।
४ कृष्ण का एक, नील का एक कापोत के बहुन तेजा के बहुत ।
५ कृष्ण का एक नील के बहुत, कापोत का एक, तेजो का एक ।
६ कष्ण का एक, नील क बहुत, कापोत का एक तेजो के बहुत ।
७ कष्ण का एक नील के बहुत, कापोत के बहुत, तेजो का एक ।
८ कष्ण का एक, नील के बहुत, कापोत के बहुत, तेजो के बहुत ।
९ कष्ण के बहुत, नील का एक, कापोत का एक तेजो का एक ।
१० कष्ण के बहुत नील का एक, कापात का एक, तेजा के बहुत ।
११ कृष्ण के बहुत, नील का एक कापोत के बहुत, तेजा का एक ।
१२ कृष्ण के बहुत, नील का एक, क पात के बहुत, तेजो के बहुत ।

१३ कृष्ण के बहुत, नील के बहुत, कापोत का एक, तेजो का एक ।

१४ कृष्ण के बहुत, नील के बहुत, कापोत का एक, तेजो के बहुत ।

-१५ कृष्ण के बहुत, नील के बहुत, कापोत के बहुत, तेजो का एक ।

१६ कृष्ण के बहुत, नील के बहुत, कापोत के बहुत , तेजो के बहुत ।

दृष्टिद्वार, ज्ञान द्वार और योग द्वार का विषय स्पष्ट है । उत्पल के जीव एकान्त मिथ्यादृष्टि और अज्ञानी हैं । वे एकेन्द्रिय हैं, इसलिये उनके केवल एक काययोग ही है, मन योग और वचन योग नही है ।

१७ प्रश्न–ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता, अणागारोवउत्ता ?

१७ उत्तर–गोयमा ! सागारोवउत्ते वा, अणागारोवउत्ते वा अट्ठ भंगा ।

१८ प्रश्न–तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा कइवण्णा, कइगंधा, कइरसा, कइफासा पण्णत्ता ?

१८ उत्तर–गोयमा ! पंचवण्णा पंचरसा दुगंधा अट्ठफासा पण्णत्ता । ते पुण अप्पणा अवण्णा अगंधा अरसा अफासा पण्णत्ता ।

१९ प्रश्न–ते णं भंते ! जीवा किं उस्सासगा णिस्सासगा णोउस्सासणिस्सासगा ?

१९ उत्तर–गोयमा ! उस्सासए वा णिस्सासए वा णोउस्सासणिस्सासए वा, उस्सासगा वा णिस्सासगा वा णोउस्सासणिस्सा-

मगा वा, अहवा उस्सासए य णिस्सासए य, अहवा उस्सासए य णोउस्सासणिस्सामए य, अहवा णिस्मासए य णोउस्सासणिस्सासए य, अहवा उस्मामए य णिस्सामए य णोउस्सासणिस्सासए य। अट्ठ भगा। एए छव्वीस भगा भवति।

२० प्रश्न–ते ण भते ! जीवा कि आहारगा अणाहारगा ?

२० उत्तर–गोयमा ! णो अणाहारगा, आहारए वा, अणाहारए वा एव अट्ठ भगा।

कठिन शब्दार्थ–सागारोवउत्ता–साकारोपयुक्त–ज्ञानोपयोग सहित, अणागारोवउत्ता–अनाकारोपयुक्त–दर्शनोपयोग सहित।

भावार्थ–१७ प्रश्न–हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव साकारोपयोग (ज्ञानोपयोग) वाले हैं या अनाकारोपयोग (दर्शनोपयोग) वाले हैं ?

१७ उत्तर–हे गौतम ! एक जीव साकारोपयोग वाला है अथवा एक जीव अनाकारोपयोग वाला है। इत्यादि पूर्वोवत आठ भग कहना चाहिये।

१८ प्रश्न–हे भगवन् ! उन उत्पल के जीवो का शरीर कितने वर्ण, कितने गन्ध, कितने रस और कितने स्पर्श वाला है ?

१८ उत्तर–हे गौतम ! पाँच वर्ण, पाँच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श वाला है। जीव स्वय वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श रहित है।

१९ प्रश्न–हे भगवन ! वे उत्पल के जीव उच्छवासक हैं, निश्वासक हैं, या अनुच्छवासकनिश्वासक है ?

१९ उत्तर–हे गौतम ! १ कोई एक जीव उच्छवासक है, या २ कोई एक जीव निश्वासक है, ३ या कोई एक जीव अनुच्छवासकनिश्वासक है, ४ या अनेक जीव उच्छवासक हैं, ५ या अनेक जीव निश्वासक हैं, ६ या अनेक जीव अनुच्छ्वासकनिश्वासक है, (७–१०) अथवा एक उच्छवासक और एक

निश्वासक है, इत्यादि (११-१४) अथवा एक उच्छवासक और एक अनुच्छ्वासकनिश्वासक है, इत्यादि (१५-१८) अथवा एक नि श्वासक और एक अनुच्छ्वासकनिश्वासक है, इत्यादि। (१९-२६) अथवा एक उच्छवासक, एक निश्वासक और एक अनुच्छवासकनिश्वासक है, इत्यादि आठ भग होते हैं। ये सब मिलकर छब्बीस भग हो जाते हैं।

२० प्रश्न-हे भगवन्! वे उत्पल के जीव आहारक हैं या अनहारक?

२० उत्तर-हे गौतम! वे सब अनाहारक नहीं, किन्तु कोई एक जीव आहारक है अथवा कोई एक जीव अनाहारक है, इत्यादि आठ भग कहने चाहिये।

विवेचन-पाच ज्ञान और तीन अज्ञान को 'साकारोपयोग' कहते है और चार दशन को 'अनाकारोपयोग' कहते हैं।

उत्पल के शरीर वण, गन्ध रस और स्पश वाले है किन्तु वे जीव वर्णादि से रहित हैं, क्योकि जीव तो अमूत हैं।

अपर्याप्त अवस्था मे जीव अनुच्छवासकनिश्वासक होता है। उच्छवासकनिश्वासक द्वार के छब्बीस भग बनते हैं। असयोगी एक और अनेक के योग से छह भग बनते है। द्विक सयोगी बारह और त्रिक सयोगी आठ भग बनते है। वे इस प्रकार है।

असयोगी ६ भग-

१ उच्छवासक एक। २ नि श्वासक एक। ३ नोउच्छवासकनि श्वासक एक।
४ उच्छवासक बहुत। ५ नि श्वासक बहुत। ६ नोउच्छवासकनि श्वासक बहुत।

द्विक सयोगी १२ भग-

१ उच्छवासक एक, नि श्वासक एक। ७ उच्छवासक बहुत, नोउच्छवासकनि श्वासक एक।
२ उच्छवासक एक, नि श्वासक बहुत। ८ उच्छवासक बहुत, नोउच्छवासकनि श्वासक बहुत।
३ उच्छ्वासक बहुत, नि श्वासक एक। ९ नि श्वासक एक, नोउच्छवासकनि श्वासक एक।
४ उच्छ्वासक बहुत, नि श्वासक बहुत। १० नि श्वासक एक, नोउच्छवासकनि श्वासक बहुत।
५ " एक, नोउच्छ्वासकनि वासक एक ११ " बहुत, नोउच्छवासकनि श्वासक एक।
६ " एक, नोउच्छवासकनि श्वासक बहुत १२ " बहुत, नोउच्छवासकनि श्वासक बहुत।

त्रिकसयोगी ८ भग–

१ उच्छवासक एक, नि श्वासक एक, नोउच्छवासकनि श्वासक एक ।
२ उच्छवासक एक नि श्वासक एक, नोउच्छवासकनि श्वासक बहुत ।
३ उच्छवासक एक नि श्वासक बहुत, नोउच्छवासकनि श्वासक एक ।
४ उच्छवासक एक, नि श्वासक बहुत, नोउच्छवासकनि श्वासक बहुत ।
५ उच्छवासक बहुत, नि श्वासक एक, नोउच्छवासकनि श्वासक एक ।
६ उच्छ्वासक बहुत, नि श्वासक एक, नोउच्छवासकनि श्वासक बहुत ।
७ उच्छवासक बहुत, नि श्वासक बहुत, नोउच्छवासकनि श्वासक एक ।
८ उच्छ्वासक बहुत, नि श्वासक बहुत, नोउच्छ्वासकनि श्वासक बहुत ।

आहारक द्वार के विषय मे यह समझना चाहिये कि विग्रह गति मे जीव अनाहारक होता है और शेष समय मे आहारक होता है, इसलिये आहारक अनाहारक के आठ भग कहे गये है ।

२१ प्रश्न–ते णं भंते ! जीवा किं विरया अविरया विरयाविरया ?

२१ उत्तर–गोयमा ! णो विरया णो विरयाविरया, अविरिए वा अविरया वा ।

२२ प्रश्न–ते णं भंते ! जीवा किं सकिरिया अकिरिया ?

२२ उत्तर–गोयमा ! णो अकिरिया, सकिरिए वा सकिरिया वा ।

२३ प्रश्न–ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविहबंधगा अट्ठविहबंधगा ?

२३ उत्तर–गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा ।

अट्ठ भगा ।

२४ प्रश्न–ते ण भते ! जीवा कि आहारसण्णोवउत्ता भय-सण्णोवउत्ता मेहुणमण्णोवउत्ता, परिग्गहसण्णोवउत्ता ?

२४ उत्तर–गोयमा ! आहारमण्णोवउत्ता वा असीर्ती भगा ।

२५ प्रश्न–ते ण भते ! जीवा कि कोहकसायी माणकसायी मायाकमायी लोभकमायी ?

२५ उत्तर– असीती भगा ।

२६ प्रश्न– ते ण भते ! जीवा कि इत्थिवेयगा पुरिसवेयगा णपुसगवेयगा ?

२६ उत्तर–गोयमा ! णो इत्थिवेयगा णो पुरिसवेयगा, णपु-सगवेयए वा णपुसगवेयगा वा ।

२७ प्रश्न–ते णं भते ! जीवा कि इत्थिवेयबधगा पुरिसवेय-बधगा णपुमगवेयबधगा ?

२७ उत्तर–गोयमा ! इत्थिवेयबधए वा पुरिमवेयबधए वा णपुसगवेयबधए वा छव्वीस भगा ।

२८ प्रश्न–ते ण भते ! जीवा कि सण्णी असण्णी ?

२८ उत्तर–गोयमा ! णो सण्णी, असण्णी वा असण्णीणो वा ।

२९ प्रश्न–ते ण भते ! जीवा कि सइदिया अणिदिया ?

२९ उत्तर–गोयमा ! णो अणिंदिया, सइदिए वा सइदिया वा ।

कठिन शब्दार्थ-विरया-विरत ।

भावार्थ-२१ प्रश्न-हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव सर्वविरत है, अविरत है, या विरताविरत है ?

२१ उत्तर-हे गौतम ! वे सर्वविरत नहीं और विरताविरत भी नहीं, किन्तु एक जीव अथवा अनेक जीव अविरत ही हैं ।

२२ प्रश्न-हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव सक्रिय है, या अक्रिय ?

२२ उत्तर-हे गौतम ! वे एक हो या अनेक, अक्रिय नहीं, सक्रिय है ।

२३ प्रश्न-हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव सप्तविध बन्धक है, या अष्ट-विध बन्धक ?

२३ उत्तर-हे गौतम ! वे जीव सप्तविध बन्धक है अथवा अष्टविध बन्धक है । यहाँ पूर्वोक्त आठ भग कहना चाहिये ।

२४ प्रश्न-हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव, आहार सज्ञा के उपयोग वाले, भयसज्ञा के उपयोग वाले, मैथुन सज्ञा के उपयोग वाले और परिग्रह सज्ञा के उपयोग वाले है ?

२४ उत्तर-हे गौतम ! वे आहारसज्ञा के उपयोग वाले है, इत्यादि लेश्या-द्वार के समान अस्सी भग कहना चाहिये ।

२५ प्रश्न-हे भगवन ! वे उत्पल के जीव, क्रोध कषायी, मान कषायी, माया कषायी और लोभ कषायी है ?

२५ उत्तर-हे गौतम ! यहाँ भी पूर्वोक्त अस्सी भग कहना चाहिये ।

२६ प्रश्न-हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव स्त्रीवेद वाले, पुरुषवेद वाले और नपुसक वेद वाले है ।

२६ उत्तर-हे गौतम ! वे स्त्री वेद वाले नहीं, पुरुष वेद वाले भी नहीं, परन्तु एक जीव हो या अनेक, सभी नपुसक वेद वाले है ।

२७ प्रश्न-हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव स्त्री-वेद के बन्धक, पुरुषवेद बन्धक और नपुसक-वेद के बन्धक है ?

२७ उत्तर-हे गौतम ! वे स्त्री-वेद बन्धक, पुरुष वेद बन्धक और नपु

अट्ठ भगा ।

२४ प्रश्न–ते ण भते ! जीवा कि आहारसण्णोवउत्ता भयसण्णोवउत्ता मेहुणसण्णोवउत्ता, परिग्गहसण्णोवउत्ता ?

२४ उत्तर–गोयमा ! आहारसण्णोवउत्ता वा असीती भगा ।

२५ प्रश्न–ते ण भते ! जीवा किं कोहकसायी माणकसायी मायाकसायी लोभकसायी ?

२५ उत्तर– असीती भगा ।

२६ प्रश्न– ते ण भते ! जीवा किं इत्थिवेयगा पुरिसवेयगा णपुसगवेयगा ?

२६ उत्तर–गोयमा ! णो इत्थिवेयगा णो पुरिसवेयगा, णपुसगवेयए वा णपुसगवेयगा वा ।

२७ प्रश्न–ते णं भते ! जीवा किं इत्थिवेयबधगा पुरिसवेयबधगा णपुसगवेयबधगा ?

२७ उत्तर–गोयमा ! इत्थिवेयबधए वा पुरिसवेयबधए वा णपुसगवेयबधए वा छव्वीस भगा ।

२८ प्रश्न–ते ण भते ! जीवा कि सण्णी असण्णी ?

२८ उत्तर–गोयमा ! णो सण्णी, असण्णी वा असण्णीणो वा ।

२९ प्रश्न–ते ण भते ! जीवा कि सइदिया अणिंदिया ?

२९ उत्तर–गोयमा ! णो अणिंदिया, सइदिए वा सइदिया वा ।

वाउजीवे भाणियव्वे ।

३३ प्रश्न-से ण ! भते उप्पलजीवे से वणस्सइजीवे, से पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवइय काल सेवेज्जा-केवइय काल गइरागइ करेज्जा ?

३३ उत्तर-गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ उक्कोसेण अणताइ भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण अणत काल तरूकाल, एवइय काल सेवेज्जा, एवइय काल गइरागइ करेज्जा ।

३४ प्रश्न-से ण भते ! उप्पलजीवे बेइदियजीवे पुणरवि उप्पलजीवे त्ति केवइय काल सेवेज्जा-केवइय काल गइरागइ करेज्जा ?

३४ उत्तर-गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं सखेज्जाइ भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण सखेज्ज काल, एवइय काल सेवेज्जा-एवइय काल गइरागइ करेज्जा । एव तेइदियजीवे, एव चउरिंदियजीवे वि ।

३५ प्रश्न-से ण भते ! उप्पलजीवे पचेंदियतिरिक्खजोणियजीवे पुणरवि उप्पलजीवेत्ति पुच्छा ।

३५ उत्तर-गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ताइ, उक्कोसेण पुव्वकोडिपुहुत्त, एवइय काल सेवेज्जा-एवइय काल गइरागइ करेज्जा । एव मणुस्सेण वि सम जाव एवइय काल

सक-वेद बन्धक हैं। यहां उच्छवास द्वार के अनुसार छब्बीस भग कहना चाहिये।

२८ प्रश्न-हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव सज्ञी हैं या असज्ञी ?

२८ उत्तर-हे गौतम ! वे सज्ञी नही, किन्तु एक हो या अनेक जीव, वे असज्ञी ही हैं।

२९ प्रश्न-हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव सेन्द्रिय हैं या अनिन्द्रिय ?

२९ उत्तर-हे गौतम ! वे अनिन्द्रिय नहीं, किन्तु एक जीव सेन्द्रिय है अथवा अनेक जीव सेन्द्रिय हैं।

विवेचन-यहा विरति द्वार, क्रिया द्वार, बन्धक द्वार, सज्ञा द्वार, कषाय द्वार, वेद द्वार, वेदबन्ध द्वार, सज्ञी द्वार और इन्द्रिय द्वार का कथन किया गया है।

३० प्रश्न-से ण भते ! उप्पलजीवेति कालतो केवच्चिर होइ ?

३० उत्तर-गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं असखेज्ज काल।

३१ प्रश्न-से ण भते ! उप्पलजीवे पुढविजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेति केवइय काल सेवेज्जा ? केवइय काल गइरागइ करेज्जा ?

३१ उत्तर-गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण असखेज्जाइ भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण असखेज्ज काल, एवइय काल सेवेज्जा-एवइय काल गइरागइ करेज्जा।

३२ प्रश्न-से ण भते ! उप्पलजीवे, आउजीवे०

३२ उत्तर-एव चेव, एव जहा पुढविजीवे भणिए तहा जाव

गमन करता है । इसी प्रकार तेइन्द्रिय और चौइन्द्रिय के विषय में भी जानना चाहिये ।

३५ प्रश्न–हे भगवन् ! वह उत्पल का जीव, पचेन्द्रिय तिर्यंच योनि में जाकर पुन उत्पलपने उत्पन्न हो, तो इस प्रकार कितने काल तक गमनागमन करता है ?

३५ उत्तर–हे गौतम ! भवादेश से जघन्य दो भव, उत्कृष्ट आठ भव और कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट पूवकोटिपृथक्त्वकाल तक गमनागमन करता है । इसी प्रकार मनुष्य योनि का भी जानना चाहिये ।

विवेचन–उत्पल का जीव उत्पलपने उत्पन्न होता रहे, इसे 'अनुबन्ध' कहते है । उत्पल का जीव पथ्वीकायादि दूसरी कायो मे उत्पन्न होकर पुन उत्पलपने उत्पन्न हो इसे 'कायसवेध' कहते है । यह भवादेश और कालादेश की अपेक्षा से दो प्रकार का है । उत्पल का जीव भवादेश की अपेक्षा कितने भव करता है और कालादेश की अपेक्षा कितने काल तक गमनागमन करता है, इत्यादि बातो का वणन इस सूत्र मे किया गया है ।

३६ प्रश्न–ते ण भते ! जीवा किमाहारमाहारेति ?

३६ उत्तर–गोयमा ! दव्वओ अणतपएसियाइ दव्वाइ, एव जहा आहारुद्देसए वणस्सइकाइयाण आहारो तहेव जाव सव्वप्पणयाए आहारमाहारेति । णवर णियमा छद्दिसि सेस त चेव ।

३७ प्रश्न–तेसि ण भते ! जीवाणं केवइयं काल ठिई पण्णत्ता ?

३७ उत्तर–गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण दस वाससहस्साइ ।

३८ प्रश्न–तेसि ण भते ! जीवाण कइ समुग्घाया पण्णत्ता ?

३८ उत्तर–गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता । त जहा–

गइरागइ करेज्जा ।

कठिन शब्दार्थ–भवादेसेण–भवादेश से अर्थात भव की अपेक्षा, गइरागइ–गति आगति–गमनागमन।

भावार्थ–३० प्रश्न–हे भगवन ! वह उत्पल का जीव, उत्पलपने कितने काल तक रहता है ?

उत्तर–हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट असख्य काल तक रहता है।

३१ प्रश्न–हे भगवन् ! वह उत्पल का जीव, पृथ्वीकाय में जावे और पुन उत्पल में आवे, इस प्रकार कितने काल तक गमनागमन करता है ?

३१ उत्तर–हे गौतम ! भवादेश (भव की अपेक्षा) से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट असख्यात भव तक गमनागमन करता ह । कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूत और उत्कृष्ट असख्यात काल तक गमनागमन करता है ।

३२ प्रश्न–हे भगवन् ! वह उत्पल का जीव, अप्कायपने उत्पन्न हो कर पुन उत्पल में आवे, तो इस प्रकार कितने काल तक गमनागमन करता है ?

३२ उत्तर–हे गौतम ! जिस प्रकार पृथ्वीकाय के विषय में कहा है, उसी प्रकार अप्काय के विषय में यावत् वायुकाय तक कहना चाहिए ।

३३ प्रश्न–हे भगवन् ! वह उत्पल का जीव वनस्पति में आवे और पुन उसी में उत्पन्न हो, इस प्रकार कितने काल तक गमनागमन करता है ?

३३ उत्तर–हे गौतम ! भवादेश से जघन्य दो भव और उत्कृष्ट अनन्त भव तक गमनागमन करता है, कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मुहूत और उत्कृष्ट अनन्त काल (वनस्पति काल) तक गमनागमन करता है ।

३४ प्रश्न–हे भगवन् ! वह उत्पल का जीव बेइन्द्रिय में जाकर पुन उत्पल में ही आवे, तो इस प्रकार कितने काल तक गमनागमन करता ह ?

३४ उत्तर–हे गौतम ! भवादेश से जघन्य दो भव, उत्कृष्ट सख्यात भव और कालादेश से जघन्य दो अन्तर्मूहत और उत्कृष्ट सख्यात काल तक गमना-

करते है ?

३६ उत्तर–हे गौतम ! वे जीव, द्रव्य से अनन्त प्रदेशी द्रव्यो का आहार करते है, इत्यादि प्रज्ञापना सूत्र के अट्ठाइसवे पद के पहले आहारक उद्देशक में वर्णित वणन के अनुसार वनस्पतिकायिको का आहार यावत 'वे सर्वात्मना (सर्व प्रदेशो से) आहार करते है'–तक कहना चाहिए, किंतु वे नियमा छह दिशा का आहार करते है । शेष सभी वर्णन पूववत् जानना चाहिए ।

३७ प्रश्न–हे भगवन् ! उन उत्पल के जीवो की स्थिति कितने काल की है ?

३७ उत्तर–हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूत और उत्कृष्ट दस हजार वष की है ।

३८ प्रश्न–हे भगवन ! उत्पल के जीवो में कितने समुदघात कहे गये ह ?

३८ उत्तर–हे गौतम ! उनमें तीन समुदघात कहे गये है, यथा–वेदना समुद्घात, कषाय समुद्घात और मारणान्तिक समुद्घात ।

३९ प्रश्न–हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव मारणान्तिक समुद्घात द्वारा समवहत होकर मरते है या असमवहत होकर ?

३९ उत्तर–हे गौतम ! वे समवहत होकर भी मरते है और असमवहत होकर भी ।

४० प्रश्न–हे भगवन ! वे उत्पल के जीव मर कर तुरन्त कहाँ जाते है और कहाँ उत्पन्न होते है ? क्या नैरयिको में उत्पन्न होते है, तिर्यञ्चयोनिको में, मनुष्यो में या देवो में उत्पन्न होते है ?

४० उत्तर–हे गौतम ! प्रज्ञापना सूत्र के छठे व्युत्क्रान्ति पद के उद्वर्तना प्रकरण में वनस्पतिकायिक जीवो के वर्णित वर्णन के अनुसार यहाँ भी कहना चाहिये ।

४१ प्रश्न–हे भगवन ! सभी प्राण, सभी भूत, सभी जीव और सभी सत्त्व, उत्पल के मूलपने, कन्दपने, नालपने, पत्रपने, केसरपने, कणिकापने और थिभुगपने (पत्र के उत्पत्ति स्थान) पहले उत्पन्न हुए ?

वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए ।

३९ प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति, असमोहया मरंति ?

३९ उत्तर-गोयमा ! समोहया वि मरंति असमोहया वि मरंति ।

४० प्रश्न-ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति-कहिं उववज्जंति ? किं णेरइएसु उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति० ? एवं जहा वक्कंतीए उव्वट्टणाए वणस्सइकाइयाणं तहा भाणियव्वं ।

४१ प्रश्न-अह भंते ! सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता उप्पलमूलत्ताए उप्पलकंदत्ताए उप्पलणालत्ताए उप्पलपत्तत्ताए उप्पलकेसरत्ताए उप्पलकण्णियत्ताए उप्पलथिभुगत्ताए उववण्णपुव्वा ?

४१ उत्तर-हंता, गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो ।

॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

॥ पढमो उप्पलउद्देसओ समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-उववण्णपुव्वा-उत्पन्नपूर्व-पहले उत्पन्न हुए सव्वप्पणयाए-सभी आत्म प्रदेशों से, उव्वट्टित्ता-उद्वर्तन कर-निकल कर ।

भावार्थ-३६ प्रश्न-हे भगवन् ! वे उत्पल के जीव किस पदार्थ का आहार

जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेणं धणुपुहुत्त । सेस त चेव ।

सेव भते ! सेव भते ! त्ति

॥ वीओ उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-अपरिसेसा-समस्त ।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! एक पत्ते वाला शालूक (उत्पल कन्द) एक जीव वाला है या अनेक जीव वाला ?

१ उत्तर-हे गौतम ! वह एक जीव वाला है । इस प्रकार उत्पलोद्देशक की सभी वक्तव्यता यावत् 'अनन्त बार उत्पन्न हुए है'-तक कहनी चाहिये, परन्तु इतनी विशेषता है कि शालूक के शरीर की अवगाहना जघन्य अगुल के असख्यातवे भाग और उत्कृष्ट धनुषपृथक्त्व है । शेष पूर्ववत् जानना चाहिये ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है-ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत विचरते है ।

॥ ग्यारहवे शतक का द्वितीय उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ११ उद्देशक ३

पलास के जीव

१ प्रश्न-पलासे ण भते ! एगपत्तए कि एगजीवे अणेगजीवे ?

१ उत्तर-एव उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा ।

४१ उत्तर-हां गौतम ! सभी प्राण, भूत, जीव और सत्त्व अनेक बार अथवा अनन्त बार पूर्वोक्त रूप से उत्पन्न हुए।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन ! यह इसी प्रकार है। ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-आहार द्वार-पृथ्वीकायिकादि जीव सूक्ष्म होने से निष्कुटो (लोक के अन्तिम कोण) मे उत्पन्न हो सकते है, इसलिये वे कदाचित तीन दिशा से, कदाचित् चार दिशा से और कदाचित पाच दिशा से आहार लेते है तथा निर्व्याघात आश्रयी छहो दिशा का आहार लेते हैं, किन्तु उत्पल के जीव बादर होने से वे निष्कुटो मे उत्पन्न नही होते। अत वे नियम से छह दिशा का आहार लेते है।

उत्पल के जीव, वहा से मरकर तुरन्त तिर्यञ्च गति मे या मनुष्य गति मे जन्म लेते है, किन्तु देवगति और नरक गति मे उत्पन्न नही होते।

समस्त जीव उत्पल के मूल, नाल, कन्दादिपने अनेक बार अथवा अनन्त बार उत्पन्न हो चुके हैं।

इस प्रकार उत्पल के सम्बन्ध मे यहा तेतीस द्वार कहे गये है।

॥ ग्यारहवां शतक का प्रथम उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ११ उद्देशक २

शालूक के जीव

१ प्रश्न-सालुए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ?

१ उत्तर-गोयमा ! एगजीवे। एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव 'अणंतखुत्तो', णवरं सरीरोगाहणा

विवेचन-देवो से चवकर जीव वनस्पतिकाय म उत्पन्न होते हैं और वनस्पति मे भी जो प्रशस्त वनस्पति है, उसी मे उत्पन्न होते हैं, अप्रशस्त मे उत्पन्न नही होते। उत्पल प्रशस्त वनस्पति मानी गई है, इसलिये देव गति से चवा हुआ जीव उसमे उत्पन्न होता है। जब तेजो लेश्या युक्त देव, देवभव से चवकर वनस्पति मे उत्पन्न होता है, तब उसमे तेजो लेश्या पाई जाती है। प्रशस्त वनस्पति मे पलास नही गिना गया है, इसलिये उसमे देव भव से चवा हुआ जीव उत्पन्न नही होता। इसलिये उसमे तेजो लेश्या भी नही पाई जाती, पहले की तीन अप्रशस्त लेश्याएँ ही पाई जाती हैं, इसलिये उसके छब्बीस भग होते हैं।

॥ ग्यारहवें शतक का तृतीय उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ११ उद्देशक ४

कुंभिक के जीव

१ प्रश्न-कुभिए ण भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ?

१ उत्तर-एव जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे। णवर ठिइ जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण वासपुहुत्त। सेस त चेव चेव।

॥ सेव भंते ! सेव भते त्ति ॥

॥ चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! एक पत्ते वाला कुभिक (वनस्पति विशेष) एक जीव वाला होता है या अनेक जीव वाला ?

१ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार पलास के विषय में तीसरे उद्देशक में कहा है, उसी प्रकार यहाँ भी कहना चाहिये, इसमें इतनी विशेषता है कि

णवर सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग उक्को-सेण गाउयपुहुत्ता, देवा एएसु चेव ण उववज्जति ।

२ प्रश्न–लेस्सासु ते णं भते ! जीवा किं कण्हलेस्से, णील-लेस्से काउलेस्से ?

२ उत्तर–गोयमा ! कण्हलेस्से वा णीललेस्से वा काउलेस्से वा छव्वीस भगा । सेस त चेव ।

॥ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

॥ तइओ उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ–पलासे–पलाश–ढाक (खाखरा) का वृक्ष ।

भावार्थ–१ प्रश्न–हे भगवन् ! पलास वृक्ष प्रारम्भ में जब वह एक पत्ते वाला होता है, तब एक जीव वाला होता है या अनेक जीव वाला ?

१ उत्तर–हे गौतम ! उत्पल उद्देशक की सारी वक्तव्यता कहनी चाहिये, परन्तु इतनी विशेषता है कि पलास के शरीर की अवगाहना जघन्य अगुल के असख्यातवे भाग उत्कृष्ट गाऊ पृथक्त्व है । देव चवकर पलास वृक्ष में उत्पन्न नहीं होते ।

२ प्रश्न–हे भगवन ! पलास वृक्ष के जीव कृष्णलेश्या वाले, नीललेश्या वाले और कापोत लेश्या वाले होते है ?

२ उत्तर–हे गौतम ! वे कृष्ण लेश्या वाले, नील लेश्या वाले या कापोत लेश्या वाले होते है । इस प्रकार यहाँ उच्छ्वासक द्वार के समान छब्बीस भग कहने चाहिये ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है–ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत विचरते ह ।

शतक ११ उद्देशक ६

पद्म के जीव

१ प्रश्न–पउमे ण भंते एगपत्तए कि एगजीवे, अणेगजीवे ?

१ उत्तर–एव उप्पलुद्देसगवत्तव्वया णिरवसेसा भाणियव्वा ।

॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

॥ छट्ठो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ–१ प्रश्न–हे भगवन् ! एक पत्ते वाला पद्म, एक जीव वाला होता है या अनेक जीव वाला ?

१ उत्तर–हे गौतम ! उत्पल उद्देशकानुसार सभी वर्णन करना चाहिये ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन ! यह इसी प्रकार है–ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत विचरते है ।

॥ ग्यारहवें शतक का छठा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ११ उद्देशक ७

कर्णिका के जीव

१ प्रश्न–कण्णिए ण भंते ! एगपत्तए कि एगजीवे, अणेगजीवे ?

कुभिक की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व (दो वर्ष से नौ वर्ष तक) है। शेष सभी पूर्ववत् जानना चाहिये।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है—ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ ग्यारहवें शतक का चतुर्थ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ११ उद्देशक ५

नालिक के जीव

१ प्रश्न—णालिए ण भते ! एगपत्तए कि एगजीवे अणेगजीवे ?

१ उत्तर—एव कुभिउद्देसगवत्तव्वया णिरवसेस भाणियव्वा ।

॥ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

॥ पचमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ—१ प्रश्न—हे भगवन् ! एक पत्ते वाला नालिक (नाडिक) एक जीव वाला है या अनेक जीव वाला ?

१ उत्तर—हे गौतम ! जिस प्रकार चौथे कुभिक उद्देशक में कहा है, उसी प्रकार यहाँ भी सभी वक्तव्यता कहनी चाहिये।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन ! यह इसी प्रकार है—ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत विचरते हैं।

॥ ग्यारहवें शतक का पचम उद्देशक सम्पूर्ण ॥

एक जीव वाला होता है या अनेक जीव वाला ?

१ उत्तर–हे गौतम ! उत्पल उद्देशक के अनुसार सभी वर्णन करना चाहिये, यावत् 'सभी जीव अनन्त वार उत्पन्न हो चुके हैं'–तक कहना चाहिये।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन ! यह इसी प्रकार है–ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत विचरते हैं।

विवेचन–पहले उद्देशक से लेकर आठवे उद्देशक तक उत्पलादि आठ वनस्पतिकायिक जीवों का वणन किया गया है। उनके पारस्परिक अन्तर को वतलाने वाली ये तीन गाथाएँ हैं। यथा–

सालम्मि धणुपुहत्त होइ, पलासे य गाउ य पुहत्त।
जोयणसहस्समहिय, अवसेसाण तु छण्ह पि ॥१॥
कुम्भिए नालियाए वासपुहत्त ठिई उ बाद्धव्वा।
दस वाससहस्साइ, अवसेसाण तु छण्ह पि ॥२॥
कुम्भिए नालियाए होति, पलासे य तिण्णि लेसाओ।
चत्तारि उ लेसाओ, अवसेसाण तु पचण्ह ॥३॥

अथ–शालूक की उत्कृष्ट अवगाहना धनुपपथक्त्व और पलास की उत्कृष्ट अवगाहना गाऊ पृथक्त्व हानी है। शप उत्पल कुम्भिक नालिक, पद्म, कर्णिका और नलिन इन छह की उत्कृष्ट अवगाहना एक हजार याजन से कुछ अधिक हाती है ॥१॥

कुम्भिक और नालिक की उत्कृष्ट स्थिति वप पथक्त्व होती है और शेप छह की उत्कृष्ट स्थिति दस हजार वप की होती है ॥२॥

कुम्भिक, नालिक और पलास मे पहले की तीन लेश्याएँ होती हैं, शेप पाच मे पहले की चार लेश्याएँ होती हैं।

॥ ग्यारहवे शतक का अष्टम उद्देशक सम्पूर्ण ॥

१ उत्तर-एवं चेव णिरवसेसं भाणियव्वं ।

॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

॥ सत्तमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! एक पत्ते वाली कणिका (वनस्पति विशेष) एक जीव वाली है या अनेक जीव वाली ?

१ उत्तर-हे गौतम ! उत्पल उद्देशक के समान सभी वर्णन करना चाहिये।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है-ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

॥ ग्यारहवें शतक का सप्तम उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ११ उद्देशक ८

नलिन के जीव

१ प्रश्न-णलिणे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे ?

१ उत्तर-एवं चेव णिरवसेसं जाव 'अणंतखुत्तो' ।

॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

॥ अट्ठमो उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! एक पत्ते वाला नलिन (कमल विशेष)

कहना। उस शिव राजा के 'धारिणी' नाम की पटरानी थी। उसके हाथ, पैर अति सुकुमाल थे, इत्यादि स्त्री का वणन कहना। उस शिव राजा का पुत्र धारिणी रानी का अगजात शिवभद्र नाम का कुमार था। उसके हाथ पैर अतिसुकुमाल थे। कुमार का वर्णन राजप्रश्नीय सूत्र में कथित सुयकान्त राजकुमार के समान कहना चाहिये। यावत् वह कुमार राज्य, राष्ट्र और सैन्यादिक का अवलोकन करता हुआ विचरता था।

२–तएणं तस्स सिवस्स रण्णो अण्णया कया वि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि रज्जधुरं चिंतेमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–'अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं० जहा तामलिस्स, जाव–पुत्तेहिं वड्ढामि पसूहिं वड्ढामि रज्जेणं वड्ढामि एवं रट्ठेणं बलेणं वाहणेणं कोसेणं कोट्ठागारेणं पुरेणं अंतेउरेणं वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण० जाव संतसारसावएज्जेणं अईव अईव अभिवड्ढामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं० जाव एगंतसोक्खयं उव्वेहमाणे विहरामि? तं जाव ताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि, तं चेव जाव अभिवड्ढामि, जाव मे सामंतरायाणो वि वसे वट्टंति, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभाए जाव जलंते सुबहुं लोहीं लोहकडाह-कडुच्छुयं तंबियं तावसभंडगं घडावेत्ता सिवभद्दं कुमारं रज्जे ठवित्ता तं सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडुच्छुयं तंबियं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूले वाणपत्था तावसा भवंति, तं जहा–होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुंबउट्ठा दंतुक्खलिया उम्मज्जगा

शतक ११ उद्देशक ९

राजर्षि शिव का वृत्तांत

१—तेणं कालेण तेण समएणं हत्थिणागपुरं णाम णयरे होत्था, वण्णओ। तस्स ण हत्थिणागपुरस्स णयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभागे एत्थ णं सहसववणे णाम उज्जाणे होत्था। सव्वोउय-पुप्फफलसमिद्धे रम्मे णदणवणसण्णिप्पगासे सुहसीतलच्छाए मणोरमे साउप्फले अकटए पासाईए, जाव—पडिरूवे। तत्थ ण हत्थिणापुरे णयरे सिवे णाम राया होत्था। महयाहिमवन० वण्णओ। तस्स ण सिवस्स रण्णो धारिणी णाम देवी होत्था। सुकुमाल० वण्णओ। तस्स ण सिवस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए अत्तए सिवभद्दे णाम कुमारे होत्था। सुकुमाल० जहा सूरियकते, जाव—पच्चुवेक्ख-माणे पच्चुवेक्खमाणे विहरइ।

कठिन शब्दाथ—सव्वोउयपुप्फ—सभी ऋतुओ के पुष्प, रम्मे—रम्य, सण्णिप्पगासे—समान, शोभित, साउप्फले—स्वादिष्ट फल वाला।

भावाथ—१—उस काल उस समय में हस्तिनापुर नामक नगर था, वणन। उस हस्तिनापुर नगर के बाहर उत्तरपूव दिशा (ईशानकोण) में सहस्राम्र नामक उद्यान था। वह उद्यान सभी ऋतुओ के पुष्प और फलो से समृद्ध था। वह नन्दन वन के समान सुरम्य था। उसकी छाया सुख कारक और शीतल थी। वह मनोहर, स्वादिष्ट फल युक्त, कण्टक रहित और प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला यावत् प्रतिरूप (सुन्दर) था। उस हस्तिनापुर नगर में 'शिव' नाम का राजा था। वह हिमवान पवत के समान श्रेष्ठ राजा था, इत्यादि राजा का सब वणन

णिमज्जगा–पानी मे कुछ देर डूब कर स्नान करने वाले, सपक्खाला–सम्प्रक्षालक (मिट्टी रगड कर नहानेवाले), उद्धकडूयगा–ऊपर की ओर खुजालनेवाले, दाहिणकूलगा–गगा के दक्षिण किनार रहनेवाले, सखधमगा–शख फूक कर भोजन करने वाले, कूलधमगा–किनारे रह कर शब्द करनेवाले, मियलुद्धया–मृगलुब्धक, हत्थितावसा–हस्ति तापस (हाथी को मारकर बहुत दिनो तक खानेवाले), जलाभिसेयकिढिणगाया–स्नान किये विना नही खाने वाले, अबु-वासिणो–बिल मे रहनेवाले, वाउवासिणो–वायु मे रहने वाले, वक्कलवासिणो–वल्कलधारी, अबुभक्खिणो–जलपान पर ही जीवन विताने वाले, परिसडिय–गिरे हुए, उद्दडा–ऊँचा दड रख कर फिरने वाले पचग्गितावेहि–पचाग्नि तापस, इगालसोल्लियपिव–अगारो से अपने को भुनाने वाले, कडुसोल्लियपिव–भडभूज की भाड मे पकाये हुए के समान, कट्ठसोल्लियपिव–काष्ठ के समान शरीर का बनाने वाले, दिसापोक्खी–दिशा प्रोक्षक, सपेहेइ–विचार करता है ।

भावार्थ–२–किसी समय राजा शिव को रात्रि के पिछले प्रहर में राज्य कार्यभार का विचार करते हुए ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुआ कि यह मेरे पूर्व के पुण्य-कर्मों का प्रभाव है, इत्यादि तीसरे शतक के प्रथम उद्देशक में कथित तामलि तापस के अनुसार विचार हुआ, यावत मै पुत्र, पशु, राज्य, राष्ट्र, बल, वाहन, कोष, कोष्ठागार, पुर और अन्त पुर इत्यादि द्वारा वृद्धि को प्राप्त हो रहा हूँ । पुष्कल धन, कनक, रत्न यावत् सारभूत द्रव्य द्वारा अतिशय वृद्धि को प्राप्त हो रहा हूँ और मै पूर्व-पुण्यो के फल स्वरूप एकान्त सुख भोग रहा हूँ, तो अब मेरे लिये यह श्रेष्ठ है कि जब तक मै हिरण्यादि से वृद्धि को प्राप्त हो रहा हूँ यावत् जब तक सामन्त राजा आदि मेरे अधीन है, तब तक कल प्रात काल देदीप्यमान सूर्य के उदय होने पर बहुत सी लोढी, लोह की कडाही, कुडछी और ताम्बे के दूसरे तापसोचित उपकरण बनवाऊँ और शिवभद्र कुमार को राज्य पर स्थापित कर के और पूर्वोक्त तापस के उपकरण लेकर, उन तापसो के पास जाऊँ–जो गगा नदी के किनारे वानप्रस्थ तापस है, यथा–अग्निहोत्री, पोतिक–वस्त्र धारण करने वाले, कौत्रिक, ज्ञायिक, श्रद्धालु, खप्परधारी, कुडिका धारण करनेवाले, फल भोजी, उम्मज्जक, समज्जक, निमज्जक, सम्प्रक्षालक, ऊर्ध्वकडुक, अधोकडुक, दक्षिण कूलक, उत्तर कूलक, शखधमक, कूलधमक, मृगलुब्धक, हस्ती तापस, जलाभिषेक

समज्जगा णिमज्जगा सपक्खाला उद्धकडूयगा अहोकडूयगा दाहिण-कूलगा उत्तरकूलगा सखधमया कूलधमगा मियलुद्धया हत्थितावमा जलाभिसेयकिढिणगाया अवुवासिणो वाउवासिणो वक्कलवासिणो जलवासिणो चेलवासिणो अवुभक्खिणो वायभक्खिणो सेवाल-भक्खिणो मूलाहारा कदाहारा पत्ताहारा तयाहारा पुप्फाहारा फला-हारा वीयाहारा परिसडियकदमूलपडुपत्तपुप्फफलाहारा उद्दडा रुक्ख-मूलिया मडलिया वणवासिणो विलवासिणो दिसापोक्खिया आया-वणाहि पचग्गितावेहिं इगालमोल्लियपिव कडुमोल्लियपिव कट्ठसो-ल्लियपिव अप्पाण जाव करेमाणा विहरति (जहा उववाइए जाव-कट्ठमोल्लिय पिव अप्पाणं करेमाणा विहरति) तत्थ ण जे ते दिसा-पोक्खी तावसा तेसिं अतिय मुडे भवित्ता दिसापोक्खीयतावमत्ताए पव्वइत्तए । पव्वइए वि य ण समाणे अयमेयारूव अभिग्गह अभि-गिण्हिस्सामि–'कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठ-छट्ठेण अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेण तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय जाव विहरित्तए' त्ति कट्टु एव सपेहेइ ।

कठिन शब्दार्थ–रज्जधुर–राज्य धुरा (राज्य का भार), वड्ढामि–मेरे बढ रहे हैं, उव्वेह माणे–भोगता हुआ कडुच्छुय–कुडछी, वाणपत्था–वानप्रस्थ, होत्तिया–अग्नि होत्री, पोत्तिया–पौत्रिक (वस्त्रधारी), कात्तिया–कौत्रिक (भूशायी), जण्णई–याज्ञिक, सड्ढई–श्रद्धालु थालई–खप्परधारी, हुबउट्ठा–कुण्डिधारी, दतुक्खलिया–फल भोगी, उम्मज्जगा–एक बार पानी मे डुबकी लगा कर स्नान करने वाले, समज्जगा–वारवार डुबकी लगा कर स्नान करने वाले,

यावेइ, णिसियावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाण कलसाणं जाव-अट्ठसएण भोमेज्जाण कलसाण सव्विड्ढीए जाव-रवेण महया महया रायाभिसेगेण अभिसिंचति, म० म० पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गधकासाईए गायाइ लूहेइ, पम्हल० पम्हल० सरसेण गोसीसेणं एव जहेव जमालिस्स अलकारो तहेव जाव-कप्परुक्खग विव अलकिय-विभूसिय करेइ, करित्ता करयल० जाव-कट्टु सिवभद्द कुमार जएण विजएण वद्धावेति, जएण विजएण वद्धावित्ता ताहि इट्ठाहिं कताहि पियाहिं जहा उववाइए कूणियस्स जाव-परमाउ पालयाहि, इट्ठजणसपरिवुडे हत्थिणाउरस्स णयरस्स अण्णेसि च वहूण गामागर-णयर० जाव विहराहि' ति कट्टु जयजयसद्द पउजति । तएण से सिवभद्दे कुमारे राया जाए । महया हिमवत० वण्णओ जाव-विहरइ ।

कठिन शब्दार्थ-णिसियावेइ-बिठाया ।

भावार्थ-३-इस प्रकार विचार करके दूसरे दिन प्रात काल सूर्योदय होने पर अनेक प्रकार की लोढियाँ, लोह कडाह आदि तापस के उपकरण तैयार करवा कर, अपने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया और इस प्रकार कहा-'हे देवानुप्रियो ! हस्तिनापुर नगर के बाहर और भीतर जल का छिडकाव करके शीघ्र स्वच्छ कराओ,' इत्यादि यावत् उन्होने राजा की आज्ञानुसार कार्य करवा कर राजा को निवेदन किया। इसके बाद शिव राजा ने उनसे कहा कि-'हे देवानुप्रियो ! शिवभद्र कुमार के राज्याभिषेक की शीघ्र तैयारी करो।' कौटुम्बिक पुरुषो द्वारा राज्याभिषेक की तैयारी हो जाने पर शिवराजा ने अनेक गण नायक, दण्ड नायक यावत

किये बिना भोजन नहीं करनेवाले, बिलवासी, वायु में रहनेवाले, वल्कलधारी, पानी में रहनेवाले, वस्त्रधारी, जलभक्षक, वायुभक्षक, शेवालभक्षक, मूलाहारक कन्दाहारक, पत्राहारक, छाल खानेवाले, पुष्पाहारक, फलाहारी, बीजाहारी, वृक्ष से सड कर टूटे या गिरे हुए कन्द, मूल, छाल, पत्र पुष्प और फल खाने वाले, ऊँचा दडरख कर चलनेवाले, वृक्ष के मूलों में रहनेवाले, माडलिक, वनवासी, बिलवासी, दिशाप्रोक्षी, आतापना से पचाग्नि तापनेवाले और अपने शरीर को अगारो से तपा कर लकडे-सा करनेवाले इत्यादि औपपातिक सूत्र में कहे अनुसार यावत जो अपने शरीर को काष्ठ तुल्य बना देते है, उनमें से जो तापस 'दिशाप्रोक्षक' (जल द्वारा दिशा का पूजन करने के पश्चात् फल-पुष्पादि ग्रहण करने वाले) है, उनके पास मुण्डित होकर दिक्प्रोक्षक तापस रूप प्रव्रज्या अगीकार करूँ। प्रव्रज्या अगीकार कर के इस प्रकार का अभिग्रह करूँ कि 'यावज्जीवन निरन्तर बेले बेले की तपस्या द्वारा दिक्चक्रवाल तप कर्म से दोनो हाथ ऊचे रख कर रहना मुझे कल्पता है।' इस प्रकार शिवराजा को विचार हुआ।

३–सपेहेत्ता कल्ल जाव जलते सुबहु लोही-लोह० जाव घडावेत्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी–'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हत्थिणागपुर णयर सब्भितर-बाहिरिय आसिय० जाव तमाणत्तिय पच्चप्पिणति, तए ण से सिवे राया दोच्च पि कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी–'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थ ३ विउल रायाभिसेय उवट्ठवेह।' तएण ते कोडुबियपुरिसा तहेव उवट्ठवेंति। तएणं से सिवे राया अणेगगणणायग दडणायग० जाव–सधिपालसद्धिं सपरिवुडे सिवभद्द कुमार सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुह णिसि-

रायाणो य खत्तिए य सिवभद्द च रायाणं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सुबहु लोही-लोहकडाह-कडुच्छुय जाव-भडग गहाय जे इमे गगा-कूलगा वाणपत्था तावसा भवति, त चेव जाव तेसि अतिय मुडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए पव्वइए वि य ण समाणे अयमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ-'कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठ०' त चेव जाव अभिग्गह अभिगिण्हइ, अभिगिण्हित्ता पढम छट्ठक्खमण उवसपज्जित्ता णं विहरइ ।

कठिन शब्दार्थ-वाणपत्था-वानप्रस्थ (तीसरा आश्रम) ।

भावार्थ-४-इसके पश्चात किसी समय शिव राजा ने प्रशस्त तिथि, करण, दिवस और नक्षत्र के योग में विपुल अशन, पान, खादिम और स्वादिम तैयार करवाया और मित्र, ज्ञाति, स्वजन, परिजन, राजा, क्षत्रिय आदि को आमन्त्रित किया । स्वय स्नानादि करके भोजन के समय भोजन मण्डप में उत्तम सुखासन पर बैठा और उन मित्र, ज्ञाति, स्वजन, परिजन, राजा, क्षत्रिय आदि के साथ विपुल अशन, पान, खादिम और स्वादिम का भोजन कर के तामली तापस के समान उनका सत्कार सम्मान किया। तत्पश्चात उन सभी की तथा शिवभद्र राजा की आज्ञा लेकर तापसोचित उपकरण ग्रहण किये और गगा नदी के किनारे दिशा-प्रोक्षक तापसो के पास दिशाप्रोक्षक तापसी प्रव्रज्या ग्रहण की और इस प्रकार का अभिग्रह धारण किया कि 'मुझे बेले-बेले तपस्या करते हुए विचरना कल्पता है, इत्यादि पूर्ववत् अभिग्रह धारण कर, प्रथम छठ तप अगीकार कर विचरने लगा ।

विवेचन-जल से दिशाओ की पूजा करके फिर फल फूल का ग्रहण करना- दिशा प्रोक्षक प्रव्रज्या' कहलाती है ।

बेले के पारणे के दिन पूर्व, पश्चिम आदि किसी एक दिशा से फलादि लाकर खाना

सन्धि पालक आदि के परिवार से युक्त होकर शिवभद्र कुमार को उत्तम सिंहासन पर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बिठाया। फिर एक सौ आठ सोने के कलशो द्वारा यावत् एक सौ आठ मिट्टी के कलशो द्वारा सर्व ऋद्धि से यावत् वादिन्त्रादिक के शब्दो द्वारा राज्याभिषेक से अभिषिक्त किया। तत्पश्चात अत्यन्त सुकुमाल और सुगन्धित गन्ध-वस्त्र द्वारा उसके शरीर को पोछा। गोशीष चन्दन का लेप किया, यावत जमाली वर्णन के अनुसार कल्पवृक्ष के समान उसको अलकृत एव विभूषित किया। इसके बाद हाथ जोड कर शिवभद्र कुमार को जय विजय शब्दो से बधाया और औपपातिक सूत्र में वर्णित कोणिक राजा के प्रकरणानुसार इष्ट, कान्त एव प्रिय शब्दो द्वारा आशिर्वाद दिया, यावत कहा कि तुम दीर्घायु हो और इष्टजनो से युक्त होकर हस्तिनापुर नगर और दूसरे बहुत से ग्रामादि का तथा परिवार, राज्य और राष्ट्र आदि का स्वामीपन भोगते हुए विचरो, इत्यादि कह कर जय जय शब्द उच्चारण किये। शिवभद्रकुमार राजा बना। वह महा हिमवान् पर्वत की तरह राजाओ में मुख्य होकर विचरने लगा। यहाँ शिवभद्र राजा का वर्णन कहना चाहिए।

४—तएण से सिवे राया अण्णया कयाइ सोभणसि तिहि-करण-दिवस-मुहुत्त णक्खत्तसि विउल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडा-वेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-णाइ-णियग० जाव—परिजण रायाणो य खत्तिया आमतेइ, आमतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव—सरीरे भोयणवेलाए भोयणमडवसि सुहासणवरगए तेण मित्त-णाइ-णियग-सयण० जाव—परिजणेण राएहि य खत्तिएहि य सद्धिं विउल असण-पाण-खाइम-साइम एव जहा तामली जाव—सक्कारेइ, समाणेइ, सक्कारित्ता समाणित्ता त मित्त-णाइ० जाव—परिजण

जला० आयते चोक्खे परमसुइभूए देवय-पिइकयकज्जे दब्भ-कलसा-हत्थगए गंगाओ महाणईओ पच्चुत्तरइ गंगाओ० जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव० दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाएहि य वेइं रएइ, वेइं रएत्ता सरएणं अरणिं महेइ, सर० अग्गिं पाडेइ, अग्गिं पाडेत्ता, अग्गिं संधुक्केइ, अग्गिं० समिहाकट्ठाइं पक्खिवइ, समिहा० अग्गिं उज्जालेइ, अग्गिं० "अग्गिस्स दाहिणे पासे, सत्तंगाइं समादहे। तं जहा–सकहं वक्कलं ठाणं सिज्जा भंडं कमंडलुं ॥ दंडदारुं तहऽप्पाणं अहे ताइं समादहे।" महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ, अग्गिं हुणित्ता चरुं साहेइ चरुं साहेत्ता वलिं वइस्सदेवं करेइ, वलिं० अतिहिपूयं करेइ, अतिहिं० तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ।

कठिन शब्दार्थ–वागलवत्थणियत्थे–वल्कल वस्त्र पहिने, उडए–उटज–झोंपडी, किढिण संकाइयगं–बांस का पात्र और कावड, पत्थाणे–प्रवृत्त हुए, अणुजाणउ–अनुज्ञा देवें, पमरइ–जाते हैं उवलेवण समज्जइ–लीपकर शुद्ध करते है, आयते चोक्खे–आचमन करके पवित्र हुए, पिइकयकज्जे–पितृकार्य किया, पच्चुत्तरइ–निकले सरएण अरणिं महेइ–सर–काष्ठ से अरणि घिसते हैं, सत्तंगाइं समादहे–सात वस्तुएँ रखी।

भावार्थ–५–इसके बाद प्रथम वेले की तपस्या के पारणे के दिन वे शिव राजर्षि आतापना भूमि से नीचे उतरे, वल्कल के वस्त्र पहिने, फिर अपनी झोंपडी में आये और कीढीण (बांस का पात्र–छबडी) और कावड को लेकर पूर्व दिशा को प्रोक्षित (पूजित) किया और बोले–'हे पूर्व दिशा के सोम महाराजा! धर्म साधन में प्रवृत मुझ राजर्षि शिव का आप रक्षण करें और पूर्व दिशा में रहे हुए कन्द, मूल, छाल, पत्र, पुष्प, फल, बीज और हरी वनस्पति लेने की आज्ञा दीजिए।'

और दूसरे पारणे मे दूसरी किसी एक दिशा से फलादि लाकर खाना–'दिशाचक्रवाल तप' कह लाता है।

शिव राजा, दिक्प्रोक्षक तापस प्रव्रज्या अगीकार करके बेले बेले की तपस्या करते हुए दिक्चक्रवाल तप का पारणा करने लगे।

५–तएणं से सिवे रायरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगसि आयावणभूमीए पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थणियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयग गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरत्थिमं दिसं पोक्खेइ, 'पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं अभिरक्खित्ता जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ' त्ति कट्टु पुरत्थिमं दिसं पसरइ पुरत्थिमं दिसं पसरइत्ता जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव–हरियाणि य ताइ गेण्हइ,गिण्हित्ता किढिणसंकाइयं भरेइ किढि० दब्भे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोडं च गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयगं ठवेइ, किढि० वेदिं वड्ढेइ, वे० उवलेवण-समज्जणं करेइ, उ० दब्भ-कलसाहत्थगए जेणेव गंगा महाणदी तेणेव उवागच्छइ, तेणेव० गंगामहाणईं ओगाहेइ, गंगा० जलमज्जणं करेइ,जल० जलकीडं करेइ, जल० जलाभिसेयं करेइ,

तएण से सिवे रायरिसी चउत्थछट्ठक्खमण० एव त चेव णवर उत्तरदिस पोक्खेइ उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थिय अभिरक्खउ सिव सेस त चेव जाव-तओ पच्छा अप्पणा आहार-माहारेइ ।

भावार्थ-९-इसके बाद शिव राजर्षि ने दूसरी बार बेले की तपस्या की। पारणे के दिन वे आतापना भूमि से नीचे उतरे, वल्कल के वस्त्र पहने, यावत प्रथम पारणे का सारा वर्णन जानना चाहिए, परतु इतनी विशेषता है कि दूसरे पारणे के दिन दक्षिण दिशा की पूजा की और इस प्रकार कहा-"हे दक्षिण दिशा के लोकपाल यम महाराज ! परलोक साधना में प्रवृत्त मुझ शिव राजर्षि की रक्षा करो," इत्यादि, सब पूववत जानना चाहिए। इसके बाद यावत् उसने आहार किया। इसी प्रकार शिवराजर्षि ने तीसरी बार बेले की तपस्या की। उसके पारणे के दिन पूर्वोक्त सारी विधि की। इसमें इतनी विशेषता है कि पश्चिम दिशा का प्रोक्षण किया और कहा-"हे पश्चिम दिशा के लोकपाल वरुण महाराज ! परलोक साधना में प्रवृत्त मुझ शिव राजर्षि की रक्षा करें," इत्यादि यावत् आहार किया। चौथी बार बेले की तपस्या के पारणे के दिन उत्तर दिशा का प्रोक्षण किया और कहा-'हे उत्तर दिशा के लोकपाल वैश्रमण महाराज ! धम साधना में प्रवृत्त मुझ शिवराजर्षि की आप रक्षा करें,' इत्यादि, यावत् आहार किया।

७-तएण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण दिसाचक्कवालेणं जाव-आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए जाव-विणीय-याए अण्णया कया वि तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेणं ईहा-पोह-मग्गण-गवेसण करेमाणस्स विब्भगे णाम अण्णाणे समुप्पण्णे।

इस प्रकार कह कर वे शिव राजर्षि पूर्व दिशा की ओर गये । उन्होने कन्द, मूल आदि ग्रहण कर अपनी छवडी भरी । दर्भ, कुश, समिध और वृक्ष की शाखाओ को झुका कर पत्ते ग्रहण किये और अपनी झोपडी में आए । फिर कावड नीचे रख कर वेदिका का प्रमार्जन किया और लीप कर उसे शुद्ध किया। फिर डाभ और कलश हाथ में लेकर गगा नदी पर आए, उसमें डुबकी लगाई। जल क्रीडा स्नान, आचमन आदि करके गगा नदी से बाहर निकले और अपनी झोपडी में आकर डाभ, कुश और बालुका से वेदिका बनाई । मथन काष्ठ से अरणी की लकडी को घिस कर अग्नि सुलगाई और उसमें काष्ठ डाल कर प्रज्वलित की। फिर अग्नि की दाहिनी ओर इन सात वस्तुओ को रखा, यथा-सकथा (उपकरण विशेष) वल्कल, दीप, शय्या के उपकरण, कमण्डल, दण्ड और अपना शरीर । मधु, घी और चावल द्वारा अग्नि में होम करके बलि द्वारा वैश्व देव की पूजा की, फिर अतिथि की पूजा करके शिव राजर्षि ने आहार किया ।

६-तएण से सिवे रायरिसी दोच्च छट्ठक्खमण उवसपज्जित्ता ण विहरइ । तएण से सिवे रायरिसी दोच्चे छट्ठक्खमणपारणगसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ आयावण० एव जहा पढमपारणग, णवर दाहिणग दिस पोक्खेइ, दाहिण० दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थिय सेस त चेव आहारमाहारेइ । तएण से सिवे रायरिसी तच्च छट्ठक्खमण उवसपज्जित्ता ण विहरइ । तएण से सिवे रायरिसी सेस त चेव णवर पच्चच्छिमाए दिसाए वरुणे महारायापत्थाणे पत्थिय सेस त चेव जाव आहारमाहारेइ । तएण से सिवे रायरिसी चउत्थ छट्ठक्खमण उवसपज्जित्ताण विहरइ,

एव खलु अस्सिं लोए जाव दीवा य समुद्दा य'। तएणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडग-तिग० जाव-पहेसु वहु जणो अण्णमण्णस्स एव-माइक्खइ, जाव परूवेइ-एव खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एव आइक्खइ, जाव परूवेइ-अत्थि णं देवाणुप्पिया! मम अइसेसे णाणदसणे, जाव तेण पर वोच्छिण्णा दीवा य समुद्दा य'। से कहमेय मएणे एव ?

कठिन शब्दार्थ-अब्भत्थिए-अध्यवसाय-विचार, अइसेसे-अतिशय अर्थात अतिशय वाला, वोच्छिण्णा-विच्छेद (नही है,) तावसावसहे-तापसो के आश्रम मे।

भावार्थ-८-इससे शिवराजर्षि को इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-"मुझे अतिशय ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ है। इस लोक में सात द्वीप और सात समुद्र है, उसके बाद द्वीप और समुद्र नहीं ह।" ऐसा विचार कर वे आतापना-भूमि से नीचे उतरे और वल्कल वस्त्र पहन कर अपनी झोपडी में आये। अपने लोढी, लोह कडाह आदि तापस के उपकरण और कावड को लेकर हस्तिनापुर नगर में, तापसो के आश्रम में आये और तापसो के उपकरण रख कर हस्तिनापुर नगर के शृगाटक, त्रिक यावत राजमार्गों में वहुत से मनुष्यो को इस प्रकार कहने और प्ररूपणा करने लगे-'हे देवानुप्रियो! मुझे अतिशय ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुआ है, जिससे मै यह जानता देखता हूँ कि इस लोक में सात द्वीप और सात समुद्र ह।" शिवराजर्षि की उपरोक्त बात सुन कर वहुत-से मनुष्य इस प्रकार कहने लगे-"हे देवानुप्रियो! शिवराजर्षि जो यह वात कहते है कि 'मुझे अतिशय ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ है, यावत् इस लोक में सात द्वीप और सात समुद्र ही है। इसके आगे द्वीप समुद्र नहीं है'-उनकी यह वात इस प्रकार कैसे मानी जाय?"

से णं तेणं विब्भगणाणेणं समुप्पण्णेण पासइ अस्सि लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे, तेण पर ण जाणइ ण पासइ ।

कठिन शब्दार्थ—अणिक्खित्तेण—अनिक्षिप्त—निरन्तर, दिसाचक्कवालेण—दिशा चक्र वाल, आयावेमाणस्स—आतापना लेते हुए ।

भावार्थ ७—निरन्तर बेले-बेले की तपस्यापूर्वक दिकचक्रवाल तप करने यावत् आतापना लेने और प्रकृति की भद्रता यावत् विनीतता से शिवराजर्षि को किसी दिन तदावरणीय कर्मो के क्षयोपशम होने से ईहा, अपोह, मागणा और गवेषणा करते हुए विभग नमाक अज्ञान उत्पन्न हुआ । उस उत्पन्न हुए विभग-ज्ञान से वे इस लोक में सात द्वीप और सात समुद्र देखने लगे । इससे आगे वे जानते-देखते नहीं थे ।

८—तएणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—'अत्थि णं मम अइसेसे णाण दसणे समुप्पण्णे, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर वोच्छिण्णा दीवा य समुद्दा य, एव सपेहेइ, एव० आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, आ० वागलवत्थणियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव० सुबहु लोही लोहकडाह-कडुच्छुय जाव—भडग किढिणसकाइय च गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव हत्थिणापुरे णयरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव० भडणिक्खेव करेइ, भड० हत्थिणापुरे णयरे सिघाडग-तिग० जाव—पहेसु बहु जणस्स एवमाइक्खइ, जाव—एव परूवेइ—'अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अइसेसे णाण-दसणे समुप्पण्णे,

असंखेज्जे दीवसमुद्दे पण्णत्ते समणाउसो !

कठिन शब्दार्थ-पज्जवसाणा-पर्यवसान-अन्त ।

भावार्थ-९-उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर स्वामी वहाँ पधारे । जनता धर्मोपदेश सुनकर यावत चली गई । उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के ज्येष्ठ अन्तेवासी इन्द्रभूति अनगार, दूसरे शतक के निर्ग्रन्थोद्देशक में वर्णित विधि के अनुसार भिक्षार्थ जाते हुए, बहुत-से मनुष्यो के शब्द सुने । वे परस्पर कह रहे थे कि 'हे देवानुप्रियो ! शिवराजर्षि कहते हैं कि मुझे अतिशय ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ है, यावत् इस लोक में सात द्वीप और सात समुद्र ही ह, इसके आगे द्वीप और समुद्र नहीं है । यह बात कैसे मानी जाय ?

१०-बहुत-से मनुष्यो से यह बात सुनकर गौतम स्वामी को सन्देह कुतूहल एव श्रद्धा हुई, उन्होने भगवान की सेवा में आकर इस प्रकार पूछा-'हे भगवन् ! शिवराजर्षि कहते हैं कि सात द्वीप और सात समुद्र हैं, इसके बाद द्वीप समुद्र नहीं है, उनका ऐसा कहना सत्य है क्या ? भगवान ने कहा-'हे गौतम ! शिवराजर्षि से सुनकर बहुत-से मनुष्य जो कहते हैं कि 'सात द्वीप और सात समुद्र ही हैं, इसके बाद कुछ भी नहीं है, इत्यादि-' यह कथन मिथ्या है । हे गौतम ! मै इस प्रकार कहता हूँ यावत प्ररूपणा करता हूँ कि जम्बूद्वीपादि द्वीप और लवण समुद्रादि समुद्र, ये सब वृत्ताकार (गोल) होने से आकार में एक सरीखे हैं । परन्तु विस्तार में एक दूसरे से दुगुने दुगुने होने के कारण अनेक प्रकार के हैं, इत्यादि सभी वर्णन जीवाभिगम सूत्र में कहे अनुसार जानना चाहिए । यावत् हे आयुष्मन श्रमणो ! इस तिर्च्छा लोक में स्वयम्भूरमण समुद्र पर्यन्त असंख्यात द्वीप और समुद्र कहे गये हैं ।

११ प्रश्न-अत्थि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दव्वाइं सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि सगंधाइं पि अगंधाइं पि सरसाइं पि अरसाइं पि

६–तेण कालेण तेण समएणं सामी समोसढे, परिसा जाव पडिगया । तेण कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी जहा विइयसए णियठुद्देसए जाव अडमाणे बहुजण-सद्द णिसामेइ, बहुजणो अण्णमण्णस्स एव आइक्खइ, एव जाव परूवेइ–एव खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एव आइक्खइ, जाव परूवेइ अत्थि ण देवाणुप्पिया ! त चेव जाव वोच्छिण्णा दीवा य समुद्दा य ।' से कहमेय मण्णे एव ?

१०–तएण भगव गोयमे बहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म जाव–सड्ढे जहा णियठुद्देसए जाव तेण पर वोच्छिण्णा दीवा य समुद्दा य, से कहमेय भते ! एव ? गोयमादि ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी–जण्णं गोयमा ! से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, त चेव सव्व भाणियव्व जाव–भड-णिक्खेव करेइ, हत्थिणापुरे णयरे सिघाडग० त चेव जाव वोच्छिण्णा दीवा य समुद्दा य । तएण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अतिए एय-मट्ठ सोच्चा णिसम्म त चेव सव्व भाणियव्व जाव तेण पर वोच्छिण्णा दीवा य समुद्दा य, तण्ण मिच्छा । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, जाव परूवेमि–'एव खलु जबुद्दीवाइया दीवा लवणाईया समुद्दा सठाणओ एगविहिविहाणा, वित्थारओ अणेगविहिविहाणा एव जहा जीवाभिगमे जाव–सयभूरमणपज्जवसाणा अस्सि तिरियलोए

भगव महावीरे एवमाइक्खइ, जाव परूवेइ–एव खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठछट्ठेण त चेव जाव–भडणिक्खेव करेइ, भडणिक्खेव करेत्ता हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडग० जाव–समुद्दा य। तएणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म जाव–समुद्दा य तएण सिच्छा, समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ–एव खलु जवुद्दीवाईया दीवा लवणाईया समुद्दा त चेव जाव असखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो !

कठिन शब्दार्थ–अण्णमण्णघडत्ताए–अन्यान्य सबद्ध ।

भावार्थ–११ प्रश्न–हे भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप में वर्ण सहित और वर्ण रहित, गन्ध सहित और गन्ध रहित, रस सहित और रस रहित, स्पर्श सहित और स्पर्श रहित द्रव्य, अन्योन्य बद्ध, अन्योन्य स्पृस्ट यावत् अन्योन्य सम्बद्ध है ?

११ उत्तर–हाँ, गौतम ! है।

१२ प्रश्न–हे भगवन् ! लवण समुद्र में वर्ण सहित और वर्ण रहित गन्ध सहित और गन्ध रहित, रस सहित और रस रहित, स्पर्श सहित और स्पर्श रहित द्रव्य अन्योन्य बद्ध, अन्योन्य स्पृष्ट यावत अन्योन्य सम्बद्ध है ?

१२ उत्तर–हाँ, गौतम ! है।

१३ प्रश्न–हे भगवन् ! क्या धातकीखण्ड में यावत् स्वयम्भूरमण समुद्र में वर्णादि सहित और वर्णादि रहित द्रव्य यावत् अन्योन्य सम्बद्ध है ?

१३ उत्तर–हाँ, गौतम ! है।

१४ इसके पश्चात वह महती परिषद् श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से उपर्युक्त अर्थ सुनकर और हृदय में धारण कर हर्षित एव सतुष्ट हुई और भगवान् को वन्दना नमस्कार कर चली गई।

सफासाइ पि अफासाइ पि अण्णमण्णवद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइ जाव-घडत्ताए चिट्ठति ।

११ उत्तर-हता अत्थि ।

१२ प्रश्न-अत्थि णं भते ! लवणमसुद्दे दव्वाइ सवण्णाइ पि अवण्णाइ पि सगधाइ पि अगधाइ पि सरमाइ पि अरसाइ पि सफासाइ पि अफासाइ पि अण्णमण्णवद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइ जाव-घडत्ताए चिट्ठति ।

१२ उत्तर-हता अत्थि ।

१३ प्रश्न-अत्थि णं भते ! धायइसडे दीवे दव्वाइ सवण्णाइ पि एव चेव, एव जाव-सयभूरमणसमुद्दे ?

१३ उत्तर-जाव हता अत्थि ।

१४-तएणं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठा समणं भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ।

१५-तए ण हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडग० जाव-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ-जण्ण 'देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ-अत्थि णं देवाणुप्पिया ! मम अइसेसे णाणे जाव-समुद्दा य,' त णो इणट्ठे समट्ठे, समणे

जाव समुप्पज्जित्था–'एव खलु समणे भगव महावीरे आइगरे तित्थगरे जाव–सव्वरणू सव्वदरिसी आगासगएण चक्केण जाव सहसबवणे उज्जाणे अहापडिरूव जाव विहरइ त महाफल खलु तहारूवाणं अरहताण भगवताण णामगोयस्स जहा उववाइए जाव–गहणयाए, त गच्छामि ण समण भगव महावीर वदामि जाव पज्जुवासामि, एय णे इहभवे य परभवे य जाव भविस्सइ' त्ति कट्टु एव सपेहेइ।

१८–एव सपेहित्ता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता तावसावसह अणुप्पविसइ, तावसावसह अणुप्पविसित्ता सुबहु लोही-लोहकडाह० जाव किढिणसकाइग च गेण्हइ गेण्हित्ता तावसावसहाओ पडिणिक्खमइ ताव० परिवडियविब्भगे हत्थिणाउर णयर मज्झमज्झेण णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता जेणेव सहसबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे जाव–पजलिउडे पज्जुवासइ। तएण समणे भगव महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महतिमहालियाए० जाव–आणाए आराहए भवइ।

१९–तएण से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा णिसम्म जहा खदओ, जाव उत्तरपुरच्छिम

१५ हस्तिनापुर नगर में श्रृंगाटक यावत् अन्य राज-मार्गों पर बहुत-से लोग इस प्रकार कहने एव प्ररूपणा करने लगे कि 'हे देवानुप्रियो ! शिव राजर्षि जो कहते एव प्ररूपणा करते ह कि 'मुझे अतिशेष ज्ञान दशन उत्पन्न हुआ ह, जिससे मैं जानता–देखता हूँ कि इस लोक में सात द्वीप और सात समुद्र ही ह, इन के आगे द्वीप और समुद्र नही है,'–उनका यह कथन मिथ्या है। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी इस प्रकार कहते और प्ररूपणा करते है कि 'निरन्तर बेले-बेले की तपस्या करते हुए शिवराजर्षि को विभगज्ञान उत्पन्न हुआ है। जिससे वे सात द्वीप समुद्र तक जानते-देखते हे और इसके आगे द्वीप समुद्र नहीं ह, यह उनका कथन मिथ्या है। क्योकि जम्बूद्वीप आदि द्वीप और लवणादि समुद्र असख्यात है।

विवेचन–मिथ्यात्व युक्त अवधि का 'विभगज्ञान' कहत हैं। किसी बाल तपस्वी का अज्ञान तप के द्वारा जब दूर के पदाथ दिखाई देत ह, तो वह अपने को विशिष्ट ज्ञानवाला समझ कर सवज्ञ के वचनो मे विश्वास नही करता हुआ मिथ्या प्ररूपणा करने लगता ह। शिवराजर्षि का भी इसी प्रकार का विभगज्ञान उत्पन्न हुआ था। व उस विभग को ही विशिष्ट एव पूण ज्ञान समझकर मिथ्या प्ररूपणा करने लगे। श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने शिवराजर्षि का कथन मिथ्या बताया और कहा कि द्वीप और समुद्र असख्यात हैं।

१६–तए ण से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म सकिए कखिए वितिगिच्छिए भेदसमावण्णे कलुस-समावण्णे जाए यावि होत्था। तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स सकियस्स कखियस्स जाव–कलुससमावण्णस्स से विभगे अण्णाणे खिप्पामेव परिवडिए।

१७–तएणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए

१७–इसके पश्चात शिवराजर्षि को इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ कि 'श्रमण भगवान् महावीर स्वामी, धम की आदि करने वाले, तीर्थंकर यावत् सवज्ञ, सर्वदर्शी हैं, जिनके आगे आकाश में धमचक्र चलता है, वे यहाँ सहस्राम्र-वन उद्यान में यथा-योग्य अवग्रह ग्रहण करके यावत् विचरते हैं । इस प्रकार के अरिहत भगवन्तो का नाम-गोत्र सुनना भी महाफल वाला है, तो उनके सम्मुख जाना, वन्दन करना, इत्यादि का तो कहना ही क्या, इत्यादि औपपातिक सूत्र के उल्लेखानुसार विचार किया, यावत एक भी आय धार्मिक सुवचन का सुनना भी महाफल दायक है, तो विपुल अथ के अवधारण का तो कहना ही क्या । अत मैं श्रमण भगवान महावीर स्वामी के पास जाऊँ, वन्दन-नमस्कार यावत् पर्युपासना करूँ । यह मेरे लिये इस भव और पर भव में यावत् श्रेयकारी होगा ।

१८–ऐसा विचार कर तापसो के मठ में आये और उसमें प्रवेश किया । मठ में से लोढी, लोह-कडाह यावत कावड आदि उपकरण लेकर पुन निकले । विभगज्ञान रहित वे शिवराजर्षि हस्तिनापुर नगर के मध्य होते हुए सहस्राम्रवन उद्यान में,श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के निकट आये । भगवान् को तीन बार प्रदक्षिणा करके वन्दन नमस्कार किया और न अति दूर न अति निकट यावत हाथ जोड कर भगवान की उपासना करने लगे । श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने शिवराजर्षि और महा-परिषद को धर्मोपदेश दिया यावत– "इस प्रकार पालन करने से जीव आज्ञा के आराधक होते है ।"

१९–श्रमण भगवान महावीर स्वामी से धर्मोपदेश सुनकर और अवधारण कर शिवराजर्षि, स्कन्दक की तरह ईशानकोण में गये और लोढी, लोह कडाह यावत कावड आदि तापसोचित उपकरणो को एकात स्थान में डाल दिया । फिर स्वयमेव पञ्चमुष्टि लोच किया और श्रमण भगवान महावीर स्वामी के समीप (नौवे शतक के तेतीसवे उद्देशक में कथित) ऋषभदत्त की तरह प्रव्रज्या अगीकार की। ग्यारह अगो का ज्ञान पढा, यावत वे शिवराजर्षि समस्त दु खो से

दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमइत्ता सुबहु लोही लोहकडाह० जाव–किढिणसंकाइग एगते एडेइ, ए० सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ, सयमे० समण भगव महावीर एव जहेव उसभदत्ते तहेव पव्वइओ, तहेव इक्कारस अगाइ अहिज्जइ, तहेव सव्व जाव–सव्वदुक्खप्पहीणे ।

२० प्रश्न–'भते' त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी–जीवा णं भते ! सिज्झमाणा कयरमि सघयणे सिज्झति ?

२० उत्तर–गोयमा ! वयरोसभणारायसघयणे सिज्झति । एव जहेव उववाइए तहेव "सघयण सठाण उच्चत्त आउय च परिवसणा" । एव सिद्धिगडिया णिरवसेसा भाणियव्वा, जाव–"अव्वाबाह सोक्ख अणुहोति सासय सिद्धा" ।

॥ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

॥ एक्कारससए णवमो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ–परिवडिए–नष्ट हो गया, तावसावसहे–तापसावसथ–तापसो का मठ ।

भावार्थ–१६–शिवराजर्षि, बहुत से मनुष्यो से यह बात सुन कर और अवधारण कर के शकित, काक्षित, सदिग्ध, अनिश्चित्त और कलुषित भाव को प्राप्त हुए । शकित, काक्षित आदि बने हुए शिवराजर्षि का वह विभग नामक अज्ञान तुरन्त नष्ट हो गया ।

२ प्रश्न–खेत्तलोए ण भते ! कइविहे पण्णत्ते ?

२ उत्तर–गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तजहा–१ अहोलोय-खेत्तलोए २ तिरियलोयखेत्तलोए ३ उड्ढलोयखेत्तलोए ।

३ प्रश्न–अहोलोयखेत्तलोए ण भते ! कइविहे पण्णत्ते ?

३ उत्तर–गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते, तजहा–रयणप्पभापुढवि-अहेलोयखेत्तलोए जाव–अहेसत्तमापुढविअहोलोयखेत्तलोए ।

४ प्रश्न–तिरियलोयखेत्तलोए ण भते ! कइविहे पण्णत्ते ?

४ उत्तर–गोयमा ! असखेज्जविहे पण्णत्ते तजहा–जवुद्दीवे दीवे तिरियलोयखेत्तलोए, जाव–सयभूरमणसमुद्दे तिरियलोयखेत्त-लोए ।

५ प्रश्न–उड्ढलोयखेत्तलोए ण भते ! कइविहे पण्णत्ते ?

५ उत्तर–गोयमा ! पण्णरसविहे पण्णत्ते तजहा–सोहम्मकप्प-उड्ढलोयखेत्तलोए जाव–अच्चुयउड्ढलोए गेवेज्जविमाणउड्ढलोए, अणुत्तरविमाण० ईसिपब्भारपुढविउड्ढलोयखेत्तलोए ।

कठिन शब्दार्थ–ईसिपब्भारपुढवी–ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी–सिद्ध शिला।

भावार्थ १ प्रश्न–राजगृह नगर में गौतम स्वामी ने यावत इस प्रकार पूछा–'हे भगवन ! लोक कितने प्रकार का कहा गया है ?'

१ उत्तर–हे गौतम ! लोक चार प्रकार का कहा गया है। यथा–१ द्रव्य लोक, २ क्षेत्र लोक, ३ काल लोक और ४ भाव लोक ।

२ प्रश्न–हे भगवन् ! क्षेत्र-लोक कितने प्रकार का कहा गया है ?

मुक्त हुए ।

२० प्रश्न-श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दना नमस्कार कर, गौतमस्वामी ने इस प्रकार पूछा-'हे भगवन् ! सिद्ध होने वाले जीव किस सहनन में सिद्ध होते हैं ?

२० उत्तर-हे गौतम ! वज्रऋषभनाराच सहनन में सिद्ध होते हैं, इत्यादि औपपातिक सूत्र के अनुसार 'सहनन, सस्थान, उच्चत्व, आयुष्य, परिवसन (निवास), इस प्रकार सम्पूर्ण सिद्धिगण्डिका तक यावत् सिद्ध जीव अव्याबाध शाश्वत सुखो का अनुभव करते हैं-कहना चाहिए ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

॥ ग्यारहवें शतक का नौवां उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ११ उद्देशक १०

लोक के द्रव्यादि भेद

१ प्रश्न-रायगिहे जाव एव वयासी-कइविहे ण भते ! लोए पण्णत्ते ?

१ उत्तर-गोयमा ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, तजहा-दव्वलोए खेत्तलोए काललोए भावलोए ।

६ प्रश्न–अहोलोयखेत्तलोए ण भते ! किंसठिए पण्णत्ते ?

६ उत्तर–गोयमा ! तप्पागारसठिए पण्णत्ते ।

७ प्रश्न–तिरियलोयखेत्तलोए ण भते ! किंसठिए पण्णत्ते ?

७ उत्तर–गोयमा ! झल्लरिसठिए पण्णत्ते ।

८ प्रश्न–उड्ढलोयखेत्तलोए–पुच्छा

८ उत्तर–उड्ढमुइगाकारसठिए पण्णत्ते ।

९ प्रश्न–लोए ण भते ! किंसठिए पण्णत्ते ?

९ उत्तर–गोयमा ! सुपइट्ठगसठिए लोए पण्णत्ते, तजहा–हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे सखित्ते, जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव अत करेइ ।

१० प्रश्न–अलोए ण भते ! किंसठिए पण्णत्ते ?

१० उत्तर–गोयमा ! झुसिरगोलसठिए पण्णत्ते ।

११ प्रश्न–अहोलोयखेत्तलोए ण भते ! कि जीवा, जीवदेसा जीवपएसा ?

११ उत्तर–एव जहा इदा दिसा तहेव णिरवसेस भाणियव्व, जाव अद्धासमए ।

१२ प्रश्न–तिरियलोयखेत्तलोए णं भते ! किं जीवा० ?

१२ उत्तर–एव चेव, एव उड्ढलोयखेत्तलोए वि, णवर अरूवी छव्विहा, अद्धासमओ णत्थि ।

२ उत्तर-हे गौतम ! तीन प्रकार का कहा गया है। यथा-१ अधोलोक क्षेत्रलोक, २ तिर्यग्लोक क्षेत्रलोक, ३ ऊर्ध्वलोक क्षेत्रलोक।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! अधोलोक क्षेत्रलोक कितने प्रकार का कहा गया है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! सात प्रकार का कहा गया है। यथा-रत्नप्रभा पृथ्वी अधोलोक क्षेत्रलोक, यावत अध सप्तमपृथ्वी अधोलोक क्षेत्रलोक।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! तिर्यग्लोक क्षेत्रलोक कितने प्रकार का कहा गया है ?

४ उत्तर-हे गौतम ! असख्य प्रकार का कहा गया है। यथा-जम्बूद्वीप-तिर्यग्लोक क्षेत्रलोक यावत् स्वयभूरमणसमुद्र तिर्यग्लोक क्षेत्रलोक।

५ प्रश्न-हे भगवन् ! ऊर्ध्वलोक क्षेत्रलोक कितने प्रकार का कहा गया है ?

५ उत्तर-हे गौतम ! पन्द्रह प्रकार का कहा गया है। यथा-(१-१२) सौधर्मकल्प ऊर्ध्वलोक क्षेत्रलोक यावत अच्युत्कल्प ऊर्ध्वलोक क्षेत्रलोक। १३ ग्रैवेयक विमान ऊर्ध्वलोक क्षेत्रलोक। १४ अनुत्तरविमान ऊर्ध्वलोक क्षेत्रलोक। १५ ईषत्प्राग्भार पृथ्वी ऊर्ध्वलोक क्षेत्रलोक।

विवेचन-धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय से व्याप्त सम्पूर्ण द्रव्यो के आधाररूप चौदह राजु परिमाण आकाशखण्ड को 'लोक' कहते हैं। वह लोक चार प्रकार का है। उनमे से द्रव्य लोक के दो भेद है-आगमत और नोआगमत। जो 'लोक' शब्द के अर्थ को जानता है, किंतु उसमे उपयोग नही है, उसे 'आगमत द्रव्यलोक' कहते हैं। नोआगमत द्रव्यलोक के तीन भेद किये गये हैं। यथा-१ ज्ञशरीर २ भव्यशरीर ३ तद्व्यतिरिक्त शरीर। जिस प्रकार जिस घडे मे घी भरा था वह घी निकाल लेने पर भी 'घी का घडा' कहा जाता है इसी प्रकार जिस व्यक्ति ने पहले 'लोक' शब्द का अर्थ जाना था उसके मृत शरीर को 'ज्ञशरीर द्रव्यलोक' कहते हैं। जिस प्रकार भविष्य मे राजा की पर्याय प्राप्त करने के योग्य राज कुमार को 'भावी राजा' कहा जाता है तथा भविष्य मे जिस घट मे मधु रखा जायगा उस घट को अभी से 'मधुघट' कहा जाता है उसी प्रकार जो व्यक्ति भविष्य मे लोक शब्द के अर्थ को जानेगा उसके सचेतन शरीर को 'भव्यशरीर द्रव्यलोक' कहते हैं। धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यो को 'ज्ञशरीर भव्यशरीर व्यतिरिक्त द्रव्य लोक' कहते हैं।

क्षेत्र रूप लोक को 'क्षेत्र-लोक' कहते है। उसके भेद ऊपर बतलाये गये हैं।

१० प्रश्न–हे भगवन ! अलोक का कैसा सस्थान कहा है ?

१० उत्तर–हे गौतम ! अलोक का सस्थान पोले गोले के समान कहा है ।

११ प्रश्न–हे भगवन् ! अधोलोक क्षेत्रलोक में क्या जीव है, जीव के देश है, जीव के प्रदेश है, अजीव है, अजीव के देश है और अजीव के प्रदेश है ?

११ उत्तर–हे गौतम ! जिस प्रकार दसवे शतक के प्रथम उद्देशक में ऐन्द्री दिशा के विषय में कहा, उसी प्रकार यहाँ भी सभी वर्णन कहना चाहिये, यावत् 'अद्धासमय (काल) रूप है ।

१२ प्रश्न–हे भगवन् ! तिर्यग्लोक जीव रूप है, इत्यादि प्रश्न ।

१२ उत्तर–हे गौतम ! पूर्ववत जानना चाहिये । इसी प्रकार उध्वलोक क्षेत्रलोक के विषय में भी जानना चाहिये, परन्तु इतनी विशेषता है कि ऊर्ध्वलोक में अरूपी के छह भेद ही है, क्योकि वहाँ अद्धासमय नहीं है ।

१३ प्रश्न–हे भगवन् ! लोक में जीव है, इत्यादि प्रश्न ।

१३ उत्तर–हे गौतम ! दूसरे शतक के दसवे अस्ति उद्देशक में लोकाकाश के विषय वर्णन के अनुसार जानना चाहिये, विशेष में यहाँ अरूपी के सात भेद कहने चाहिये, यावत अधर्मास्तिकाय के प्रदेश, आकाशास्तिकाय का देश, आकाशास्तिकाय के प्रदेश और अद्धासमय । शेष पूर्ववत जानना चाहिये ।

१४ प्रश्न–हे भगवन् ! अलोक में जीव है, इत्यादि प्रश्न ।

१४ उत्तर–हे गौतम ! दूसरे शतक के दसवे अस्तिकाय उद्देशक में जिस प्रकार अलोकाकाश के विषय में कहा, उसी प्रकार यहाँ भी जानना चाहिये, यावत वह सर्वाकाश के अनन्तवे भाग न्यून है ।

विवेचन–अधोलोक क्षेत्रलोक तिपाई के आकार का है तिर्यग्लोक क्षेत्रलोक भालर के आकार का है ऊध्वलोक क्षेत्रलोक खडीमदग के ग्राकार का है और लोक का आकार सुप्रतिष्ठक (शराव) जैसा है, अर्थात् नीचे एक उल्टा शराव रखा जाय उसके ऊपर एक शराव सीधा रखा जाय और उसके ऊपर एक शराव उल्टा रखा जाय, इसका जो आकार बनता

१३ प्रश्न-लोए णं भंते ! किं जीवा० ?

१३ उत्तर-जहा बिईयसए अत्थिउद्देसए लोयागासे, णवरं अरूवी सत्तविहा, जाव-अहम्मत्थिकायस्स पएसा, णोआगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायपएसा, अद्धासमए सेसं तं चेव ।

१४ प्रश्न-अलोए णं भंते ! किं जीवा० ?

१४ उत्तर-एवं जहा अत्थिकायउद्देसए अलोयागासे, तहेव णिरवसेसं जाव अणंताभागूणे ।

कठिन शब्दार्थ-तप्पागारसंठिए-तापा (तिपाई) के आकार, झल्लरिसंठिए-झालर के आकार, उड्ढमुइंग-ऊर्ध्व मृदंग, सुपइट्ठ-सुप्रतिष्ठक (शराव) विच्छिण्णे-विस्तीर्ण, संखित्ते-संक्षिप्त, झुसिर-पोला ।

भावार्थ-६ प्रश्न-हे भगवन् ! अधोलोक क्षेत्रलोक का कैसा संस्थान है ?

६ उत्तर-हे गौतम ! त्रपा (तिपाई) के आकार है ।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! तिर्यग्लोक क्षेत्रलोक का संस्थान कैसा है ?

७ उत्तर-हे गौतम ! झालर के आकार का है ।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! ऊर्ध्वलोक क्षेत्र लोक का कैसा संस्थान है ?

८ उत्तर-हे गौतम ! ऊर्ध्व मृदंग के आकार है।

९ प्रश्न-हे भगवन् ! लोक का कैसा संस्थान है ?

९ उत्तर-हे गौतम ! लोक सुप्रतिष्ठक (शराव) के आकार है । यथा-वह नीचे चौडा है। मध्य में संक्षिप्त (संकीर्ण) है, इत्यादि सातवें शतक के प्रथम उद्देशक में कहे अनुसार जानना चाहिये । उस लोक को उत्पन्न ज्ञान दर्शन के धारक केवलज्ञानी जानते हैं । इसके पश्चात् वे सिद्ध होते हैं यावत् समस्त दुःखों का अन्त करते हैं ।

णियमा १ एगिदिय देसा, २ अहवा एगिदियदेसा य वेइदियस्स देसे, ३ अहवा एगिंदियदेसा य वेइदियाण य देसा। एव मज्झिल्ल-विरहिओ जाव-अणिदिएसु, जाव-अहवा एगिदियदेसा य अणि-दियदेसा य। जे जीवपएसा ते णियमा १ एगिदियपएसा, २ अहवा एगिदियपएसा य वेइदियस्स पएसा, ३ अहवा एगिदियपएसा य वेइदियाण य पएसा, एव आइल्लविरहिओ जाव पचिदिएसु, अणि-दिएसु तियभगो। जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता तजहा-रूवी अजीवा य अरूवी अजीवा य। रूवी तहेव, जे अरूवी अजीवा ते पचविहा पण्णत्ता, तजहा-१ णोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, २ धम्मत्थिकायस्स पएसे, एव ४ अहम्मत्थिकायस्स वि, ५ अद्धासमए।

भावार्थ-१५ प्रश्न-हे भगवन् ! अधोलोक क्षेत्रलोक के एक आकाश प्रदेश में जीव है, जीवो के देश है, जीवो के प्रदेश है, अजीव है, अजीवो के देश है, अजीवो के प्रदेश है ?

१५ उत्तर-हे गौतम ! जीव नही, किंतु जीवो के देश ह, जीवो के प्रदेश है, अजीव है, अजीवो के देश ह और अजीवो के प्रदेश है। इनमें जो जीवो के देश है, वे नियम से १ एकेन्द्रिय जीवो के देश है। अथवा २ एकेन्द्रिय जीवो के देश और बेइन्द्रिय जीव का एक देश है। ३ अथवा एकेन्द्रिय जीवो के देश और बेइद्रिय जीवो के देश है। इस प्रकार मध्यम भग रहित (एकेन्द्रिय जीवो के देश और बेइद्रिय जीव के देश, इस मध्यम भग से रहित) शेष भग यावत् अनिन्द्रिय तक जानना चाहिये यावत् एकेन्द्रिय जीवो के देश और अनिन्द्रिय जीवो

है, वह लोक का आकार है। लोक का विस्तार मूल मे सातरज्जु है। ऊपर क्रम से घटते हुए सातरज्जु की ऊँचाई पर विस्तार एक रज्जु है। फिर क्रम से बढ कर साढ नव से साढ दस रज्जु की ऊँचाई पर विस्तार पाँच रज्जु है। फिर क्रम स घटकर मूल से चौदह रज्जु की ऊँचाई पर विस्तार एक रज्जु का है। ऊध्व और अधा दिशा मे ऊँचाई चौदह रज्जु है। अलोक का सस्थान पोले गोले के आकार है।

अधोलोक मे जीव भी है, जीव के देश भी हैं जीव क प्रदेश भी हैं, अजीव भी हैं, अजीव के देश भी है और अजीव क प्रदेश भी हैं। इसी प्रकार तियग लोक मे भी कहना चाहिए। ऊध्वलोक मे काल को छोडकर अरूपी अजीव के छह बोल कहना चाहिए। क्योकि ऊध्व लोक मे सूय के प्रकाश स प्रकटित काल नही है।

लोक मे धर्मास्तिकाय, धर्मास्तिकाय के प्रदेश, अधर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय के प्रदेश, आकाशास्तिकाय का देश, आकाशास्तिकाय का प्रदेश, और काल, ये अरूपी के सात भेद हैं। इनमे पहला धर्मास्तिकाय है, क्योकि वह सम्पूण लोक मे व्याप्त है। लाक मे धर्मास्तिकाय का देश नही है, क्योकि लोक मे अखण्ड धर्मास्तिकाय है। धर्मास्तिकाय के प्रदेश हैं क्योकि धर्मास्तिकाय उन प्रदेशो का समुदाय रूप है। इसी प्रकार अधर्मास्तिकाय के भी दो भेद लोक मे है। लोक मे सम्पूण आकाशास्तिकाय नही, किंतु उसका एक भाग है। इसीलिए कहा गया है कि आकाशास्तिकाय का देश है, तथा आकाशास्तिकाय के प्रदेश हैं। लोक मे काल द्रव्य भी हैं।

अलोक मे जीव जीव के देश और जीव के प्रदेश नही है और अजीव, अजीव के देश, और अजीव के प्रदेश भी नही हैं। एक अजीव द्रव्य का देश रूप अलोकाकाश है। वह भी अगुरुलघु है। अनन्त अगुरुलघु गुणो से सयुक्त आकाश के अनन्तवे भाग न्यून है।

१५ प्रश्न–अहेलोयखेत्तलोयस्स ण भते ! एगमि आगासपएसे कि जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा अजीवा अजीवदेसा अजीव-पएसा ?

१५ उत्तर–गोयमा ! णो जीवा, जीवदेसा वि जीवपएसा वि अजीवा वि अजीवदेसा वि अजीवपएसा वि। जे जीवदेसा ते

१७ प्रश्न–अलोयस्स णं भंते ! एगंमि आगासपएसे पुच्छा ।

१७ उत्तर–गोयमा ! णो जीवा, णो जीवदेसा, त चेव जाव अणंतेहिं अगुरूयलहुयगुणेहि संजुत्ते सव्वागासस्स अणंतभागूणे ।

१८–दव्वओ णं अहेलोयखेत्तलोए अणंताइ जीवदव्वाइ, अणंताइ अजीवदव्वाइ, अणंता जीवाजीवदव्वा । एवं तिरिय-लोयखेत्तलोए वि एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि । दव्वओ णं अलोए णेवत्थि जीवदव्वा, णेवत्थि अजीवदव्वा णेवत्थि जीवाजीवदव्वा, एगे अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासअणंतभागूणे । कालओ ण अहेलोयखेत्तलोए ण कयाइ णासि, जाव णिच्चे, एवं जाव अलोए । भावओ ण अहेलोयखेत्तलोए अणंता वण्णपज्जवा, जहा खंदए, जाव अणंता अगुरूयलहुयपज्जवा, एवं जाव लोए । भावओ ण अलोए णेवत्थि वण्णपज्जवा, जाव णेवत्थि अगुरूयलहुयपज्जवा, एगे अज्जीवदव्वदेसे, जाव अणंताभागूणे ।

कठिन शब्दार्थ–णेवत्थि–नही ।

भावार्थ–१७ प्रश्न–हे भगवन् ! अलोक के एक आकाशप्रदेश में जीव है, इत्यादि प्रश्न ।

१७ उत्तर–हे गौतम ! वहाँ 'जीव नहीं, जीवो के देश नहीं, इत्यादि पूर्ववत जानना चाहिये, यावत अलोक अनन्त अगुरुलघु गुणो से सयुक्त है और सर्वाकाश के अनन्तवे भाग न्यून है ।

१८–द्रव्य से अधोलोक क्षेत्रलोक में अनन्त जीव द्रव्य है, अनन्त अजीव द्रव्य है और अनन्त जीवाजीव द्रव्य है । इसी प्रकार तिर्यग्लोक क्षेत्रलोक में और

के देश है । इनमें जो जीव के प्रदेश है, वे नियम से एकेन्द्रिय जीवों के प्रदेश है, अथवा एकेन्द्रिय जीवो के प्रदेश और एक बेइन्द्रिय जीव के प्रदेश है, अथवा एकेन्द्रिय जीवो के प्रदेश और बेइन्द्रिय जीवो के प्रदेश है । इस प्रकार यावत पञ्चेन्द्रिय तक प्रथम भग के सिवाय दो दो भग कहना चाहिये । अनिन्द्रिय में तीनो भग कहना चाहिये । उनमें जो अजीव है, वे दो प्रकार के कहे है । यथा-रूपी अजीव और अरूपी अजीव । रूपी अजीवो का वर्णन पूववत जानना चाहिये । अरूपी अजीव पाच प्रकार के कहे गये है । यथा-१ धर्मास्तिकाय का देश, २ धर्मास्तिकाय का प्रदेश, ३ अधर्मास्तिकाय का देश ४ अधर्मास्तिकाय का प्रदेश और ५ अद्धा समय ।

१६ प्रश्न-तिरियलोयखेत्तलोयस्स ण भते ! एगमि आगासपएसे कि जीवा० ?

१६ उत्तर-एव जहा अहोलोयखेत्तलोयस्स तहेव, एव उड्ढलोयखेत्तलोयस्स वि, णवर अद्धासमओ णत्थि, अरूवी चउव्विहा । लोयस्स जहा अहेलोयखेत्तलोयस्स एगमि आगासपएसे ।

भावार्थ-१६ प्रश्न-हे भगवन् ! तियग्लोक क्षेत्रलोक के एक आकाश-प्रदेश में जीव है, इत्यादि प्रश्न ।

१६ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार अधोलोक क्षेत्रलोक के विषय में कहा है, उसी प्रकार यहाँ भी जानना चाहिये और इसी प्रकार ऊध्वलोक क्षेत्रलोक के एक आकाश प्रदेश के विषय में भी जानना चाहिये, किन्तु वहाँ अद्धा समय नही है, इसलिये वहाँ चार प्रकार के अरूपी अजीव ह । लोक के एक आकाश-प्रदेश का कथन अधोलोक क्षेत्रलोक के एक आकाश प्रदेश के कथन के समान जानना चाहिये ।

१७ प्रश्न–अलोयस्स णं भंते ! एगमि आगासपएसे पुच्छा ।

१७ उत्तर–गोयमा ! णो जीवा, णो जीवदेसा, त चेव जाव अणंतेहिं अगुरूयलहुयगुणेहि संजुत्ते सव्वागासस्स अणंतभागूणे ।

१८–दव्वओ णं अहेलोयखेत्तलोए अणंताइ जीवदव्वाइ, अणताइ अजीवदव्वाइ, अणता जीवाजीवदव्वा । एव तिरिय-लोयखेत्तलोए वि एव उड्ढलोयखेत्तलोए वि । दव्वओ णं अलोए णेवत्थि जीवदव्वा, णेवत्थि अजीवदव्वा णेवत्थि जीवाजीवदव्वा, एगे अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासअणतभागूणे । कालओ ण अहेलोयखेत्तलोए ण कयाइ णासि, जाव णिच्चे, एव जाव अलोए । भावओ ण अहेलोयखेत्तलोए अणता वण्णपज्जवा, जहा खदए, जाव अणता अगुरूयलहुयपज्जवा, एव जाव लोए । भावओ ण अलोए णेवत्थि वण्णपज्जवा, जाव णेवत्थि अगुरूयलहुयपज्जवा, एगे अज्जीवदव्वदेसे, जाव अणताभागूणे ।

कठिन शब्दार्थ–णेवत्थि–नही ।

भावार्थ–१७ प्रश्न–हे भगवन् ! अलोक के एक आकाशप्रदेश में जीव है, इत्यादि प्रश्न ।

१७ उत्तर–हे गौतम ! वहाँ 'जीव नहीं, जीवो के देश नहीं, इत्यादि पूर्ववत् जानना चाहिये, यावत् अलोक अनन्त अगुरुलघु गुणो से सयुक्त है और सर्वाकाश के अनन्तवे भाग न्यून है ।

१८–द्रव्य से अधोलोक क्षेत्रलोक में अनन्त जीव द्रव्य है, अनन्त अजीव द्रव्य है और अनन्त जीवाजीव द्रव्य ह । इसी प्रकार तिर्यग्लोक क्षेत्रलोक में और

के देश है। इनमें जो जीव के प्रदेश है, वे नियम से एकेन्द्रिय जीवो के प्रदेश है, अथवा एकेन्द्रिय जीवो के प्रदेश और एक बेइन्द्रिय जीव के प्रदेश है, अथवा एकेन्द्रिय जीवो के प्रदेश और बेइन्द्रिय जीवो के प्रदेश है। इस प्रकार यावत पञ्चेन्द्रिय तक प्रथम भग के सिवाय दो दो भग कहना चाहिये। अनिन्द्रिय में तीनो भग कहना चाहिये। उनमें जो अजीव है, वे दो प्रकार के कहे है। यथा–रूपी अजीव और अरूपी अजीव। रूपी अजीवो का वणन पूववत जानना चाहिये। अरूपी अजीव पाच प्रकार के कहे गये है। यथा–१ धर्मास्तिकाय का देश, २ धर्मास्तिकाय का प्रदेश, ३ अधर्मास्तिकाय का देश ४ अधर्मास्तिकाय का प्रदेश और ५ अद्धा समय।

१६ प्रश्न–तिरियलोयखेत्तलोयस्स ण भते ! एगमि आगासपएसे कि जीवा० ?

१६ उत्तर–एव जहा अहोलोयखेत्तलोयस्स तहेव, एव उड्ढलोयखेत्तलोयस्स वि, णवर अद्धासमओ णत्थि, अरूवी चउव्विहा। लोयस्स जहा अहेलोयखेत्तलोयस्स एगमि आगासपएसे।

भावाथ–१६ प्रश्न–हे भगवन् ! तियग्लोक क्षेत्रलोक के एक आकाशप्रदेश में जीव है, इत्यादि प्रश्न।

१६ उत्तर–हे गौतम ! जिस प्रकार अधोलोक क्षेत्रलोक के विषय में कहा है, उसी प्रकार यहाँ भी जानना चाहिये और इसी प्रकार ऊध्वलोक क्षेत्रलोक के एक आकाश प्रदेश के विषय में भी जानना चाहिये, कि‍तु वहाँ अद्धा समय नहीं है, इसलिये वहा चार प्रकार के अरूपी अजीव है। लोक के एक आकाशप्रदेश का कथन अधोलोक क्षेत्रलोक के एक आकाश प्रदेश के कथन के समान जानना चाहिये।

देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए एगे देवे पुरच्छाभिमुहे पयाए, एव दाहिणाभिमुहे, एव पच्चत्थाभिमुहे एव उत्तराभिमुहे, एव उड्ढाभि० एगे देवे अहोभिमुहे पयाए, तेण कालेणं तेणं समएण वाससहस्साउए दारए पयाए, तएण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवति णो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणति। तएण तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवइ, णो चेव ण जाव सपाउणति, तएण तस्स दारगस्स अट्ठिमिंजा पहीणा भवति, णो चेव णं ते देवा लोगत सपाउणति। तएण तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवसे पहीणे भवइ, णो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणति। तएणं तस्स दारगस्स णामगोए वि पहीणे भवइ, णो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणति, तेसि णं भते! देवाण किं गए वहुए अगए वा बहुए? गोयमा! गए वहुए णो अगए वहुए, गयाउ से अगए असखेज्जइभागे, अगयाउ से गए असखेज्जगुणे, लोए ण गोयमा! ए महालए पण्णत्ते।

कठिन शब्दार्थ—महालए—बडा, चिट्ठेज्जा—खडे रहे, जमगसमग—एक साथ, पडिसाहरित्तए—ग्रहण कर सके, पयाए—गया उत्पन्न हुआ, दारए—बालक, पहीणा—नष्ट हुए, मरगए।

भावार्थ—१६ प्रश्न—हे भगवन्! लोक कितना बडा कहा है?

१६ उत्तर—हे गौतम! जम्बूद्वीप नामक यह द्वीप, समस्त द्वीप और समुद्रों के मध्य में है। इसकी परिधि तीन लाख सोलह हजार दो सौ सत्ताईस (३१६२२७) योजन, तीन कोस एक सौ अट्ठाईस धनुष और साढे तेरह अगुल

ऊर्ध्वलोक क्षेत्रलोक में भी जानना चाहिये । द्रव्य से अलोक में जीव द्रव्य नहीं, अजीव द्रव्य नहीं, और जीवाजीव द्रव्य भी नहीं, किन्तु अजीव द्रव्य का एक देश है यावत् सर्वाकाश के अनन्तवे भाग न्यून है । काल से अधोलोक क्षत्रलोक किसी समय नहीं था-ऐसा नहीं, यावत वह नित्य है । इस प्रकार यावत अलोक के विषय में भी कहना चाहिये । भाव से अधोलोक क्षेत्रलोक में 'अनन्त वर्ण पर्याय है, इत्यादि दूसरे शतक के प्रथम उद्देशक में स्कन्दक वर्णित प्रकरण के अनुसार जानना चाहिये, यावत अनन्त अगुरुलघु पर्याय है । इस प्रकार यावत लोक तक जानना चाहिये । भाव से अलोक में वर्ण पर्याय नहीं, यावत अगुरुलघु पर्याय नहीं है, परन्तु एक अजीव द्रव्य का देश है और वह सर्वाकाश के अनन्तवे भाग न्यून है ।

लोक की विशालता

१६ प्रश्न-लोए ण भते ! के महालए पण्णत्ते ?

१६ उत्तर-गोयमा ! अयण्ण जवुद्दीवे दीवे सव्वदीव० जाव-परिक्खेवेण । तेण कालेण तेण समएण छ देवा महिड्ढीया जाव-महेसक्खा जवुद्दीवे दीवे मदरे पव्वए मदरचूलिय सव्वओ समता सपरिक्खित्ता ण चिट्ठेज्जा, अहेणं चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चत्तारि वलिपिंडे गहाय जवुद्दीवस्स दीवस्स चउसु वि दिसासु वहिया अभिमुहिओ ठिच्चा ते चत्तारि वलिपिडे जमगसमग वहियाभिमुहे पक्खिवेज्जा, पभू ण गोयमा ! ताओ एगमेगे देवे ते चत्तारि वलिपिडे धरणितलमसपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए, ते ण गोयमा !

प्रमाण है अधोलोक मे सात रज्जु से कुछ अधिक है और ऊर्ध्वलोक मे किंचिन्न्यून सात रज्जु है। वे सभी देव छहो दिशाओ मे समान गति से जाते हैं, फिर छहो दिशाओ मे गत क्षेत्र से अगत क्षेत्र असख्यातवे भाग एव अगत क्षेत्र से गत क्षेत्र असख्यात गुणा कैसे बतलाया गया है ? क्योकि चारो दिशाओ की अपेक्षा ऊर्ध्व और अधो दिशा मे क्षेत्र परिमाण की विषमता है।

समाधान-शका उचित है, किन्तु यहा घन कृत (वर्गीकृत) लोक की विवक्षा करके यह रूपक कल्पित किया गया है, इसलिये कोइ दोष नही। ऐसा करके मेरु पर्वत को मध्य मे रखने पर सभी ओर साढे तीन साढे तीन रज्जु रह जाता है।

शका-यदि उक्त स्वरूप वाली गति से गमन करते हुए वे देव इतने लम्बे समय मे भी जब लोक के अन्त को प्राप्त नही कर सकते, तो तीर्थंकर भगवान के जन्म कल्याणादिक मे ठेठ अच्युत देवलोक तक से देव यहा कैसे शीघ्र आ जाते हैं ? क्योकि क्षेत्र बहुत लम्बा है और अवतरण काल (उन देवो के आने का समय) अत्यल्प है ?

समाधान-शका उचित है किन्तु तीर्थंकर भगवान के जन्म कल्याणादि मे आने की गति शीघ्रतम है। उस गति की अपेक्षा इस प्रकरण मे बतलाइ हुइ देवो की गति अति मन्द है*।

अलोक की विशालता

२० प्रश्न-अलोए ण भंते ! के महालए पण्णत्ते ?

२० उत्तर-गोयमा ! अयण समयखेत्ते पणयालीस जोयणसय-सहस्साइ आयामविक्खभेण जहा खदए जाव परिक्खेवेण। तेण कालेण तेण समएण दस देवा महिड्ढिया तहेव जाव सपरिक्खित्ता ण सचिट्ठेज्जा, अहे ण अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ अट्ठ बलिपिंडे गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु वि विदिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते अट्ठ बलिपिंडे जमगसमग

* वे देव भी कदाचित तिर्छलोक के होंगे ?-डोशी।

से कुछ अधिक है। यदि महर्द्धिक यावत महासुख सम्पन्न छह देव, मेरु पवत पर उसकी चूलिका के चारो तरफ खडे रहे और नीचे चार दिशाकुमारी देवियां चार वलिपिण्ड लेकर जम्बूद्वीप की जगती पर चारो दिशाओ में बाहर की ओर मुंह करके खडी होवे, फिर वे देवियां एक साथ चारो वलिपिण्डो को बाहर फेंके। उसी समय उन देवो में से प्रत्येक देव चारो वलिपिण्डो को पृथ्वी पर गिरने के पहले ही ग्रहण करने में समथ है—ऐसी तीव्र गति वाले उन देवो में से एक देव उत्कृष्ट यावत तीव्र गति से पूव में, एक देव पश्चिम में, एक देव उत्तर में, एक देव दक्षिण में, एक देव ऊर्ध्वदिशा में और एक देव अधोदिशा में जावे, उसी दिन, उसी समय एक गाथापति के, एक हजार वष की आयुष्य वाला एक बालक हुआ। बाद में उस बालक के माता पिता कालधम को प्राप्त हो गये, उतने समय में भी वे देव, लोक का अन्त प्राप्त नहीं कर सकते। वह बालक स्वय आयुष्य पूर्ण होने पर काल धम को प्राप्त हो गया, उतने समय में भी वे देव, लोक का अन्त प्राप्त नहीं कर सकते। उस बालक के हाड और हाड की मज्जा विनष्ट हो गई, तो भी वे देव, लोक का अन्त प्राप्त नहीं कर सकते। उस बालक की सात पीढी तक कुलवश नष्ट हो गया, तो उतने समय में भी वे देव, लोक का अन्त प्राप्त नही कर सकते। पश्चात् उस बालक के नाम गोत्र भी नष्ट हो गये, उतने समय तक चलते रहने पर भी वे देव, लोक के अन्त को प्राप्त नही कर सकते।

(प्रश्न) हे भगवन! उन देवो का गत (गया हुआ—उल्लघन किया हुआ) क्षेत्र अधिक है, या अगत (नहीं गया हुआ) क्षेत्र अधिक है?

(उत्तर) हेगौतम! गत क्षेत्र अधिक है। अगत क्षेत्र थोडा है। अगत-क्षेत्र, गत-क्षेत्र के असख्यातवे भाग है। अगत क्षेत्र से गत क्षेत्र असख्यात गुणा ह। हे गौतम! लोक इतना बडा है।

विवेचन—लोक की विशालता को बतलाने के लिये असत कल्पना से यह रूपक परिकल्पित किया गया है।

शका—मेरुपवत की चूलिका से पूर्वादि चारो दिशाओ मे लोक का विस्तार अद्ध रज्जु

प्रमाण है अधालोक मे सात रज्जु से कुछ अधिक है और ऊर्ध्वलोक मे किंचिन्यून सात रज्जु है । वे सभी देव छहो दिशाओ मे समान गति से जाते है, फिर छहो दिशाओ मे गत क्षेत्र से अगत क्षेत्र असख्यातवे भाग एव अगत क्षेत्र से गत क्षेत्र असख्यात गुणा कैसे बतलाया गया है ? क्योकि चारो दिशाओ की अपेक्षा ऊर्ध्व और अधो दिशा मे क्षेत्र परिमाण की विषमता है ।

समाधान-शका उचित है, किन्तु यहा घन कृत (वर्गीकृत) लोक की विवक्षा करके यह रूपक कल्पित किया गया है, इसलिये कोइ दोष नही । ऐसा करके मेरु पर्वत को मध्य मे रखने पर सभी ओर साढे तीन साढे तीन रज्जु रह जाता है ।

शका-यदि उक्त स्वरूप वाली गति से गमन करते हुए व देव, इतने लम्ब समय मे भी जब लोक के अन्त को प्राप्त नही कर सकते, तो तीर्थकर भगवान के जन्म कल्याणादिक मे ठेठ अच्युत देवलोक तक से देव यहा कैसे शीघ्र आ जाते हैं ? क्योकि क्षेत्र बहुत लम्बा है और अवतरण काल (उन देवो के आने का समय) अत्यल्प है ?

समाधान-शका उचित है किन्तु तीर्थकर भगवान के जन्म कल्याणादि मे आने की गति शीघ्रतम है । उस गति की अपेक्षा इस प्रकरण मे बतलाइ हुइ देवो की गति अति मन्द है* ।

अलोक की विशालता

२० प्रश्न-अलोए ण भते ! के महालए पण्णत्ते ?

२० उत्तर-गोयमा ! अयण्ण समयखेत्ते पणयालीस जोयणसय-सहस्साइ आयामविक्खभेण जहा खदए जाव परिक्खेवेण । तेण कालेण तेण समएण दस देवा महिड्ढिया तहेव जाव सपरिक्खित्ता ण सचिट्ठेज्जा, अहे ण अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ अट्ठ बलिपिडे गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु वि विदिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते अट्ठ बलिपिडे जमगसमग

* वे देव भी कदाचित तिर्छेलोक के होंगे ?-डोशी ।

वहियाभिमुहीओ पक्खिवेज्जा, पभू ण गोयमा ! तओ एगमेगे देवे ते अट्ठ बलिपिंडे धरणितलमसपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए, ते ण गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए लोगते ठिच्चा असब्भावपट्ठवणाए एगे देवे पुरच्छाभिमुहे पयाए, एगे देवे दाहिण-पुरच्छाभिमुहे पयाए, एव जाव उत्तरपुरच्छाभिमुहे, एगे देवे उड्ढा-भिमुहे, एगे देवे अहोभिमुहे पयाए। तेण कालेण तेण समएण वाससयसहस्साउए दारए पयाए। तएण तस्स दारगस्स अम्मा-पियरो पहीणा भवति, णो चेव ण ते देवा अलोयत सपाउणति, त चेव जाव तेसि णं देवाण कि गए बहुए अगए बहुए ? गोयमा ! णो गए बहुए अगए बहुए, गयाउ से अगए अणतगुणे, अगयाउ से गए अणतभागे अलोए ण गोयमा ! एमहालए पण्णत्ते।

कठिन शब्दार्थ–समयखेत्ते–समय क्षेत्र–मनुष्य लोक।

भावार्थ–२० प्रश्न–हे भगवन् ! अलोक कितना बडा है ?

२० उत्तर–हे गौतम ! इस मनुष्य क्षेत्र की लम्बाई और चौडाई पैंतालीस लाख (४५०००००) योजन है, इत्यादि स्कन्दक प्रकरण के अनुसार जानना चाहिये, यावत् वह परिधि युक्त है। उस समय में दस महर्द्धिक देव इस मनुष्य लोक को चारों ओर घेर कर खडे हो, उनके नीचे आठ दिशा कुमारियाँ आठ बलिपिण्डो को ग्रहण कर मानुषोत्तर पर्वत की चारो दिशाओ और चारो विदिशाओ में बाह्याभिमुख खडी रहे, पश्चात वे उन आठो बलिपिण्डो को एक साथ ही मानुषोत्तर पर्वत की बाहर की दिशाओ में फेंके, तो उन खडे हुए देवो में से प्रत्येक देव उन बलिपिण्डो को पृथ्वी पर गिरने के पूर्व ही ग्रहण करने में समर्थ

है,–ऐसी शीघ्र गति वाले वे दसो देव, लोक के अन्त से, यावत् (यह असत् कल्पना है जो सभव नही है) पूर्वादि चार दिशाओ में और चारो विदिशाओ में तथा एक ऊर्ध्व-दिशा में और एक अधो-दिशा में जावे। उसी समय एक गाथापति के घर एक लाख वर्ष की आयुष्य वाला एक बालक उत्पन्न हुआ। क्रमश उस बालक के माता-पिता दिवगत हुए, उसका भी आयुष्य क्षीण हो गया, उसकी अस्थि और मज्जा नष्ट हो गई और उसकी सात पीढियो के पश्चात् वह कुलवश भी नष्ट हो गया और उसके नाम गोत्र भी नष्ट हो गये, इतने समय तक चलते रहने पर भी वे देव अलोक के अन्त को प्राप्त नहीं कर सकते।

(प्रश्न) हे भगवन् ! उन देवो द्वारा गत-क्षेत्र अधिक है, या अगत-क्षेत्र अधिक है ?

(उत्तर) हे गौतम ! गत क्षेत्र थोडा है और अगत-क्षेत्र अधिक है। गत-क्षेत्र से अगत-क्षेत्र अनन्त गुण है। अगत क्षेत्र से गत-क्षेत्र अनन्तवे भाग है। हे गौतम ! अलोक इतना बडा कहा गया है।

आकाश के एक प्रदेश पर जीव-प्रदेश
नर्तकी का दृष्टांत

२१ प्रश्न–लोगस्स ण भते ! एगमि आगासपएसे जे एगिंदिय-पएसा जाव पचिंदियपएसा अणिंदियपएसा अण्णमण्णबद्धा, अण्ण-मण्णपुट्ठा जाव अण्णमण्णसमभरघडत्ताए चिट्ठति ? अत्थि ण भते ! अण्णमण्णस्स किंचि आबाह वा वाबाह वा उप्पायति, छविच्छेद वा करेंति ?

२१ उत्तर–णो इणट्ठे समट्ठे ।

(प्रश्न) से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ–लोयस्स णं एगंमि आगासपएसे जे एगिदियपएसा जाव चिट्ठति, णत्थि ण भंते ! अण्णमण्णस्स किंचि आबाह वा जाव करेंति ?

(उत्तर) गोयमा ! से जहाणामए णट्टिया सिया सिंगारागारचारुवेसा, जाव कलिया रगट्ठाणंमि जणसयाउलंमि जणसयसहस्साउलंसि वत्तीसइविहस्स णट्टस्स अण्णयर णट्टविहिं उवदंसेज्जा से णूण गोयमा ! ते पेच्छगा त णट्टिय अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समता समभिलोएंति ? हंता समभिलोएंति ताओ ण गोयमा ! दिट्ठिओ तंसि णट्टियंसि सव्वओ समता सणिपडियाओ ? हंता सण्णिपडियाओ, अत्थि ण गोयमा ! ताओ दिट्ठीओ तीसे णट्टियाए किंचि वि आबाह वा वाबाह वा उप्पाएंति, छविच्छेद वा करेंति ? णो इणट्ठे समट्ठे । अहवा सा णट्टिया तासिं दिट्ठीण किंचि आबाह वा वाबाह वा उप्पाएइ, छविच्छेद वा करेइ ? णो इणट्ठे समट्ठे । ताओ वा दिट्ठीओ अण्णमण्णाए दिट्ठीए किंचि आबाह वा वाबाह वा उप्पाएंति, छविच्छेद वा करेंति ? णो इणट्ठे समट्ठे । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ–त चेव जाव छविच्छेद वा करेंति ।

कठिन शब्दार्थ–आबाह–आबाधा–पीडा, वाबाह–व्याबाधा–विशेष पीडा, छविच्छव–छविच्छद–अवयव का छेद णट्टिया नर्तकी–नृत्य करने वाली, अण्णमण्णसमभरघडत्ताए–परस्पर सम्बद्ध, सिंगारागारचारुवेसा–शृगार सुंदर आकार और सुंदर वेश युक्त, जणसया

उलसि-सैकडो मनुष्यो से, पेच्छगा-प्रेक्षक ।

भावार्थ-२१ प्रश्न-हे भगवन् ! लोक के एक आकाशप्रदेश पर एकेन्द्रिय जीवो के जो प्रदेश है, यावत् पचेद्रिय जीवो के और अनिन्द्रिय जीवो के जो प्रदेश है, क्या वे सभी अन्योन्य बद्ध है, अन्योन्य स्पृष्ट है, यावत् अन्योन्य सबद्ध है ? हे भगवन् ! वे परस्पर एक दूसरे को आबाधा (पीडा) और व्याबाधा (विशेष पीडा) उत्पन्न करते है, तथा उनके अवयवो का छेद करते है ?

२१ उत्तर-हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं ।

(प्र०) हे भगवन ! इसका क्या कारण है, यावत वे पीडा नहीं पहुचाते और अवयवो का छेद नहीं करते ?

(उ०) हे गौतम ! जिस प्रकार कोई शृगारित और उत्तम वेषवाली यावत मधुर कण्ठवाली नतकी सैकडो और लाखो व्यक्तियो से परिपूर्ण रग-स्थली में बत्तीस प्रकार के नाटचो में से कोई एक नाटच दिखाती है, तो हे गौतम ! क्या दशक लोग, उस नतकी को अनिमेष दृष्टि से चारो ओर से देखते है, और उनकी दृष्टियाँ उस नतकी के चारो ओर गिरती है ? हाँ, भगवन् ! वे दशक लोग उसे अनिमेष दृष्टि से देखते ह और उनकी दृष्टियाँ उसके चारो ओर गिरती है । हे गौतम ! क्या उन दर्शको की वे दृष्टियाँ उस नतकी को किसी प्रकार की पीडा पहुचाती है, या उसके अवयव का छेद करती है ? हे भगवन् ! यह अथ समथ नहीं । हे गौतम ! वे दृष्टियाँ परस्पर एक दूसरे को किसी प्रकार की पीडा उत्पन्न करती है, या उनके अवयव का छेद करती है ? हे भगवन ! यह अथ समथ नहीं । हे गौतम ! इसी प्रकार जीवो के आत्मप्रदेश परस्पर बद्ध, स्पृप्ट और सबद्ध होने पर भी आबाधा, व्याबाधा उत्पन्न नही करते और न अवयव का छेद करते है ।

२२ प्रश्न-लोयस्स ण भते ! एगमि आगासपएसे जहण्णपए

जीवपएसाणं, उक्कोसपए जीवपएसाण, सव्वजीवाणं य कयरे कयरे० जाव विसेसाहिया वा ?

२२ उत्तर-गोयमा ! सव्वत्थोवा लोयस्स एगमि आगासपएसे जहण्णपए जीवपएसा, सव्वजीवा असखेज्जगुणा, उक्कोसपए जीव-पएसा विसेसाहिया ।

॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

॥ एक्कारसमए दसमोद्देसो समत्तो ॥

२२ प्रश्न-हे भगवन् ! लोक के एक आकाश प्रदेश पर जघन्य पद में रहे हुए जीव प्रदेश, उत्कृष्ट पद में रहे हुए जीव-प्रदेश और सभी जीव, इनमें कौन किससे अल्प, बहुत, तुल्य या विशेषाधिक हैं ?

२२ उत्तर-हे गौतम ! लोक के एक आकाश-प्रदेश पर जघन्य पद में रहे हुए जीव-प्रदेश सब से थोडे हैं । उससे सभी जीव असख्यात गुण हैं, उससे एक आकाशप्रदेश पर उत्कृष्ट पद से रहे हुए जीव प्रदेश विशेषाधिक है ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन ! यह इसी प्रकार है-ऐसा कहकर गौतमस्वामी यावत विचरते हैं ।

॥ ग्यारहवें शतक का दसवॉ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ११ उद्देशक ११

सुदर्शन सेठ के काल विषयक प्रश्नोत्तर

१—तेण कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे णाम णयरे होत्था, वण्णओ। दूइपलासए चेइए, वण्णओ, जाव पुढविसिलापट्टओ। तत्थ णं वाणियगामे णयरे सुदंसणे णाम सेट्ठी परिवसइ, अड्ढे, जाव अपरिभूए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ। सामी समोसढे, जाव परिसा पज्जुवासइ। तएण से सुदंसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ-तुट्ठे ण्हाए कय—जाव पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, साओ० सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेण पायविहारचारेण महयापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते वाणियगाम णयरं मज्झं मज्झेण णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव दूइपलासे चेइए जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव० समणं भगव महावीरं पचविहेण अभिगमेण अभिगच्छइ, तजहा—सच्चित्ताणं दव्वाणं० जहा उसभदत्तो, जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ। तएण समणे भगव महावीरे सुदंसणस्स सेट्ठिस्स तीसे य महतिमहालयाए जाव आराहए भवइ। तएण से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय धम्म सोच्चा, णिसम्म हट्ठ-तुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए० समण

भगव महावीर तिक्खुत्तो जाव णमसित्ता एव वयासी–

कठिन शब्दार्थ–परिवसइ–रहता था, अड्ढे–आढ्य–धनाढ्य अपरिभूए–किसी से नही दबने वाला (दृढ)।

भावार्थ–१–उस काल उस समय में वाणिज्यग्राम नामक नगर था (वणन)। द्युतिपलाश नामक उद्यान था (वणन)। उसमें एक पृथ्वी-शिलापट्ट था। उस वाणिज्यग्राम नगर में सुदशन नामक सेठ रहता था। वह आढ्य यावत अपरिभूत था। वह जीवाजीवादि तत्त्वो का जाननेवाला श्रमणोपासक था। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी वहाँ पधारे, यावत् परिषद् पर्युपासना करने लगी। भगवान् का आगमन सुनकर सुदशन सेठ बहुत हर्षित एव सतुष्ट हुआ। वह स्नानादि कर एव वस्त्रालकारो से विभूषित होकर, कोरण्ट पुष्प की मालायुक्त छत्र धारण कर, अनेक व्यक्तियो के साथ पैदल चल कर भगवान् के दशनार्थ गया। नौवे शतक के तेतीसवे उद्देशक में ऋषभदत्त के प्रकरण में कथित पाच अभिगम करके वह सुदशन सेठ, भगवान् की तीन प्रकार की पर्युपासना करने लगा। भगवान ने उस महापरिषद् को और सुदशन सेठ को 'आराधक बनने' जैसी धम कथा कही। धर्म कथा सुनकर सुदशन सेठ अत्यन्त हर्षित एव सन्तुष्ट हुए। उन्होने खडे होकर भगवान को तीन बार प्रदक्षिणा की और वन्दना नमस्कार करके इस प्रकार पूछा।

२ प्रश्न–कइविहे ण भते ! काले पण्णत्ते ?

२ उत्तर–सुदसणा ! चउव्विहे काले पण्णत्ते, तजहा–१ पमाणकाले २ अहाउणिव्वत्तिकाले ३ मरणकाले ४ अद्धाकाले।

३ प्रश्न–से कि त पमाणकाले ?

३ उत्तर–पमाणकाले दुविहे पण्णत्ते, तजहा–दिवसप्पमाणकाले

राइप्पमाणकाले य । चउपोरिसिए दिवसे चउपोरिसिया राई भवइ । उक्कोसिआ अद्धपचमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ।

भावार्थ–२ प्रश्न–हे भगवन ! काल कितने प्रकार का कहा है ?

२ उत्तर–हे सुदर्शन ! काल चार प्रकार का कहा है। यथा–१ प्रमाण काल, २ यथायुनिर्वृत्ति काल, ३ मरण काल और ४ अद्धा काल ।

३ प्रश्न–हे भगवन् ! प्रमाण काल कितने प्रकार का कहा है ?

३ उत्तर–हे सुदर्शन ! प्रमाण काल दो प्रकार का कहा है। यथा–दिवस-प्रमाण काल और रात्रि प्रमाणकाल । चार पौरुषी (प्रहर) का दिवस होता है और चार पौरुषी की रात्रि होती है । दिवस और रात्रि की पौरुषी उत्कृष्ट साढे चार मुहूर्त की और जघन्य तीन मुहूर्त की होती है ।

४ प्रश्न–जया ण भंते ! उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तया ण कइभागमुहुत्तभागेण परिहायमाणी परिहायमाणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ? जया ण जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तया ण कइभागमुहुत्तभागेण परिवड्ढमाणी परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?

४ उत्तर–सुदसणा ! जया ण उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ तया ण बावीससयभाग-

भवति ?

७ उत्तर-हता, अत्थि ।

८ प्रश्न-कया ण भते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवति ?

८ उत्तर-सुदसणा ! चित्ता-सोयपुण्णिमासु ण एत्थ ण दिवसा य राईओ य समा चेव भवति, पण्णरसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ । चउभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ । सेत्त पमाणकाले ।

भावार्थ-६ प्रश्न-अठारह मुहूर्त का उत्कृष्ट दिवस और बारह मुहूर्त की जघन्य रात्रि कब होती है ? तथा अठारह मुहूर्त की उत्कृष्ट रात्रि और बारह मुहूर्त का जघन्य दिवस कब होता है ?

६ उत्तर-हे सुदर्शन ! आषाढ की पूर्णिमा को अठारह मुहूर्त का उत्कृष्ट दिवस तथा बारह मुहूर्त की जघन्य रात्रि होती है । पौष मास की पूर्णिमा को अठारह मुहूर्त की उत्कृष्ट रात्रि तथा बारह मुहूर्त का जघन्य दिन होता है ।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! दिवस और रात्रि ये दोनो समान भी होते हैं ?

७ उत्तर-हां, सुदर्शन ! होते हैं ।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! दिवस और रात्रि-ये दोनो समान कब होते हैं ?

८ उत्तर-हे सुदर्शन ! चैत्र की पूर्णिमा और आश्विन की पूर्णिमा को दिवस और रात्रि दोनो बराबर होते है । उस दिन पन्द्रह मुहूर्त का दिवस तथा पन्द्रह मुहूर्त की रात्रि होती है और दिवस एव रात्रि की पौने चार मुहूर्त की पौरुषी होती है । इस प्रकार प्रमाण काल कहा गया है ।

विवेचन-जिससे दिवस वर्ष आदि का प्रमाण जाना जाय उसे 'प्रमाण काल' कहते हैं ।

यहा अषाढी पूर्णिमा को अठारह मुहूर्त का दिवस और पौष पूर्णिमा को अठारह मुहूर्त की रात्रि बतलाई गई है । यह पाच सवत्सर परिमाण युग के अन्तिम वर्ष की अपेक्षा

समझना चाहिये । दूसरे वर्षो मे तो जब तक मक्र ति होती है, तब ही अठारह मूहूत का दिवस और रात्रि होती है । जितने मूहूत का दिन या रात्रि ह ती है उसका चतुथ भाग पौरुषी कहलाता है । चत्र और आश्विन पूर्णिमा को दिन और रात्रि पन्द्रह पन्द्रह मूहूत की समान हाती है । यह कथन भी व्यवहार नय की अपेक्षा है । निश्चय मे तो कक सक्रान्ति और मकर सक्रान्ति से जो ९२ वा दिवस हाता है उस समय दिवस और रात्रि समान होती है ।

९ प्रश्न–से किं त अहाउणिव्वत्तिकाले ?

९ उत्तर–अहाउणिव्वतिकाले जण्ण णेरइएण वा तिरिक्ख-जोणिएण वा मणुस्सेण वा देवण वा अहाउय णिव्वत्तिय सेत्त पाले-माणे अहाउणिव्वत्तिकाले ।

१० प्रश्न–से किं त मरणकाले ?

१० उत्तर–मरणकाले जीवो वा सरीराओ सरीर वा जीवाओ सेत्त मरणकाले ।

११ प्रश्न–से किं त अद्धाकाले ?

११ उत्तर–अद्धाकाले अणेगविहे पण्णत्ते । से ण समयट्ठयाए आवलियट्ठयाए जाव उस्सप्पिणीट्ठयाए । एस ण सुदसणा ! अद्धा-दोहारच्छेएण छिज्जमाणी जाहे विभाग णो हव्वमागच्छइ सेत्त समए । समयट्ठयाए असखेज्जाण समयाण समुदयसमिइसमागमेण सा एगा 'आवलिय' त्ति पवुच्चइ । सखेज्जाओ आवलियाओ जहा सालिउद्देसए जाव सागरोवमस्स उ एगस्स भवे परिमाण ।

१२ प्रश्न–एएहि ण भंते ! पलिओवम सागरोवमेहिं किं पओयण ?

१२ उत्तर–सुदसणा ! एएहि पलिओवम-सागरोवमेहि णेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवाणं आउयाइ मविज्जति ।

१३ प्रश्न–णेरइयाण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

१३ उत्तर–एव ठिइपय णिरवसेस भाणियव्व जाव अजहण्ण-मणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

कठिन शब्दार्थ–अहाउणिवत्तिकाले–यथायुनिवृत्ति काल, मविज्जति–माप किया जाता है । अद्धादोहारच्छेएण–जिस समय के दो विभाग करने पर, समुदयसमिइसमागमेण–समुदाय-समूह के मिलने से ।

भावार्थ–९ प्रश्न–हे भगवन् ! यथायुनिवृत्ति काल कितने प्रकार का कहा है ?

९ उत्तर–हे सुदर्शन ! जिस किसी नैरयिक, तिर्यञ्चयोनिक, मनुष्य या देव ने स्वय जैसा आयुष्य बाधा है, उसी प्रकार उसका पालन करना–भोगना, 'यथानिर्वृत्ति काल' कहलाता है ।

१० प्रश्न–हे भगवन् ! मरण काल किसे कहते है ?

१० उत्तर–हे सुदर्शन ! शरीर से जीव का अथवा जीव से शरीर का वियोग होता है, उसे 'मरण काल' कहा जाता है ।

११ प्रश्न–हे भगवन् ! अद्धाकाल कितने प्रकार का कहा है ?

११ उत्तर–हे सुदर्शन ! अद्धाकाल अनेक प्रकार का कहा है । यथा–समय रूप, आवलिका रूप यावत उत्सर्पिणी रूप । हे सुदर्शन ! काल के सब से छोटे भाग को 'समय' कहते हैं, जिसके फिर दो विभाग न हो सके । असख्य समयो के समुदाय से एक आवलिका होती है । सख्यात आवलिका का एक उच्छ

वास होता है, इत्यादि छठे शतक के सातवे शालि उद्देशक में कहे अनुसार यावत सागरोपम तक जानना चाहिये ।

१२ प्रश्न–हे भगवन् ! पल्योपम और सागरोपम का क्या प्रयोजन है ?

१२ उत्तर–हे सुदर्शन ! पल्योपम और सागरोपम के द्वारा नैरयिक, तिर्यञ्चयोनिक, मनुष्य तथा देवो का आयुष्य मापा जाता है ।

१३ प्रश्न–हे भगवन् ! नैरयिको की स्थिति कितने काल की कही है ?

१३ उत्तर–हे सुदर्शन ! यहाँ प्रज्ञापना सूत्र का चौथा स्थिति पद सम्पूर्ण कहना चाहिये यावत् सर्वार्थसिद्ध देवो की अजघन्य अनुत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की स्थिति कही है ।

विवेचन–जिस जीव ने जितना आयुष्य बाधा है उतना आयुष्य भोगना 'यथायु निर्वृत्तिकाल' कहलाता है ।

शरीर से जीव का पथक हो जाना अथवा जीव से शरीर का पथक हो जाना 'मरण काल' कहलाता है ।

समय, आवलिका आदि 'अद्धाकाल' कहलाता है । पल्यापम, सागरोपम से चार गति के जीवो की आयु मापी जाती है । यह उपमा काल है ।

महाबल चरित्र

१४ प्रश्न–अत्थि ण भते ! एएसि पलिओवमसागरोवमाण खएइ वा अवचएइ वा ?

१४ उत्तर–हता, अत्थि ।

१५ प्रश्न–से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ 'अत्थि ण एएसि ण पलिओवम-सागरोवमाण जाव अवचएइ वा' ?

१५ उत्तर–एव खलु सुदसणा ! तेणं कालेण तेण समएणं

हत्थिणागपुरे णाम णयरे होत्था, वण्णश्रो । सहसंबवणे उज्जाणे, वण्णश्रो । तत्थ णं हत्थिणागपुरे णयरे बले णाम राया होत्था, वण्णश्रो । तस्स ण बलस्स रण्णो पभावई णाम देवी होत्था । सुकुमाल० वण्णश्रो जाव विहरइ । तएण सा पभावई देवी अण्णया कयाइ तसि तारिसगसि वासघरसि अभितरश्रो सचित्तकम्मे, बाहिरश्रो दूमिय-घट्ठ-मट्ठे, विचित्तउल्लोय-चिल्लियतले, मणि-रयण-पणासियधयारे, बहुसम सुविभत्तदेसभाए पचवण्ण-सरस-सुरभिमुक्क पुप्फपुजोवयारकलिए, कालागुरुपवर-कुदुरुक्क-तुरुक्कधूवमघमघत-गधुद्धयाभिरामे, सुगधि-वरगधिए, गधवट्टिभूए तसि तारिसगसि सयणिज्जसि सालिंगणवट्टिए, उभश्रोविब्बोयणे, दुहश्रो उण्णए, मज्झे णय-गभीरे, गगा-पुलिण-वालुय-उद्दालसालिसए, उवचिय-खोमिय दुगुल्लपट्टपडिच्छायणे, सुविरइयरयत्ताणे, रत्त-सुय-सवुए, सुरम्मे, श्राइणग-रुय-बूर-णवणीय-तूलफासे, सुगध-वरकुसुम-चुण्ण-सयणोवयारकलिए, अद्धरत्तकालसमयसि सुत्त-जागरा श्रोहीरमाणी श्रोहीरमाणी अयमेयारूव श्रोराल, कल्लाण, सिव, धण्ण, मगल्ल सस्सिरिय महासुविण पासित्ता ण पडिबुद्धा ।

कठिन शब्दार्थ–उल्लोग–उल्लोक–उपरिभाग, चिल्लियतले–प्रकाशित अधोभागवाला, खएइ–क्षय होता है, अवचएइ–अपचय होता है, सचित्तकम्मे–चित्र कम वाले, दूमिय–धवल, घट्ठमट्ठे–घिसकर मुलायम किये, मणिरयणपणासियधयारे–मणि और रत्नो के प्रकाश से अधकार रहित, सालिगणवट्टिए–तकिये सहित, उभओविब्बोयणे–दोनो ओर तकिये रखे हुए,

मज्झेणयगम्भीरे–मध्य मे नमी हुई एव गम्भीर, गगापुलिणवालुयउद्दालसालिए–गगा के किनारे की रेती के अवदाल (धँसती हुई) के समान, उवचिय खोमियदुगुलपट्ट पडिच्छायणे–भरे हुए रशमी दुकूल पट मे आच्छादित, सुविरइयरयत्ताण–रजस्त्राण से ढकी हुई, रत्तसुयसवुए–रक्ताशुक की मच्छरदानी युक्त, आइणग–आजिनक (चम का कोमल वस्त्र), सयणोवयारकलिए–शयनोपचार युक्त ।

भावार्थ–१४ प्रश्न–हे भगवन ! इन पल्योपम और सागरोपम का क्षय या उपचय होता है ?

१४ उत्तर–हाँ, सुदशन ! होता है ।

१५ प्रश्न–हे भगवन् ! ऐसा क्यो कहते है कि पल्योपम और सागरोपम का क्षय और अपचय होता है ?

१५ उत्तर– हे सुदर्शन ! (इस बात को एक उदाहरण द्वारा समझाया जाता है) उम काल उस समय हस्तिनागपुर नामक एक नगर था । (वणन) । वहाँ सहस्राम्रवन नामक उद्यान था । (वर्णन) । उस हस्तिनागपुर नगर में वल नामक राजा था (वर्णन) । उस वल राजा के प्रभावती नाम की रानी थी । उसके हाथ पैर सुकुमाल थे, इत्यादि वर्णन जानना चाहिये । किसी दिन उस प्रकार के भवन में जो भीतर से चित्रित, बाहर से सफेदी किया हुआ और घिसकर कोमल बनाया हुआ था । जिसका उपरिभाग विविध चित्र युक्त था और नीचे का भाग सुशोभित था । वह मणि और रत्नो के प्रकाश से अन्धकार रहित, बहुसमान, सुविभक्त भागवाला, पाच वण के सरस और सुगन्धित पुष्प पुञ्जो के उपचार से युक्त, उत्तम कालागुरु, कुन्दरुक और तुरुष्क (शिलारस) के धूप से चारो ओर सुगन्धित, सुगन्धी पदार्थों से सुवासित एव सुगन्धी द्रव्य की गुटिका के समान था । ऐसे वासगृह (भवन) में शय्या थी, जो तकिया सहित, सिरहाने और पगोतिये के दोनो ओर तकिया युक्त, दोनो ओर से उन्नत, मध्य में कुछ नमी हुई (झुकी हुई) विशाल, गगा के किनारे की रेती के अवदाल (पैर रखने से फिसलजाने) के समान कोमल, क्षोमिक-रेशमी दुकूलपट से आच्छादित, रजस्त्राण (उडती हुई धूल को रोकने वाले वस्त्र) से ढकी हुई, रक्ताशुक (मच्छर

दानी) सहित, सुरम्य आजिनक (एक प्रकार का चमडे का कोमल वस्त्र) रुई, बूर, नवनीत (मक्खन) अर्कतूल (आक की रुई) के समान कोमल स्पर्श वाली, सुगन्धित उत्तम पुष्प, चूर्ण और अन्य शयनोपचार से युक्त थी। ऐसी शय्या में सोती हुई प्रभावती रानी ने अर्द्ध निद्रित अवस्था में अर्द्ध रात्रि के समय इस प्रकार का उदार, कल्याण, शिव, धन्य, मगलकारक और शोभायुक्त महास्वप्न देखा और जागृत हुई।

१६—हार-रयय खीरसागर-ससककिरण-दगरय- रययमहासेल-पडुरतरोरुरमणिज्ज-पेच्छणिज्ज, थिर-लट्ठ पउट्ठ वट्ट-पीवर-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढाविडवियमुह, परिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइ-असोभतलट्ठउट्ठ, रत्तुप्पलपत्तमउअसुकुमालतालुजीह, मूसागयपवर-कणगताविय आवत्तायत वट्ट तडिविमलसरिसणयण, विसालपीव-रोरु, पडिपुण्णविपुलखध, मिउविसयसुहुमलक्खण-पसत्थ-विच्छिण्ण-केसरसडोवसोभिय, ऊसिय-सुणिम्मिय सुजाय अप्फोडियलगूल, सोम, सोमाकार, लीलायत, जभायत, णहयलाओ ओवयमाण णियय-वयणमइवयत, सीह सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धा।

कठिन शब्दार्थ—ओवयमाण—नीचे उतरते हुए, ससककिरण—चन्द्रमा की किरण, दगरय—जल बिन्दु रययमहासेल—रजत के बडे पर्वत जैसा, पडुरतरोरुरमणिज्ज—अत्यत श्वेत एव रमणीय, पेच्छणिज्ज—देखने योग्य पउट्ठ—प्रकोष्ठ (हाथ की कोहनी से लगाकर पहुँचे तक का भाग) णहयलाओ—नभ—आकाश से, णिययवयणमइवयत— अपने मुह मे प्रवेश करते, पडिबुद्धा—जाग्रत हुई।

भावार्थ—१६—प्रभावती रानी ने स्वप्न में एक सिंह देखा, जो मोतियो के हार, रजत (चाँदी), क्षीर समुद्र, चन्द्र-किरण पानी की बिन्दु और रजत महाशैल

(वैताढ्य) पर्वत के समान श्वेत वर्ण वाला था। वह विशाल, रमणीय और दर्शनीय था। उसके प्रकोष्ठ स्थिर और सुन्दर थे। वह अपने गोल, पुष्ट, सुश्लिष्ट, विशिष्ट और तीक्ष्ण दाढाओ से युक्त मुँह को फाडे हुए था। उसके ओष्ठ सस्कारित उत्तम कमल के समान कोमल, प्रमाणोपेत, अत्यन्त सुशोभित था। उसका तालु और जीभ रक्त-कमल के पत्र के समान, अत्यत कोमल थी। उसकी आँखें मूस में रहे हुए एव अग्नि से तपाये हुए तथा आवर्त करते हुए उत्तम स्वर्ण के समान वर्ण वाली, गोल और बिजली के समान निर्मल थी। उसकी जघा विशाल और पुष्ट थी। वह सम्पूर्ण और विपुल स्कन्ध वाला था। उसकी केशरा कोमल, विशद, सूक्ष्म एव प्रशस्त लक्षण वाली थी। वह सिंह अपनी सुन्दर तथा उन्नत पूँछ को पृथ्वी पर फटकारता हुआ सौम्य, सौम्य आकार वाला, लीला करता हुआ, उबासी लेता हुआ और आकाश से नीचे उतर कर अपने मुख में प्रवेश करता हुआ दिखाई दिया। यह स्वप्न देखकर प्रभावती रानी जाग्रत हुई।

१७–तएण सा पभावई देवी अयमेयारूव ओराल जाव–सस्सिरिय महासुविणं पासित्ता ण पडिबुद्धा समाणी हट्ठ तुट्ठ जाव हियया धाराहयकलवपुप्फग पिव समूसियरोमकूवा त सुविण ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, सय० अतुरियमचवलमसभताए अविलवियाए रायहसमसरिसीए गईए जेणेव बलस्स रण्णो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव० बल राय ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि ओरालाहिं कल्लाणाहि सिवाहि धण्णाहि मगल्लाहि सस्सिरीयाहि मिय-महुर-मजुलाहिं गिराहि सलवमाणी सलवमाणी पडिबोहेइ पडि० बलेण रण्णा

अब्भणुण्णाया समाणी णाणामणिरयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि णिसीयइ, णिसियित्ता आसत्था विसत्था सुहासणवरगया बल राय ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव-संलवमाणी संलवमाणी एवं वयासी-

कठिन शब्दार्थ-सस्सिरिय-श्री (शोभा) युक्त, महासुविण-महास्वप्न। अब्भणुण्णाया-आज्ञा होने पर। धाराहयकलंबपुप्फगंपिव-मेघ की धारा से विकसित कदम्ब पुष्प के समान, समूसियरोमकूवा-रोम कूप विकसित (रोमांचित) हुए, गिराहिं-वाणी से संलवमाणी-बोलती हुई, आसत्था विसत्था-आश्वस्त एवं विश्वस्त होकर।

भावार्थ १७-प्रभावती रानी इस प्रकार के उदार यावत् शोभा वाले महा स्वप्न को देखकर जाग्रत हुई। वह हर्षित, सन्तुष्ट हृदय यावत् मेघ की धारा से विकसित कदम्ब-पुष्प के समान रोमाञ्चित होती हुई स्वप्न का स्मरण करने लगी। फिर रानी अपनी शय्या से उठी और शीघ्रता रहित, चपलता, सम्भ्रम, एवं विलम्ब रहित, राजहंस के समान उत्तम गति से चलकर, बलराजा के शयन-गृह में आई और इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, मनाम, उदार, कल्याण, शिव, धन्य, मंगल, सुंदर, मित, मधुर और मञ्जुल (कोमल) वाणी से बोलती हुई बलराजा को जगाने लगी। राजा जाग्रत हुआ। राजा की आज्ञा होने पर, रानी विचित्र मणि और रत्नों की रचना से चित्रित भद्रासन पर बैठी। सुखासन पर बैठने के बाद स्वस्थ और शांत बनी हुई प्रभावती रानी इष्ट, प्रिय यावत् मधुर वाणी से इस प्रकार बोली।

१८-एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगण० तं चेव जाव-णियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया ! एयस्स ओरा-लस्स जाव महासुविणस्स के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भवि-

स्सइ ? तएणं से बले राया पभावईए देवीए अंतिय एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठ० जाव हयहियए धाराहयणीवसुरभिकुसुमचचु-मालइयतणुयऊसवियरोमकूवे त सुविण ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता ईहं पविस्सइ, ईह पविसित्ता अप्पणो साभाविएण मइपुव्वएण बुद्धि-विण्णाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहण करेइ, तस्स० पभावइ देविं ताहिं इट्ठाहिं कताहिं जाव मगल्लाहिं मिय-महुर-सस्सिरि० सलवमाणे सलवमाणे एव वयासी–

भावार्थ १८–'हे देवानुप्रिय ! आज तथाप्रकार की (उपरोक्त वर्णन वाली) सुखशय्या में सोती हुई मैने, अपने मुख में प्रवेश करते हुए सिंह के स्वप्न को देखा है। हे देवानुप्रिय ! इस उदार महास्वप्न का क्या फल होगा ? प्रभावती रानी की यह बात सुनकर और हृदय में धारण कर राजा हर्षित, तुष्ट और सतुष्ट हृदयवाला हुआ। मेघ की धारा से विकसित कदम्ब के सुगन्धित पुष्प के समान रोमाञ्चित बना हुआ बल राजा, उस स्वप्न का अवग्रह (सामान्य विचार) तथा ईहा (विशेष विचार) करने लगा। ऐसा करके अपने स्वाभाविक बुद्धि-विज्ञान से उस स्वप्न के फल का निश्चय किया। तत्पश्चात् राजा इष्ट, कान्त, मगल, मित यावत् मधुर वाणी से बोलता हुआ इस प्रकार कहने लगा।

१९–ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, कल्लाणे णं तुमे जाव सस्सिरीए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मगल्लकारए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिए ! भोगलाभो देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए !

रज्जलाभो देवाणुप्पिए । एव खलु तुम देवाणुप्पिए । णवण्ह मामाण वहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाणराइदियाण विइक्कताण अम्ह कुलकेउ, कुलदीव, कुलपव्वय, कुलवडेंसय, कुलतिलग, कुलकित्तिकर, कुल-णदिकर, कुलजसकर, कुलाधार कुलपायव, कुलविवद्धणकर, सुकु-मालपाणि पाय, अहीणपडिपुण्णपचिंदियसरीर, जाव ससिसोमाकार, कत, पियदसण, सुरूव, देवकुमारसमप्पभ दारग पयाहिसि ।

कठिन शब्दार्थ-कुलवडेसय-कुल मे शिखर के समान, कुलपायव-कुल मे पादप (वृक्ष) के समान दारग-बालक, ससिसोमाकार-चन्द्र के समान सौम्य आकार वाला ।

भावार्थ १९-'हे देवी ! तुमने उदार स्वप्न देखा है । हे देवी ! तुमने कल्याण कारक स्वप्न देखा है । यावत् हे देवी ! तुमने शोभायुक्त स्वप्न देखा है । हे देवी ! तुमने आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायुष्य, कल्याण और मगलकारक स्वप्न देखा है । हे देवानुप्रिये ! तुम्हे अर्थलाभ, भोगलाभ, पुत्रलाभ और राज्य लाभ होगा । हे देवानुप्रिये ! नव मास और साढे सात दिन बीतने के बाद तुम अपने कुल में ध्वज समान, दीपक समान, पर्वत समान, शिखर समान, तिलक समान तथा कुल की कीर्ति करनेवाले, कुल को आनन्द देने वाले, कुल का यश करने वाले, कुल के लिये आधारभूत, कुल में वृक्ष समान, कुल की वृद्धि करने वाले, सुकु-माल हाथ-पांववाले, अग हीनता रहित, सम्पूर्ण पञ्चेन्द्रिय युक्त शरीर वाले यावत् चन्द्र के समान सौम्य आकृति वाले, कान्त, प्रियदर्शन, सुरूप एव देव कुमार के समान कान्तिवाले पुत्र को तुम जन्म दोगी ।

२०-से वि य ण दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णायपरिणय-मित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कते वित्थिण्ण-विउलबल-वाहणे

रज्जवई राया भविस्सइ । त उराले ण तुमे जाव सुमिणे दिट्ठे, आरोग्ग-तुट्ठि० जाव मगल्लकारए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्टु पभावइ देवि ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहि दोच्च पि तच्च पि अणुवूहइ । तएणं सा पभावई देवी वलस्स रण्णो अतिय एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ० करयल० जाव एव वयासी–'एवमेय देवाणुप्पिया ! तहमेय देवाणुप्पिया ! अवितहमेय देवाणुप्पिया ! असदिद्धमेय देवाणुप्पिया ! इच्छियमेय देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेय देवाणुप्पिया ! इच्छियपडिच्छियमेय देवाणुप्पिया ! से जहेय तुज्भे वयह' त्ति कट्टु त सुविण सम पडिच्छइ, पडिच्छित्ता वलेण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी णाणामणि-रयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवल० जाव गईए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता सयणिज्जसि णिसीयइ, णिसीइत्ता एव वयासी–'मा मे से उत्तमे पहाणे मगल्ले सुविणे अण्णेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिस्सइ' त्ति कट्टु देव गुरूजणसवद्धाहिं पसत्थाहिं मगल्लाहिं धम्मियाहिं कहाहि सुविणजागरिय पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ ।

कठिन शब्दार्थ–विक्कते–पराक्रमी पडिहम्मिस्सइ–प्रतिहत होजाय, असदिद्धमेय–सदेह रहित, पहाणे–प्रधान ।

भावार्थ २०–वह बालक बालभाव से मुक्त होकर विज्ञ और परिणत

होकर युवावस्था को प्राप्त करके शूरवीर, पराक्रमी, विस्तीर्ण और विपुल बल (सेना) तथा वाहनवाला, राज्य का स्वामी होगा। हे देवी! तुमने उदार (प्रधान) स्वप्न देखा है। हे देवी! तुमने आरोग्य, तुष्टि यावत मंगलकारक स्वप्न देखा ह। इस प्रकार बल राजा ने इष्ट यावत मधुर वचनो से प्रभावती देवी को यही बात दो बार और तीन बार कही। बलराजा की पूर्वोक्त बात सुनकर और अव धारण कर प्रभावती देवी हर्षित एव सन्तुष्ट हुई और हाथ जोड कर इस प्रकार बोली—'हे देवानुप्रिय! आपने जो कहा वह यथार्थ है, सत्य है, सन्देह रहित है। मुझे इच्छित और स्वीकृत है, पुन पुन इच्छित और स्वीकृत है।' इस प्रकार स्वप्न के अर्थ को स्वीकार कर बलराजा की अनुमति से भद्रासन से उठी और शीघ्रता एव चपलता रहित गति से अपने शयनागार में आकर शय्या पर बैठी। रानी विचार करने लगी—'यह मेरा उत्तम, प्रधान और मंगलरूप स्वप्न, दूसरे पाप-स्वप्नो से विनष्ट न हो जाय, अत वह देव गुरु सम्बन्धी प्रशस्त और मंगल रूप धार्मिक कथाओ और विचारणाओ से स्वप्न जागरण करती हुई बैठी रही।

२१—तएण से बले राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अज्ज सविसेस बाहिरिय उवट्ठाणसाल गधोदय-सित्त-सुइअ-समज्जिओवलित्त सुगधवरपच-वण्णपुप्फोवयारकलिय कालागुरुपवर-कुदुरुक्क० जाव गधवट्टिभूय करेह य करावेह य, करित्ता करावित्ता सीहासण रएह, सीहासण रयावित्ता ममेय जाव पच्चप्पिणह। तएण ते कोडुबिय० जाव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सविसेस बाहिरिय उवट्ठाणसाल जाव पच्चप्पिणति।

भावार्थ–२१ इसके बाद बलराजा ने कौटुम्बिक (सेवक) पुरुषो को बुलाकर इस प्रकार कहा–'हे देवानुप्रियो ! तुम शीघ्र ही बाहर की उपस्थानशाला में, विशेष रूप से गन्धोदक का छिडकाव कर के स्वच्छ करो और लींप कर शुद्ध करो । सुगन्धित और उत्तम पाच वर्ण के पुष्पो से अलकृत करो । उत्तम कालागुरु और कुन्दरुक के धूप से यावत सुगन्धित गुटिका के समान करो-कराओ, फिर सिंहासन रखो और मुझे निवेदन करो । कौटुम्बिक पुरुषो ने राजा की आज्ञानुसार कार्य करके निवेदन किया ।

२२–तएण से बले राया पच्चूसकालसमयसि सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, सय० पायपीढाओ पच्चोरूहइ, पाय० जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ अट्टणसाल अणुपविसइ, जहा उववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे जाव ससिव्व पियदसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ णिसीइत्ता अप्पणो उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए अट्ठ भद्दासणाइ सेयवत्थपच्चुत्थुयाइ सिद्धत्थगकयमगलोवयाराइ रयावेइ, रयावेत्ता अप्पणो अदूरसामते णाणामणिरयणमडिय, अहियपेच्छणिज्ज, महग्घ-वरपट्टणुग्गय, सण्हपट्टबहुभत्तिसयचित्तताणं, ईहामिय-उसभ० जाव भत्तिचित्त, अब्भितरिय जवणिय अछावेइ, अछावेत्ता णाणामणि-रयणभत्तिचित्त अत्थरय-मउयमसूरगोत्थय, सेयवत्थपच्चुत्थुय, अगसुहफासुय, सुमउय पभावईए देवीए भद्दासण

रयावेइ, रयावित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-

कठिनशब्दार्थ-पच्चूसकालसमयंसि-प्रात काल के समय, जवणिय-यवनिका-पर्दा अट्टणसाला-व्यायामशाला, सेयवत्थपच्चुत्थुयाइ-श्वेत वस्त्र से आच्छादित, सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइ-सरसों से मंगल उपचार किया है जिसका, अहियपेच्छणिज्ज-अत्यधिक देखने योग्य महग्घ-मूल्यवान, वरपट्टणुग्गय-महा नगर मे निर्मित सण्णपट्टबहुभत्तिसयचित्तताण-बारिक सूत के और सैकडा प्रकार की कला से विचित्र तानेवाली, अछावेइ-हटाते हैं, अत्थरयमउयमसूरगोत्थय-गादी तथा कोमल तकियो से युक्त, सुमउय-सुकोमल ।

भावार्थ-२२ प्रात काल के समय बलराजा अपनी शय्या से उठे और पादपीठ से नीचे उतरे । फिर वे व्यायामशाला में गये । वहा के कार्य का तथा स्नान घर के कार्य का वर्णन औपपातिकसूत्र से जानना चाहिये, यावत चन्द्र के समान प्रियदर्शनी बनकर वह राजा स्नान घर से निकलकर बाहरी उपस्थानशाला में आया और पूर्व दिशा की ओर मुंह करके सिंहासन पर बैठा । फिर अपनी बायीं ओर ईशान-कोण में, श्वेत वस्त्र से आच्छादित तथा सरसों आदि मांगलिक पदार्थों से उपचरित आठ भद्रासन रखवाये । तत पश्चात प्रभावती देवी के लिए अनेक प्रकार के मणि-रत्नो से सुशोभित, बहुमूल्य, विचित्र कला-कौशल युक्त दर्शनीय, ऐसी सूक्ष्म वस्त्र की एक यवनिका (पर्दा) लगवाई । उसके भीतर अनेक प्रकार के मणि रत्नो से रचित, विचित्र, गद्दीयुक्त, श्वेत वस्त्र से आच्छादित तथा सुकोमल एक भद्रासन रखवाया था । फिर बलराजा ने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाकर इस प्रकार कहा-

२३-'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्ठंगमहाणिमित्तसुत्तत्थधारए, विविहसत्थकुसले, सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह' तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणित्ता बलस्स रण्णो अंतियाओ पडि-

णिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं वेइयं हत्थिणाउरं णयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेसिं सुविणलक्खणपाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता ते सुविणलक्खणपाढए सद्दावेंति। तएणं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठ-तुट्ठ० ण्हाया कय० जाव सरीरा सिद्धत्थग-हरियालियाकयमंगलमुद्धाणा सएहिं सएहिं गेहेहिंतो णिग्गच्छंति, सएहिं सएहिं० हत्थिणाउरं णयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव बलस्स रण्णो भवणवरवडेंसए तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता भवणवरवडेंसगपडिदुवारंसि एगओ मिलंति, एगओ मिलित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता करयल० बलरायं जएणं विजएणं वद्धावेंति। तएणं ते सुविणलक्खणपाढगा बलेणं रण्णा वंदिय-पूइअ-सक्कारिअ-सम्माणिआ समाणा पत्तेयं पत्तेयं पुव्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु णिसीयंति। तएणं से बले राया पभावइं देवीं जवणियंतरियं ठावेइ, ठावेत्ता पुप्फ-फल पडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी—'एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावई देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया ! एयस्स ओरालस्स जाव के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

कठिन शब्दार्थ-हरियालियाकयमगलमुद्धाणा-हरी दूब का मगल करके ।

भावार्थ-२३ 'हे देवानुप्रियो ! तुम शीघ्र जाओ और ऐसे स्वप्न-पाठको को बुलाओ-जो अष्टाग महानिमित्त के सूत्र एव अर्थ के ज्ञाता हो और विविध शास्त्रो में कुशल हो ।' राजाज्ञा को स्वीकार कर कौटुम्बिक पुरुष शीघ्र, चपलता युक्त, वेगपूर्वक एव तीव्र गति से हस्तिनापुर नगर के मध्य होकर स्वप्न पाठको के घर पहुँचे और उन्हे राजाज्ञा सुनाई । स्वप्न पाठक प्रसन्न हुए । उन्होने स्नान करके शरीर को अलकृत किया । वे मस्तक पर सर्षप और हरी दूब से मगल करके अपने अपने घर से निकले और राज्य-प्रासाद के द्वार पर पहुँचे । वे सभी स्वप्न-पाठक एकत्रित होकर बाहर की उपस्थान शाला में आये। उन्होंने हाथ जोडकर जय-विजय शब्दो से बलराजा को बधाया । बल राजा से वन्दित, पूजित, सत्कृत और सम्मानित किये हुए वे स्वप्न-पाठक, पहले से रखे हुए उन भद्रासनो पर बैठे । बल राजा ने प्रभावती देवी को बुलाकर यवनिका के भीतर बिठाया। तत्पश्चात हाथो में पुष्प और फल लेकर बलराजा ने अतिशय विनयपूर्वक उन स्वप्न पाठको से इस प्रकार कहा-"हे-देवानुप्रियो ! आज प्रभावती देवी ने तथारूप के वासगृह में शयन करते हुए सिंह का स्वप्न देखा। हे देवानुप्रियो ! इस उदार स्वप्न का क्या फल होगा ?"

तएण सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो अतिय एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठ० त सुविण ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता ईह अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहण करेइ, तस्स० अण्णमण्णेण सद्धि सचालेंति, सचालित्ता तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा बलस्स रण्णो पुरओ सुविणसत्थाइ उच्चारेमाणा उच्चारेमाणा एव वयासी-'एव

खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह सुविणमत्थमि वायालीस सुविणा, तीस महासुविणा, बावत्तरि सव्वसुविणा दिट्ठा । तत्थण देवाणुप्पिया ! तित्थयरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थयरसि वा चक्कवट्टिसि वा गब्भ वक्कममाणसि एएसि तीसाए महासुविणाण इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति । त जहा–

' गय-वसह-सीह-अभिसेय-दाम-ससि-दिणयर झय कुभ ।
पउमसर-सागर-विमाण भवण-रयणुच्चय-सिहि च " ॥

वासुदेवमायरो वा वासुदेवसि गब्भ वक्कममाणसि एएसि चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति । बलदेवमायरो वा बलदेवसि गब्भ वक्कममाणसि एएसि चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति । मडलियमायरो वा मडलियसि गब्भ वक्कम-माणसि एएसि ण चउदसण्ह महासुविणाण अण्णयर एग महासुविण पासित्ता ण पडिबुज्झति । इमे य ण देवाणुप्पिया ! पभावईए देवीए एगे महासुविणे दिट्ठे, त ओराले ण देवाणुप्पिया ! पभावईए देवीए सुविणे दिट्ठे, जाव आरोग्ग-तुट्ठि० जाव मगल्लकारए ण देवाणु-प्पिया ! पभावईए देवीए सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिए ! भोगलाभो देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए ! रज्जलाभो देवाणु

प्पिए ! एव खलु देवाणुप्पिए ! पभावई देवी णवण्ह मासाणं बहु-पडिपुण्णाणं जाव वीइक्कताण तुम्ह कुलकेउ जाव पयाहिइ । से वि य ण दारए उम्मुक्कबालभावे जाव रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा । त ओराले ण देवाणुप्पिया ! पभावईए देवीए सुविणे दिट्ठे, जाव आरोग्ग-तुट्ठि दीहाउअ-कल्लाण० जाव दिट्ठे ।

कठिन शब्दार्थ–कुलकेउ–कुल केतु (कुल मे ध्वजा के समान) ।

भावार्थ – बलराजा से प्रश्न सुनकर, अवधारण कर, वे स्वप्न-पाठक प्रसन्न हुए । उन्होंने उस स्वप्न के विषय में सामान्य विचार किया, विशेष विचार किया, स्वप्न के अर्थ का निश्चय किया, परस्पर एक दूसरे के साथ विचार-विमर्श किया और स्वप्न का अर्थ स्वय जानकर, दूसरे से ग्रहण कर, तथा शका समाधान करके अर्थ का निश्चय किया और बलराजा को सम्बोधित करते हुए इस प्रकार बोले–"हे देवानुप्रिय ! स्वप्न शास्त्र में बयालीस सामान्य स्वप्न और तीस महा स्वप्न–इस प्रकार कुल बहत्तर प्रकार के स्वप्न कहे हैं । इनमें से तीर्थंकर तथा चक्रवर्ती की माताएँ, जब तीर्थंकर या चक्रवर्ती गर्भ में आते हैं, तब ये चौदह महास्वप्न देखती हैं । यथा–१ हाथी, २ बैल, ३ सिंह, ४ अभिषेक की हुई लक्ष्मी, ५ पुष्पमाला, ६ चन्द्र, ७ सूर्य, ८ ध्वजा, ९ कुम्भ (कलश), १० पद्मसरोवर, ११ समुद्र, १२ विमान अथवा भवन, १३ रत्नराशि और १४ निर्धूम अग्नि । इन चौदह महास्वप्नो में से वासुदेव की माता, जब वासुदेव गर्भ में आते हैं, तब सात स्वप्न देखती हैं, बलदेव की माता, जब बलदेव गर्भ में आते हैं, तब इन चौदह महास्वप्नो में से चार महास्वप्न देखती है और माण्डलीक राजा की माता, इन चौदह महास्वप्नो में से कोई एक महा स्वप्न देखती है । हे देवानुप्रिय ! प्रभावती देवी ने एक महास्वप्न देखा है । यह स्वप्न उदार, कल्याणकारी, आरोग्य,

तुष्टि एव मगलकारी है, सुख समृद्धि का सूचक है। इससे आपको अर्थ लाभ, भोग लाभ, पुत्र लाभ और राज्य लाभ होगा। नव मास और साढे सात दिन व्यतीत होने पर प्रभावती देवी, आपके कुल में ध्वज समान पुत्र को जन्म देगी। वह बालक बाल्यावस्था को पारकर युवक होने पर राज्य का अधिपति होगा, अथवा भावितात्मा अनगार होगा। अतः हे देवानुप्रिय ! प्रभावती देवी ने यह स्वप्न उदार यावत् महाकल्याणकारी देखा है।"

विवेचन-तीर्थंकर या चक्रवर्ती के गर्भ मे आने पर उनकी माताएँ चौदह महास्वप्न देखती हैं। उनमे से बारहवे स्वप्न मे 'विमान और भवन' ये दो शब्द दिये हैं। जिसका आशय यह है कि जो जीव, देवलोक से आकर तीर्थंकर रूप से जन्म लेता है, उसकी माता, स्वप्न मे विमान देखती है और जो जीव नरक से आकर तीर्थंकर रूप मे जन्म लेता है, उसकी माता स्वप्न मे भवन देखती है।

२४-तएण से बले राया सुविणलक्खणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठ० करयल० जाव कट्टु ते सुविणलक्खणपाढगे एव वयासी-'एवमेय देवाणुप्पिया ! जाव से जहेय तुब्भे वयह' त्ति कट्टु त सुविण सम्म पडिच्छइ, त० सुविणलक्खणपाढए विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइम-पुप्फ-वत्थ गध - मल्लालकारेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता, सम्माणित्ता विउल जीवियारिहं पीइदाण दलयइ, विउल० जीवियारिह पीइदाण दलयित्ता पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, सी० जेणेव पभावई देवी तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता पभावइ देविं ताहि इट्ठाहि कताहिं जाव सलवमाणे सलवमाणे एव वयासी-एव

खलु देवाणुप्पिया ! सुविणसत्थंसि वायालीस सुविणा तीस महा-सुविणा बावत्तरि सव्वसुविणा दिट्ठा । तत्थ णं देवाणुप्पिया ! तित्थयरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा त चेव जाव अण्णयरं एगं महा-सुविणं पासित्ता ण पडिबुज्झति । इमे य णं तुमे देवाणुप्पिए ! एगे महासुविणे दिट्ठे, त ओराले ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा, त ओराले ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव दिट्ठे, त्ति कट्टु पभावइ देविं ताहिं इट्ठाहि कताहिं जाव दोच्च पि तच्च पि अणुवूहइ ।

कठिन शब्दार्थ–जीवियारिह–जीविका के योग्य, पीइदाण–प्रीतिदान,

भावार्थ–२४–स्वप्नपाठको से उपरोक्त स्वप्न-फल सुन कर एव अवधारण करके बलराजा हर्षित हुआ, सतुष्ट हुआ और हाथ जोड कर यावत स्वप्न पाठको से इस प्रकार बोला–"हे देवानुप्रियो ! जैसा आपने स्वप्नफल बताया वह उसी प्रकार है–" इस प्रकार कह कर स्वप्न का अर्थ भली प्रकार से स्वीकार किया। इसके बाद स्वप्नपाठको को विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम, पुष्प, वस्त्र, गन्ध, माला और अलकारो से सत्कृत किया, सम्मानित किया और जीविका के योग्य बहुत प्रीतिदान दिया और उन्हे जाने की आज्ञा दी। इसके बाद अपने सिंहासन से उठकर बलराजा प्रभावती रानी के पास आया, और स्वप्नपाठको से सुना हुआ स्वप्न का अर्थ कह सुनाया। यावत् "हे देवानुप्रिये ! तुमने एक उदार महास्वप्न देखा है, जिससे तुम्हारे एक पुत्र उत्पन्न होगा। वह राज्याधिपति होगा, अथवा भावितात्मा अनगार होगा। हे देवानुप्रिये ! तुमने एक उदार यावत् मागलिक स्वप्न देखा है।" इस प्रकार इष्ट, कान्त, प्रिय यावत मधुरवाणी से दो तीन बार कहकर प्रभावती देवी की प्रशसा की।

२५-तएणं सा पभावई देवी बलस्स रण्णो अंतिय एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठ० करयल० जाव एव वयासी-'एयमेय देवाणुप्पिया । जाव त सुविण सम्म पडिच्छइ त० बलेण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी णाणामणि-रयणभत्तिचित्त० जाव अब्भुट्ठेइ । अतुरियमचवल० जाव गईए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ, ते० सय भवणमणुपविट्ठा ।

२६-तएण सा पभावई देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वा-लकारविभूसिया त गब्भ णाइसीएहि णाइउण्हेहि णाइतित्तेहि णाइ-कडुएहि णाइकसाएहि णाइअबिलेहि णाइमहुरेहि उउभयमाणसुहेहि भोयण-च्छायण-गध-मल्लेहि ज तस्स गब्भस्स हिय मिय पत्थ गब्भ-पोसण त देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्तमउएहिं सयणा सणेहि पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला सपुण्णदोहला सम्माणियदोहला अविमाणियदोहला वोच्छिण्ण-दोहला ववणीयदोहला ववगयरोग-मोह-भय-परित्तासा त गब्भ सुह-सुहेण परिवहइ । तएण सा पभावई देवी णवण्ह मासाण बहु-पडिपुण्णाण अद्धट्ठमाणराइदियाण वीइक्कताण सुकुमालपाणि-पाय अहीणपडिपुण्णपचिदियसरीर लक्खण-वजणगुणोववेय जाव ससि-सोमाकार कत पियदसण सुरूव दारय पयाया ।

कठिन शब्दार्थ-उउभयमाणसुहेहिं-प्रत्येक ऋतु में सुखकारक दोहला-दोहद (गर्भ

खलु देवाणुप्पिया ! सुविणमत्थसि वायालीस सुविणा तीस महा सुविणा बावत्तरि सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ ण देवाणुप्पिया ! तित्थ-यरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा त चेव जाव अण्णयर एग महा-सुविण पासित्ता ण पडिबुज्झति । इमे य ण तुमे देवाणुप्पिए ! एगे महासुविणे दिट्ठे, त ओराले ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा, त ओराले ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव दिट्ठे, त्ति कट्टु पभावइ देवि ताहिं इट्ठाहिं कताहि जाव दोच्च पि तच्च पि अणुवूहइ ।

कठिन शब्दार्थ-जीवियारिहु-जीविका के योग्य, पीइदाण-प्रीतिदान,

भावार्थ-२४-स्वप्नपाठको से उपरोक्त स्वप्न-फल सुन कर एव अवधारण करके बलराजा हर्षित हुआ, सतुष्ट हुआ और हाथ जोड कर यावत स्वप्न पाठको से इस प्रकार बोला-"हे देवानुप्रियो ! जैसा आपने स्वप्नफल बताया वह उसी प्रकार है-" इस प्रकार कह कर स्वप्न का अर्थ भली प्रकार से स्वीकार किया। इसके बाद स्वप्नपाठको को विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम, पुष्प, वस्त्र, गन्ध, माला और अलकारो से सत्कृत किया, सम्मानित किया और जीविका के योग्य बहुत प्रीतिदान दिया और उन्हे जाने की आज्ञा दी। इसके बाद अपने सिंहासन से उठकर बलराजा प्रभावती रानी के पास आया, और स्वप्नपाठको से सुना हुआ स्वप्न का अर्थ कह सुनाया। यावत "हे देवानुप्रिये ! तुमने एक उदार महास्वप्न देखा है, जिससे तुम्हारे एक पुत्र उत्पन्न होगा। वह राज्यधिपति होगा, अथवा भावितात्मा अनगार होगा। हे देवानुप्रिये ! तुमने एक उदार यावत् मागलिक स्वप्न देखा है।" इस प्रकार इष्ट, कान्त, प्रिय यावत् मधुरवाणी से दो तीन बार कहकर प्रभावती देवी की प्रशसा की।

पियट्टयाए पियं णिवेदेमो, पियं मे भवउ।' तएणं से बले राया अगपडियारियाणं अतिय एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठ० जाव धाराहयणीव० जाव रोमकूवे तासिं अगपडियारियाणं मउडवज्जं जहामालियं ओमोयं दलयइ दलयित्ता सेयं रययामयं विमलसलिल-पुण्णं भिंगारं च गिण्हइ, गिण्हित्ता मत्थए धोवइ, मत्थए धोवित्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, पीइदाणं दलयित्ता सक्कारेइ सम्माणेइ।

कठिन शब्दार्थ अगपडियारियाओ–अगप्रतिचारिका (सेवा करने वाली दासियाँ) पसूय–प्रसव हुआ, मउडवज्ज–मुकुट टाटकर, जहामालिय–पहने हुए अलकार, ओमोय–उतार कर, भिगार–भृगार (कलश)।

भावार्थ–२७–पुत्र जन्म होने पर प्रभावती देवी की सेवा करने वाली दासियाँ, पुत्र-जन्म जानकर बल राजा के पास आई और हाथ जोडकर जय विजय शब्दो से वधाया। उन्होने राजा से निवेदन किया–"हे देवानुप्रिय! प्रभावती देवी की प्रीति के लिये हम आपसे पुत्र-जन्मरूप प्रिय समाचार निवेदन करती है। यह आपके लिये प्रिय होवे।" दासियो से प्रिय सम्वाद सुनकर बल राजा हर्षित एव सन्तुष्ट हुआ, यावत् मेघ की धारा से सिंचित कदम्ब पुष्प के समान रोमाञ्चित हुआ। नरेश ने अपने मुकुट को छोडकर धारण किये हुए शेष सभी अलकार उन दासियो को पारितोषिक स्वरूप दे दिये। फिर श्वेत रजतमय और निर्मल पानी से भरा हुआ कलश लेकर दासियो का मस्तक धोया और जीविका के योग्य बहुत सा प्रीतिदान देकर उन्हे सत्कृत और सम्मानित कर विसर्जित किया।

२८–तएणं से बले राया कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता

के प्रभाव से गभवती की इच्छा)।

भावार्थ—२५—बलराजा से उपर्युक्त अथ सुनकर, अवधारण कर प्रभावती देवी हर्षित एव सन्तुष्ट हुई, यावत हाथ जोड कर इस प्रकार बोली—"हे देवानुप्रिय ! जैसा आप कहते हं वैसा ही है।" इस प्रकार कहकर स्वप्न के अर्थ को भली प्रकार ग्रहण किया और बलराजा की अनुमति से अनेक प्रकार के मणि-रत्नो की कारीगरी से युक्त उस भद्रासन से उठी और शीघ्रता तथा चपलता रहित यावत् हसगति से चलकर अपने भवन में आई।

२६—स्नान आदि कर के प्रभावती देवी अलकृत एव विभूषित हुई। वह गभ का पालन करने लगी। वह अत्यन्त शीतल, अत्यन्त उष्ण, अत्यन्त तिक्त (तीखा), अत्यन्त कटु, अत्यन्त कषैला, अत्यन्त खट्टा और अत्यन्त मधुर पदार्थ नही खाती, परन्तु ऋतु योग्य सुखकारक भोजन करती। वह गभ के लिये हितकारी, पथ्यकारी, मित और पोषण करने वाले पदार्थ यथा समय ग्रहण करने लगी तथा वैसे ही वस्त्र और माला, पुष्प, आभरण आदि धारण करने लगी। यथा समय उसे जो जो दोहद उत्पन्न हुए, वे सभी सम्मान के साथ पूर्ण किये गये। वह रोग, मोह, भय और परित्रास रहित होकर गर्भ का सुखपूवक पोषण करने लगी। इस प्रकार नवमास और साढे सात दिन पूण होने पर प्रभावती देवी ने सुकुमाल हाथ पैर वाले दोष रहित, प्रतिपूर्ण पञ्चेन्द्रिय युक्त शरीर वाले तथा लक्षण, व्यञ्जन और गुणो से युक्त यावत चन्द्र समान सौम्य आकृति वाले, कान्त, प्रिय दर्शन और सुन्दर रूप वाले पुत्र को जन्म दिया।

२७—तएण तीसे पभावईए देवीए अगपडियारियाओ पभावइ देवि पसूय जाणेत्ता जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छित्ता करयल० जाव बल राय जएण विजएण वद्धावेति, जएण विजएण वद्धावेत्ता एव वयासी—'एव खलु देवाणुप्पिया ! पभावई-

साइम उवक्खडाविंति, उवक्खडावेत्ता जहा सिवो जाव खत्तिए य आमतेंति आ० तओ पच्छा ण्हाया कय० त चेव जाव सक्कारेंति सम्माणेंति, सक्का० तस्सेव मित्त-णाइ जाव राईण य खत्तियाण य पुरओ अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागय बहुपुरिसपरपरप्परूढ कुलाणुरूव कुलसरिस कुलसताणततुवद्धणकर अयमेयारूव गोण्ण गुणणिप्फण्णं णामधेज्ज करेंति—'जम्हा ण अम्ह इमे दारए बलस्स रण्णो पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए, त होउ ण अम्ह एयस्स दारगस्स णामधेज्ज महब्बले' तएण तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्ज करेंति 'महब्बले' त्ति ।

कठिन शब्दार्थ—चारगसोहण-कारागार खाली करो (बन्दी छोडो), उस्सुक्क-शुल्क रहित उक्कर—कर रहित उक्किट्ठ-उत्कृष्ट, अदिज्ज-नही देने योग्य, अमिज्ज-नही नापने योग्य, अभडप्पवेस सुभट के प्रवेश रहित अदडकोडडिम—दड तथा कुदड रहित अधरिम—ऋण लेने को और लौटाने मे होते हुए झगडे को रोकना, गणियावरणाडइज्जकलिय—उच्च प्रकार की गणिकाओ और नटो से युक्त, अणेगतालचराणुचरिय-अनेक तालानुचरो से युक्त, अणुद्धुयमुइग—निरतर मृदग बजते हुए पमुइयपक्कीलिय-प्रमोद एव क्रीडा युक्त, ठिई वडिय—स्थिति पतित, जाए व्यय किया दाए—दान भाए-भाग असुइजायकम्मकरणे—अशुचि-जात कर्म करने ।

२८ भावार्थ—इसके बाद बलराजा ने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया और कहा—"हे देवानुप्रियो ! शीघ्र ही बन्दियो को मुक्त करो, मान (नाप) और उन्मान (तोल) की वृद्धि करो । हस्तिनापुर नगर के बाहर और भीतर छिड काव करो, स्वच्छ करो, सम्मार्जित करो, शुद्धि करो, कराओ । तत्पश्चात यूप-सहस्र और चक्रसहस्र को पूजा महिमा और सत्कार के योग्य करो । यह सब कार्य करके मुझे निवेदन करो । इसके बाद बलराजा की आज्ञानुसार कार्य करके उन

एव वयासी–'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे णयरे चारग-सोहणं करेह, चारग० माणुम्माणवड्ढण करेह, मा० हत्थिणाउर णयर सब्भितरबाहिरिय आसिय-समज्जिओ-वलित्त जाव करेह कारवेह, करेत्ता य कारवेत्ता य जूयसहस्स वा चक्कसहस्स वा पूया-महामहिमसक्कार वा उस्सवेह० ममेयमाणत्तिय पच्चप्पिणह'। तएण ते कोडुंबियपुरिसा बलेण रण्णा एव वुत्ता० जाव पच्चप्पि-णंति। तएण से बले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता त चेव जाव मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता उस्सुक्क उक्कर उक्किट्ठ अदिज्ज अमिज्ज अभडप्पवेस अदडकोडडिम अधरिम गणियावरणाडइज्जकलिय अणेगतालाचराणुचरिय अणुद्धुयमुइग अमिलायमल्लदाम पमुइय-पक्कीलिय सपुरजणजाणवय दसदिवसे ठिइवडिय करेइ। तएण से बले राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य, सए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य लभे पडिच्छेमाणे पडिच्छा-वेमाणे एव विहरइ। तएण तस्स दारगस्स अम्मा-पियरो पढमे दिवसे ठिइवडिय करेइ, तईए दिवसे चदसूरदसणिय करेइ, छट्ठे दिवसे जागरिय करेइ, एक्कारसमे दिवसे विइक्कते णिव्वत्ते असु-इयजायकम्मकरणे सपत्ते बारसाहदिवसे विउल असण पाण खाइम

अणुपुव्वेण ठिइवडिय वा चदसूरदसावणिय वा जागरिय वा णाम-करण वा परगामण वा पयचकमणं वा जेमामणं वा पिंडवद्धण वा पज्जपावण वा कण्णवेहण वा सवच्छरपडिलेहणं वा चोलोयणग च उवणयण च अण्णाणि य बहूणि गब्भाधाण-जम्मणमाइयाइ कोउ-याइ करेंति ।

कठिन शब्दार्थ–पिंडवद्धण–भोजन बढाना, कण्णवेहण–कर्ण वेधन चोलोयणग–चोटी रखवाना, उवणयण–सस्कारित करना, कोउयाइ–कौतुक ।

भावार्थ–२९–महाबलकुमार का–१ क्षीरधात्री, २ मज्जनधात्री, ३ मण्डन-धात्री, ४ क्रीडनधात्री और ५ अकधात्री–इन पाच धात्रियो द्वारा राजप्रश्नीय सूत्र में वर्णित दृढप्रतिज्ञ कुमार के समान पालन किया जाने लगा । वह कुमार, वायु और व्याघात रहित स्थान में रही हुई चम्पक लता के समान अत्यन्त सुख पूर्वक बढने लगा । महाबल कुमार के माता पिता ने अपनी कुल-मर्यादा के अनु-सार जन्म-दिन से लेकर क्रमश सूर्य चन्द्र दर्शन, जागरण, नामकरण, घुटनो के बल चलाना, पैरो से चलाना, अन्न भोजन प्रारम्भ करना, ग्रास बढाना, सभा-षण करना, कान विधाना, वर्षगाठ मनाना, चोटी रखवाना, उपनयन (सस्कृत) करना, इत्यादि बहुत से गर्भधारण जन्म-महोत्सव आदि कौतुक किये ।

३०–तएण त महब्बल कुमार अम्मापियरो साइरेगट्ठवासग जाणित्ता सोभणसि तिहि-करण-णक्खत्त मुहुत्तसि० एव जहा दढप्पइण्णो, जाव अल भोगसमत्थे जाए यावि होत्था । तएण त महब्बल कुमार उम्मुक्कबालभाव जाव अल भोगसमत्थ वियाणित्ता अम्मापियरो अट्ठ पासायवडेंसए करेंति, अब्भुग्गय मूसिय-पहसिए

सेवक पुरुषो ने आज्ञा पालन का निवेदन किया। राजा ने व्यायामशाला में आकर व्यायाम किया और स्नान किया। दस दिन के लिए प्रजा से शुल्क (मूल्य या कर विशेष) और कर लेना रोक दिया। क्रय, विक्रय, मान, उन्मान का निषेध किया, और ऋणियो को ऋण मुक्त किया तथा दण्ड और कुदण्ड का निषेध किया। प्रजा के घर में सुभटो के प्रवेश को बन्द कर दिया और धरणा देने का निषेध कर दिया। इसके अतिरिक्त उत्तम गणिकाओ और नाटिकाओ से युक्त तथा अनेक तालानुचरो से निरन्तर बजाई जाती हुई मृदगो से युक्त, तथा प्रमोद एव क्रीडापूर्वक सभी लोगो के साथ दस दिन तक पुत्र महोत्सव मनाया जाता रहा। इन दस दिनो में बलराजा सैंकडो, हजारो, लाखो रुपयो के खर्चवाले कार्य करता हुआ, दान देता हुआ, दिलवाता हुआ एव इसी प्रकार सैंकडो, हजारो, लाखो रुपयो की भेंट स्वीकार करता हुआ विचरता रहा। फिर बालक के माता-पिता ने पहले दिन कुल मर्यादा के अनुसार क्रिया की। तीसरे दिन बालक को चन्द्र और सूर्य के दर्शन कराये। छठे दिन जागरणारूप उत्सव विशेष किया। ग्यारह दिन व्यतीत होने पर अशुचिकर्म की निवृत्ति की। बारहवे दिन विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम तैयार कर (ग्यारहवे शतक के नौवे उद्देशक में कथित शिवराजा के समान) सभी क्षत्रिय ज्ञातिजनो को निमन्त्रित कर भोजन कराया। फिर उन सब के समक्ष अपने बाप-दादा आदि से चली आती हुई कुल परम्परा के अनुसार कुल के योग्य, कुलोचित, कुलरूप सन्तान की वृद्धि करनेवाला, गुणयुक्त और गुण निष्पन्न नाम देते हुए कहा—'क्योकि यह बालक, बलराजा का पुत्र और प्रभावती देवी का आत्मज है, इसलिए इसका नाम 'महाबल' रखा जाय। अतएव बालक के माता पिता ने उसका नाम महाबल रखा।'

२९—तएण से महब्बले दारए पञ्चधाईपरिग्गहिए, तजहा—खीरधाईए, एव जहा दढपइण्णे, जाव णिवाय-णिव्वाघायंमि सुहसुहेणं परिवड्ढइ। तएण तस्स महब्बलस्स दारगस्स अम्मा-पियरो

आणिल्लियाणं अट्ठण्ह रायवरकण्णाण एगदिवसेण पाणि गिण्हाविंसु ।

कठिन शब्दार्थ—पमक्खणग—अभ्यञ्जन (विलेपन)।

भावार्थ—३१—शुभ तिथि, करण, दिवस, नक्षत्र और मुहूर्त में महाबल कुमार को स्नानादि करवा कर अलकारो से अलकृत एव विभूषित किया । फिर सधवा स्त्रियो के द्वारा अभ्यगन, विलेपन, मण्डन, गीत, तिलक आदि मागलिक कार्य किये गये । तत्पश्चात समान त्वचा वाली, समान उम्र वाली, समान रूप, लावण्य, यौवन और गुणो से युक्त एव समान राजकुल से लाई हुई उत्तम आठ राजकन्याओ के साथ एक ही दिन में पाणिग्रहण करवाया गया ।

३२—तएणं तस्स महाबलस्स कुमारस्स अम्मापियरो अयमेयारूव पीइदाण दलयति, तजहा—अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ, अट्ठ मउडे मउडप्पवरे, अट्ठ कुडलजुए कुडलजुयप्पवरे अट्ठ हारे हारप्पवरे, अट्ठ अद्धहारे अद्धहारप्पवरे, अट्ठ एगावलीओ एगावलिप्पवराओ, एव मुत्तावलीओ, एव कणगावलीओ, एव रयणावलीओ, अट्ठ कडगजोए कडगजोयप्पवरे, एव तुडियजोए, अट्ठ खोमजुयलाइ खोमजुयलप्पवराइ, एव वडगजुयलाइ, एव पट्टजुयलाइ, एव दुगुल्लजुयलाइ अट्ठ सिरीओ, अट्ठ हिरीओ, एव धिईओ, कित्तीओ, बुद्धीओ, लच्छीओ, अट्ठ णदाइ, अट्ठ भद्दाइ, अट्ठ तले तलप्पवरे, सव्वरयणामए, णियगवरभवणकेऊ अट्ठ झए झयप्पवरे, अट्ठ वये वयप्पवरे, दसगोसाहस्सिएण वएण, अट्ठ णाडगाइ णाड-

इव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे, जाव पडिरूवे, तेसिं णं पासाय-वडेंसगाण बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महेग भवणं करेंति अणेग-खभसयसंनिविट्ठं, वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे पेच्छाघरमडवंसि जाव पडिरूवे ।

भावार्थ–३०–जब महाबल कुमार आठ वर्ष से कुछ अधिक उम्र का हुआ, तो माता पिता ने प्रशस्त, तिथि, करण,नक्षत्र और मुहूर्त में पढने के लिये कलाचार्य के यहा भेजा, इत्यादि सारा वर्णन दृढप्रतिज्ञ कुमार के अनुसार कहना चाहिये यावत महाबल कुमार भोगभोगने में समर्थ हुआ। महाबल कुमार को भोग योग्य जानकर माता पिता ने उसके लिये उत्तम आठ प्रासाद बनवाये। वे प्रासाद 'राजप्रश्नीय' सूत्र में उल्लिखित वर्णन के अनुसार अतिशय ऊचे यावत अत्यन्त सुन्दर थे। उनके ठीक मध्य में एक बडा भवन तैयार करवाया। उस भवन के सैकडो खम्भे लगे हुए थे, इत्यादि राजप्रश्नीय सूत्र के प्रेक्षागृह मण्डप वर्णन के समान जान लेना चाहिये यावत वह अत्यन्त सुन्दर था।

३१–तएण त महब्बल कुमार अम्मापियरो अण्णया कया वि सोभणसि तिहि-करण-दिवस-णक्खत्त मुहुत्तसि ण्हाय कयबलि-कम्म कयकोउय-मगलपायच्छित्त सव्वालकारविभूसिय पमक्खणग-ण्हाण-गीय-वाइय - पसाहण - ट्ठगति लग - कंकणअविहववहुउवणीय मगलसुजपिएहि य वरकोउयमगलोवयारकयसतिकम्म सरिसयाण सरित्तयाण सरिव्वयाण सरिसलावण्ण रूव - जोव्वणगुणोववेयाण विणीयाण कयकोउय-मगलपायच्छित्ताण सरिसएहिं रायकुलेहिंतो

की प्रतिमा, आठ नन्द, आठ भद्र, आठ ताड वृक्ष, ये सब रत्नमय जानने चाहिए। अपने भवन में केतु (चिन्ह रूप) आठ उत्तम ध्वज, दस हजार गायो का एक व्रज (गोकुल) ऐसे आठ उत्तम गोकुल, बत्तीस मनुष्यो द्वारा किया जाने वाला एक नाटक होता है,–ऐसे आठ उत्तम नाटक, आठ उत्तम घोडे, ये सब रत्नमय जानना चाहिए। भाण्डागार समान आठ रत्नमय उत्तमोत्तम हाथी, भाण्डागार –श्रीधर समान सर्व रत्नमय आठ उत्तम यान, आठ उत्तम युग्म (एक प्रकार का का वाहन), आठ शिविका, आठ स्यन्दमानिका, आठ गिल्ली (हाथी की अम्बाडी), आठ थिल्लि (घोडे का पलाण–काठी), आठ उत्तम विकट (खुले हुए) यान, आठ पारियानिक (क्रीडा करने के) रथ, आठ सग्रामिक रथ, आठ उत्तम अश्व, आठ उत्तम हाथी, दस हजार कुल–परिवार जिसमें रहते हो ऐसे आठ गाँव, आठ उत्तम दास, आठ उत्तम दासियाँ, आठ उत्तम किकर, आठ कचुकी (द्वार रक्षक), आठ वषधर (अन्त पुर के रक्षक खोजा), आठ महत्तरक (अन्त पुर के काय का विचार करनेवाले), आठ सोने के, आठ चाँदी के और आठ सोने चाँदी के अवलम्बनदीपक (लटकने वाले दीपक–हण्डियाँ), आठ सोने के, आठ चाँदी के, आठ सोने-चाँदी के उत्कञ्चन दीपक (दण्ड युक्त दीपक–मशाल), इसी प्रकार सोना, चाँदी और सोना चाँदी, इन तीनो प्रकार के आठ पञ्जर दीपक।

एव चेव तिण्णि वि अट्ठ सोवण्णिए थाले अट्ठ रूप्पमए थाले, अट्ठ सुवण्णरूप्पमए थाले अट्ठ सोवण्णियाओ पत्तीओ ३×, अट्ठ सोवण्णियाइ थासयाइ ३, अट्ठ सोवण्णियाइ मल्लगाइ ३, अट्ठ सोवण्णियाओ तलियाओ ३ अट्ठ सोवण्णियाओ कावइआओ ३,

× जहा '३' का अक है वहा पूव पाठ के समान स्वण के बाद 'रजत' तथा स्वण रजतमय समझना चाहिये। जसे– 'अट्ठ सोवण्णियाओ पत्तीओ' क आग 'अट्ठ रूप्पमइ य पत्तीओ, अट्ठ सोवण्ण रूप्प मयाओ पत्तीओ' इस प्रकार जहा-जहा ३ का अक है वहा-वहा पढना चाहिए–डोशी

गप्पवराइ वत्तीसवद्धेणं णाडएणं, अट्ठ आसे आसप्पवरे, सव्वरयणामए, सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे, सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ जाणाइ जाणप्पवराइ, अट्ठ जुगाइ जुगप्पवराइ, एव सिवियाओ, एव सदमाणीओ, एव गिल्लीओ थिल्लीओ, अट्ठ वियडजाणाइ वियडजाणप्पवराइ, अट्ठ रहे पारिजाणिए, अट्ठरहे सगामिए, अट्ठ आसे आसप्पवरे, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे, अट्ठ गामे गामप्पवरे, दसकुलसाहस्सिएणं गामेण, अट्ठ दासे दासप्पवरे, एव चेव दासीओ, एव किंकरे, एव कचुइज्जे, एव वरिसधरे, एव महत्तरए, अट्ठ सोवण्णिए ओलवणदीवे, अट्ठ रूप्पामए ओलवणदीवे, अट्ठ सुवण्णरूप्पामए ओलवणदीवे, अट्ठ सोवण्णिए उक्कचणदीवे, अट्ठ पचरदीवे

कठिन शब्दार्थ–मउडे-मुकुट, कडगजोए-कडा की जोडी, किंकरे–अनुचर, कचुइज्जे–द्वारपाल (प्रतिहार) महत्तरए–अन्त पुर के काय के विचारक वरिसधरे–अत पुर रक्षक, कृत नपुसक।

भावार्थ–३२–विवाहोपरान्त महाबलकुमार के माता पिता ने अपनी आठो पुत्रवधुओ के लिए प्रीतिदान दिया। यथा–आठ कोटि हिरण्य (चादी के सिक्के), आठ कोटि सोनैया (सोने के सिक्के), आठ श्रेष्ठ मुकुट, आठ श्रेष्ठ कुण्डलयुगल, आठ उत्तम हार, आठ उत्तम अर्द्ध हार, आठ उत्तम एकसरा हार, आठ मुक्तावली हार, आठ कनकावली हार, आठ रत्नावली हार, आठ उत्तम कडो की जोडी, आठ उत्तम त्रुटित (बाजुबन्द) की जोडी, उत्तम आठ रेशमी वस्त्र युगल, आठ उत्तम सूती वस्त्रयुगल, आठ टसर वस्त्र युगल, आठ पट्ट युगल, आठ दुकूल युगल, आठ श्री, आठ ह्री, आठ धी, आठ कीर्ति, आठ बुद्धि, और आठ लक्ष्मी देवियो

पडिहारीओ, अट्ठ मालाकारीओ अट्ठ पेसणकारीओ, अण्णं वा सुबहु हिरण्णं वा सुवण्ण वा कंस वा दूस वा विउलधण-कणग० जाव संतसारसावएज्ज अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकाम दाउ, पकाम भोत्तु, पकाम परिभाएउ । तएण से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेग हिरण्णकोडि दलयइ, एगमेग सुवण्णकोडि दलयइ, एगमेग मउड मउडप्पवर दलयइ, एव त चेव सव्व जाव एगमेग पेसणकारि दलयइ, अण्णं वा सुबहु हिरण्ण वा जाव परिभाएउ । तएण से महब्बले कुमारे उप्पि पासायवरगए जहा जमाली जाव विहरइ ।

कठिन शब्दार्थ–भीसियाओ–आसन विशेष भज्जाए–भार्या को ।

भावार्थ–सोना, चाँदी और सोना-चाँदी के आठ थाल, आठ थालियाँ, आठ स्थासक (तसलियाँ), आठ मल्लक (कटोरे), आठ तलिका (रकाबियाँ), आठ कलाचिका (चम्मच), आठ तापिकाहस्तक (सडासियाँ), आठ तवे, आठ पादपीठ (पैर रखने के बाजोठ), आठ भीषिका, (आसन विशेष), आठ करोटिका (लोटा), आठ पलग, आठ प्रतिशय्या (छोटे पलग), आठ हंसासन, आठ क्रौंचासन, आठ गरुडासन, आठ उन्नतासन, आठ अवनतासन, आठ दीर्घासन, आठ भद्रासन, आठ पक्षासन, आठ मकरासन, आठ पद्मासन, आठ दिक्स्वस्तिकासन, आठ तेल के डिब्बे, इत्यादि सभी राजप्रश्नीय सूत्र के अनुसार जानना चाहिये, यावत आठ सर्षप के डिब्बे, आठ कुब्जा दासिया इत्यादि सभी औपपातिक सूत्र के अनुसार जानना चाहिये, यावत आठ पारस देश की दासिया, आठ छत्र, आठ छत्रधारिणी दासियाँ, आठ चामर, आठ चामरधारिणी दासियाँ, आठ पखे, आठ पखाधारिणी दासियाँ, आठ करोटिका (ताम्बूल के करण्डिए) आठ करोटिका

अट्ठ सोवण्णिए अवएडए ३, अट्ठ सोवण्णियाओ अवयक्काओ ३, अट्ठ सोवण्णिए पायपीढए ३, अट्ठ सोवण्णियाओ भिसियाओ ३, अट्ठ सोवण्णियाओ करोडियाओ ३, अट्ठ सोवण्णिए पल्लके ३, अट्ठ सोवण्णियाओ पडिसेज्जाओ ३, अट्ठ हंसासणाइ, अट्ठ कोंचासणाइ, एवं गरुलासणाइ, उण्णयासणाइ, पणयासणाइ, दीहासणाइ, भद्दासणाइ, पक्खासणाइ, मगरासणाइ, अट्ठ पउमासणाइ अट्ठ दिसासोवत्थियासणाइ, अट्ठ तेल्लसमुग्गे, जहा रायप्पसेणइज्जे, जाव अट्ठ सरिसवसमुग्गे, अट्ठ खुज्जाओ, जहा उववाइए, जाव अट्ठ पारिसीओ, अट्ठ छत्ते, अट्ठ छत्तधारिओ चेडीओ, अट्ठ चामराओ, अट्ठ चामरधारीओ चेडीओ, अट्ठ तालियंटे, अट्ठ तालियंटधारीओ चेडीओ, अट्ठ करोडियाधारीओ चेडीओ, अट्ठ खीरधाईओ, जाव अट्ठ अंकधाईओ, अट्ठ अंगमद्दियाओ, अट्ठ उम्मद्दियाओ अट्ठ ण्हावियाओ, अट्ठ पसाहियाओ, अट्ठ वण्णगपेसीओ, अट्ठ चुण्णगपेसीओ, अट्ठ कोट्ठागारीओ अट्ठ दवकारीओ, अट्ठ उवत्थाणियाओ, अट्ठ णाडइज्जाओ, अट्ठ कोडुंबिणीओ, अट्ठ महाणसिणीओ, अट्ठभडागारिणीओ, अट्ठ अज्झाधारिणीओ, अट्ठ पुप्फधारणीओ, अट्ठ पाणिधारणीओ, अट्ठ बलिकारीओ, अट्ठ सेज्जाकारीओ, अट्ठ अब्भितरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ बाहिरियाओ

उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हइ ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तएणं हत्थिणाउरे णयरे सिंघाडग-तिय० जाव परिसा पज्जुवासइ।

कठिन शब्दार्थ-पओप्पए-प्रपौत्र-प्रशिष्य।

भावार्थ-३३-उस काल उस समय में तेरहवें तीर्थंकर भगवान् विमलनाथ स्वामी के प्रपौत्र (प्रशिष्य-शिष्यानुशिष्य) धर्मघोष नामक अनगार थे। वे जाति सम्पन्न इत्यादि केशी स्वामी के समान थे, यावत् पांच सौ साधुओं के परिवार के साथ अनुक्रम से एक गांव से दूसरे गांव विहार करते हुए हस्तिनापुर नगर के सहस्राम्र वन नामक उद्यान में पधारे और यथायोग्य अवग्रह ग्रहण करके संयम और तप से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे। हस्तिनापुर निवासियों को मुनि आगमन ज्ञात हुआ, यावत पर्युपासना करने लगी।

३४-तएणं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महयाजणसद्दं वा जणवूहं वा एवं जहा जमाली तहेव चिंता, तहेव कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ, कंचुइज्जपुरिसो वि तहेव अक्खाइ, णवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल० जाव णिग्गच्छइ। एवं खलु देवाणुप्पिया! विमलस्स अरहओ पउप्पए धम्मघोसे णामं अणगारे, सेसं तं चेव जाव सो वि तहेव रहवरेण णिग्गच्छइ। धम्मकहा जहा केसिसामिस्स। सो वि तहेव अम्मापियरो आपुच्छइ, णवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, तहेव वुत्तपडिवुत्तया, णवरं इमाओ य ते जाया!

धारिणी दासियां, आठ क्षीर धात्रियां (दूध पिलाने वाली धाय), यावत आठ अङ्कधात्रियां, आठ अगमर्दिका (शरीर का अल्प मर्दन करने वाली दासियाँ), आठ उन्मर्दिका (शरीर का अधिक मदन करनेवाली दासिया), आठ स्नान कराने वाली दासियां, आठ अलङ्कार पहनाने वाली दासियां, आठ चन्दन घिसने वाली दासियां, आठ ताम्बूलचूण पीसने वाली, आठ कोष्ठागार की रक्षा करने वाली, आठ परिहास करने वाली, आठ सभा में पास रहने वाली, आठ नाटक करने वाली, आठ कौटुम्बिक (साथ जाने वाली), आठ रसोई बनाने वाली, आठ भण्डार की रक्षा करने वाली, आठ तरुणियाँ, आठ पुष्प धारण करने वाली (मालिन), आठ पानी भरने वाली, आठ बलि करने वाली, आठ शय्या बिछाने वाली, आठ आभ्यन्तर और आठ बाह्य प्रतिहारियाँ, आठ माला बनाने वाली और आठ पेषण करने वाली दासियां दीं। इसके अतिरिक्त बहुतसा हिरण्य, सुवण, कास्य, वस्त्र तथा विपुल धन, कनक यावत सारभूत धन दिया, जो सात पीढी तक इच्छा पूर्वक देनें और भोगने के लिये पर्याप्त था। इसी प्रकार महाबल कुमार ने भी प्रत्येक स्त्री को एक एक हिरण्य कोटि, एक एक स्वण कोटि, इत्यादि पूर्वोक्त सभी वस्तुएँ दीं, यावत एक-एक पेषणकारी दासी, तथा बहुतसा हिरण्य-सुवर्णादि विभक्त कर दिया। वह महाबल कुमार, नौवें शतक के तेतीसवें उद्देशक में कथित जमालि कुमार के वर्णन के अनुसार उस उत्तम प्रासाद में अपूर्व भोग भोगता हुआ रहने लगा।

३३–तेण कालेण तेण समएण विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे णाम अणगारे जाइसपण्णे, वण्णओ जहा केसिसामिस्स, जाव पत्रहिं अणगारसएहिं सद्धिं सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुग्गाम दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणाउरे णयरे, जेणेव सहस्सबवणे

वाणियग्गामे णयरे सेट्ठिकुलसि पुत्तत्ताए पच्चायाए ।

कठिन शब्दार्थ–वुत्तपडिवुत्तया–उत्तर प्रत्युत्तर ।

भावार्थ–३४–दर्शनार्थ जाते हुए बहुत से मनुष्यो का कोलाहल सुनकर-जमालिकुमार के समान महाबलकुमार ने अपने कञ्चुकी पुरुषो को बुलाकर इसका कारण पूछा । कञ्चुकी पुरुषो ने महाबलकुमार से हाथ जोडकर विनय पूर्वक निवेदन किया–'हे देवानुप्रिय ! तीर्थंकर विमलनाथ भगवान के प्रशिष्य धर्मघोष अनगार यहाँ पधारे है ।' महाबलकुमार भी वन्दना करने गया और केशी स्वामी के समान धर्मघोष अनगार ने धर्मोपदेश दिया । धर्मोपदेश सुनकर महाबलकुमार को वैराग्य उत्पन्न हुआ । घर आकर माता-पिता से कहा–'हे माता पिता ! मै धर्मघोष अनगार के पास, अनगार-धर्म स्वीकार करना चाहता हूँ । जमालिकुमार के समान महाबल कुमार और उसके माता पिता में उत्तर-प्रत्युत्तर हुए, यावत उन्होने कहा–' हे पुत्र ! यह विपुल धन और उत्तम राज-कुल में उत्पन्न हुई, कलाओ में कुशल, आठ बालाओ को छोडकर तुम कैसे दीक्षा लेते हो, इत्यादि यावत माता-पिता ने अनिच्छापूर्वक महाबलकुमार से इस प्रकार कहा–" हे पुत्र ! हम एक दिन के लिये भी तुम्हारी राज्य-लक्ष्मी को देखना चाहते है ।" माता पिता की बात सुनकर महाबलकुमार चुप रहे । इसके पश्चात माता-पिता ने ग्यारहवे शतक के नौवे उद्देशक में वर्णित शिवभद्र के समान, महाबल का राज्याभिषेक किया और महाबल कुमार को जय-विजय शब्दो से बधाया, तथा इस प्रकार कहा–'हे पुत्र ! कहो हम तुम्हे क्या देवे ? तुम्हारे लिये क्या करे,' इत्यादि वर्णन जमालि के समान जानना चाहिये । महाबलकुमार ने धर्मघोष अनगार के पास प्रव्रज्या अगीकार कर सामायिक आदि चौदह पूर्वों का ज्ञान पढा और उपवास, बेला, तेला आदि विचित्र तप द्वारा आत्मा को भावित करते हुए सम्पूर्ण बारह वर्ष तक श्रमण पर्याय का पालन किया, और मासिक सलेखना से साठ भक्त अनशन का छेदन कर, आलोचना प्रतिक्रमण कर, एव समाधि युक्त काल के समय काल करके ऊर्ध्वलोक में चन्द्र और सूर्य से भी ऊपर

विउलरायकुलबालियाओ कला० सेस त चेव जाव ताहे अकामाइ चेव महब्बलकुमार एव वयासी–'त इच्छामो ते जाया ! एगदिवस-मवि रज्जसिरिं पासित्तए'। तएण से महब्बले कुमारे अम्मापिय-राण वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए सचिट्ठइ । तएण से बले राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, एव जहा सिवभद्दस्स तहेव रायाभिसेओ भाणियव्वो, जाव अभिसिंचइ । करयलपरिग्गहिय महब्बल कुमार जएण विजएण वद्धावेंति, जएण विजएण वद्धावित्ता जाव एव वयासी–'भण जाया ! कि देमो, किं पयच्छामो,' सेस जहा जमा-लिस्स तहेव, जाव तएण से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अण-गारस्स अतिय सामाइयमाइयाइ चोद्दस पुव्वाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ० जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे बहु-पडिपुण्णाइ दुवालसवासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ बहु० मासि-याए सलेहणाए सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए० आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा उड्ढ चदिम सूरिय० जहा अम्मडो, जाव बभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णे । तत्थ ण अत्थे-गइयाण देवाण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता, तत्थण महब्बलस्स वि दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता । से ण तुम सुदसणा ! बभलोए कप्पे दस सागरोवमाइ दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्ता ताओ चेव देवलोगाओ आउक्खएण ३ अणतर चयति चइत्ता इहेव

'एवमेय भते ! जाव से जहेय तुज्झे वयह' त्ति कट्टु उत्तरपुरच्छिम दिसिभाग अवक्कमइ, सेस जहा उसभदत्तस्स, जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, णवर चोद्दस पुव्वाइ अहिज्झइ, वहुपडिपुण्णाइ दुवालसवासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ सेस त चेव ।

❁ सेव भते ! सेव भते ! त्ति । महव्वलो समत्तो ❁

॥ एक्कारसमे सए एक्कारसमो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-दुगुणाणीय सड्ढसवेगे-श्रद्धा एव सवेग दुगुना होगया ।

भावार्थ-३५-'हे सुदशन ! बालभाव से मुक्त होकर तू विज्ञ और परिणत वयवाला हुआ, यौवन वय प्राप्त होकर तथा प्रकार के स्थविरो के पास केवलिप्ररूपित धर्म सुना । वह धर्म तुझे इच्छित प्रतीच्छित और रुचिकर हुआ । हे सुदशन ! अभी जो तू कर रहा है वह अच्छा कर रहा है । हे सुदर्शन ! इसलिये ऐसा कहा जाता है कि पल्योपम और सागरोपम का क्षय और अपचय होता है ।

श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से धर्म सुनकर और हृदय में धारण कर सुदशन सेठ को शुभ अध्यवसाय, शुभ परिणाम और विशुद्ध लेश्या से तदावरणीय कर्मों का क्षयोपशम हुआ और ईहा, अपोह, मार्गणा और गवेषणा करते हुए सज्ञी पूर्वजातिस्मरण (ऐसा ज्ञान जिससे निरतर सलग्न अपने सज्ञी रूप से किये हुए पूर्वभव देखे जा सके) ज्ञान उत्पन्न हुआ, जिससे भगवान द्वारा कहे हुए अपने पूर्वभव को स्पष्ट रूप से जानने लगा । इससे सुदशन सेठ को दुगुनी श्रद्धा और सवेग उत्पन्न हुआ । उसके नेत्र आनन्दाश्रुओ से परिपूर्ण हो गये । तत्पश्चात श्रमण भगवान महावीर स्वामी को तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिणा एव वन्दना नमस्कार करके इस प्रकार बोला-"हे भगवन ! आप जैसा कहते है, वैसा ही है, सत्य है, यथार्थ है ।" इस प्रकार कहकर सुदशन सेठ ने, नौवे शतक के तेतीसवे उद्देशक में वर्णित ऋषभदत्त की तरह प्रव्रज्या अगीकार की । चौदह

बहुत दूर, अम्बड के समान यावत ब्रह्मदेवलोक में देवपने उत्पन्न हुआ। वहाँ कितने ही देवो की दस सागरोपम की स्थिति कही गई है, तदनुसार महाबल देव की भी दस सागरोपम की स्थिति कही गई है। 'हे सुदर्शन! पूवभव में तेरा जीव महाबल था। वहाँ ब्रह्म देवलोक की दस सागरोपम की स्थिति पूर्ण कर, और देवलोक का आयुष्य, भव और स्थिति का क्षय होने पर वहाँ से चवकर सीधे इस वाणिज्यग्राम नगर के सेठ कुल में तू पुत्र रूप से उत्पन्न हुआ है'।

३५–तएण तुमे सुदमणा! उम्मुक्कबालभावेणं विण्णायपरिणयमेत्तेण जोव्वणगमणुप्पत्तेण तहारूवाण थेराण अतिय केवलिपण्णत्ते धम्मे णिसते, सेवि य धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए, त सुट्ठुणं तुम सुदसणा! इयाणि पकरेसि। से तेणट्ठेण सुदसणा! एव वुच्चइ–अत्थि ण एएमि पलिओवम सागरोवमाण खयेइ वा अवचयेइ वा। तएणं तस्स सुदसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म सुभेण अज्झवसाणेण सुभेण परिणामेण लेस्साहि विसुज्झमाणीहि तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ईहा-पोह-मग्गण-गवेसण करेमाणस्स सण्णीपुव्वजाईसरणे समुप्पण्णे, एयमट्ठ सम्म अभिसमेइ। तएण से सुदसणे सेट्ठि समणेण भगवया महावीरेण सभारियपुव्वभवे दुगुणाणीयसड्ढसवेगे आणदसुपुण्णणयणे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ, आ० वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी–

सण्णिविट्ठाण सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-देवलोएसु णं अज्जो ! देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? तएण से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवठिइगहियट्ठे ते समणोवासए एव वयासी—देवलोएसु ण अज्जो ! देवाण जहण्णेणं दस-वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया, जाव दससमयाहिया, सखेज्जसमयाहिया, असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता। तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य। तएण ते समणोवासया इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एव परूवेमाणस्स एयमट्ठ णो सद्दहति, णो पत्तियति, णो रोयति, एयमट्ठ असद्दहमाणा अपत्तियमाणा, अरोएमाणा जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया।

२—तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जाव समोसढे, जाव परिसा पज्जुवासइ। तएण ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठ-तुट्ठा एव जहा तुगिउद्देसए जाव पज्जुवासति। तएण समणे भगव महावीरे तेसिं समणोवासगाण तीसे य महति० धम्मकहा, जाव आणाए आराहए भवइ।

कठिन शब्दार्थ—मिहो कहासमुल्लाव-परस्पर वार्तालाप म।

भावार्थ—१—उस काल उस समय में आलभिका नाम की नगरी थी

पूर्व का ज्ञान पढा । सम्पूर्ण बारह वर्ष तक श्रमण-पर्याय का पालन किया यावत समस्त दु खो से रहित हुए ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है—ऐसा कहकर यावत् गौतम स्वामी विचरते है ।

विवेचन—शका—चौदह पूवधारी जीवो का जघन्य उपपात छठे लान्तक देवलोक तक कहा गया है, यहाँ महाबल अनगार ने भी चौदह पूव का ज्ञान पढा था, फिर उनका उपपात पाचवे ब्रह्मदेवलोक मे ही कैसे हुआ ?

समाधान—शका उचित है, किंतु उस समय चौदह पूव के ज्ञान मे से कुछ ज्ञान विस्मृत हो जाना अथवा चौदह पूव मे कुछ कम ज्ञान होना सभव है, उ हे परिपूण चौदह पूव का ज्ञान नही हुआ था ।

॥ ग्यारहवे शतक का ग्यारहवा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक ११ उद्देशक १२

श्रमणोपासक ऋषिभद्रपुत्र की धर्मचर्चा

१—तेण कालेण तेण समएण आलभिया णाम णयरी होत्था । वण्णओ । सखवणे चेइए । वण्णओ । तत्थ ण आलभियाए णयरीए बहवे इसिभद्दपुत्तपामोक्खा समणोवासया परिवसति, अड्ढा जाव अपरिभूया, अभिगयजीवा-जीवा जाव विहरति । तएण तेसिं समणोवासयाण अण्णया कयावि एगयओ सहियाण समुवागयाण

सहस्माइ ठिई पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया जाव तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य, से कहमेयं भंते ! एवं ? (उ०) 'अज्जो' त्ति समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी–जण्णं अज्जो ! "इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुज्झ एवं आइक्खइ, जाव परूवेइ–देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया जाव तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य," सच्चे णं एसमट्ठे, अहं पुण अज्जो ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि-'देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं तं चेव जाव तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य,' सच्चे णं एयमट्ठे। तएणं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इसिभद्दपुत्तं समणोवासगं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति । तएणं ते समणोवासया पसिणाइं पुच्छंति, पु० अट्ठाइं परियाइयंति, अ० समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति, वं० जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

कठिन शब्दार्थ–भुज्जो भुज्जो–बार बार, अट्ठाइं परियाइयंति–अर्थ ग्रहण किया ।

भावार्थ–३–श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से धर्मोपदेश सुनकर और

(वर्णन)। वहां शखवन नामक उद्यान था (वर्णन)। उस आलभिका नगरी में 'ऋषिभद्रपुत्र' प्रमुख बहुत से श्रमणोपासक रहते थे। वे आढच यावत् अपरिभूत थे। वे जीवाजीवादि तत्त्वो के ज्ञाता थे। किसी समय एक स्थान पर एकत्रित होकर बैठे हुए उन श्रमणोपासको में इस प्रकार का वार्तालाप हुआ-"हे आर्यो! देवलोको में देवो की कितनी स्थिति कही गई है?" प्रश्न सुनकर देवो की स्थिति के विषय का ज्ञाता 'ऋषिभद्रपुत्र' ने उन श्रमणोपासको को इस प्रकार कहा-"हे आर्यो! देवो की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की कही गई है। उसके बाद एक समय अधिक, दो समय अधिक यावत् दस समय अधिक, सख्यात समय अधिक और असख्यात समय अधिक, इस प्रकार बढते हुए उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की स्थिति कही गई है। इसके आगे अधिक स्थिति वाले देव और देवलोक नहीं है।" ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक के उपरोक्त कथन पर उन श्रमणोपासको ने श्रद्धा, प्रतीति और रुचि नहीं की और अपने-अपने स्थान पर चले गये।

२-उस काल उस समय में श्रमण भगवान महावीर स्वामी वहाँ पधारे यावत् परिषद् उपासना करती है। तुगिका नगरी के श्रावको के समान वे श्रमणोपासक भी भगवान् का आगमन सुनकर हर्षित और सन्तुष्ट हुए, यावत भगवान की पर्युपासना करने लगे। भगवान ने उन श्रमणोपासको को और आई हुई महापरिषद् को यावत 'आज्ञा के आराधक होवे'-यहा तक धर्मोपदेश दिया।

३-तएण ते समणोवासया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ, उ० समण भगव महावीर वदति, णमसति, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-(प्र०) एव खलु भते! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्ह एव आइक्खइ, जाव परूवेइ-देवलोएसु ण अज्जो! देवाण जहण्णेण दस वास-

देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइ-त्तए ?

४ उत्तर-गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए बहूहिं सीलव्वय-गुणव्वय-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोव-वासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिइ, पा० मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेहिइ, मा० सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेहिइ, छेदेहित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिइ । तत्थ णं अत्थेगइ-याणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं इसिभद्द-पुत्तस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई भविस्सइ ।

५ प्रश्न-से णं भंते ! इसिभद्दपुत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भव० ठिइक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिइ ?

५ उत्तर-गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं काहेइ । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' त्ति भगवं गोयमे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ आलभियाओ णयरीओ संखवणाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

भावार्थ-४ प्रश्न-तदुपरान्त भगवान् गौतम स्वामी ने, श्रमण भगवान्

हृदय में धारण कर वे श्रमणोपासक हर्षित एव सन्तुष्ट हुए। उन्होंने खडे होकर भगवान् को वन्दना नमस्कार किया और इस प्रकार पूछा–"हे भगवन्! ऋषि भद्रपुत्र श्रमणोपासक हमें इस प्रकार कहता है यावत प्ररूपणा करता है कि 'देव लोको में देवो की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की कही गई है, इसके पश्चात एक-एक समय अधिक यावत् उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की कही गई है। इसके बाद देव और देवलोक व्युच्छिन्न हो जाते है,' तो हे भगवन्! यह बात किस प्रकार है?"

श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने उन श्रमणोपासको से कहा–"हे आर्यो! ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक तुम्हे कहता है यावत् प्ररूपणा करता है कि 'देव लोको में देवो की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की कही गई है यावत् समयाधिक करते हुए उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की कही गई है। इसके पश्चात् देव और देवलोक व्युच्छिन्न हो जाते है'–यह बात सत्य है। हे आर्यो! मै भी इसी प्रकार कहता हूँ यावत प्ररूपणा करता हूँ कि 'देवलोको में देवो की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है यावत् उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की है। इसके पश्चात् देव और देवलोक व्युच्छिन्न हो जाते है,' यह बात सत्य है।" भगवान् से समाधान सुनकर, अवधारण कर और भगवान् को वन्दना नमस्कार कर वे श्रमणोपासक, ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक के समीप आये। उसे वन्दना नमस्कार किया और उसकी सत्य बात को न मानने रूप अपने अपराध के लिये विनय पूवक बारबार क्षमायाचना करने लगे। फिर उन श्रमणोपासको ने भगवान् से कई प्रश्न पूछे, उनके अर्थ ग्रहण किये और भगवान् को वन्दना नमस्कार कर अपने-अपने स्थान पर चले गये।

४ प्रश्न–'भते' त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ, णमसइ, व० एव वयासी–पभू ण भते! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए

परिवसइ, रिउव्वेद जजुव्वेद० जाव णएसु सुपरिणिट्ठिए छट्ठ-छट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ० जाव आयावेमाणे विहरइ । तएण तस्स पोग्गलस्स छट्ठ छट्ठेणं जाव आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए जहा सिवस्स जाव विब्भगे णाम अण्णाणे समुप्पण्णे । से ण तेण विब्भगेण णाणेण समुप्पण्णेण वभलोए कप्पे देवाण ठिइ जाणइ पासइ । तएण तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेया-रूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—'अत्थि णं मम अइसेसे णाण-दसणे समुप्पण्णे, देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमया-हिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य'—एव सपेहेइ, एव सपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, आ० तिदडकुडिया जाव धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हेत्ता जेणेव आलभिया णयरी, जेणेव परिव्वायगावसहे, तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता भडणिक्खेव करेइ भ० आलभियाए णयरीए सिघा-डग० जाव पहेसु अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—'अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अइसेसे णाण-दसणे समुप्पण्णे, देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ तहेव जाव वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य । तएण आलभियाए णयरीए एएण अभिलावेण जहा सिवस्स, त चेव जाव से कहमेय मण्णे एव ? सामी समोसढे, जाव

महावीर स्वामी को वन्दना नमस्कार कर इस प्रकार पूछा-" हे भगवन् ! क्या श्रमणोपासक ऋषिभद्रपुत्र अगारवास को त्याग कर आपके समीप अनगार प्रव्रज्या स्वीकार करने में समथ ह ?

४ उत्तर-हे गौतम ! यह अथ समर्थ नहीं, किन्तु बहुत से शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्यारयान और पौषधोपवासो से तथा यथा-योग्य स्वीकृत तपस्या द्वारा अपनी आत्मा को भावित करता हुआ, बहुत वर्षों तक श्रमणोपासक पर्याय का पालन करेगा। फिर मासिक सलेखना द्वारा साठ भक्त अनशन का छेदन कर, आलोचना और प्रतिक्रमण कर, एव समाधि प्राप्त कर, काल के समय काल करके सौधम कल्प में अरुणाभ नामक विमान में देवरूप से उत्पन्न होगा। वहाँ कितने ही देवो की चार पल्योपम की स्थिति कही गई है, उनमें ऋषिभद्रपुत्र देव की भी चार पल्योपम की स्थिति होगी।

५ प्रश्न-हे भगवन ! वह ऋषिभद्रपुत्र देव, उस देवलोक का आयुष्य, भव और स्थिति क्षय होने पर कहाँ जायगा, कहाँ उत्पन्न होगा ?

५ उत्तर-हे गौतम ! वह महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होगा यावत् सभी दु खो का अन्त करेगा।

"हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। यह इसी प्रकार है"-ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे। पश्चात किसी समय श्रमण भगवान् महावीर स्वामी आलभिका नगरी के शखवन उद्यान से निकलकर बाहर जनपद में विचरण करने लगे।

पुद्गल परिव्राजक

६-तेण कालेण तेण समएण आलभिया णाम णयरी होत्था। वण्णओ। तत्थ ण सखवणे णाम चेइए होत्था। वण्णओ। तस्स ण सखवणस्स चेइयस्स अदूरसामते पोग्गले णाम परिव्वायए

यावत् प्ररूपणा करने लगा-"हे देवानुप्रियो ! मुझे विशिष्ट ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ है, जिससे मै यह जानता और देखता हूँ कि देवलोको में जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष और उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की है, इससे आगे देव और देवलोक नहीं है ।" इस बात को सुनकर आलभिका नगरी के लोग परस्पर, शिव राजर्षि के समान कहने लगे कि-"हे देवानुप्रियो ! यह बात कैसे मानी जाय ?" कुछ काल बाद श्रमण भगवान महावीर स्वामी वहाँ पधारे, यावत गौतम स्वामी भिक्षा के लिये नगरी में गये । वहाँ लोगो से उपरोक्त बात सुनकर अपने स्थान पर आये और भगवान् से इस विषय में पूछा । भगवान् ने फरमाया-"हे गौतम ! पुद्गल परिव्राजक का कथन असत्य है । मै इस प्रकार कहता हूँ और प्ररूपणा करता हूँ कि देवलोको में देवो की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है, इसके बाद एक समयाधिक, द्विसमयाधिक यावत् उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम की है । इसके बाद देव और देवलोक व्युच्छिन्न हो गये है ।"

७ प्रश्न-अत्थि ण भंते ! सोहम्मे कप्पे दव्वाइ सवण्णाइ पि अवण्णाइ पि ?

७ उत्तर-तहेव जाव हंता अत्थि, एव ईसाणे वि, एव जाव अच्चुए, एव गेवेज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु वि, ईसिपब्भाराए वि जाव हंता अत्थि । तएण सा महतिमहालिया जाव पडिगया ।

८-तएण आलभियाए णयरीए सिंघाडग-तिय० अवसेस जहा सिवस्स, जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, णवर तिदड कुडिय जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परिवडियविब्भगे आलभिय णयर मज्झ-मज्झेण णिग्गच्छइ, जाव उत्तरपुरच्छिम दिसिभाग अवक्कमइ,

परिसा पडिगया । भगवं गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहु-जणसद्दं णिसामेइ, तहेव० तहेव सव्वं भाणियव्वं, जाव अहं पुण गोयमा ! एवं आइक्खामि एवं भासामि जाव परूवेमि-' देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया दुसमयाहिया जाव उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ।

कठिन शब्दार्थ-सुपरिणिट्ठिए-सुपरिनिष्ठित (कुशल)।

भावार्थ-६-उस काल उस समय में आलभिका नगरी थी (वर्णन) । वहाँ शखवन नाम का उद्यान था । (वणन) उस शखवन उद्यान से थोडी दूर 'पुद्गल' नामक परिव्राजक रहता था । वह ऋग्वेद, यजुर्वेद, आदि यावत् बहुत से ब्राह्मण विषयक नयो में कुशल था । वह निरन्तर बेले बेले की तपस्या करता हुआ आतापना भूमि में दोनो हाथ ऊँचे कर के आतापना लेता था । इस प्रकार तपस्या करते हुए उस 'पुद्गल' परिव्राजक को प्रकृति की सरलता आदि से शिव परिव्राजक के समान विभग नामक अज्ञान उत्पन्न हुआ। उस विभग ज्ञान से पाचवे ब्रह्म देवलोक में रहे हुए देवो की स्थिति जानने देखने लगा । फिर उस 'पुदगल' परिव्राजक को इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-" मुझे अतिशेष ज्ञानदर्शन उत्पन्न हुआ है, जिससे मै जानता हू कि देवलोको में देवो की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है । फिर एक समय अधिक, दो समय अधिक यावत असख्य समय अधिक, इस प्रकार करते हुए उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की है । उसके बाद देव और देवलोक व्युच्छिन्न हो जाते ह,"-इस प्रकार विचार करके वह आतापना भूमि से नीचे उतरा । त्रिदण्ड, कुण्डिका यावत् भगवा वस्त्रो को ग्रहण कर आल-भिका नगरी में तापसो के आश्रम में आया और वहाँ अपने उपकरण रख कर आलभिका नगरी के शृगाटक, त्रिक, राजमार्ग आदि में इस प्रकार कहने लगा

शतक १२

१ सखे २ जयती ३ पुढवी ४ पोग्गल ५ अइवाय ६ राहु ७ लोगे य।
८ णागे य ९ देव १० आया, बारसमसए दसुद्देसा ॥१॥

भावार्थ—बारहवें शतक में दस उद्देशक हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं,—
१ शख, २ जयन्ती, ३ पृथ्वी, ४ पुद्गल, ५ अतिपात, ६ राहु, ७ लोक, ८ नाग,
९ देव और १० आत्मा।

उद्देशक १

श्रमणोपासक शंख पुष्कली

१—तेण कालेण तेण समएण सावत्थी णाम णयरी होत्था, वण्णओ। कोट्ठए चेइए, वण्णओ। तत्थ ण सावत्थीए णयरीए बहवे सखप्पामोक्खा समणोवासगा परिवसंति, अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति। तस्स ण सखस्स समणोवासगस्स उप्पला णाम भारिया होत्था, सुकुमाल० जाव सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरइ। तत्थ ण सावत्थीए णयरीए पोक्खली णाम समणोवासए परिवसइ, अड्ढे, अभिगय० जाव विहरइ। तेण कालेण तेण समएण सामी समोसढे। परिसा

अवक्कमित्ता तिदडकुडिय च जहा खदओ, जाव पव्वइओ सेस जहा सिवस्स, जाव "अव्वाबाह सोक्ख अणुभवति सासय सिद्धा" ।

† सेव भते ! सेव भते ! त्ति । †

॥ दुवालसमो उद्देसो समत्तो ॥

॥ समत्त एगारसम सय ॥

कठिन शब्दार्थ-अव्वाबाह-अव्याबाध (किसी भी प्रकार की बाधा से रहित) ।

भावार्थ-७-प्रश्न-हे भगवन् ! सौधर्म देवलोक में वर्ण सहित और वर्ण रहित द्रव्य है, इत्यादि प्रश्न ।

७ उत्तर-हाँ, गौतम ! है । इसी प्रकार ईशान देवलोक में यावत् अच्युत देवलोक में, ग्रैवेयक विमानो में, अनुत्तर विमानो में और ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी में वर्णादि सहित और वर्णादि रहित द्रव्य है । धर्मोपदेश सुनकर वह महा-परिषद् चली गई ।

८ आलभिका नगरी के मनुष्यो द्वारा पुदगल परिव्राजक को अपनी मान्यता मिथ्या ज्ञात हुई और वे भी शिवराजर्षि के समान शङ्कित, कांक्षित, हुए, जिससे उनका विभगज्ञान नष्ट होगया । वे अपने उपकरण लेकर भगवान के पास आये । भगवान के द्वारा अपनी शका निवारण हो जाने पर स्कन्दक की तरह त्रिदण्ड, कुण्डिका एव भगवाँ वस्त्र छोडकर प्रव्रजित हुए और शिवराजर्षि के समान आराधक होकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त हुए । 'वे सिद्ध अव्याबाध, शाश्वत सुख का अनुभव करते हैं ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है-ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते है ।

॥ ग्यारहवें शतक का बारहवाँ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

॥ ग्यारहवाँ शतक सम्पूर्ण ॥

भगवान् के पास धर्मोपदेश सुनकर और अवधारण कर के हर्षित और सन्तुष्ट हुए। भगवान् को वन्दना नमस्कार कर प्रश्न पूछे। उनके अर्थ को ग्रहण किया। फिर खडे होकर भगवान् को वन्दना नमस्कार कर, कोष्ठक उद्यान से निकल कर श्रावस्ती नगरी की ओर जाने का विचार किया।

२–तएणं से सखे समणोवासए ते समणोवासए एव वयासी–"तुज्झे ण देवाणुप्पिया! विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेह, तएण अम्हे त विपुल असण पाण खाइम साइम आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुजेमाणा पक्खिय पोसह पडिजागरमाणा विहरिस्सामो।" तएण ते समणोवासगा सखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठ विणएणं पडिसुणेंति। तएणं तस्स सखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–'णो खलु मे सेय त विउल असण जाव साइम आसाएमाणस्स विसाएमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुजेमाणस्स पक्खिय पोसह पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, सेय खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बभयारिस्स उम्मुक्कमणि-सुवण्णस्स ववगयमाला-वण्णग-विलेवणस्स णिक्खित्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अविइयस्स दब्भसथारोवगयस्स पक्खिय पोसह पडिजागरमाणस्स विहरित्तए' त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव सावत्थी णयरी, जेणेव सए गिहे, जेणेव उप्पला समणोवासिया, तेणेव उवागच्छइ ते० उप्पल समणोवासिय आपुच्छइ,

णिग्गया, जाव पज्जुवासइ । तएण ते समणोवासगा इमीसे कहाए जहा आलभियाए जाव पज्जुवासति । तएण समणे भगव महावीरे तेसि समणोवासगाण तीसे य महति० धम्मकहा, जाव परिसा पडिगया । तएण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ० समण भगव महावीर वदति णमसति, वदित्ता णमसित्ता पसिणाइ पुच्छति प० अट्ठाइ परियादियति, अ० उट्ठाए उट्ठेति, उ० समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

भावार्थ—१—उस काल उस समय में श्रावस्ती नाम की नगरी थी, वणन । कोष्ठक नामक उद्यान था, वणन । उस श्रावस्ती नगरी में शख प्रमुख बहुत से श्रमणोपासक रहते थे । वे आढच यावत् अपरिभूत थे । वे जीव अजीवादि तत्त्वो के जानकार यावत विचरते थे । शख श्रमणोपासक की स्त्री का नाम उत्पला था । वह सुकुमाल हाथ-पांव वाली यावत् सुरूप और जीव अजीवादि तत्त्वो की जानने वाली श्रमणोपासिका थी । उस श्रावस्ती नगरी में पुष्कली नाम का एक श्रमणोपासक भी रहता था । वह आढच यावत अपरिभूत था तथा जीव अजीवादि तत्त्वो का ज्ञाता था ।

उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी,श्रावस्ती पधारे । परिषद वन्दन के लिये गई यावत् पर्युपासना करने लगी । भगवान् के आगमन को जानकर वे श्रावक भी, आलभिका नगरी के श्रावको के समान वन्दनार्थ गये, यावत् पर्युपासना करने लगे । भगवान ने उस महा परिषद् को और उन श्रमणोपासको को धर्मोपदेश दिया यावत परिषद् वापिस चली गई । वे श्रमणोपासक

करेगे। शख श्रावक की बात सुनकर वे सभी श्रावक अपने अपने घर गए। पीछे शख श्रावक के मन मे, बिना खाये पीये ही पौषध करने का विचार उत्पन्न हुआ। घर आकर उसने अपनी पत्नी उत्पला श्राविका से पूछा और अपनी पौषधशाला मे जाकर पौषध अगीकार किया।

मूलपाठ मे 'आसाएमाणा, विसाएमाणा, परिभाएमाणा, परिभुजेमाणा' पद दिए है। इन सभी पदो के अत मे 'शानच' प्रत्यय लगा है। सस्कृत और प्राकृत मे 'शत और शानच्' प्रत्यय वतमान मे चालू क्रिया के लिये आते हैं। अर्थात 'जाते हुए, खाते हुए, लाते हुए' इत्यादि वतमान मे चालू क्रिया को बतलाने के लिये 'शत और शानच' प्रत्यय लगते है। 'आसएमाणा' आदि चारो पद 'शानच' प्रत्ययात हैं। इसलिये इनका अथ है कि आहारादि खाते पीते हुए पौषध करना।' इस पौषध का दूसरा नाम अभी 'दयाव्रत' है। पुष्कली आदि श्रावको ने यही व्रत किया था।

३-तएण ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव साइ साइ गिहाइ, तेणेव उवागच्छति, ते० विपुल असणं पाणं खाइम साइम उवक्खडावेति, उवक्खडावित्ता अण्णमण्ण सद्दावेति, अ० एव वयासी-'एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहि से विउले असण-पाण-खाइम साइमे उवक्खडाविए, सखे य ण समणोवासए णो हव्वमागच्छइ, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह सख समणोवासग सद्दावेत्तए'।

४-तएण से पोक्खली समणोवासए ते समणोवासए एव वयासी-'अच्छह ण तुज्झे देवाणुप्पिया ! सुणिव्वुया वीसत्था, अह ण सख समणोवासग सद्दावेमि' त्ति कट्टु तेसि समणोवासगाण अतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सावत्थीए णयरीए

आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, ते० पोसहसाल अणुपविस्सइ, अणुपविस्सित्ता पोसहसाल पमज्जइ, पो० उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ, उ० दब्भसथारग सथरइ, दब्भ० दब्भसथा-रग दुरूहइ, द० पोसहसालाए पोसहिए बभयारी जाव पक्खिय पोसह पडिजागरमाणे विहरइ ।

कठिन शब्दार्थ–अब्भत्थिए-अध्यवसाय ।

भावार्थ–२–इसके पश्चात शख श्रमणोपासक ने दूसरे श्रमणोपासको से इस प्रकार कहा–"हे देवानुप्रियो ! तुम पुष्कल अशन, पान, खादिम और स्वादिम तैयार कराओ । अपन सभी उस पुष्कल अशन, पान, खादिम और स्वादिम का आस्वादन करते हुए, विशेष आस्वादन करते हुए, परस्पर देते हुए और खाते हुए, पाक्षिक पौषध का अनुपालन करते हुए रहेगे ।" उन श्रमणोपासको ने शख श्रमणोपासक के वचन को विनय पूर्वक स्वीकार किया ।

इसके बाद उस शख श्रमणोपासक को इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ –"अशनादि यावत् खाते हुए, पाक्षिक पौषध करना मेरे लिये श्रेयस्कर नही, परन्तु अपनी पौषधशाला में, ब्रह्मचय पूवक मणि और स्वर्ण का त्याग कर, माला, उद्वतना और विलेपन को छोडकर तथा शस्त्र और मूसलादि का त्याग करना और डाभ के सथारा सहित,दूसरे किसी की सहायता बिना,मुझ अकेले को पौषध स्वीकार करके विचरना श्रेयस्कर ह ।" ऐसा विचार कर वह अपने घर आया और अपनी पत्नी उत्पला श्रमणोपासिका से पूछकर, अपनी पौषधशाला में आया । पौषधशाला का परिमाजन करके उच्चार (बडीनीत) और प्रस्रवण (लघुनीत)की भूमि का प्रतिलेखन करके, डाभ का सथारा बिछाकर, उसपर बैठा और पौषध ग्रहण करके, पाक्षिक पौषध का पालन करने लगा ।

विवेचन–भगवान के दशन करके वापिस लौटते समय शख श्रावक ने दूसरे श्रावको से कहा कि अशनादि आहार तैयार करवाओ । अपन सभी खाते पीते हुए पाक्षिक पौषध

करेगे । शख श्रावक की वात सुनकर वे सभी श्रावक अपने अपने घर गए । पीछे शख श्रावक के मन मे, विना खाये पीये ही पौपध करने का विचार उत्पन्न हुआ । घर आकर उसने अपनी पत्नी उत्पला श्राविका से पूछा और अपनी पौपधशाला मे जाकर पौपध अगीकार किया ।

मूलपाठ मे 'आसाएमाणा, विसाएमाणा, परिभाएमाणा, परिभुजेमाणा' पद दिए हैं । इन सभी पदो के अन्त मे 'शानच्' प्रत्यय लगा है । सस्कृत और प्राकृत मे 'शतृ और शानच्' प्रत्यय वर्तमान मे चालू क्रिया के लिये आते हैं । अर्थात 'जाते हुए, खाते हुए, लाते हुए' इत्यादि वर्तमान मे चालू क्रिया को वतलाने के लिये 'शतृ और शानच' प्रत्यय लगते हैं । *'आसएमाणा' आदि चारो पद 'शानच' प्रत्ययान्त हैं । इसलिये इनका अर्थ है कि* आहारादि खाते पीते हुए पौपध करना ।' इस पौपध का दूसरा नाम अभी 'दयाव्रत' है । पुष्कली आदि श्रावको ने यही व्रत किया था ।

३–तएण ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव साइ साइ गिहाइ, तेणेव उवागच्छति, ते० विपुल असणं पाणं खाइम साइम उवक्खडावेति, उवक्खडावित्ता अण्णमण्ण सद्दावेंति, अ० एव वयासी–'एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहि से विउले असण-पाण-खाइम-साइमे उवक्खडाविए, सखे य ण समणोवासए णो हव्वमागच्छइ, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह सख समणोवासग सद्दावेत्तए' ।

४–तएण से पोक्खली समणोवासए ते समणोवासए एव वयासी–'अच्छह ण तुज्झे देवाणुप्पिया ! सुणिव्वुया वीसत्था, अह ण सख समणोवासग सद्दावेमि' त्ति कट्टु तेसिं समणोवासगाण अतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सावत्थीए णयरीए

मज्झ मज्झेणं जेणेव सखस्स समणोवासगस्स गिहे तेणेव उवा-
गच्छइ, ते० सखस्स समणोवासगस्स गिह अणुपविट्ठे ।

५–तएणं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासय एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठ तुट्ठ० आसणाओ अब्भुट्ठेइ आ० सत्त-ट्ठ पयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता पोक्खलिं समणोवासग वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता आसणेण उवणिमतेइ, आ० एव वयासी–" सदिसउ ण देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पओयण ?" तएण से पोक्खली समणोवासए उप्पल समणोवासिय एव वयासी–" कहिं ण देवाणुप्पिए ! सखे समणोवासए ?" तएण सा उप्पला समणो-वासिया पोक्खलि समणोवासय एव वयासी–" एव खलु देवाणुप्पिया ! सखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बभयारी जाव विहरइ ।"

कठिन शब्दार्थ–उवक्खडावेंति–तैयार करवाते है ।

भावार्थ–३–इसके बाद वे श्रमणोपासक श्रावस्ती नगरी में अपने-अपने घर गए और पुष्कल अशन, पान, खादिम और स्वादिम तैयार करवाया । फिर एक दूसरे को बुलाकर वे इस प्रकार कहने लगे कि हे देवानुप्रियो ! अपन ने विपुल अशन, पान, खादिम और स्वादिम तैयार करवा लिया है, परन्तु अभी तक शख श्रमणोपासक नहीं आये है । इसलिए उन्हे बुलवाना चाहिए ।

४–इसके बाद पुष्कली श्रावक ने उन श्रावको से कहा कि "हे देवानु-प्रियो ! तुम शातिपूर्वक विश्राम करो, 'मै शख श्रावक को बुला लाता हूँ ।" ऐसा कहकर वहाँ से चले और श्रावस्ती नगरी के मध्य होते हुए शख श्रावक के घर पहुँचे ।

५–पुष्कली श्रावक को आते हुए देखकर, उत्पला श्राविका हर्षित और सन्तुष्ट हुई। वह अपने आसन से उठ कर सात-आठ चरण सामने गई। उसने पुष्कली श्रावक को वन्दना नमस्कार कर बैठने के लिए आसन दिया और इस प्रकार बोली–"हे देवानुप्रिय ! कहिये, आपके आने का क्या प्रयोजन है ?" पुष्कली श्रावक ने उत्पला से पूछा–"हे देवानुप्रिये ! शख श्रावक कहाँ है ?" उत्पला श्राविका ने उत्तर दिया–"वे पौषधशाला में, पौषध करके बैठे हुए है।"

६–तएण से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसाला, जेणेव सखे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, ते० गमणागमणाए पडिक्कमइ, ग० सख समणोवासय वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी–'एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले असणे० जाव साइमे उवक्खडाविए, त गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! त विउल असणं जाव साइम आसाएमाणा जाव पडिजागरमाणा विहरामो।

७–तएण से सखे समणोवासए पोक्खलिं समणोवासय एव वयासी–'णो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! त विउल असण पाण खाइम साइम आसाएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स विहरित्तए कप्पइ मे पोसहसालाए पोसहियस्स जाव विहरित्तए, त छदेण देवाणुप्पिया ! तुब्भे त विउल असण पाण खाइम साइम आसाएमाणा जाव विहरह।

८–तएण से पोक्खली समणोवासए सखस्स समणोवासगस्स

अतियाओ पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सावत्थि णयरिं मज्झ-मज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ, ते० ते समणोवासए एव वयासी–'एव खलु देवाणुप्पिया ! सखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए जाव विहरइ, त छदेण देवाणुप्पिया ! तुज्झे विउल असण पाण खाइम साइम जाव विहरह, सखे ण समणोवासए णो हव्वमागच्छइ । तएण ते समणोवासगा त विउल असणं पाण खाइम साइम आसाएमाणा जाव विहरंति ।

कठिन शब्दार्थ–छदेण–इच्छा से ।

भावार्थ–६–तब पुष्कली श्रावक, पौषधशाला में शख श्रावक के समीप आया । गमनागमन का प्रतिक्रमण करके शख श्रावक को वन्दना नमस्कार किया और इस प्रकार कहा–"हे देवानुप्रिय ! विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम तयार करवाया है, अत अपन चलें और उस आहारादि को खाते पीते पौषध करे ।"

७–तब शख श्रावक ने पुष्कली श्रावक से इस प्रकार कहा–"हे देवानुप्रिय ! आहारादि खाते पीते हुए पौषध करना योग्य नहीं । ऐसा सोचकर मैंने बिना खाये-पीये पौषध अगीकार कर लिया है । तुम सब अपनी इच्छानुसार आहारादि खाते-पीते हुए पौषध करो ।

८–तब पुष्कली श्रावक वहाँ से रवाना होकर श्रावस्ती नगरी के मध्य चलकर उन श्रावको के पास पहुँचा और इस प्रकार बोला–" हे देवानुप्रियो ! शख श्रावक ने बिना खाये पीये पौषध अगीकार कर लिया है । उन्होने कहा है कि तुम अपनी इच्छानुसार आहारादि करते हुए पौषध करो, शख श्रावक नहीं आवेगा । यह सुन कर उन श्रावको ने आहारादि खाते पीते हुए पौषध किया ।

विवेचन–अपने अपने घर जाकर जब उन्होने अशनादि तयार करवा लिया तब

उन्होंने एक दूसरे को बुलाया। शख श्रावक को नही आते देख कर पुष्कली श्रावक शख को बुलाने के लिए गया। शख की धमपत्नी उत्पला, पुष्कली श्रावक को आते देख कर हर्षित हुई, तथा सात आठ कदम सामने जाकर पुष्कली को वन्दना नमस्कार किया और आगमन का कारण पूछा। उत्पलाने शख के पौषध करने की सारी बात कही। पुष्कली श्रावक पौषधशाला मे शख श्रावक के पास गया। शख ने कहा–अशनादि को खाते पीते हुए पौषध करना मुझे ठीक नही लगा। मैंने विना खाये पीये ही पौषध कर लिया है।

९–तएण तस्स सखस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्ता-वरत्तकाल-समयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्प-ज्जित्था–'सेय खलु मे कल्ल जाव जलते समणं भगव महावीर वदित्ता णमसित्ता जाव पज्जुवासित्ता तओ पडिणियत्तस्स पक्खिय पोसह पारित्तए' त्ति कट्टु एव सपेहेइ, एव सपेहेत्ता कल्ल जाव जलते पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवरपरिहिए सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, स० पायविहारचारेण सावत्थि णयरिं मज्झ मज्झेण जाव पज्जु-वासइ, अभिगमो णत्थि।

१०–तएण ते समणोवासगा कल्ल पाउ० जाव जलते ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा सएहि सएहि गेहेहितो पडिणिक्खमति, स० एगयओ मिलायति, एगयओ मिलायित्ता सेस जहा पढम जाव पज्जुवासति। तएण समणे भगव महावीरे तेसि समणोवासगाण

तीसे य धम्मकहा, जाव आणाए आराहए भवइ। तएण ते समणो वासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति, उ० समणं भगव महावीर वदति णमसति, वदित्ता णमसित्ता जेणेव सखे समणोवासए तेणेव उवागच्छति ते० सख समणोवासय एव वयासी-'तुम देवाणुप्पिया! हिज्जो अम्हे अप्पणा चेव एव वयासी, तुम्हे ण देवाणुप्पिया! विउल असण पाणं खाइम साइम जाव विहरिस्सामो, तएण तुम पोसहसालाए जाव विहरिए, त सुट्ठु णं तुम देवाणुप्पिया! अम्हे हीलसि। 'अज्जो' त्ति समणे भगव महावीरे ते समणोवासए एव वयासी-'मा ण अज्जो! तुज्झे सख समणोवासय हीलह, णिंदह, खिंसह, गरहह, अवमण्णह, सखे णं समणोवासए पियधम्मे चेव, दढधम्मे चेव, सुदक्खुजागरिय जागरिए।

कठिन शब्दार्थ-हिज्जो-गया कल।

भावार्थ-९-रात्रि के पिछले भाग में धर्म जागरणा करते हुए शख श्रावक को इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ कि कल प्रात काल सूर्योदय होने पर श्रमण भगवान महावीर स्वामी को वन्दना नमस्कार यावत पर्युपासना करके, वहाँ से लौटने पर पाक्षिक पौषध पालना मेरे लिये श्रेयस्कर है। ऐसा विचार कर वह दूसरे दिन प्रात काल सूर्योदय होने पर, पौषधशाला से बाहर निकला और बाहर जाने योग्य शुद्ध तथा मगल रूप वस्त्रो को उत्तम रीति से पहन कर, अपने घर से पैदल चलते हुए श्रावस्ती नगरी के मध्य में होकर भगवान् की सेवा में पहुँचा, यावत् भगवान की पर्युपासना करने लगा। यहाँ अभिगम नही कहना चाहिये।

१०–वे पुष्कली आदि सभी श्रावक, दूसरे दिन प्रात काल सूर्योदय होने पर स्नानादि करके यावत् शरीर को अलकृत कर अपने-अपने घर से निकले और एक स्थान एकत्रित होकर भगवान् की सेवा में पहुँचे यावत पर्युपासना करने लगे। भगवान ने महा परिषद् को और उन श्रावकों को "आज्ञा के आराधक हो" वैसा धर्मोपदेश दिया। वे सभी श्रावक धर्मोपदेश सुनकर और हृदय में धारण करके हृष्ट-तुष्ट हुए। तत्पश्चात् खडे होकर भगवान को वन्दना नमस्कार किया। इसके पश्चात् वे शख श्रावक के पास आकर इस प्रकार कहने लगे–"हे देवानुप्रिय ! आपने कल हमें विपुल अशन, पान, खादिम और स्वादिम तैयार करने के लिये कहा था और कहा था कि अपन अशनादि खाते-पीते हुए पौषध करेंगे। तदनुसार हमने अशनादि तैयार करवाया, किन्तु फिर आप नहीं आये और आपने विना खाये पीये पौषध कर लिया। हे देवानुप्रिय ! आपने हमारी अच्छी हसी की।" उन श्रावकों की इस बात को सुनकर श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने इस प्रकार कहा–"हे आर्यो ! तुम शख श्रावक की हेलना, निन्दा, खिसना, गर्हा और अवमानना (अपमान) मत करो। क्योंकि शख श्रावक प्रियधर्मा और दृढधर्मा है। इसने प्रमाद और निद्रा का त्याग करके सुदर्शन जागरिका जाग्रत की है।

विवेचन–पौषध के चार भेद हैं। यथा –आहार पौषध, शरीर पौषध ब्रह्मचर्य पौषध और अव्यापार पौषध।

आहार का त्याग करके धर्म का पोषण करना 'आहार पौषध' है। स्नान, उबटन, वर्णक, विलेपन, पुष्प, गध, ताम्बूल, वस्त्र और आभरण रूप शरीर सत्कार का त्याग करना 'शरीर पौषध' है। अब्रह्म (मैथुन) का त्याग कर कुशल अनुष्ठानों के सेवन द्वारा धर्म वृद्धि करना 'ब्रह्मचर्य पौषध' है। कृषि वाणिज्यादि सावद्य व्यापारों का तथा शस्त्रादि का त्याग कर धर्म का पोषण करना 'अव्यापार पौषध' है। शखजी ने इन चारों का त्याग करके पौषध किया था। दूसरे दिन प्रात काल वस्त्र बदलने रूप शरीर पौषध को पालकर शेष पौषधों सहित भगवान् की सेवा मे गये थे। इनके लिये मूलपाठ मे लिखा है कि 'अभिगमो णत्थि' इसका आशय यह है कि उनके पास सचित्त द्रव्य नही थे, इसलिये सचित्त द्रव्य त्याग रूप अभिगम नही किया था, शेष चार अभिगम तो किये थे।

११ प्रश्न–'भंते' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–कइविहा णं भंते ! जागरिया पण्णत्ता ?

११ उत्तर–गोयमा ! तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तं जहा–बुद्धजागरिया अबुद्धजागरिया सुदक्खुजागरिया ।

प्रश्न–से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तं जहा–बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया ?

उत्तर–गोयमा ! जे इमे अरिहंता भगवंतो उप्पण्णणाण-दंसण-धरा जहा खंदए जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी, एए णं बुद्धा बुद्ध-जागरियं जागरंति । जे इमे अणगारा भगवंतो ईरियासमिया भासासमिया जाव गुत्तबंभचारी एए णं अबुद्धा अबुद्धजागरियं जागरंति । जे इमे समणोवासगा अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति, एए णं सुदक्खुजागरियं जागरंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ 'तिविहा जागरिया जाव सुदक्खुजागरिया' ।

कठिन शब्दार्थ–जागरिया–जागरणा ।

भावार्थ–११ प्रश्न–'हे भगवन् !' इस प्रकार कह कर भगवान् गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दना नमस्कार करके इस प्रकार पूछा–"हे भगवन् ! जागरिका कितने प्रकार की कही गई है ?"

११ उत्तर–हे गौतम ! जागरिका तीन प्रकार की कही गई है । यथा–बुद्धजागरिका, अबुद्धजागरिका और सुदर्शनजागरिका ।

प्रश्न–हे भगवन् ! तीन प्रकार की जागरिका कहने का क्या कारण है ?

उत्तर–हे गौतम ! जो उत्पन्न हुए केवलज्ञान केवलदर्शन के धारक अरिहत भगवान् है, इत्यादि दूसरे शतक के प्रथम उद्देशक के स्कन्दक प्रकरण के अनुसार सर्वज्ञ और सर्वदर्शी है वे 'बुद्ध' है, उनकी प्रमाद रहित अवस्था को 'बुद्धजागरिका' कहते है। जो अनगार ईर्या आदि पांच समिति, तीन गुप्ति यावत् गुप्त ब्रह्मचारी है, वे सर्वज्ञ न होने के कारण 'अबुद्ध' कहलाते है। उनकी जागरणा को 'अबुद्ध जागरिका' कहते है। श्रावक, जीव अजीव आदि तत्त्वो के जानकार होते है, इसलिए इनकी जागरणा 'सुदर्शनजागरिका' कहलाती है। इसलिए हे गौतम ! इस तरह तीन प्रकार की जागरिका कही गई है।

१२ प्रश्न–तएण से सखे समणोवासए समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी–कोहवसट्टे णं भते ! जीवे किं बधइ, किं पगरेइ, किं चिणाइ, किं उवचिणाइ ?

१२ उत्तर–सखा ! कोहवसट्टे ण जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबधणबद्धाओ एव जहा पढमसए असवुडस्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्टइ ।

१३–माणवसट्टे ण भते ! जीवे एव चेव, एव मायावसट्टेवि एव लोभवसट्टेवि जाव अणुपरिअट्टइ ।

१४–तएण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म भीया तत्था तसिया ससारभउव्विग्गा समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता जेणेव

सखे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ ते० सख समणोवासयं वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो भुज्जो खामेति। तएण ते समणोवासगा सेस जहा आलभियाए जाव पडिगया।

१५ प्रश्न–'भते' त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी–पभू ण भंते ! सखे समणोवासए देवाणुप्पियाण अतिय०।

१५ उत्तर–सेस जहा इसिभद्दपुत्तस्स, जाव अत काहेइ।

सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ

॥ पढमो उद्देसो समत्तो ॥

१२ प्रश्न–इसके बाद उस शख श्रमणोपासक ने श्रमण भगवान महावीर स्वामी को वन्दना नमस्कार कर इस प्रकार पूछा–"हे भगवन् ! क्रोध के वश आर्त्त बना हुआ जीव, क्या बांधता ह ? क्या करता है ? किसका चय करता है और किसका उपचय करता है ?

१२ उत्तर–हे शख ! क्रोध के वश आर्त्त बना हुआ जीव आयुष्य कर्म को छोडकर शेष सात कर्मो की शिथिल बधन से बँधी हुई प्रकृतियों को दृढ बन्धन वाली करता है, इत्यादि सब पहले शतक के पहले उद्देशक में कथित सवर रहित अनगार के समान जान लेना चाहिए। यावत वह ससार में परिभ्रमण करता है।

भावार्थ–१३ प्रश्न–हे भगवन् ! मान के वश आर्त्त बना हुआ जीव क्या बांधता है, इत्यादि प्रश्न।

१३ उत्तर–हे शख ! पूर्व कहे अनुसार जानना चाहिए। इसी प्रकार

माया और लोभ के वश आर्त्त बने हुए जीव के विषय में भी जानना चाहिए, यावत् वह ससार में परिभ्रमण करता है ।

१४ प्रश्न–श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से क्रोधादि कषाय का ऐसा तीव्र और कटु फल सुनकर और अवधारण कर के कर्म-बन्ध से भयभीत हुए वे श्रावक त्रास पाये, त्रसित हुए और ससार के भय से उद्विग्न बने हुए वे भगवान् को वन्दना नमस्कार करके शख श्रावक के समीप आये। उन्हें वन्दना नमस्कार करके अपने अविनयरूप अपराध के लिये विनयपूर्वक बार बार क्षमायाचना करने लगे। इसके पश्चात् वे सभी श्रावक अपने अपने घर गये। शेष वणन आलभिका के श्रमणोपासको के समान जानना चाहिये ।

१५ प्रश्न–'हे भगवन् ! ऐसा कहकर भगवान् गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वन्दना नमस्कार कर इस प्रकार पूछा–'हे भगवन् ! क्या शख श्रमणोपासक आपके पास प्रव्रज्या लेने में समर्थ है ?'

१५ उत्तर–हे गौतम ! यह अथ समथ नही है । शेष वर्णन ऋषिभद्र पुत्र के समान कहना चाहिये, यावत् सवदु खो का अन्त करेगा ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन ! यह इसी प्रकार है–ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते है ।

विवेचन–पुष्कली आदि श्रावको को जो थोडा सा क्रोध उत्पन्न हो गया था उसको उपशमाने की दृष्टि से शख श्रावक ने क्रोधादि कषाय का फल पूछा और भगवान ने क्रोधादि कषाय का कटु फल बतलाया, जिसे सुनकर वे श्रावक शात हो गये और अपने अपराध के लिये शख श्रावक से क्षमा याचना की। शख श्रावक यहा का आयुष्य पूण कर देवलोक मे उत्पन्न होगा और वहा से महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त होगा ।

॥ बारहवे शतक का प्रथम उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १२ उद्देशक २

जयंती श्रमणोपासिका

१—तेण कालेणं तेण समएणं कोसंबी णाम णयरी होत्था। वण्णओ। चंदोवतरणे चेइए। वण्णओ। तत्थ णं कोसंबीए णयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो पोत्ते सयाणीयस्स रण्णो पुत्ते चेडगस्स रण्णो णत्तुए मियावईए देवीए अत्तए जयंतीए समणोवासियाए भत्तिज्जए उदायणे णाम राया होत्था। वण्णओ। तत्थ णं कोसंबीए णयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो सुण्हा सयाणीयस्स रण्णो भज्जा चेडगस्स रण्णो धूया उदायणस्स रण्णो माया जयंतीए समणोवासियाए भाउज्जा मियावई णाम देवी होत्था। वण्णओ। सुकुमाल० जाव सुरूवा समणोवासिया जाव विहरइ। तत्थ णं कोसंबीए णयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो धूया सयाणीयस्स रण्णो भगिणी उदायणस्स रण्णो पिउच्छा मियावईए देवीए णणंदा वेसालीसावयाणं अरहंताणं पुव्वसिज्जायरी जयंती णाम समणोवासिया होत्था, सुकुमाल० जाव सुरूवा अभिगय० जाव विहरइ।

कठिन शब्दार्थ—सुण्हा—पुत्रवधू, पिउच्छा—पितृश्वसा—भूआ, णत्तुए—नप्तक—दोहिता, भाउज्जा—भोजाई।

भावार्थ—१ उस काल उस समय में कौशाम्बी नामकी नगरी थी (वर्णन)। चन्द्रावतरण उद्यान था (वर्णन)। उस कौशाम्बी नगरी में सहस्रानीक राजा का पौत्र, शतानीक राजा का पुत्र, चेटक राजा का दोहित्र, मृगावती रानी का

आत्मज, जयन्ती श्रमणोपासिका का भतीज, उदायन नामक राजा था, वर्णन। उसी नगरी में सहस्रानीक राजा की पुत्रवधू, शतानीक राजा की पत्नी, चेटक राजा की पुत्री, उदायन राजा की माता और जयन्ती श्रमणोपासिका की भोजाई मृगावती देवी थी। वह सुकुमाल हाथ पांव वाली थी, इत्यादि वर्णन जानना चाहिए यावत् सुरूप थी और श्रमणोपासिका थी। उसी नगरी में जयती नाम की श्रमणोपासिका थी। वह सहस्रानीक राजा की पुत्री, शतानीक राजा की बहिन, उदायन राजा की भूआ, मृगावतीदेवी की ननन्द और श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के साधुओ की प्रथम शय्यातर थी। वह सुकुमाल यावत् सुरूप और जीवाजीव आदि तत्त्वो की जानकार, यावत विचरती थी।

२–तेण कालेण तेण समएण सामी समोसढे, जाव परिसा पज्जुवासइ। तएणं से उदायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ तुट्ठे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, को० एव वयासी–' खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कोसविं णयरिं सब्भितर-बाहिरिय० एव जहा कूणिओ तहेव सव्व जाव पज्जुवासइ। तएण सा जयती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ तुट्ठा जेणेव मियावई देवी तेणेव उवागच्छइ, ते० मियावइ देविं एव वयासी–एव जहा णवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ। तएण सा मियावई देवी जयतीए समणोवासियाए जहा देवाणदा जाव पडिसुणेइ। तएण सा मियावई देवी कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, को० एव वयासी–' खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! लहुकरण-जुत्तजोइय० जाव धम्मिय जाणप्पवर

जुत्तामेव उवट्ठवेह' जाव उवट्ठवेंति, जाव पच्चप्पिणति । तएणं सा मियावई देवी जयतीए समणोवासियाए सद्धिं ण्हाया कयवलिकम्मा जाव सरीरा वहूहि खुज्जाहि जाव अतेउराओ णिग्गच्छइ, अ० जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, ते० जाव दुरूढा । तएण सा मियावई देवी जयतीए समणोवासियाए सद्धि धम्मिय जाणप्पवर दुरूढा समाणी णियग-परियाल० जहा उसभदत्तो जाव धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चो-रूहइ । तएण सा मियावई देवी जयतीए समणोवासियाए सद्धि वहूहि खुज्जाहिं जहा देवाणदा जाव वदइ णमसइ, उदायण राय पुरओ कट्टु ठिइया चेव जाव पज्जुवासइ । तएण समणे भगव महा-वीरे उदायणस्स रण्णो मियावई देवीए जयतीए समणोवासियाए तीसे य महतिमहा० जाव धम्म परिकहेइ, जाव परिसा पडिगया, उदायणे पडिगए, मियावई देवी वि पडिगया ।

भावार्थ-२-उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी वहा पधारे यावत परिषद पर्युपासना करने लगी । श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के आगमन की बात सुन कर उदायन राजा हर्षित और सन्तुष्ट हुआ । कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाकर उसने इस प्रकार कहा-"हे देवानुप्रियो ! कौशाम्बी नगरी को अन्दर और बाहर साफ करवाओ, इत्यादि कोणिक राजा के समान जानना चाहिए, यावत वह पर्युपासना करने लगा । भगवान् के आगमन की बात सुनकर जयन्ती श्रमणोपासिका हर्षित एव सन्तुष्ट हुई और मृगावती देवी के पास आकर बोली-"हे देवानुप्रिये ! श्रमणभगवान् महावीर यहां कौशाम्बी

नगरी के चन्द्रावतरण उद्यान में पधारे है। उनका नाम, गौत्र सुनने से भी महाफल होता है, तो दर्शन और वन्दन का तो कहना ही क्या ? उनका एक भी धर्म वचन सुनने मात्र से महाफल मिलता है, तो तत्त्व-ज्ञान सवधी विपुल अर्थ सीखने के महाफल का तो कहना ही क्या है ? अत अपन चलें और वन्दन-नमस्कार करे। यह कार्य हमारे लिए इस भव, परभव और दोनो भवो के लिए कल्याणप्रद और श्रेयस्कर होगा। जिस प्रकार देवानन्दा ने ऋषभदत्त के वचन को स्वीकार किया था, उसी प्रकार मृगावती ने भी जयन्ती श्राविका के वचन स्वीकार किये। फिर सेवक पुरुषो को बुलाकर वेगवान् यावत् धार्मिक श्रेष्ठ रथ जोड कर लाने की आज्ञा दी। सेवक पुरुषो ने आज्ञा का पालन किया और रथ लाकर उपस्थित किया। मृगावती देवी और जयन्ती श्राविका ने स्नानादि करके शरीर को अलकृत किया। फिर बहुत सी कुब्जा दासियो के साथ अन्त.पुर से बाहर निकली और फिर बाहरी उपस्थानशाला में आई और रथारूढ होकर उद्यान में पहुँची। रथ से नीचे उतर कर देवानन्दा के समान वन्दना नमस्कार कर, उदायन राजा को आगे करके चली और उसके पीछे ठहर कर पर्युपासना करने लगी। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने उदायन राजा, मृगावती देवी, जयन्ती श्रमणोपासिका और उस महा परिषद् को धर्मोपदेश दिया यावत परिषद लौट गई। उदायन राजा और मृगावती भी चले गये।

विवेचन-जयन्ती श्रमणोपासिका साधुओ को स्थान देने मे प्रसिद्ध थी। इसलिए जो साधु प्रथम वार कौशवी मे आते थे, वे उसी से वसति (ठहरने का स्थान) की याचना करते थे। इसलिए वह 'पूवशय्यातर' के नाम से प्रसिद्ध थी।

जयन्ती श्रमणोपासिका के प्रश्न

३-तएण मा जयती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठा समण भगव महा-

जुत्तामेव उवट्ठवेह' जाव उवट्ठवेंति, जाव पच्चप्पिणति । तएणं सा मियावई देवी जयतीए समणोवासियाए सद्धिं ण्हाया कयवलिकम्मा जाव सरीरा वहूहि खुज्जाहि जाव अतेउराओ णिग्गच्छइ, अ० जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, ते० जाव दुरूढा । तएण सा मियावई देवी जयतीए समणोवासियाए सद्धि धम्मिय जाणप्पवर दुरूढा समाणी णियग-परियाल० जहा उसभदत्तो जाव धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चो-रूहइ । तएण सा मियावई देवी जयतीए समणोवासियाए सद्धिं वहूहि खुज्जाहिं जहा देवाणदा जाव वदइ णमसइ, उदायण राय पुरओ कट्टु ठिइया चेव जाव पज्जुवासइ । तएण समणे भगव महा-वीरे उदायणस्स रण्णो मियावई देवीए जयतीए समणोवासियाए तीसे य महतिमहा० जाव धम्म परिकहेइ, जाव परिसा पडिगया, उदायणे पडिगए, मियावई देवी वि पडिगया ।

भावार्थ–२–उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी वहा पधारे यावत परिषद पर्युपासना करने लगी। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के आगमन की बात सुन कर उदायन राजा हर्षित और सन्तुष्ट हुआ। कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाकर उसने इस प्रकार कहा–"हे देवानुप्रियो ! कौशाम्बी नगरी को अन्दर और बाहर साफ करवाओ, इत्यादि कोणिक राजा के समान जानना चाहिए, यावत वह पर्युपासना करने लगा। भगवान् के आगमन की बात सुनकर जयन्ती श्रमणोपासिका हर्षित एव सन्तुष्ट हुई और मृगावती देवी के पास आकर बोली–"हे देवानुप्रिये ! श्रमणभगवान् महावीर यहां कौशाम्बी

नगरी के चन्द्रावतरण उद्यान में पधारे है। उनका नाम, गौत्र सुनने से भी महाफल होता है, तो दर्शन और वन्दन का तो कहना ही क्या ? उनका एक भी धर्म वचन सुनने मात्र से महाफल मिलता है, तो तत्त्व-ज्ञान सबधी विपुल अथ सीखने के महाफल का तो कहना ही क्या है ? अत अपन चलें और वन्दन-नमस्कार करे। यह कार्य हमारे लिए इस भव, परभव और दोनो भवो के लिए कल्याणप्रद और श्रेयस्कर होगा। जिस प्रकार देवानन्दा ने ऋषभदत्त के वचन को स्वीकार किया था, उसी प्रकार मृगावती ने भी जयन्ती श्राविका के वचन स्वीकार किये। फिर सेवक पुरुषो को बुलाकर वेगवान् यावत धार्मिक श्रेष्ठ रथ जोड कर लाने की आज्ञा दी। सेवक पुरुषो ने आज्ञा का पालन किया और रथ लाकर उपस्थित किया। मृगावती देवी और जयन्ती श्राविका ने स्नानादि करके शरीर को अलकृत किया। फिर बहुत सी कुब्जा दासियो के साथ अन्त.पुर से बाहर निकली और फिर बाहरी उपस्थानशाला में आई और रथारूढ होकर उद्यान में पहुँची। रथ से नीचे उतर कर देवानन्दा के समान वन्दना नमस्कार कर, उदायन राजा को आगे करके चली और उसके पीछे ठहर कर पर्युपासना करने लगी। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने उदायन राजा, मृगावती देवी, जयन्ती श्रमणोपासिका और उस महा परिषद् को धर्मोपदेश दिया यावत परिषद लौट गई। उदायन राजा और मृगावती भी चले गये।

विवेचन–जयन्ती श्रमणोपासिका साधुओं को स्थान देने मे प्रसिद्ध थी। इसलिए जो साधु प्रथम बार कोशबी मे आते थे, वे उसी से वसति (ठहरने का स्थान) की याचना करते थ। इसलिए वह 'पूवशय्यातर' के नाम से प्रसिद्ध थी।

जयन्ती श्रमणोपासिका के प्रश्न

३–तएण सा जयती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठा समण भगव महा-

वीर वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी–

प्रश्न–कह णं भते ! जीवा गरुयत्त हव्वमागच्छति ?

उत्तर–जयती ! पाणाइवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण, एव खलु जीवा गरुयत्त हव्वमागच्छति। एव जहा पढमसए जाव वीईवयति ।

४ प्रश्न–भवसिद्धियत्तण भते ! जीवाण किं सभावश्रो, परिणामश्रो ?

४ उत्तर–जयती ! सभावश्रो, णो परिणामश्रो ।

५ प्रश्न–सव्वे वि णं भते ! भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति ?

५ उत्तर–हता, जयती ! सव्वे वि ण भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति ।

६ प्रश्न–जइ ण भते ! सव्वे वि भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति, तम्हा ण भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?

६ उत्तर–णो इणट्ठे समट्ठे ।

प्रश्न–से केण खाइएण अट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ–'सव्वे वि ण भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति, णो चेव ण भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?

उत्तर–जयती ! से जहाणामए सव्वागाससेढी सीया, श्रणाईया श्रणवदग्गा परित्ता परिवुडा, सा ण परमाणुपोग्गलमेत्तेहि

खडेहिं समए समए अवहीरमाणी अवहीरमाणी अणंताहिं ओस-प्पिणी-अवसप्पिणीहिं अवहीरंति, णो चेव ण अवहिया सिया, से तेणट्ठेणं जयंती ! एव वुच्चइ-'सव्वे वि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति, णो चेव ण भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ।

कठिन शब्दार्थ-अणवदग्गा-अनत, परित्ता-परिमित, परिवुडा-परिवत-घिरी हुई ।

भावार्थ ३ प्रश्न-जयन्ती श्रमणोपासिका श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से धर्मोपदेश सुनकर एव अवधारण करके हर्षित और सन्तुष्ट हुई और भगवान् को वन्दना-नमस्कार कर, इस प्रकार पूछा-"हे भगवन् ! जीव किस कारण से गुरुत्व-भारीपन को प्राप्त होते है ?"

३ उत्तर-"हे जयन्ती ! जीव प्राणातिपात आदि अठारह पापस्थानो का सेवन करके गुरुत्व को प्राप्त होते है और इनसे निवृत्त होकर जीव हलका होता है । इस प्रकार प्रथम शतक के नौवे उद्देशक में कहे अनुसार जानना चाहिए यावत् वे ससार समुद्र से पार हो जाते है ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! जीवो का भवसिद्धिकपन स्वाभाविक है या पारि-णामिक ?

४ उत्तर-हे जयन्ती ! स्वाभाविक है, पारिणामिक नहीं ।

५ प्रश्न-हे भगवन ! क्या सभी भवसिद्धिक जीव सिद्ध होगे ?

५ उत्तर-हाँ, जयन्ती ! सभी भवसिद्धिक जीव सिद्ध होगे ।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि सभी भवसिद्धिक जीव सिद्ध हो जायेंगे, तो लोक भवसिद्धिक जीवो से रहित हो जायगा ?

६ उत्तर-हे जयन्ती ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

प्रश्न-हे भगवन् ! क्या कारण है कि सभी भवसिद्धिक जीवो के सिद्ध होने पर भी लोक, भवसिद्धिक जीवो से रहित नहीं होगा ?

उत्तर-हे जयन्ती ! जिस प्रकार सर्वाकाश की श्रेणी जो अनादि अनन्त

है और एक प्रदेशी होने से दोनों ओर से परिमित तथा अन्य श्रेणियों द्वारा परिवृत्त है, उसमें से प्रत्येक समय में एक एक परमाणु पुद्गल जितना खण्ड निकालते हुए, अनन्त उत्सर्पिणी और अनन्त अवसर्पिणी तक निकाला जाय, तो भी वह श्रेणी खाली नहीं होती। इसी प्रकार हे जयन्ती ! ऐसा कहा जाता है कि सब भवसिद्धिक जीव सिद्ध होंगे, परन्तु लोक भवसिद्धिक जीवों से रहित नहीं होगा।

७ प्रश्न-सुत्तत्त भंते ! साहू, जागरियत्त साहू ?

७ उत्तर-जयंती ! अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्त साहू अत्थेगइयाण जीवाण जागरियत्त साहू।

प्रश्न-से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ 'अत्थेगइयाणं जाव साहू ?

उत्तर-जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिट्ठा अहम्मक्खाई अहम्मपलोई अहम्मपलज्जमाणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति एएसि णं जीवाणं सुत्तत्त साहू। एए णं जीवा सुत्ता समाणा णो बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परियावणयाए वट्टंति, एए णं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा णो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति एएसिं जीवाणं सुत्तत्त साहू। जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया जाव धम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति एएसिं णं जीवाणं जागरियत्त साहू। एए णं जीवा जागरा समाणा बहूणं पाणाणं जाव

सत्ताणं अदुक्खणयाए, जाव अपरियावणयाए वट्टंति, तेण जीवा जागरमाणा अप्पाणं वा पर वा तदुभय वा वहूहि धम्मियाहिं सजोयणाहि सजोएत्तारो भवति । एए णं जीवा जागरमाणा धम्म-जागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवति एएसि ण जीवाण जाग-रियत्त साहू, से तेणट्ठेण जयती ! एव वुच्चइ–'अत्थेगइयाण जीवाणं सुत्तत्त साहू, अत्थेगइयाणं जीवाण जागरियत्त साहू' ।

भावार्थ–७ प्रश्न–हे भगवन् ! जीवो का सुप्त रहना अच्छा है या जागृत रहना ?

७ उत्तर–हे जयन्ती ! कुछ जीवो का सुप्त रहना अच्छा है और कुछ जीवो का जाग्रत रहना अच्छा है ।

प्रश्न–हे भगवन ! इसका क्या कारण है ?

उत्तर–हे जयन्ती ! जो ये अधार्मिक, अधम का अनुसरण करने वाले, अधर्मप्रिय, अधम का कथन करनेवाले, अधम का अवलोकन करनेवाले, अधर्म में आसक्त, अधर्माचरण करनेवाले और अधम से ही अपनी आजीविका करने वाले है, उन जीवो का सुप्त रहना अच्छा है । क्योकि वे जीव सुप्त हो, तो अनेक प्राण, भूत, जीव और सत्त्वो के दु ख, शोक और परिताप आदि के कारण नहीं वनते तथा अपने को, दूसरो को और स्वपर को अनेक अधार्मिक सयो-जनाओ (प्रपञ्चो) में नही फँसाते । अत ऐसे जीवो का सुप्त रहना अच्छा है ।

जो जीव धार्मिक, धर्मानुसारी, धर्मप्रिय, धर्म का कथन करनेवाले, धर्म का अवलोकन करनेवाले, धर्मासक्त, धर्माचरण करनेवाले और धर्मपूर्वक आजी-विका चलानेवाले है, उन जीवो का जाग्रत रहना अच्छा है । क्योकि वे जाग्रत हो, तो अनेक प्राण, भूत, जीव और सत्त्वो के दु ख, शोक और परिताप आदि के कारण नहीं वनते तथा अपने आप को, दूसरो को और स्वपर को

अनेक धार्मिक सयोजनाओ में लगाते रहते हैं, तथा धार्मिक जागरिका द्वारा जाग्रत रहते हैं, इसलिए इन जीवो का जाग्रत रहना अच्छा है। इसलिए हे जयन्ती ! ऐसा कहा जाता है कि कुछ जीवो का सुप्त रहना अच्छा है और कुछ जीवो का जाग्रत रहना अच्छा है।

विवेचन–जयन्ती श्रमणोपासिका ने भगवान से प्रश्न पूछे हैं। भवसिद्धिक जीवो का भवसिद्धिकपना स्वाभाविक है। जैसे पुदगल मे मूर्त्तत्व धर्म स्वाभाविक है, वैसे ही भवसिद्धिक जीवो का भवसिद्धिकपना स्वाभाविक है। जो मुक्ति के योग्य हैं अर्थात जिन मे मुक्ति जाने की योग्यता है, वे भवसिद्धिक कहलाते हैं। सभी भवसिद्धिक जीव सिद्धि प्राप्त करेंगे, अन्यथा उनका भवसिद्धिकपना ही घटित नही हो सकता।

शका–यदि सभी भवसिद्धिक जीव सिद्ध हो जावेंगे, तो क्या लोक, भवसिद्धिक जीवो से शून्य नही हो जायगा ?

समाधान–नही, ऐसा नही होगा। जैसेकि–जितना भी भविष्यत्काल है वह सब वर्तमान होगा। तो क्या कभी ऐसा भी समय आयेगा कि ससार, भविष्यत्काल से शून्य हो जायेगा ? ऐसा कभी नही होगा। इसी दृष्टान्त के अनुसार यह समझना चाहिए कि लोक भवसिद्धिक जीवो से कदापि शून्य नही होगा।

इस प्रश्न का दूसरा आशय ऐसा भी निकलता है कि जितने भी जीव सिद्ध होंगे, वे सभी भवसिद्धिक ही होगे, एक भी अभवसिद्धिक जीव सिद्ध नही होगा–ऐसा मानने पर भी प्रश्न वही उपस्थित रहता है कि क्रमश सभी भवसिद्धिक जीवो के सिद्ध हो जाने पर, लोक की भव्यो से शून्यता कैसे नही होगी ? जयन्ती श्रमणोपासिका की इस शका का समाधान करने के लिये आकाश श्रेणी का दृष्टात देकर यह बतलाया गया है कि जसे समस्त आकाश की श्रेणी अनादि अनन्त है उसमे से एक एक परमाणु जितना खण्ड प्रति समय निकाला जाय, तो इस प्रकार निकालते निकालते अनन्त उत्सर्पिणियाँ और अनन्त अवसर्पिणिया बीत जाने पर भी वह आकाश श्रेणी खाली नही होती इसी प्रकार भवसिद्धिक जीवो के मोक्ष जाते रहने पर भी यह लोक, भवसिद्धिक जीवो से खाली नही होगा। इसके लिये दूसरा दृष्टान्त यह भी दिया गया है कि जैसे–दो प्रकार के पत्थर है। एक वे जिनमे प्रतिमा बनने की योग्यता है। दूसरे वे टोल पत्थरादि जिनमे प्रतिमा बनने की योग्यता नही हैं। जिन पत्थरो मे प्रतिमा बनने की योग्यता है वे सभी पत्थर प्रतिमा नही बन जाते, किंतु जिन पत्थरो को तथाप्रकार के कलाकार आदि का सयोग मिल जाता है वे प्रतिमापन की

सम्प्राप्ति कर लेते हैं। जिन पत्थरो को प्रतिमापन की सम्प्राप्ति नही होती, इतने मात्र से उनमे प्रतिमापन की अयोग्यता नही होती, किन्तु तथाविध सयोग न मिलने से वे प्रतिमापन की सम्प्राप्ति नही कर सकते। यही बात भवसिद्धिक जीवो के लिये भी समझनी चाहिये *।

जाग्रत जीव ही सिद्धि को प्राप्त होते हैं, इसलिये इसके आगे सुप्त जाग्रत विषयक प्रश्न किया गया है। अधर्मी जीव सोते हुए अच्छे हैं और धर्मी पुरुष जागते हुए अच्छे हैं। क्योकि ये दोनो इन अवस्थाओ मे प्राण, भूत, जीव और सत्त्वो को दुःख, शोक और परिताप नही पहुचाते ।

८ प्रश्न-बलियत्त भंते ! साहू, दुब्बलियत्त साहू ?

८ उत्तर-जयती ! अत्थेगइयाण जीवाण बलियत्त साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं दुब्बलियत्त साहू ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ-जाव साहू ?

उत्तर-जयती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति एएसि ण जीवाणं दुब्बलियत्त साहू। एए ण जीवा एव जहा सुत्तस्स तहा दुब्बलियत्तस्स वत्तव्वया भाणियव्वा। बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्व, जाव सजोएत्तारो भवंति, एएसि ण जीवाणं बलियत्त साहू, से तेणट्ठेण जयती ! एव वुच्चइ-त चेव जाव साहू ।

९ प्रश्न-दक्खत्त भंते ! साहू, आलसियत्त साहू ?

* कुछ पूर्वाचार्य यहा 'जाति भव्य' की कल्पना करते है। वे मानते है कि जीवों का एक वर्ग ऐसा है जो जाति से ही भवसिद्धिक है, वे कभी सिद्ध नहीं होंगे। किन्तु मूलपाठ में सभी भव्य जीवों के सिद्ध होने का उल्लेख है। अतएव यह जाति भव्य भेद समझ में नहीं आता। दुर्भव्य हो सकते है। जाति भव्य-जो कभी सिद्ध नहीं हो-मानने पर तो वे भी अभव्य के समान होंगे और सभी भव्यों के मुक्त होने के बाद मुक्तिगमन रुकने का प्रश्न उत्पन्न हो जायगा। अतएव सूत्रोक्त समाधान ही ठीक लगता है-डोशी।

९ उत्तर–जयती ! अत्थेगइयाणं जीवाण दक्खत्त साहू, अत्थेगइयाण जीवाण आलसियत्त साहू ।

प्रश्न–से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ–त चेव जाव साहू ?

उत्तर–जयती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरति, एएसि णं जीवाण आलसियत्त साहू । एए ण जीवा आलमा समाणा णो बहूण,जहा सुत्ता तहा आलमा भाणियव्वा जहा जागरा तहा दक्खा भाणियव्वा, जाव सजोएत्तारो भवति । एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूहि आयरियवेयावच्चेहिं, जाव उवज्झाय०, थेर०, तवस्सि०, गिलाण०, सेह०, कुल०, गण०, सघ०,साहम्मियवेयावच्चेहि अत्ताणं सजोएत्तारो भवति, एएसि ण जीवाणं दक्खत्त साहू, से तेणट्ठेण त चेव जाव साहू ।

१० प्रश्न–सोइदियवसट्टे ण भते ! जीवे किं बधइ ?

१० उत्तर–एव जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ । एव चक्खिदियवसट्टे वि, एव जाव फासिंदियवसट्टे वि, जाव अणुपरियट्टइ ।

११–तएण सा जयती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठा सेस जहा देवाणदा तहेव पव्वइया, जाव सव्वदुक्खप्पहीणा ।

॥ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

॥ बीओ उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ–दक्खत्त–दक्षता–उद्यमीपन, आलसियत्त–आलसीपन ।

भावार्थ–८ प्रश्न–हे भगवन् ! जीवो की सबलता अच्छी है या दुर्बलता ?

८ उत्तर–हे जयन्ती ! कुछ जीवो की सबलता अच्छी है और कुछ जीवो की दुर्बलता ।

प्रश्न–हे भगवन् ! क्या कारण है कि कुछ जीवो की सबलता अच्छी है और कुछ जीवो की दुर्बलता ?

उत्तर–हे जयन्ती ! जो जीव अधार्मिक यावत् अधर्म द्वारा ही आजीविका करते है, उनकी दुबलता अच्छी है । उन जीवो के दुर्बल होने से वे किसी जीव को दु ख आदि नहीं पहुँचा सकते, इत्यादि 'सुप्त' के समान दुर्बलता का भी कथन करना चाहिए और जाग्रत के समान सबलता का कथन करना चाहिए । इसलिए धार्मिक जीवो की सबलता अच्छी है । इस कारण हे जयन्ती ! ऐसा कहा जाता है कि कुछ जीवो की सबलता अच्छी है और कुछ जीवो की दुर्बलता ।

९ प्रश्न–हे भगवन ! जीवो की दक्षता (उद्यमीपन) अच्छी है या आलसीपन ?

९ उत्तर–हे जयन्ती ! कुछ जीवो की दक्षता अच्छी है और कुछ जीवो का आलसीपन ।

प्रश्न–हे भगवन ! इसका क्या कारण है ?

उत्तर–हे जयन्ती ! जो जीव अधार्मिक यावत् अधर्म द्वारा आजीविका करते है, उन जीवो का आलसीपन अच्छा है । यदि वे आलसी होगे, तो प्राण, भूत, जीव और सत्त्वो को दु ख, शोक, परितापादि उत्पन्न नही करेगे, इत्यादि सब सुप्त के समान कहना चाहिए । दक्षता (उद्यमीपन) का कथन जाग्रत के समान कहना चाहिए, यावत वे स्व पर और उभय को धम के साथ जोडनेवाले होते है । वे जीव दक्ष हो, तो आचाय, उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी, ग्लान, शैक्ष (नवदीक्षित) कुल, गण, सघ और साधर्मिक की वैयावृत्य

(सेवा)करने वाले होते हैं। इसलिए इन जीवो की दक्षता अच्छी है। इस कारण हे जयन्ती ! ऐसा कहा जाता है कि कुछ जीवो की दक्षता और कुछ जीवो का आलसीपन अच्छा है।

१० प्रश्न–हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय के वश आर्त्त (पीडित) बना हुआ जीव, क्या बांधता है, इत्यादि प्रश्न।

१० उत्तर–हे जयन्ती ! जिस प्रकार क्रोध के वश आर्त्त बने हुए जीव के विषय में कहा गया है, उसी प्रकार यहाँ भी जानना चाहिए, यावत् वह ससार में परिभ्रमण करता है। इसी प्रकार चक्षुइन्द्रिय यावत् स्पर्शनेन्द्रिय के वश आर्त्त बने हुए जीव के विषय में भी कहना चाहिए, यावत् ससार में परिभ्रमण करता है।

११–इसके पश्चात् जयन्ती श्रमणोपासिका श्रमण भगवान् महावीर स्वामी से उपरोक्त अर्थों को सुन कर और हृदय में धारण करके हर्षित एव सन्तुष्ट हुई, इत्यादि सब वणन नौवे शतक के तेतीसवे उद्देशक में कथित देवा नन्दा के वणन के समान कहना चाहिए, यावत जयन्ती ने प्रव्रज्या ग्रहण की और सभी दु खो से मुक्त हुई।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है–ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ बारहवें शतक का द्वितीय उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १२ उद्देशक ३

सात पृथ्वियाँ

१ प्रश्न–रायगिहे जाव एव वयासी–कइ ण भते ! पुढवीओ

पण्णत्ताओ ?

१ उत्तर-गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा-पढमा, दोच्चा, जाव सत्तमा ।

२ प्रश्न-पढमा ण भते ! पुढवी किणामा किंगोत्ता पण्णत्ता ?

२ उत्तर-गोयमा ! घम्मा णामेण, रयणप्पभा गोत्तेण, एव जहा जीवाभिगमे पढमो णेरइयउद्देसओ सो चेव णिरवसेसो भाणियव्वो, जाव अप्पाबहुग ति ।

❀ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ❀

॥ तईओ उद्देसो समत्तो ॥

भावार्थ-१ प्रश्न-राजगृह नगर में यावत् गौतम स्वामी ने इस प्रकार पूछा-"हे भगवन् ! पृथ्वियाँ कितनी कही गई है ?"

१ उत्तर-हे गौतम ! पृथ्विया सात कही गई है। यथा-प्रथमा, द्वितीया यावत् सप्तमी ।

२ प्रश्न-हे भगवन ! प्रथम पृथ्वी का क्या नाम और गौत्र है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! प्रथम पृथ्वी का नाम 'घम्मा' है और गोत्र रत्न-प्रभा है। इस प्रकार जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति के प्रथम नैरयिक उद्देशक में कहे अनुसार यावत अल्पबहुत्व तक जानना चाहिए ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकर है । हे भगवन ! यह इसी प्रकार ह-ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते ह ।

विवेचन-अपनी इच्छानुसार किसी पदाथ का जा कुछ नाम रखना 'नाम' कहलाता है और उसके अथ के अनुकूल नाम रखना 'गोत्र' कहलाता है । तात्पय यह है कि साथक और निरथक जो कुछ नाम रखा जाता है, उसे 'नाम' कहते हैं । साथक एव तदनु-

कूल गुणो के अनुसार जो नाम रखा जाता है, उसे गोत्र कहते हैं। सात नरकों के नाम क्रमश इस प्रकार है–घम्मा, वमा, सीला, अजना, रिट्ठा, मघा और माघवई। इन सातो के गोत्र इस प्रकार है–रत्नप्रभा, शकराप्रभा, वालुकाप्रभा, पकप्रभा, धूमप्रभा, तम प्रभा और तमस्तम प्रभा (महातम प्रभा) इनका विस्तत वणन जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति मे है।

॥ बारहवें शतक का तीसरा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १२ उद्देशक ४

परमाणु और स्कन्ध के विभाग

१ प्रश्न–रायगिहे जाव एव वयासी–दो भते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवइ ?

१ उत्तर–गोयमा ! दुप्पएसिए खधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ, एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ।

२ प्रश्न–तिण्णि भते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति, साहण्णित्ता किं भवइ ?

२ उत्तर–गोयमा ! तिपएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ, तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणु-पोग्गला भवति।

३ प्रश्न-चत्तारि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, जाव पुच्छा ।

३ उत्तर-गोयमा ! चउपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु-पोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा दो दुपएसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणु-पोग्गला भवंति ।

४ प्रश्न-पंच भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा ।

४ उत्तर-गोयमा ! पंचपएसिए खंधे भवइ । से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि पंचहा वि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणु-पोग्गला भवंति ।

कठिन शब्दार्थ-साहण्णंति-एक रूप से इकट्ठे होते हैं, भिज्जमाणे-भेदन किया

जाने पर ।

भावार्थ-१ प्रश्न-राजगृह नगर में यावत् गौतम स्वामी ने इस प्रकार पूछा-हे भगवन् ! दो परमाणु संयुक्त रूप में जब इकट्ठे होते है, तब उनका क्या होता है ?

१ उत्तर-हे गौतम ! उनका द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है। यदि उसके विभाग किये जाय तो उसके दो विभाग होते हैं-एक ओर एक परमाणु पुदगल रहता है और दूसरी ओर भी एक परमाणु पुद्गल होता है ।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! जब तीन परमाणु पुदगल सयुक्त रूप में इकटठे होते है, तब उनका क्या होता है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! उनका त्रिप्रदेशी स्कन्ध बनता है । यदि उसके विभाग किये जाय, तो दो या तीन विभाग होते हैं । यदि दो विभाग हो तो एक ओर एक परमाणु पुद्गल और दूसरी ओर द्विप्रदेशी स्कन्ध रहता है । यदि तीन विभाग हो, तो तीन परमाणु पुद्गल पृथक् पृथक् रहते ह ।

३ प्रश्न-हे भगवन ! चार परमाणु पुदगल जब इकट्ठे होते है, तब उनका क्या होता है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है । यदि उसके विभाग किये जाय, तो दो, तीन या चार विभाग होते है । यदि दो विभाग हो, तो एक ओर एक परमाणु पुद्गल और दूसरी ओर त्रिप्रदेशी स्कन्ध रहता है । अथवा एक ओर द्विप्रदेशी स्कन्ध और दूसरी ओर भी द्विदेशी स्कन्ध रहता है । यदि तीन विभाग हो, तो एक ओर भिन्न भिन्न दो परमाणु पुद्गल और दूसरी ओर द्विप्रदेशी स्कन्ध रहता है । चार विभाग होने पर पृथक पृथक् चार परमाणु पुद-गल रहते हैं ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! पांच परमाणु पुद्गल जब सयुवत रूप में इकटठे होते है, तब क्या होता है ?

४ उत्तर-हे गौतम ! पच प्रदेशी स्कन्ध होता है । यदि उसके विभाग किये जाय, तो दो, तीन, चार और पाच विभाग होते हैं । दो विभाग होने पर

एक ओर एक परमाणु पुद्गल और दूसरी ओर चतुष्प्रदेशी स्कन्ध रहता है। अथवा एक ओर द्विप्रदेशी स्कन्ध और दूसरी ओर त्रिप्रदेशी स्कन्ध रहता है। यदि उसके तीन विभाग किये जाय, तो एक ओर पृथक्-पृथक दो परमाणु पुद्गल और दूसरी ओर त्रिप्रदेशी स्कन्ध रहता है—१-१-३। अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल और दूसरी ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध रहते हैं—१-२-२। यदि उसके चार विभाग किये जाय तो एक ओर पृथक् पृथक् तीन परमाणु पुद्गल और दूसरी ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध रहता है—१-१-१-२। यदि उसके पाच विभाग किये जाय तो पृथक-पृथक् पाच परमाणु होते है। यथा—१-१-१-१-१।

विवेचन—द्विप्रदेशी स्कन्ध मे एक विकल्प (भग) है। यथा—१ १। त्रिप्रदेशी के दो विकल्प हैं, १-२। १-१-१। चतुष्प्रदेशी स्कन्ध के चार विकल्प हैं यथा—१ ३। २-२। १ १-२। १-१ १ १। पच प्रदेशी स्कन्ध के छह विकल्प होते हैं, यथा—१-४। २ ३। १ १ ३। १-२ २। १-१-१-२। १-१-१-१-१।

५ प्रश्न—छब्भते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा।

५ उत्तर—गोयमा ! छप्पएसिए खधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि जाव छव्विहा वि कज्जइ। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दुप्पएसिए खधे, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ, अहवा दो तिपएसिया खधा भवति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा तिण्णि दुपएसिया खधा भवति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि

परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खधा भवति। पञ्चहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ। छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवति।

कठिन शब्दार्थ-एगयओ-एक ओर।

भावार्थ- ५ प्रश्न-हे भगवन्! छह परमाणु पुदगल जब इकटठे होते है, तो क्या बनता है?

५ उत्तर-हे गौतम! षट् प्रदेशी स्कन्ध बनता है। यदि उसका विभाग किया जाय, तो दो, तीन, चार, पाँच या छह विभाग होते है। जब उसके दो विभाग होते है, तब एक ओर एक परमाणु पुदगल और एक ओर एक पञ्च प्रदेशी स्कन्ध रहता है, अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध रहता ह, अथवा दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते है। जब उसके तीन विभाग होते है, तब एक ओर पृथक पृथक् दो परमाणु पुद्गल और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुदगल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा तीन द्विप्रदेशी स्कन्ध होते है। जब चार विभाग होते है, तब एक ओर पृथक् पृथक तीन परमाणु पुदगल और एक ओर त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक्-पृथक दो परमाणु पुदगल और एक ओर द्विप्रदेशी दो स्कन्ध होते है। जब उसके पाँच विभाग होते है, तो एक ओर पृथक् पृथक चार परमाणुपुदगल और एक ओर द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है। जब उसके छह विभाग होते ह, तब उसके पृथक् पृथक छह परमाणुपुदगल होते है।

६ प्रश्न-सत्त भंते! परमाणुपोग्गला पुच्छा।

६ उत्तर-गोयमा! सत्तपएसिए खधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा

वि जाव सत्तहा वि कज्जइ । दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ तिप्पएसिए खंधे एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणु-पोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणु-पोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति । छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ । सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवंति ।

भावार्थ—६ प्रश्न—हे भगवन् ! सात परमाणु पुद्गल जब इकट्ठे होते हैं, तब क्या बनता है ?

६ उत्तर–हे गौतम ! सप्त प्रदेशी स्कन्ध बनता है। यदि उसके विभाग किये जायें, तो दो तीन यावत् सात विभाग होते हैं। जब दो विभाग किये जायें तो एक ओर एक परमाणु पुदगल और एक ओर छह प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर दो प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर पञ्चप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है। जब उसके तीन विभाग किये जायें तो एक ओर पृथक् पृथक् दो परमाणु पुदगल और एक ओर पञ्चप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुदगल, एक ओर दो प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल और एक ओर त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, जब उसके चार विभाग किये जायें, तब एक ओर पृथक्-पृथक् तीन परमाणु पुद्गल और एक ओर चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक् पृथक् दो परमाणु-पुद्गल, एक ओर द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुदगल और एक ओर तीन द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं। उसके पाँच विभाग किये जायें तब एक ओर पृथक् पृथक चार परमाणुपुद-गल और एक ओर त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता ह, अथवा एक ओर पृथक् पृथक् तीन परमाणु पुदगल और एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं। जब उसके छह विभाग किये जायें तो एक ओर पृथक्-पृथक पाच परमाणु पुदगल और एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है। यदि उसके सात विभाग किये जाय तो पृथक्-पृथक सात परमाणु पुदगल होते हैं।

विवेचन–छह प्रदेशी स्कन्ध के दस विकल्प होते हैं। यथा– १–५ । २–४ । ३–३ । १–१–४ । १–२–३ । २–२–२ । १–१–१–३ । १–१–२–२ । १–१–१–१–२ । १–१–१–१–१–१ ।

सात प्रदेशी स्कन्ध के चौदह विकल्प होते हैं। यथा– १–६ । २–५ । ३–४ । १–१–५ । १–२–४ । १–३–३ । २–२–३ । १–१–१–४ । १–१–२–३ । १–२–२–२ । १–१–१–१–३ । १–१–१–२–२ । १–१–१–१–१–२ । १–१–१–१–१–१–१ ।

७ प्रश्न—अट्ठ भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा ।

७ उत्तर—गोयमा ! अट्ठपएसिए खंधे भवइ, जाव दुहा कज्ज-माणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा दो चउप्पएसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंच-पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एग-यओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दोण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ

चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खधा भवति। छहा कज्जमाणे एगयओ पच परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा भवति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ। अट्ठहा कज्ज-माणे अट्ठ परमाणुपोग्गला भवति।

भावार्थ–७ प्रश्न–हे भगवन् ! आठ परमाणु इकटठे होने पर क्या बनता है ?

७ उत्तर–हे गौतम ! अष्ट प्रदेशी स्कन्ध बनता है। यदि उसके विभाग किये जायँ तो दो, तीन, यावत आठ विभाग होते हैं। जब उसके दो विभाग किये जायँ तो एक ओर एक परमाणु पुद्गल और एक ओर सप्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक छह प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक पञ्चप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा दो चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होते हैं। जब उसके तीन विभाग किये जायँ, तो एक ओर पृथक-पृथक दो परमाणु पुदगल और एक ओर छह प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुदगल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक पञ्चप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुदगल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध, और एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते हैं। जब उसके चार विभाग किये जाते हैं, तब एक ओर पृथक्-पृथक तीन परमाणु पुद्गल और एक ओर एक पञ्च-

प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक्-पृथक् दो परमाणु पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक्-पृथक् दो परमाणु-पुद्गल और एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते है , अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर द्वि प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा चार द्विप्रदेशी स्कन्ध होते है। जब उसके पाच विभाग किये जायँ, तो एक ओर पृथक्-पृथक चार परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक्-पृथक तीन परमाणु पुद्गल और एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध तथा एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक्-पृथक् दो परमाणु पुद्गल और एक ओर तीन द्विप्रदेशी स्कन्ध होते ह । यदि उसके छह विभाग किये जायँ, तो एक ओर पृथक् पृथक पाच परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक् पृथक चार परमाणु-पुद्गल और एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध होते है । यदि उसके सात विभाग किये जायँ, तो एक ओर पृथक-पृथक् छह परमाणु पुद्गल और एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है । यदि उसके आठ विभाग किये जायँ, तो पृथक् पृथक् आठ परमाणु-पुद्गल होते है ।

विवेचन-अप्ट प्रदशी स्कन्ध के इक्कीस विकल्प होते हैं। यथा-१-७ । २-६ । ३-५ । ४-४ । १-१-६ । १-२-५ । १-३-४ । २-२-४ । २-३-३ । १-१-१-५ । १-१-२-४ । १-१-३-३ । १-२-२-३ । २-२-२-२ । १-१-१-१-४ । १-१-१-२-३ । १-१-२-२-२ । १-१-१-१-१-३ । १-१-१-१-२-२ । १-१-१-१-१-१-२ । १-१-१-१-१-१-१-१ ।

८ प्रश्न-णव भते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा ।

८ उत्तर-गोयमा ! जाव णवविहा कज्जति, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ अट्ठपएसिए खधे भवइ, एव

एक्केक्क सचारतेहिं जाव अहवा एगयओ चउप्पएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो चउप्पएसिया खधा भवति· अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ, अहवा तिण्णि तिपएसिया खधा भवति।

भावार्थ—८ प्रश्न—हे भगवन्! नौ परमाणु पुदगलो के मिलने पर क्या बनता है?

उत्तर—हे गौतम! नौ प्रदेशी स्कन्ध बनता है। यदि उसके विभाग किये जायें, तो दो तीन यावत् नौ विभाग होते है। जब दो विभाग किये जायें, तब एक ओर एक परमाणु पुदगल और एक ओर एक अष्टप्रदेशी स्कन्ध होता है। इस प्रकार एक-एक का सचार (वृद्धि) करना चाहिए। यावत् अथवा एक ओर एक चतु प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक पचप्रदेशी स्कन्ध होता है। जब उसके तीन विभाग किये जायें, तब एक ओर पृथक पृथक् दो परमाणु पुद्गल और एक ओर एक सप्तप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक छह प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक पचप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल और एक ओर दो चतु प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतु प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा तीन त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते है।

चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ तिण्णि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ ।

भावार्थ–जब उसके चार विभाग किये जायँ, तब एक ओर पृथक पृथक् तीन परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक छह प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक पृथक् दो परमाणुपुदगल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक पञ्चप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक-पृथक दो परमाणु-पुदगल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतु प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुदगल, एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतु प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुदगल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते हैं, अथवा एक ओर तीन द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है ।

पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला,

एगयओ दुपएसिए खधे; एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवंति, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खधा भवंति ।

भावार्थ–जब नौ प्रदेशी स्कन्ध के पांच विभाग किये जायें, तब एक ओर पृथक् पृथक् चार परमाणु पुद्गल और एक ओर एक पञ्चप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक पृथक् तीन परमाणु पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतु प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक् पृथक् तीन परमाणु-पुद्गल और एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा एक ओर पृथक पृथक् दो परमाणु पुद्गल, एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु-पुदगल और एक ओर चार द्विप्रदेशी स्कन्ध होते है ।

छहा कज्जमाणे एगयओ पच परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दुप्पएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुप्पएसिया खधा भवंति ।

भावार्थ–जब नौप्रदेशी स्कन्ध के छह विभाग किये जायें तब एक ओर पृथक पृथक पाँच परमाणु पुदगल और एक ओर एक चतु प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक-पृथक चार परमाणु पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध, और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक-

पृथक तीन परमाणु-पुद्गल और एक ओर तीन द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति।

भावार्थ—नौ प्रदेशी स्कन्ध के सात विभाग किये जायँ तब एक ओर पृथक पृथक छह परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक-पृथक् पाच परमाणु पुद्गल और एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। णवहा कज्जमाणे णव परमाणुपोग्गला भवंति।

जब उसके आठ विभाग किये जायँ तब एक ओर पृथक् पृथक् सात परमाणु पुद्गल और एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध होता है।

जब उसके नौ विभाग किये जायँ, तब पृथक् पृथक् नौ परमाणु पुदगल होते हैं।

विवेचन—नौप्रदेशी स्कन्ध के २८ विकल्प होते हैं। यथा—१–८। २–७। ३–६। ४–५। १–१–७। १–२–६। १–३–५। १–४–४। २–३–४। ३–३–३। १–१–१–६। १–१–२–५। १–१–३–४। १–२–२–४। १–२–३–३। २–२–२–३। १–१–१–१–५। १–१–१–२–४। १–१–१–३–३। १–१–२–२–३। १–२–२–२–२। १–१–१–१–१–४। १–१–१–१–२–३। १–१–१–२–२–२। १–१–१–१–१–१–३। १–१–१–१–१–२–२। १–१–१–१–१–१–१–२। १–१–१–१–१–१–१–१–१।

९ प्रश्न—दस भंते ! परमाणुपोग्गला—

९ उत्तर—जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ णवपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ, एवं एक्केक्कं संचारेयव्वं ति, जाव अहवा दो पंच पएसिया खंधा भवंति ।

भावार्थ—९ प्रश्न—हे भगवन् ! दस परमाणु मिलकर क्या बनता है ?

९ उत्तर—हे गौतम ! उनका एक दस प्रदेशी स्कन्ध बनता है। यदि उसके विभाग किये जायें, तो दो, तीन यावत् दस विभाग होते हैं। जब उसके दो विभाग किये जायें, तो एक ओर एक परमाणु-पुदगल और एक ओर एक नौ प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक अष्ट प्रदेशी स्कन्ध होता है। इस प्रकार एक-एक का संचार करना चाहिये। यावत् दो पञ्चप्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दो तिपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ ।

भावार्थ–जब उसके तीन विभाग किये जाते है, तब एक ओर पृथक्-पृथक् दो परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक अष्ट प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक सप्तप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक छह प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुदगल, एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक पञ्च प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है ।

चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खधे एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि तिपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ तिण्णि दुपएसिया खधा, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि तिपएसिया खधा भवति । अहवा एगयओ दो

दुपएसिया खधा, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति ।

भावार्थ--जब उसके चार विभाग किये जाते है तो एक ओर पृथक पृथक तीन परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक सप्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक् पृथक् दो परमाणु पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक छह प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक् पृथक दो परमाणु-पुदगल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक पचप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक-पृथक दो परमाणु पुद्गल, और एक ओर दो चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होते हं, अथवा एक ओर एक परमाणु-पुदगल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतु प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल और एक ओर तीन त्रि प्रदेशी स्कन्ध होते हं, अथवा एक ओर तीन द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल और एक ओर तीन द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं, अथवा एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते है ।

पचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे,

एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा पच दुपएसिया खधा भवति ।

भावार्थ–जब उसके पाच विभाग किये जाय, तब एक ओर पृथक् पृथक् चार परमाणु पुदगल और एक ओर एक छह प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक् पृथक् तीन परमाणु पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक पञ्च प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर तीन परमाणु पुद्गल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक् पृथक् दो परमाणु पुदगल, एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर दो परमाणु पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुदगल, एक ओर तीन द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा पाच द्विप्रदेशी स्कन्ध होते है ।

छहा कज्जमाणे एगयओ पच परमाणुपोग्गला, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खधे, भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खधा भवति ।

भावार्थ-जब उसके छह विभाग किये जाते हैं, तो एक ओर पृथक पृथक पाँच परमाण पुदगल और एक ओर एक पञ्च प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक् पृथक चार परमाणु पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एकओर पृथक् पृथक चार परमाणु पुद्गल और एक ओर दो त्रिप्रदेशी स्कन्ध होते हैं, अथवा एक ओर पृथक पृथक तीन परमाणु पुद्गल, एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक् पृथक् दो परमाणु पुदगल, और एक ओर चार द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ पच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खधा भवति।

भावार्थ-जब उसके सात विभाग किये जाते हैं, तो एक ओर पृथक-पृथक छह परमाणु पुदगल, और एक ओर एक चतुष्प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक्-पृथक पाँच परमाणु पुद्गल और एक ओर द्विप्रदेशी स्कन्ध तथा एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक् पृथक चार परमाणु पुद्गल और एक ओर तीन द्विप्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा भवति।

भावार्थ-जब उसके आठ विभाग किये जाते है, तो एक ओर पृथक पृथक् सात परमाणु-पुदगल और एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक पृथक् छह परमाणु-पुद्गल और एक ओर दो द्विप्रदेशी स्कन्ध होते है।

णवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खधे भवइ। दसहा कज्जमाणे दस परमाणुपोग्गला भवंति।

भावार्थ-जब उसके नौ विभाग किये जाते है, तो एक ओर पृथक्-पृथक् आाठ परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक द्वि प्रदेशी स्कन्ध होता है।

जब उसक दस विभाग किये जाते ह, तो पृथक्-पृथक दस परमाणु-पुदगल होते हे।

विवेचन दस प्रदेशी स्कध के ३९ विकल्प होते है। यथा- १ ९।२-८। ३-७।४-६।५-५।१-१-८।१-२-७।१-३-६। १-४-५।२-३-५।२-४-४।३-३-४।१-१-१-७।१-१-२-६।१-१-३-५।१-१-४-४।१-२-३-४। १-३-३-३।२-२-२-४। २-२-३-३।१-१-१-१-६। १-१-१-२-५।१-१-१-३-४।१-१-२-२-४।१-१-२-३-३। १-२-२-२-३। २-२-२-२-२।१-१-१-१-१-५। १-१-१-१-२-४। १-१-१-१-३-३। १-१-१-२-२-२।१-१-२-२-२-२ ।१-१-१-१-१-१-४ । १-१-१-१-१-२-३। १-१-१-१-२-२-२। १-१-१-१-१-१-१-३ । १-१-१-१-१-१-२-२। १-१-१-१-१-१-१-१-२।१-१-१-१-१-१-१-१-१-१।

दा परमाणु पूदगल स लेकर दस परमाणु पुदगल के सब मिला कर १२५ भग हाते हैं। इनमे से तीन भग शून्य हैं। नौ प्रदेशी मे २-२-५ और दस प्रदेशी मे २-२-६ तथा १-२-२-५। शून्य भग इसमे नहीं गिने गये है।

१० प्रश्न-सखेज्जा ण भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ

साहण्णंति, एगयओ साहणित्ता किं भवइ ?

१० उत्तर-गोयमा ! संखेज्जपएसिए खंधे भवइ । से भिज्ज-माणे दुहाऽ वि, जाव दसहाऽ वि संखेज्जहाऽ वि कज्जति । दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्ज पएसिए खंधे भवइ, अहवा दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति ।

भावार्थ- १० प्रश्न-हे भगवन् ! संख्यात परमाणु-पुद्गल एक साथ मिलने पर क्या बनता है ?

१० उत्तर-हे गौतम ! वह संख्यात प्रदेशी स्कन्ध बनता है । यदि उसके विभाग किये जायें, तो दो तीन यावत दस और संख्यात विभाग होते हैं । जब उसके दो विभाग किये जाते हैं, तो एक ओर एक परमाणु पुद्गल और एक ओर संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है । इस प्रकार यावत एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा दो संख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं ।

तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ संखेज्ज-पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एग-

यओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपएसिए खधे एगयओ सखेज्ज-पएसिए खधे भवइ, एव जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एग-यओ दसपएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खधा भवति, एव जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खधा भवति, अहवा तिण्णि सखेज्जपएसिया खधा भवति।

भावार्थ—जब उसके तीन विभाग किये जाते है, तो एक ओर पृथक पृथक दो परमाणु-पुदगल और एक ओर एक सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुदगल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक सख्यात प्रदशी स्कन्ध होता है। इस प्रकार यावत अथवा एक ओर एक परमाणु पुदगल, एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल और एक ओर दो सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है। इस प्रकार यावत् एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा तीन सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है।

चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला,

एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, एव जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खधा भवति, जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खधे एगयओ दो सखेज्जपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ परमाणु पोग्गले, एगयओ तिण्णि सखेज्जपएसिया खधा भवति, जाव अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिण्णि सखेज्जपएसिया खधा भवति, जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ तिण्णि सखेज्जपएसिया खधा भवति, अहवा चत्तारि सखेज्जपएसिया खधा भवति ।

भावार्थ—जब उसके चार विभाग किये जाते हैं, तो एक ओर पृथक-पृथक् तीन परमाणु पुदगल और एक ओर एक सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक्-पृथक् दो परमाणु-पुदगल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक पृथक् दो परमाणु-पुदगल, एक ओर एक त्रिप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है । इस प्रकार यावत् एक ओर पृथक पृथक् दो परमाणु-पुद-

गल, एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर पृथक्-पृथक दो परमाणु पुद्गल, और एक ओर दो सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा एक ओर एक परमाणु-पुदगल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है । इस प्रकार यावत् एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल और एक ओर तीन सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर तीन सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते ह । इस प्रकार यावत एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर तीन सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा चारो सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है ।

एव एएणं कमेणं पचगसजोगो वि भाणियव्वो, जाव णवग-सजोगो । दसहा कज्जमाणे एगयओ णव परमाणुपोग्गला, एग-यओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ अट्ठ परमाणु-पोग्गला, एगयओ दुपएसिए, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ । एएण कमेणं एक्केक्को पूरेयव्वो, जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ णव सखेज्जपएसिया खधा भवति, अहवा दस सखेज्जपएसिया खधा भवति । सखेज्जहा कज्जमाणे सखेज्जा पर-माणुपोग्गला भवति ।

भावार्थ—इस प्रकार इस क्रम से पच सयोगी भी कहना चाहिये, यावत् नौ सयोगी तक कहना चाहिये । जब उसके दस विभाग किये जाते है तो एक ओर पृथक् पृथक् नौ परमाणु पुद्गल और एक ओर एक सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता

है, अथवा एक ओर पृथक पृथक आठ परमाणु पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है । इस क्रम से एक-एक की सख्या बढाते जाना चाहिये, यावत् एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर नौ सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा दस सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है । जब उसके सख्यात विभाग किये जाते है तो पृथक पृथक सख्यात परमाणु-पुद्गल होते है ।

विवेचन–सख्यात प्रदेशी स्कन्ध मे पहले ग्यारह रहकर फिर दस दस बढाना चाहिये । इस प्रकार इसके कुल ४६० भग होते हैं । यथा,-दो सयोगी ११, तीन सयोगी २१, चार सयोगी ३१, पाच सयोगी ४१, छह सयोगी ५१, सात सयोगी ६१ आठ सयोगी ७१, नौ सयोगी ८१, दस सयोगी ९१, और सख्यात सयोगी १। इस प्रकार कुल ४६० भग होते हैं ।

११ प्रश्न–असखेज्जा णं भते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहणित्ता कि भवइ ?

११ उत्तर–गोयमा ! असखेज्जपएसिए खधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहाऽ वि, जाव दसहाऽ वि, सखेज्जहाऽ वि, असखेज्जहाऽ वि कज्जइ । दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे भवइ, एगयओ असखिज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ सखेज्जपएसिए खधे, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा दो असखेज्जपएसिया खधा भवति ।

भावार्थ–११ प्रश्न–हे भगवन् ! असख्यात परमाणु पुद्गल मिलकर क्या बनता है ?

११ उत्तर-हे गौतम ! उनका असख्यात प्रदेशी स्कन्ध बनता है। यदि उसके विभाग किये जायें तो तीन यावत् दस सख्यात और असख्यात विभाग होते है। जब उसके दो विभाग किये जाते है, तो एक ओर एक परमाणु-पुदगल और एक ओर असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, यावत एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता ह, अथवा एक ओर एक सख्यात प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा दो असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है।

तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ असखिज्जपएसिए खधे भवइ, जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो असखेज्जपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे एगयओ दो असखेज्जपएसिया खधा भवति, एव जाव अहवा एगयओ सखेज्जपएसिए खधे, एगयओ दो असखिज्जपएसिया खधा भवति, अहवा तिण्णि असखेज्जपएसिया खधा भवति।

भावार्थ-जब उसके तीन विभाग किये जाते ह, तो एक ओर पृथक्-पृथक् दो परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा

है, अथवा एक ओर पृथक पृथक आठ परमाणु पुदगल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है । इस क्रम से एक-एक की सख्या वढाते जाना चाहिये, यावत एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर नौ सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं, अथवा दस सख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते हैं । जब उसके सख्यात विभाग किये जाते हैं तो पृथक पृथक सख्यात परमाणु-पुदगल होते हैं ।

विवचन—सख्यात प्रदेशी स्कन्ध मे पहले ग्यारह कहकर फिर दस दस वढाना चाहिय । इस प्रकार इसके कुल ४६० भग हाते हैं । यथा,-दा सयागी ११, तीन सयोगी २१, चार सयोगी ३१, पाच सयोगी ४१, छह सयागी ५१, सात सयोगी ६१, आठ सयागी ७१, नौ सयोगी ८१, दस सयोगी ९१, और सख्यात सयोगी १। इस प्रकार कुल ४६० भग होते हैं ।

११ प्रश्न—असखेज्जा णं भते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति, एगयओ साहणित्ता कि भवइ ?

११ उत्तर—गोयमा ! असखेज्जपएसिए खधे भवइ, से भिज्ज-माणे दुहाऽ वि, जाव दसहाऽ वि, सखेज्जहाऽ वि, असखेज्जहाऽ वि कज्जइ । दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे भवइ, एगयओ असखिज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ सखेज्जपएसिए खधे, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा दो असखेज्जपएसिया खधा भवति ।

भावार्थ—११ प्रश्न—हे भगवन् ! असख्यात परमाणु-पुदगल मिलकर क्या बनता है ?

अहवा एगयओ संखेज्जा दसपएसिया खधा, एगयओ असखेज्ज-पएसिए खधे भवइ अहवा एगयओ सखेज्जा सखेज्जपएसिया खधा, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा सखेज्जा असखेज्ज-पएसिया खधा भवति । असखेज्जहा कज्जमाणे असखेज्जा पर-माणुपोग्गला भवति ।

भावार्थ–जब उसके सख्यात विभाग किये जाते है, तो एक ओर पृथक्-पृथक् सख्यात परमाणु-पुदगल और एक ओर एक असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर सख्यात द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है। इस प्रकार यावत् एक ओर सख्यात दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर सख्यात सख्यातप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा सख्यात, असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है।

जब उसके असख्यात विभाग किये जाते है, तो पृथक्-पृथक् असख्य पर-माणु-पुद्गल होते है ।

विवेचन–असख्यात प्रदेशी स्क ध में पहले बारह कहकर फिर ग्यारह ग्यारह बढाने चाहिए। इसके कुल भग पाँच सौ सतरह होते हैं। यथा– दो सयोगी १२ तीन सयोगी २३, चार सयोगी ३४, पाँच सयोगी ४५, छह सयोगी ५६, सात सयोगी ६७ आठ सयोगी ७८, नौ सयोगी ८९ दस सयोगी १००, सख्यात सयोगी १२ और असख्यात सयोगी एक । ये सब ५१७ भग होते है ।

१२ प्रश्न–अणता ण भंते ! परमाणुपोग्गला जाव किं भवइ ?

१२ उत्तर–गोयमा ! अणतपएसिए खधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि जाव दसहा वि सखेज्जा-असखेज्जा-अणतहा वि

एक ओर एक परमाणु पुद्गल, एक ओर द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, यावत् एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल, एक ओर एक सख्यात प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु पुद्गल और एक ओर दो असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है। इस प्रकार यावत एक ओर एक सख्यात प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा तीन असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है।

चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, एव चउक्कगसजोगो जाव दसग सजोगो, एए जहेव सखेज्जपएसियस्स, णवर असखेज्जग एग अहिग भाणियव्व, जाव अहवा दस असखेज्जपएसिया खधा भवति।

भावार्थ—जब उसके चार विभाग किये जाते है, तो एक ओर पृथक्-पृथक तीन परमाणु पुदगल और एक ओर एक असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होता है, इस प्रकार चार सयोगी यावत् दस सयोगी तक जानना चाहिये। इन सब का कथन सख्यात प्रदेशी के अनुरूप जानना चाहिये, परन्तु एक 'असख्यात' शब्द अधिक कहना चाहिये, यावत् अथवा दस असख्यात प्रदेशी स्कन्ध होते है।

सखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ सखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ सखेज्जा दुपएसिया खधा, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, एव जाव

भावार्थ—जब उसके तीन विभाग किये जाते है, तो एक ओर पृथक पृथक् दो परमाणु-पुद्गल, और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, यावत् एक ओर एक परमाणु-पुद्गल, एक ओर एक असख्यात प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर एक परमाणु-पुद्गल और एक ओर दो अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा एक ओर एक द्विप्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते है । । इस प्रकार यावत एक ओर एक दस प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा एक ओर एक सख्यात प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा एक ओर एक असख्यात प्रदेशी स्कन्ध और एक ओर दो अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते है, अथवा तीनो अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते ह ।

चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, एव चउक्कसजोगो, जाव असखेज्जग-सजोगो, एए सव्वे जहेव असखेज्जाणं भणिया तहेव अणंताणवि भाणियव्व, णवर एक्क अणतग अब्भहिय भाणियव्व, जाव अहवा एगयओ सखेज्जा सखेज्जपएसिया खधा, एगयओ अणंतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ सखेज्जा असखेज्जपपसिया खधा, एग-यओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा सखज्जा अणंतपएसिया खधा भवति ।

भावाथ—जब उसके चार विभाग किये जाते है, तो एक ओर पृथक्-पृथक् तीन परमाणु-पुद्गल और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है । इस प्रकार

कज्जइ । दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ अणंत-पएसिए खंधे भवइ, जाव अहवा दो अणतपएसिया खधा भवंति।

भावार्थ-१२ प्रश्न-हे भगवन् ! अनन्त परमाणु पुदगल इकट्ठे होकर क्या बनता है ?

१२ उत्तर-हे गौतम ! एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है। यदि उसके विभाग किये जायँ, तो दो, तीन यावत दस, सख्यात, असख्यात और अनन्त विभाग होते हैं। जब दो विभाग किये जाते है, तो एक ओर एक परमाणु पुदगल, और एक ओर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, यावत् दो अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ अणत-पएसिए खधे भवइ अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे, एगयओ अणत-पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो अणतपएसिया खधा भवंति, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एग-यओ दो अणंतपएसिया खधा भवंति, एव जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ दो अणतपएसिया खधा भवंति, अहवा एगयओ सखेज्जपएसिए खधे, एगयओ दो अणतपएसिया खधा भवंति, अहवा एगयओ असखेज्जपएसिए खधे एगयओ दो अणतपए-सिया खधा भवंति, अहवा तिण्णि अणतपएसिया खधा भवंति ।

विवेचन-अनन्त प्रदेशी स्कन्ध मे पहले तेरह कहकर फिर बारह बारह बढाने चाहिये। इस प्रकार अनन्त प्रदेशी स्कन्ध के पाच सौ छिहत्तर भग होते हैं। यथा-दो सयोगी १३, तीन सयोगी २५, चार सयोगी ३७, पाच सयोगी ४९, छह सयोगी ६१ सात सयोगी ७३, आठ सयोगी ८५, नौ सयोगी ९७, दस सयोगी १०९, सख्यात सयोगी १३, असख्यात सयोगी १३ और अन त सयोगी १। ये कुल मिलाकर ५७६ भग होते हैं।

पुद्गल परिवर्तन के भेद

१३ प्रश्न-एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण साहणणा-भेयाणुवाएण अणताणता पोग्गलपरियट्टा समणुगतव्वा भवतीति मक्खाया ?

१३ उत्तर-हता, गोयमा ! एएसि ण परमाणुपोग्गलाण साहणणा० जाव मक्खाया।

१४ प्रश्न-कइविहे ण भते ! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?

१४ उत्तर-गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, त जहा-१ ओरालिय पोग्गलपरियट्टे २ वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, ३ तेयापोग्गलपरियट्टे ४ कम्मापोग्गलपरियट्टे ५ मणपोग्गलपरियट्टे ६ वइपोग्गलपरियट्टे ७ आणापाणुपोग्गलपरियट्टे।

१५ प्रश्न-णेरइयाण भते ! कइविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?

१५ उत्तर-गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तजहा-१ ओरालियपोग्गलपरियट्टे २ वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे जाव ७

चार सयोगी यावत् सख्यात सयोगी तक कहना चाहिए। ये सब भग असख्यात के अनुरूप कहना चाहिए, परन्तु यहा एक 'अनन्त' शब्द अधिक कहना चाहिए, यावत् एक ओर सख्यातप्रदेशी स्कन्ध, सख्यात होते हैं और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर असख्यात प्रदेशी स्कन्ध, सख्यात होते है और एक ओर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा अनन्त प्रदेशी स्कन्ध सख्यात होते हैं।

असखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ असखेज्जा दुपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, जाव अहवा एगयओ असखेज्जा सखेज्जपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ असखेज्जा असखेज्जपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा असखेज्जा अणतपए-सिया खधा भवति। अणतहा कज्जमाणे अणता परमाणुपोग्गला भवति।

भावार्थ-जब उसके असख्यात विभाग किये जाते हैं, तो एक ओर पृथक-पृथक असख्यात परमाणु पुद्गल और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर द्विप्रदेशी स्कन्ध, असख्यात होते है और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, यावत् एक ओर सख्यात प्रदेशी स्कन्ध असख्यात और एक ओर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध एक होता है, अथवा एक ओर असख्यातप्रदेशी स्कन्ध असख्यात होते है और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा असख्यात अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते है।

जब उसके अनन्त विभाग किये जाते है, तो पृथक् पृथक् अनन्त परमाणु-पुद्गल होते हैं।

विवेचन–अनन्त प्रदेशी स्कन्ध मे पहले तेरह कहकर फिर बारह बारह बढाने चाहिये। इस प्रकार अनन्त प्रदेशी स्कन्ध के पाच सौ छिहत्तर भग होते हैं। यथा-दो सयोगी १३, तीन सयोगी २५, चार सयोगी ३७, पाच सयोगी ४९, छह सयोगी ६१ सात सयोगी ७३, आठ सयोगी ८५, नौ सयोगी ९७, दस सयोगी १०९, सख्यात सयोगी १३, असख्यात सयोगी १३ और अनन्त सयोगी १। ये कुल मिलाकर ५७६ भग होते हैं।

पुद्गल परिवर्तन के भेद

१३ प्रश्न–एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाणं साहणणा-भेयाणुवाएण अणंताणता पोग्गलपरियट्टा समणुगतव्वा भवतीति मक्खाया ?

१३ उत्तर–हता, गोयमा ! एएसि ण परमाणुपोग्गलाण साहणणा० जाव मक्खाया।

१४ प्रश्न–कइविहे ण भते ! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?

१४ उत्तर–गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तं जहा–१ ओरालिय पोग्गलपरियट्टे २ वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, ३ तेयापोग्गलपरियट्टे ४ कम्मापोग्गलपरियट्टे ५ मणपोग्गलपरियट्टे ६ वइपोग्गलपरियट्टे ७ आणापाणुपोग्गलपरियट्टे।

१५ प्रश्न–णेरइयाणं भते ! कइविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?

१५ उत्तर–गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तजहा–१ ओरालियपोग्गलपरियट्टे २ वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे जाव ७

चार सयोगी यावत् सख्यात सयोगी तक कहना चाहिए। ये सब भग असख्यात के अनुरूप कहना चाहिए, परन्तु यहा एक 'अनन्त' शब्द अधिक कहना चाहिए, यावत् एक ओर सख्यातप्रदेशी स्कन्ध, सख्यात होते है और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर असख्यात प्रदेशी स्कन्ध, सख्यात होते है और एक ओर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा अनन्त प्रदेशी स्कन्ध सख्यात होते है।

असखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ असखेज्जा दुपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, जाव अहवा एगयओ असखेज्जा सखेज्जपएसिया खधा, एगयओ अणंतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ असखेज्जा असखेज्जपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा असखेज्जा अणतपएसिया खधा भवति। अणतहा कज्जमाणे अणता परमाणुपोग्गला भवति।

भावार्थ—जब उसके असख्यात विभाग किये जाते है, तो एक ओर पृथक्-पृथक असख्यात परमाणु-पुदगल और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर द्विप्रदेशी स्कन्ध, असख्यात होते है और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, यावत एक ओर सख्यात प्रदेशी स्कन्ध असख्यात और एक ओर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध एक होता है, अथवा एक ओर असख्यातप्रदेशी स्कन्ध असख्यात होते है और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा असख्यात अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते है।

जब उसके अनन्त विभाग किये जाते है, तो पृथक् पृथक अनन्त परमाणु-पुद्गल होते है।

विवेचन–अनन्त प्रदेशी स्कन्ध मे पहले तेरह कहकर फिर बारह बारह बढाने चाहिये। इस प्रकार अनन्त प्रदेशी स्कन्ध के पाच सौ छिहत्तर भग होते हैं। यथा-दो सयोगी १३, तीन सयोगी २५, चार सयोगी ३७, पाच सयोगी ४६, छह सयोगी ६१, सात सयोगी ७३, आठ सयोगी ८५, नौ सयोगी ६७, दस सयोगी १०६, सख्यात सयोगी १३, असख्यात सयोगी १३ और अनन्त सयोगी १। ये कुल मिलाकर ५७६ भग होते हैं।

पुदगल परिवर्तन के भेद

१३ प्रश्न–एएसि ण भते! परमाणुपोग्गलाण साहणणा भेयाणुवाएण अणताणता पोग्गलपरियट्टा समणुगतव्वा भवतीति मक्खाया ?

१३ उत्तर–हता, गोयमा! एएसि ण परमाणुपोग्गलाणं साहणणा० जाव मक्खाया।

१४ प्रश्न–कइविहे ण भते! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?

१४ उत्तर–गोयमा! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तं जहा–१ ओरालिय पोग्गलपरियट्टे २ वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, ३ तेयापोग्गलपरियट्टे ४ कम्मापोग्गलपरियट्टे ५ मणपोग्गलपरियट्टे ६ वइपोग्गलपरियट्टे ७ आणापाणुपोग्गलपरियट्टे।

१५ प्रश्न–णेरइयाण भते! कइविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?

१५ उत्तर–गोयमा! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तजहा–१ ओरालियपोग्गलपरियट्टे २ वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे जाव ७

चार सयोगी यावत सख्यात सयोगी तक कहना चाहिए। ये सब भग असख्यात के अनुरूप कहना चाहिए, परन्तु यहा एक 'अनन्त' शब्द अधिक कहना चाहिए, यावत् एक ओर सख्यातप्रदेशी स्कन्ध, सख्यात होते हैं और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर असख्यात प्रदेशी स्कन्ध, सख्यात होते हैं और एक ओर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा अनन्त प्रदेशी स्कन्ध सख्यात होते हैं।

असखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ असखेज्जा दुपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ; जाव अहवा एगयओ असखेज्जा सखेज्जपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ असखेज्जा असखेज्जपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा असखेज्जा अणतपएसिया खधा भवति। अणतहा कज्जमाणे अणता परमाणुपोग्गला भवति।

भावार्थ—जब उसके असख्यात विभाग किये जाते है, तो एक ओर पृथक-पृथक असख्यात परमाणु पुदगल और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा एक ओर द्विप्रदेशी स्कन्ध, असख्यात होते हैं और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, यावत एक ओर सख्यात प्रदेशी स्कन्ध असख्यात और एक ओर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध एक होता है, अथवा एक ओर असख्यातप्रदेशी स्कन्ध असख्यात होते हैं और एक ओर एक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होता है, अथवा असख्यात अनन्त प्रदेशी स्कन्ध होते हैं।

जब उसके अनन्त विभाग किये जाते है, तो पृथक् पृथक् अनन्त परमाणु-पुद्गल होते हैं।

रिक पुद्गल परिवर्तन, वैक्रिय पुद्गल परिवतन यावत् आनप्राण पुद्गल परिवतन। इस प्रकार यावत् वैमानिक तक कहना चाहिये।

१६ प्रश्न–हे भगवन् ! प्रत्येक नैरयिक जीव के भूतकाल में औदारिक पुद्गल परिवर्तन कितने हुए है ।

१६ उत्तर–हे गौतम ! अनन्त हुए है । (प्रश्न) हे भगवन ! भविष्यत्काल में कितने होगे ? (उत्तर) हे गौतम ! किसी के होगे और किसी के नहीं होगे। जिसके होगे उनके जघन्य एक, दो, तीन होगे और उत्कृष्ट सख्यात, असख्यात या अनन्त होगे।

१७ प्रश्न–हे भगवन ! प्रत्येक असुरकुमार के भूतकाल औदारिक पुद्गल परिवर्तन कितने हुए है ?

१७ उत्तर–हे गौतम ! पूर्ववत जानना चाहिये। इसी प्रकार यावत वैमानिक तक जानना चाहिये।

१८ प्रश्न–एगमेगस्स ण भते ! णेरइयस्स केवइया वेउव्विय-पोग्गलपरियट्टा अतीता० ?

१८ उत्तर–अणता एव जहेव ओरालियपोग्गपरियट्टा तहेव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा वि भाणियव्वा, एव जाव वेमाणियस्स, एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा, एए एगत्तिया सत्त दडगा भवति।

१९ प्रश्न–णेरइयाण भते ! केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?

१९ उत्तर–गोयमा ! अणता, (प्र०) केवइया पुरेक्खडा ? (उ०) अणता, एव जाव वेमाणियाण, एव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा

आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, एव जाव वेमाणियाण ।

१६ प्रश्न–एगमेगस्स णं भते ! णेरडयस्स केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा अतीता ?

१६ उत्तर–अणता, (प्र०) केवडया पुरेक्खडा ? (उ०) कस्सइ अत्थि, कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा ।

१७ प्रश्न–एगमेगस्स णं भते ! असुरकुमारस्स केवइया ओरालियपोग्गल० ?

१७ उत्तर–एव चेव, एव जाव वेमाणियस्स ।

कठिन शब्दार्थ–साहणणा–सघातसयोग, पुरेक्खडा–पुरस्कृत–अनागत–भविष्यत्काल ।

भावार्थ–१३ प्रश्न–हे भगवन ! क्या परमाणु पुद्‌गलो के सयोग और विभाग से होने वाले अनन्तानन्त पुद्‌गल परिवर्तन जानने योग्य है ?

१३ उत्तर–हां, गौतम ! सयोग और विभाग से होने वाले परमाणु पुद्‌गलो के अनन्तानन्त पुद्‌गल परिवतन जानने योग्य है ।

१४ प्रश्न–हे भगवन् ! पुद्‌गल परिवतन कितने प्रकार का कहा गया ह ?

१४ उत्तर–हे गौतम ! सात प्रकार का कहा गया है । यथा–१ औदारिक पुदगलपरिवतन, २ वैक्रिय पुद्‌गल परिवर्तन, ३ तैजस पुद्‌गल परिवतन, ४ कामण पुदगल परिवर्तन, ५ मन पुद्‌गल परिवतन, ६ वचन पुदगल परिवतन और ७ आनप्राण पुद्‌गल परिवतन ।

१५ प्रश्न–हे भगवन् ! नैरयिक जीवो के कितने प्रकार के पुद्‌गल परिवर्तन कहे गये है ?

१५ उत्तर–हे गौतम ! सात पुद्‌गल परिवर्तन कहे गये है । यथा औदा-

रिक पुद्गल परिवर्तन, वैक्रिय पुद्गल परिवतन यावत् आनप्राण पुद्गल परिवर्तन । इस प्रकार यावत् वैमानिक तक कहना चाहिये ।

१६ प्रश्न–हे भगवन् ! प्रत्येक नैरयिक जीव के भूतकाल में औदारिक पुद्गल परिवर्तन कितने हुए हैं ।

१६ उत्तर–हे गौतम ! अनन्त हुए हैं । (प्रश्न) हे भगवन् ! भविष्यत्काल में कितने होंगे ? (उत्तर) हे गौतम ! किसी के होंगे और किसी के नहीं होंगे । जिसके होंगे उनके जघन्य एक, दो, तीन होंगे और उत्कृष्ट सख्यात, असख्यात या अनन्त होंगे ।

१७ प्रश्न–हे भगवन ! प्रत्येक असुरकुमार के भूतकाल औदारिक पुद्गल परिवर्तन कितने हुए हैं ?

१७ उत्तर–हे गौतम ! पूववत जानना चाहिये । इसी प्रकार यावत् वैमानिक तक जानना चाहिये ।

१८ प्रश्न–एगमेगस्स ण भते ! णेरइयस्स केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता० ?

१८ उत्तर–अणता एव जहेव ओरालियपोग्गपरियट्टा तहेव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा वि भाणियव्वा, एव जाव वेमाणियस्स, एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा, एए एगत्तिया सत्त दडगा भवति ।

१९ प्रश्न–णेरइयाण भते ! केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?

१९ उत्तर–गोयमा ! अणता, (प्र०) केवइया पुरेक्खडा ? (उ०) अणता, एव जाव वेमाणियाण, एव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा

वि, एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा, जाव वेमाणियाणं एव एए पोहत्तिया सत्त चउव्वीसइदडगा ।

२० प्रश्न–एगमेगस्स णं भते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?

२० उत्तर–णत्थि एक्को वि । (प्र०) केवइया पुरेक्खडा ? (उ०) णत्थि एक्को वि ।

२१ प्रश्न–एगमेगस्स णं भते ! णेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा०

२१ उत्तर–एव चेव, एव जाव थणियकुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते ।

२२ प्रश्न–एगमेगस्स ण भते ! णेरइयस्स पुढविक्काइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?

२२ उत्तर–अणता, (प्र०) केवइया पुरेक्खडा ? (उ०) कस्सइ अत्थि, कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि तस्स जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा, एव जाव मणुस्सत्ते, वाणमतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते।

कठिन शब्दार्थ–एगत्तिया–एक वचन सम्बन्धी, पोहत्तिया–बहु वचन सम्बन्धी ।

भावार्थ–१८ प्रश्न–हे भगवन् ! प्रत्येक नैरयिक जीव के भूतकाल में वैक्रिय पुद्गल परिवर्तन कितने हुए हैं ?

१८ उत्तर–हे गौतम ! अनन्त हुए हैं । जिस प्रकार औदारिक पुद्गल

परिवर्तन के विषय में कहा, उसी प्रकार वैक्रिय पुदगल परिवतन के विषय में भी जानना चाहिए, यावत वैमानिक तक कहना चाहिए। इसी प्रकार यावत आनप्राण पुद्गल परिवर्तन तक कहना चाहिए। इस प्रकार प्रत्येक जीव की अपेक्षा सात दण्डक होते हैं।

१६ प्रश्न–हे भगवन् ! नैरयिक जीवा के भूतकाल में औदारिक पुद्गल परिवर्तन कितने हुए हैं ?

१६ उत्तर–हे गौतम ! अनन्त हुए हैं। (प्रश्न) हे भगवन ! भविष्य में कितने होगे ? (उत्तर) हे गौतम ! अनन्त होंगे। इस प्रकार यावत वैमानिक तक कहना चाहिए। इसी प्रकार वैक्रिय पुदगल परिवर्तन, यावत् आनप्राण पुद्गल परिवर्त्तन के विषय में यावत वैमानिको तक कहना चाहिये। इस प्रकार सातो पुद्गल परिवत्तन के विषय में बहुवचन सम्बन्धी सात दण्डक के चौवीस दण्डक कहना चाहिये।

२० प्रश्न–हे भगवन् ! प्रत्येक नैरयिक जीव के, नैरयिक अवस्था में औदारिक पुदगल परिवत्तन कितने हुए हैं ?

२० उत्तर– हे गौतम ! एक भी नहीं हुआ। (प्रश्न) हे भगवन् ! भविष्य में कितने होगे ? (उत्तर) हे गौतम ! एक भी नही होगा।

२१ प्रश्न–हे भगवन ! प्रत्येक नैरयिक जीव के, असुरकुमारपने में औदारिक पुद्गल परिवतन कितने हुए ह ?

२१ उत्तर–हे गौतम ! पूर्वोक्त वक्तव्यतानुसार जानना चाहिए। इसी प्रकार यावत स्तनितकुमार तक कहना चाहिए।

२२ प्रश्न–हे भगवन् ! प्रत्येक नैरयिक जीव के पृथ्वीकायपने औदारिक पुद्गल परिवतन कितने हुए हैं ?

२२ उत्तर–हे गौतम ! अनन्त हुए हैं। (प्रश्न) हे भगवन् ! भविष्य में कितने होगे ? (उत्तर) हे गौतम ! किसी के होंगे और किसी के नहीं होगे। जिसके होंगे, उसके जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ट सख्यात, असख्यात और अनन्त

होगे और इसी प्रकार यावत मनुष्य भव तक में कहना चाहिए। जिस प्रकार असुरकुमार केविषय में कहा, उसी प्रकार वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक के विषय में भी कहना चाहिए।

विवेचन—परमाणु पुदगलो के सयोग और वियोग (विभाग) मे अनन्तानन्त (अनन्त को अनन्त से गुणा करने पर जितने होते हैं व अनन्तानन्त कहलाते हैं) परिवतन होते हैं। एक परमाणु द्वयणुकादि द्रव्यो के साथ सयुक्त होने पर अनन्त परिवतनो को प्राप्त करता है, क्योकि परमाणु अनन्त हैं और प्रति परमाणु उसका परिवतन हो जाता है। इस प्रकार परमाणु पुदगल परिवतन अनन्तानन्त हो जाते हैं।

पुद्गल परिवतन के औदारिक पुदगल परिवतन आदि सात भेद ऊपर बतलाये गये हैं। औदारिक शरीर मे रहता हुआ जीव, जब लोक के सभी पुदगलो को औदारिक शरीर के रूप मे ग्रहण करलेता है, तब उसे औदारिक पुदगल परिवतन कहते हैं। इसी प्रकार वक्रिय पुद्गल परिवतन आदि का भी अथ समझना चाहिये।

अनादिकाल से ससार मे परिभ्रमण करते हुए नैरयिक जीवो के सात प्रकार का पुदगल परिवतन कहे गये हैं। प्रत्येक नरयिक जीव के औदारिक पुद्गल परिवतन आदि अतीत काल सम्बन्धी अनन्त हैं। क्योकि अतीत काल अनादि है और जीव भी अनादि है। तथा पुदगलो को ग्रहण करने का उसका स्वभाव है।

अभव्य जीव के औदारिकादि पुदगल परिवतन होते ही रहेगे, जो नरकादि गति से निकल कर मनुष्य भव को प्राप्त करके सिद्धि को प्राप्त कर लेगा, या जो सख्यात और असख्यात भवो से भी सिद्धि को प्राप्त करेगा, उसके पुदगल परिवतन नही होगा। जिसका ससार परिभ्रमण अधिक होगा, वह एक या अनेक पुदगल परिवतन करेगा। एक पुदगल परिवतन भी अनन्त काल मे पूरा होता है।

एकवचन सम्बन्धी औदारिकादि सात प्रकार के पुदगल परिवतन होने से, सात दण्डक (विकल्प) होते हैं। ये सात दण्डक नरयिकादि चौवीस दण्डको मे कहना चाहिये और इसी प्रकार बहुवचन से भी कहना चाहिये। एकवचन और बहुवचन सम्बन्धी दण्डको मे अन्तर यह है कि एकवचन सम्बन्धी दण्डको मे भविष्यत्कालीन पुदगल परिवतन किसी जीव के होते हैं और किसी जीव के नही होते। बहुवचन सबधी दण्डकों मे तो होते ही हैं, क्योकि उसमे जीव सामान्य का ग्रहण है।

२३ प्रश्न–एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स णेरइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा ?

२३ उत्तर–एवं जहा णेरइयस्स वत्तव्वया भणिया, तहा असुरकुमारस्स वि भाणियव्वा, जाव वेमाणियत्ते, एवं जाव थणियकुमारस्स, एवं पुढविक्काइयस्स वि, एवं जाव वेमाणियस्स, सव्वेसिं एक्को गमो ।

२४ प्रश्न–एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?

२४ उत्तर–अणंता, (प्र०) केवइया पुरेक्खडा ? (उ०) एक्कोत्तरिया जाव अणंता वा, एवं जाव थणियकुमारत्ते ।

२५ प्रश्न–पुढवीकाइयत्ते पुच्छा ।

२५ उत्तर–णत्थि एक्को वि, (प्र०) केवइया पुरेक्खडा ? (उ०) णत्थि एक्को वि एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं अत्थि तत्थ एगुत्तरिओ, जत्थ णत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं, जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते । तेयापोग्गलपरियट्टा, कम्मापोग्गलपरियट्टा य सव्वत्थ एक्कोत्तरिया भाणियव्वा । मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगोत्तरिया, विगलिंदिएसु णत्थि । वइपोग्गलपरियट्टा एवं चेव, णवरं एगिंदिएसु णत्थि भाणियव्वा । आणापाणुपोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एक्कोत्तरिया, जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ।

कठिन शब्दाथ-एकात्तग्या-एक से लेकर अनन्त तक ।

भावार्थ-२३ प्रश्न-हे भगवन् ! प्रत्येक असुरकुमार के नैरायिक भव में औदारिक पुद्गल परिवत्तन कितने हुए हैं ?

२३ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार नैरयिको का कथन किया है, उसी प्रकार असुरकुमार के विषय में यावत् वैमानिक भव पर्यंत कहना चाहिये । इसी प्रकार यावत स्तनित कुमारो तक कहना चाहिये और इसी प्रकार पृथ्वीकाय से लेकर यावत् वैमानिक पयन्त एक समान कहना चाहिए ।

२४ प्रश्न-हे भगवन् ! प्रत्येक नैरयिक जीव के, नैरयिक भव में वैक्रिय पुद्गल परिवतन कितने हुए हैं ?

२४ उत्तर-हे गौतम ! अनन्त हुए हैं । (प्रश्न) हे भगवन ! भविष्य में कितने होगे ? (उत्तर) हे गौतम ! होगे या नहीं, यदि होगे तो एक से लेकर यावत् अनन्त होगे । इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमारभव तक कहना चाहिए ।

२५ प्रश्न-हे भगवन् ! प्रत्येक नैरयिक जीव के पृथ्वीकायिक भव में वैक्रिय पुद्गल परिवर्तन कितने हुए हैं ?

२५ उत्तर-हे गौतम ! एक भी नहीं हुआ । (प्रश्न) हे भगवन ! आगे कितने होगे ? (उत्तर) हे गौतम ! एक भी नही होगा । इस प्रकार जहाँ वैक्रिय शरीर है, वहाँ एकादि पुद्गल परिवतन जानना चाहिये और जहाँ वक्रिय शरीर नहीं है, वहां पृथ्वीकायिकपने में कहा, उसी प्रकार कहना चाहिए, यावत वैमानिक जीवो के वैमानिकभव पर्यन्त कहना चाहिए । तैजस पुदगल परिवतन और कार्मण पुद्गल परिवतन सवत्र एक से लगाकर अनन्त तक कहना चाहिए । मन पुद्गल परिवर्तन सभी पञ्चेन्द्रिय जीवो में एक से लेकर अनन्त तक कहना चाहिए, किंतु विकलेन्द्रियो (एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय) में मन पुदगल परिवतन नहीं होता । इस प्रकार वचन पुदगल परिवतन का भी कहना चाहिये, किंतु विशेषता यह है कि वह एकेन्द्रिय जीवो में नहीं होता । आन

प्राण (श्वासोच्छ्वास) पुद्‌गल परिवर्तन सभी जीवों में एक से लेकर अनन्त तक जानना चाहिये, यावत् वैमानिक के वैमानिक भव तक कहना चाहिये ।

२६ प्रश्न–णेरइयाण भते ! णेरइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गल-परियट्टा अतीता ?

२६ उत्तर–णत्थि एक्को वि । (प्र०) केवइया पुरेक्खडा ? (उ०) णत्थि एक्को वि, एव जाव थणियकुमारत्ते ।

२७ प्रश्न–पुढविकाइयत्ते पुच्छा ।

२७ उत्तर–अणता । (प्र०) केवइया पुरेक्खडा ? (उ०) अणंता, एव जाव मणुस्सत्ते । वाणमतर जोइसिय वेमाणियत्ते जहा णेरइयत्ते, एव जाव वेमाणियस्स वेमणियत्ते, एव सत्त वि पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा,जत्थ अत्थि तत्थ अतीता वि पुरेक्खडा वि अणता भाणियव्वा, जत्थ णत्थि तत्थ दो वि णत्थि भाणियव्वा । जाव (प्र०) वेमाणियाण वेमाणियत्ते केवइया आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अतीता ? (उ०) अणता । (प्र०) केवइया पुरेक्खडा ? (उ०) अणता ।

२८ प्रश्न–से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ–'ओरालियपोग्गल-परियट्टे ओरालियपोग्गलपरियट्टे ?'

२८ उत्तर–गोयमा ! जण्ण जीवेण ओरालियसरीरे वट्टमाणेण ओरालियसरीरपाओग्गाइ दव्वाइ ओरालियसरीरत्ताए गहियाइ,

कठिन शब्दार्थ-एकोत्तरिया-एक से लेकर अनन्त तक ।

भावार्थ-२३ प्रश्न-हे भगवन् ! प्रत्येक असुरकुमार के नैरयिक भव में औदारिक पुद्गल परिवत्तन कितने हुए हैं ?

२३ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार नैरयिको का कथन किया है, उसी प्रकार असुरकुमार के विषय में यावत् वैमानिक भव पर्यंत कहना चाहिये । इसी प्रकार यावत स्तनित कुमारो तक कहना चाहिये और इसी प्रकार पृथ्वीकाय से लेकर यावत् वैमानिक पयन्त एक समान कहना चाहिए ।

२४ प्रश्न-हे भगवन् ! प्रत्येक नैरयिक जीव के, नैरयिक भव में वैक्रिय पुद्गल परिवतन कितने हुए हैं ?

२४ उत्तर-हे गौतम ! अनन्त हुए हैं । (प्रश्न) हे भगवन ! भविष्य में कितने होगे ? (उत्तर) हे गौतम ! होगे या नहीं, यदि होगे तो एक से लेकर यावत् अनन्त होगे । इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमारभव तक कहना चाहिए ।

२५ प्रश्न-हे भगवन् ! प्रत्येक नैरयिक जीव के पृथ्वीकायिक भव में वैक्रिय पुद्गल परिवतन कितने हुए हैं ?

२५ उत्तर-हे गौतम ! एक भी नहीं हुआ । (प्रश्न) हे भगवन ! आगे कितने होगे ? (उत्तर) हे गौतम ! एक भी नही होगा । इस प्रकार जहाँ वैक्रिय शरीर है, वहाँ एकादि पुद्गल परिवर्तन जानना चाहिये और जहा वैक्रिय शरीर नहीं है, वहाँ पृथ्वीकायिकपने में कहा, उसी प्रकार कहना चाहिए, यावत वैमानिक जीवो के वैमानिकभव पर्यन्त कहना चाहिए । तैजस पुदगल परिवतन और कार्मण पुदगल परिवतन सवत्र एक से लगाकर अनन्त तक कहना चाहिए । मन पुदगल परिवर्तन सभी पञ्चेन्द्रिय जीवो में एक से लेकर अनन्त तक कहना चाहिए, किंतु विकलेन्द्रियो (एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय) में मन पुदगल परिवतन नहीं होता । इस प्रकार वचन पुदगल परिवतन का भी कहना चाहिये, किंतु विशेषता यह है कि वह एकेन्द्रिय जीवों में नहीं होता । आम

अनन्त हुए है। (प्रश्न) हे भगवन् ! आगे कितने होंगे ? (उत्तर) हे गौतम ! अनन्त होंगे।

२८ प्रश्न–हे भगवन ! 'औदारिक पुद्गल परिवर्तन' यह औदारिक पुद्गल परिवतन क्यो कहलाता है ?

२८ उत्तर–हे गौतम ! औदारिक शरीर में रहते हुए जीव ने, औदारिक शरीर योग्य द्रव्यो को औदारिक शरीरपने ग्रहण किये है, बद्ध किये है अर्थात् जीव प्रदेशो के साथ एकमेक किये है, शरीर पर रेणु के समान स्पृष्ट किये ह, अथवा नवीन नवीन ग्रहण कर उन्हे पुष्ट किया है, उन्हे किया है, अर्थात पूर्व परिणाम की अपेक्षा परिणामान्तर किया है। प्रस्थापित (स्थिर) क्रिया है, स्थापित किया है, अभिनिविष्ट (सवथा लगे हुए) किये है, अभिसमन्वागत (सवथा प्राप्त) किये है, सभी अवयवो से उन्हे ग्रहण किया है, परिणामित (रसानुभूति से परिणामान्तर प्राप्त) किया है, निर्जीर्ण (क्षीण रसवाले) किया ह, नि श्रित (जीव प्रदेशो से पृथक) किया है, नि श्रिप्ट (अपने प्रदेशो से परित्यक्त) किया है, इस लिए हे गौतम ! 'औदारिक पुद्गल परिवतन' औदारिक पुद्गल परिवतन कहलाता है। इसी प्रकार वैक्रिय पृदगल परिवतन भी कहना चाहिए, परन्तु इतनी विशेषता है कि 'वैक्रिय शरीर में रहते हुए जीव ने वैक्रिय शरीर योग्य ग्रहण आदि किया है,' इत्यादि कहना चाहिए। शेष पूर्ववत कहना चाहिए। इसी प्रकार यावत आनप्राण पुदगल परिवतन तक कहना चाहिए। किंतु वहाँ 'आनप्राण योग्य सर्व द्रव्यो को आनप्राणपने ग्रहणादि किया,' इत्यादि कहना चाहिए। शेप पूववत जानना चाहिए।

विवेचन–नरयिक भव म रहते हुए अनत वैक्रिय पुदगल परिवतन हुए हैं और भविष्यत्काल मे किसी के होंगे और किसी के नही होंगे। जिसके होंगे उसके जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ट सख्यात असख्यात अथवा अनन्त होंगे।

वायुकाय मनुष्य तियञ्च पञ्चेन्द्रिय और व्यतरादि मे वैक्रिय शरीर है। वहाँ वैक्रिय पुदगल परिवतन एकोत्तरिक कहना चाहिये और जहा अप्कायादि मे वैक्रिय शरीर नही हैं, वहाँ वैक्रिय पुदगल परिवतन भी नही है।

बद्धाइ, पुट्ठाइ, कडाइ, पट्ठवियाइ, णिविट्ठाइ, अभिणिविट्ठाइ, अभिसमण्णागयाइ, परियादियाइ, परिणामियाइ, णिज्जिणाइ, णिसिरियाइ, णिसिट्ठाइ भवति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ-'ओरालियपोग्गलपरियट्टे ओरालियपोग्गलपरियट्टे ।' एव वेउव्वियपोग्गलपरियटे वि, णवर वेउव्विसरीरे वट्टमाणेण वेउव्वियसरीरप्पायोग्गाइ, सेस त चेव सव्व, एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियटे, णवर आणापाणुपायोग्गाइ सव्वदव्वाइ आणापाणुत्ताए सेम त चेव ?

भावार्थ-२६ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीवो के नैरयिकभव में कितने औदारिक पुदगल परिवर्तन हुए हैं ?

२६ उत्तर-हे गौतम ! एक भी नहीं हुआ। (प्रश्न) हे भगवन ! आगे कितने होगे ? (उत्तर) हे गौतम ! एक भी नही होगा। इसी प्रकार यावत स्तनितकुमारपने तक कहना चाहिये।

२७ प्रश्न-हे भगवन ! नैरयिक जीवो के पृथ्वीकायपने में औदारिक पुद्गल परिवतन कितने हुए हे ?

२७ उत्तर-हे गौतम ! अनन्त हुए ह। (प्रश्न) हे भगवन ! आगे कितने होगे ? (उत्तर) हे गौतम ! अनन्त होगे। इसी प्रकार यावत मनुष्यभव तक कहना चाहिए। जिस प्रकार नैरयिकभव में कहे हैं, उसी प्रकार वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिकभव में कहना चाहिए। इसी प्रकार यावत वैमानिको के वैमानिकभव तक सातो ही पुदगल परिवतन कहना चाहिए। जहाँ जो पुद्गल परिवर्तन हो, वहाँ अतीत (बीते हुए) और पुरस्कृत (भविष्यकालीन) अनन्त कहना चाहिए और जहाँ नहीं हो, वहाँ अतीत और पुरस्कृत दोनो नहीं कहना चाहिए। यावत (प्रश्न) हे भगवन् ! वैमानिको के वैमानिकभव में कितने आनप्राणपुद्गल परिवर्तन हुए हे ? (उत्तर) हे गौतम !

अनन्त हुए है। (प्रश्न) हे भगवन ! आगे कितने होगे ? (उत्तर) हे गौतम ! अनन्त होगे।

२८ प्रश्न–हे भगवन ! 'औदारिक पुद्गल परिवतन' यह औदारिक पुद्गल परिवतन क्यो कहलाता है ?

२८ उत्तर–हे गौतम ! औदारिक शरीर में रहते हुए जीव ने, औदारिक शरीर योग्य द्रव्यो को औदारिक शरीरपने ग्रहण किये है, बद्ध किये है अर्थात् जीव प्रदेशो के साथ एकमेक किये है, शरीर पर रेणु के समान स्पृष्ट किये है, अथवा नवीन नवीन ग्रहण कर उन्हे पुष्ट किया है, उन्हे किया है, अर्थात पूर्व परिणाम की अपेक्षा परिणामान्तर किया है। प्रस्थापित (स्थिर) किया है, स्थापित किया ह, अभिनिविष्ट (सर्वथा लगे हुए) किये है, अभिसमन्वागत (सर्वथा प्राप्त) किये है, सभी अवयवो से उन्हे ग्रहण किया है, परिणामित (रसानुभूति से परिणामान्तर प्राप्त) किया है, निर्जीण (क्षीण रसवाले) किया ह, नि श्रित (जीव प्रदेशो से पृथक) किया है, नि श्रिप्ट (अपने प्रदेशो से परित्यक्त) किया है, इस लिए हे गौतम ! 'औदारिक पुदगल परिवतन' औदारिक पुद्गल परिवतन कहलाता है। इसी प्रकार वैक्रिय पुदगल परिवतन भी कहना चाहिए, परन्तु इतनी विशेषता है कि 'वैक्रिय शरीर में रहते हुए जीव ने वक्रिय शरीर योग्य ग्रहण आदि किया है,' इत्यादि कहना चाहिए। शेष पूर्ववत कहना चाहिए। इसी प्रकार यावत आनप्राण पुदगल परिवतन तक कहना चाहिए। किंतु वहाँ 'आनप्राण योग्य सव द्रव्यो को आनप्राणपने ग्रहणादि किया,' इत्यादि कहना चाहिए। शेष पूर्ववत जानना चाहिए।

विवचन–नरयिक भव म रहते हुए अनन्त वैक्रिय पुदगल परिवतन हुए हैं और भविष्यत्काल मे किसी के होग और किसी के नही होग। जिसक हाग, उसके जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ट सख्यात असख्यात अथवा अनन्त होगे।

वायकाय मनुष्य तियञ्च पञ्चेन्द्रिय और व्यन्तरादि मे वैक्रिय शरीर है। वहाँ वैक्रिय पुदगल परिवतन एकोत्तरिक कहन चाहिये और जहा अप्कायादि मे वैक्रिय शरीर नही है, वहाँ वैक्रिय पुदगल परिवतन भी नही है।

बद्धाइ, पुट्ठाइ, कडाइ, पट्ठवियाइ, णिविट्ठाइ, अभिणिविट्ठाइ, अभि- समण्णागयाइ, परियादियाइ, परिणामियाइ, णिज्जिणाइ, णिसि रियाइ, णिसिट्ठाइ भवति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ–'ओरा- लियपोग्गलपरियट्टे ओरालियपोग्गलपरियट्टे ।' एव वेउव्विय- पोग्गलपरियटे वि, णवर वेउव्विसरीरे वट्टमाणेण वेउव्वियसरीरप्पा- योग्गाइ, सेस त चेव सव्व, एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियटे, णवर आणापाणुपायोग्गाइ सव्वदव्वाइ आणापाणुत्ताए सेम त चेव ?

भावार्थ–२६ प्रश्न–हे भगवन् ! नैरयिक जीवो के नैरयिकभव में कितने औदारिक पुदगल परिवर्तन हुए हैं ?

२६ उत्तर–हे गौतम ! एक भी नहीं हुआ । (प्रश्न) हे भगवन ! आगे कितने होगे ? (उत्तर) हे गौतम ! एक भी नहीं होगा । इसी प्रकार यावत स्तनितकुमारपने तक कहना चाहिये ।

२७ प्रश्न–हे भगवन ! नैरयिक जीवो के पृथ्वीकायपने में औदारिक पुद्गल परिवतन कितने हुए हैं ?

२७ उत्तर–हे गौतम ! अनन्त हुए हैं । (प्रश्न) हे भगवन ! आगे कितने होगे ? (उत्तर) हे गौतम ! अनन्त होगे । इसी प्रकार यावत मनुष्यभव तक कहना चाहिए । जिस प्रकार नैरयिकभव में कहे हैं, उसी प्रकार वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिकभव में कहना चाहिए । इसी प्रकार यावत वैमानिको के वैमानिकभव तक सातो ही पुदगल परिवतन कहना चाहिए । जहाँ जो पुद्गल परिवर्तन हो, वहाँ अतीत (बीते हुए) और पुरस्कृत (भविष्यकालीन) अनन्त कहना चाहिए और जहाँ नहीं हो, वहाँ अतीत और पुरस्कृत दोनो नहीं कहना चाहिए । यावत (प्रश्न) हे भगवन ! वैमानिको के वैमानिकभव में कितने आनप्राणपुद्गल परिवतन हुए हैं ? (उत्तर) हे गौतम !

लियपोग्गल० अणंतगुणे, आणापाणुपोग्गल० अणतगुणे, मण-पोग्गल० अणतगुणे, वइपोग्गल० अणतगुणे, वेउव्वियपोग्गलपरि-यट्टणिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे ।

३१ प्रश्न-एएसि ण भते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टाणं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसा-हिया वा ?

३१ उत्तर-गोयमा ! सव्वत्थोवा वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा, वइपो० अणतगुणा, मणपो० अणतगुणा, आणापाणुपो० अणत-गुणा, ओरालियपो० अणतगुणा तेयापो० अणतगुणा कम्मगपो० अणतगुणा ।

॥ सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव जाव विहरइ ॥

॥ चउत्थो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-णिव्वत्तिज्जइ-निर्वतित-निष्पन्न होता है ।

भावार्थ-२९ प्रश्न-हे भगवन् ! औदारिक पुद्गल परिवर्तन कितने काल में निर्वतित-निष्पन्न होता है ?

२९ उत्तर-हे गौतम ! अनन्त उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल में निष्पन्न होता है । इसी प्रकार वैक्रिय पुदगल परिवतन यावत् आनप्राण पुद्गल परिवर्तन तक जानना चाहिए ।

३० प्रश्न-हे भगवन् ! औदारिक पुद्गल परिवतन निष्पतिकाल, वैक्रिय पुद्गल परिवतन निष्पतिकाल यावत् आनप्राण पुद्गल परिवतन निष्पतिकाल, इनमें कौनसा काल किस काल से अल्प यावत् विशेषाधिक है ?

तैजस और कार्मण शरीर सभी संसारी जीवो मे होते हैं, इसलिये सभी नारकादि जीवो मे तैजस कार्मण पुद्गल परिवर्तन भविष्यत्काल सम्बन्धी एकान्तरिक कहने चाहिये।

विकलेन्द्रियो मे मन पुद्गल परिवर्तन नही होता। 'विकलेन्द्रिय' शब्द यद्यपि बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय और चौइन्द्रिय जीवो के लिए रूढ है, तथापि यहाँ 'विकलेन्द्रिय' शब्द से एकेन्द्रिय जीवो का भी ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि उनमे भी इन्द्रियो की परिपूर्णता नही है और मन का अभाव है। अत उनमे मन पुद्गल परिवर्तन नही है।

वचन पुद्गल परिवर्तन नारकादि जीवो मे है, केवल एकेन्द्रिय जीवो मे नही है।

औदारिक पुद्गल परिवर्तन का अर्थ बतलाते हुए मूल पाठ मे 'गहियाइ बद्धाइ' आदि तेरह पद दिये गये हैं जिनका अर्थ भावार्थ मे कर दिया गया है। इनमे से पहले के चार पद औदारिक पुद्गलो को ग्रहण करने विषयक हैं। उनसे आगे के 'पट्ठवियाइ' आदि पाच पद स्थिति विषयक हैं। उनसे आगे के 'परिणामियाइ' आदि चार पद औदारिक पुद्गलो को आत्म प्रदेशो से पृथक करने विषयक हैं।

२९ प्रश्न–ओरालियपोग्गलपरियट्टे ण भते! केवइकालस्स णिव्वत्तिज्जइ ?

२९ उत्तर–गोयमा! अणंताहि उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं एवइकालस्स णिव्वित्तिज्जइ, एव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि, एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे वि।

३० प्रश्न–एयस्स ण भते! ओरालियपोग्गलपरियट्टणिव्वत्तणाकालस्स, वेउव्वियपोग्गल० जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टणिव्वत्तणाकालस्स कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?

३० उत्तर–गोयमा! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्टणिव्वत्तणाकाले, तेयापोग्गलपरियट्टणिव्वत्तणाकाले अणतगुणे, ओरा-

यह उनसे अन-त गुण है। उससे औदारिक पुदगल परिवतन निष्पतिकाल अन-त गुण है। क्योंकि औदारिक पुदगल अति स्थूल है, अत उन मे से अल्प का ही ग्रहण होता है और वे प्रदेश भी अल्पतर है। अत उनके ग्रहण करने पर एक समय मे अल्प अणु ही गृहीत हाते हैं। दूसरी वात यह है कि वे कामण और तैजस पुदगलो की तरह सब ससारी जीवो से निर-तर गृहीत नही होते, किंतु केवल औदारिक शरीरधारी जीवा द्वारा ही उनका ग्रहण होता है, अत बहुत काल मे उनका ग्रहण होता है। उससे आनप्राण पुदगल परिवतन निष्पति काल अन-त गुण है। यद्यपि आनप्राण पुदगल औदारिक पुदगलो से सूक्ष्म और बहु प्रदेशी है, इसलिये उनका अल्पकाल मे ही ग्रहण हो सकता है, तथापि अपर्याप्त अवस्था मे उनका ग्रहण न होने से तथा पर्याप्त अवस्था मे भी औदारिक शरीर पूदगलो की अपेक्षा उनका अल्प परिमाण मे ग्रहण होने उनका शीघ्र ग्रहण नही होता। इसलिये औदारिक पुदगल परिवतन निष्पतिकाल स आनप्राण पुदगल परिवतन निष्पतिकाल अनन्त गुण है। उससे मन पुदगल परिवतन निष्पतिकाल अन-त गुण है। यद्यपि आनप्राण पुदगलो से मन पुदगल सूक्ष्म और बहुप्रदेशी है, इसलिये अल्पकाल मे ही उनका ग्रहण हो मकता है, तथापि एकेंद्रियादि की कायस्थिति बहुत लम्बी है। उसमे चले जाने पर मन की प्राप्ति बहुत लम्बे समय मे हाती है। इसलिये मन पुदगल परिवतन निष्पतिकाल उनसे अन त गुण कहा गया है। उसस वचन पुदगल परिवतन निष्पतिकाल अन-त गुण है। यद्यपि मन की अपेक्षा वचन शीघ्र प्राप्त होता है, तथा द्वीन्द्रियादि अवस्था मे भी वचन होता है, तथापि मन द्रव्यो की अपेक्षा भाषा द्रव्य अति स्थूल है। इसलिये एक समय मे उनका अल्प परिमाण मे ही ग्रहण होता है, अत मन पुदगल परिवतन निष्पतिकाल से वचन पुदगल परिवतन निष्पति काल अन-त गुण है। इससे वक्रिय पुदगल परिवतन निष्पतिकाल अन-त गुण है। क्योंकि वैक्रिय शरीर बहुत लम्ब समय में प्राप्त हाता है।

इसके पश्चात इन पुदगल परिवतनो का पारस्परिक अल्प बहुत्व बतलाया गया है। वैक्रिय पुदगल परिवतन सबसे थाडे है क्योंकि वे बहुत काल में निष्पन्न हाते है। उससे वचन पुदगल परिवतन अन-त गुण हैं, क्योंकि वे अल्पतरकाल में ही निष्पन्न होते हैं। इसी रीति से आगे आगे का भी अल्प बहुत्व समझ लेना चाहियें।

॥ बारहवें शतक का चतुर्थ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

३० उत्तर-हे गौतम ! सब से थोडा कार्मण पुद्गल परिवर्तन निष्पत्तिकाल है, उससे तैजस पुद्गल परिवर्तन निष्पत्तिकाल अनन्त गुण है, उससे औदारिक पुद्गल परिवर्तन निष्पत्तिकाल अनन्त गुण है, उससे आनप्राण पुद्गल परिवर्तन निष्पत्तिकाल अनन्त गुण है, उससे मन पुद्गलपरिवर्तन निष्पत्तिकाल अनन्त गुण है, उससे वचनपुद्गलपरिवर्तन निष्पत्तिकाल अनन्त गुण है और उससे वैक्रिय पुद्गल परिवर्तन निष्पत्तिकाल अनन्त गुण है ।

३१ प्रश्न-हे भगवन् ! औदारिक पुद्गल परिवर्तन यावत् आनप्राण पुद्गल परिवर्तन,इनमें कौन पुद्गल परिवर्तन किससे अल्प यावत् विशेषाधिक है ?

३१ उत्तर-हे गौतम ! सबसे थोडा वैक्रिय पुद्गल परिवर्तन है । उससे वचन पुद्गल परिवर्तन अनन्त गुण है, उससे मन पुद्गल परिवर्तन अनन्त गुण है, उससे आनप्राण पुद्गल परिवर्तन अनन्त गुण है, उससे औदारिक पुद्गल परिवर्तन अनन्त गुण है, उससे तैजस पुद्गल परिवर्तन अनन्त गुण है और उससे कार्मण पुद्गल परिवर्तन अनन्त गुण है ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । ऐसा कह कर गौतम स्वामी यावत् विचरते है ।

विवेचन-औदारिक पुदगल परिवर्तन आदि अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल मे निष्पन्न होते है । क्योकि पुदगल अनन्त है और उनका ग्राहक एक जीव होता है । तथा पुदगल परिवर्तन मे पूर्व गहीत पुदगलो की गणना नही की जाती ।

इन पुद्गल परिवर्तनो के निष्पत्ति काल का अल्प-बहुत्व बतलाते हुए कहा गया है कि कार्मण पुदगल परिवर्तन निष्पत्तिकाल (निवर्तनाकाल) सब से थोडा है । क्योकि कार्मण पुदगल सूक्ष्म हैं और बहुत से परमाणुओ से निष्पन्न होता है, इसलिये वे एक ही बार मे बहुत से ग्रहण किये जाते हैं तथा नैरयिकादि सभी अवस्था मे रहा हुआ जीव, प्रति समय उनको ग्रहण करता है, इसलिये स्वल्पकाल मे ही उन सभी पुदगलो का ग्रहण हो जाता है । उससे तैजस पुद्गल परिवर्तन निष्पत्तिकाल अनन्त गुण है, क्योकि तैजस पुद्गल स्थूल है, अत उनमे एक बार मे अल्प पुदगल का ग्रहण होता है । अल्प प्रदेशो से निष्पन्न होने के कारण एक बार मे भी उन अल्प अणुओ का ही ग्रहण होता है, इसलिये

चाण्डिक्य, भण्डन और विवाद-ये सभी कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शवाले कहे है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! ये पाच वर्ण, दो गन्ध, पाच रस और चार स्पर्श वाले कहे हैं।

३ प्रश्न-हे भगवन ! मान, मद, दप, स्तम्भ, गर्व, अत्युत्क्रोश, परपरिवाद, उत्कर्ष, अपकर्ष, उन्नत, उन्नाम, दुर्नाम-ये सभी कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्शवाले कहे है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! ये पाच वर्ण, दो गन्ध, पाच रस और चार स्पर्श वाले कहे हैं।

विवेचन-प्राणातिपात-जीव हिंसा से उत्पन्न होने वाला कम अथवा जीव हिंसा का उत्पन्न करनेवाला चारित्र मोहनीय कर्म भी उपचार से प्राणातिपात कहलाता है। क्रोध लाभ, भय और हास्य के वश असत्य, अप्रिय अहितकारी वचन कहना 'मृषावाद' है। स्वामी की आज्ञा के बिना कुछ भी लेना 'अदत्तादान' है। विषय वासना से प्रेरित स्त्री पुरुष के सयोग को 'मैथुन' कहते हैं। धन कञ्चनादि बाह्य परिग्रह है और मूर्च्छा ममत्व होना-भाव परिग्रह है-ये पाचो पाप पुद्गल रूप होने से इनमे पाच वर्ण दो गन्ध पाच रस और चार (स्निग्ध रूक्ष, शीत और उष्ण) स्पर्श होते हैं। इसी प्रकार क्रोध और मान मे भी होते हैं। यहा क्रोध के दस पर्यायवाची शब्द कहे गये हैं। क्रोध के परिणाम का उत्पन्न करनेवाले कर्म का 'क्रोध' कहते हैं। इन दस नामो मे 'क्रोध' यह सामान्य नाम है और कोपादि उसके विशेष नाम हैं। १ क्रोध २ कोप क्रोध के उदय से अपने स्वभाव से चलित होना 'कोप' कहलाता है, ३ रोष-क्रोध की परम्परा, ४ दोष-अपने आपको तथा दूसरे को दूषण देना अथवा द्वेष-अप्रीति ५ अक्षमा-दूसरे के द्वारा किये हुए अपराध का सहन नही करना, ६ सज्वलन-बार बार क्रोध से प्रज्वलित होना ७ कलह-वाग्युद्ध अर्थात परस्पर अनुचित शब्द बोलना, ८ चाण्डिक्य-रौद्र रूप धारण करना, ९ भण्डन-दण्ड, शस्त्र आदि से युद्ध करना और १० विवाद-परस्पर विरुद्ध वचन बोल कर विवाद करना-झगडा करना। यह इन शब्दो का शब्दार्थ है अन्यथा ये सभी शब्द क्रोध के एकार्थक हैं।

मान-अपने आपको दूसरो से उत्कृष्ट समझना 'मान' कहलाता है। इसके साथक बारह नाम हैं-१ मान-अभिमान के परिणाम का उत्पन्न करने वाले कषाय को 'मान' कहते

शतक १२ उद्देशक ५

पाप कर्म के वर्णादि पर्याय

१ प्रश्न–रायगिहे जाव एव वयासी–अह भते ! १ पाणाइवाए, २ मुसावाए, ३ अदिण्णादाणे, ४ मेहुणे, ५ परिग्गहे–एस णं कइवण्णे, कइगधे, कइरसे, कइफासे, पण्णत्ते ?

१ उत्तर–गोयमा ! पचवण्णे, दुगधे, पचरसे, चउफासे, पण्णत्ते ।

२ प्रश्न–अह भते ! १ कोहे, २ कोवे, ३ रोसे, ४ दोसे, ५ अखमा, ६ सजलणे, ७ कलहे, ८ चडिक्के, ९ भडणे, १० विवादे-एस णं कइवण्णे, जाव कइफासे पण्णत्ते ?

२ उत्तर–गोयमा ! पचवण्णे, दुगधे, पचरसे, चउफासे पण्णत्ते ।

३ प्रश्न–अह भते ! १ माणे, २ मए, ३ दप्पे, ४ थभे, ५ गव्वे, ६ अत्तुक्कोसे, परपरिवाए, ८ उक्कासे, ९ अवक्कासे, १० उण्णत्ते, ११ उण्णामे, १२ दुण्णामे–एस ण कइवण्णे ४ ?

३ उत्तर–गोयमा ! पचवण्णे, जहा कोहे तहेव ।

भावार्थ–१–राजगृह नगर में यावत् गौतम स्वामी ने इस प्रकार पूछा–हे भगवन् ! प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और परिग्रह–ये सभी कितने वण, गध, रस और स्पश वाले हैं ?

१ उत्तर–हे गौतम ! ये पाच वण, दो गध, पाच रस और चार स्पश वाले कहे हैं ।

२ प्रश्न–हे भगवन् ! क्रोध, कोप, रोष, दोष, अक्षमा, सज्वलन, कलह,

सल्ले-एस ण कइवण्णे ?

६ उत्तर-जहेव कोहे तहेव चउफासे।

कठिन शब्दार्थ-पेज्ज-प्रेम-राग, दोसे-द्वेष।

भावार्थ-४ प्रश्न-हे भगवन् ! माया, उपधि, निकृति, वलय, गहन, नूम, कल्क, कुरूपा, जिह्मता, किल्विष, आदरणता (आचरणता) गूहनता, वञ्चनता, प्रतिकुञ्चनता और सातियोग-इन सभी में कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श हैं ?

४ उत्तर-हे गौतम ! इन सभी का कथन क्रोध के समान जानना चाहिए।

५ प्रश्न-हे भगवन ! लोभ, इच्छा, मूर्च्छा, कांक्षा, गृद्धि, तृष्णा, भिध्या, अभिध्या, आशसना, प्रार्थना, लालपनता, कामाशा, भोगाशा, जीविताशा, मरणाशा और नन्दिराग-इनमें कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श हैं ?

५ उत्तर-हे गौतम ! क्रोध के समान समझना चाहिए।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! प्रेम-राग, द्वेष, कलह यावत् मिथ्यादर्शन शल्य, इन में कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श हैं ?

६ उत्तर-६ उत्तर-हे गौतम ! क्रोध के समान जानो।

विवेचन-१ माया-यह 'माया' का सामान्य वाचक नाम है। 'उपधि' आदि उसके भेद हैं। २ उपधि-किसी को ठगने के लिए प्रवृत्ति करना। ३ निकृति-किसी का आदर सत्कार करके फिर उसके साथ 'माया' करना अथवा एक मायाचार छिपाने के लिए दूसरा मायाचार करना। ४ वलय-किसी को अपने जाल में फँसाने के लिए मीठे वचन बोलना। ५ गहन-दूसरों को ठगने के लिए अव्यक्त शब्दों का उच्चारण करना अथवा ऐसे गहन (गूढ) अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग करके जाल रचना कि दूसरे की समझ में ही न आवे। ६ नूम-मायापूर्वक नीचता का आश्रय लेना। ७ कल्क-हिंसाकारी उपायों से दूसरे को ठगना। ८ कुरूपा-निन्दित रीति से मोह उत्पन्न करके ठगने की प्रवृत्ति करना। ९ जिह्मता-कुटिलता पूर्वक ठगने की प्रवृत्ति। १० किल्विष-किल्विषी जैसी प्रवृत्ति करना। ११ आदरणता-(आचरणता) मायाचार से किसी का आदर करना अथवा ठगाई के लिए अनेक प्रकार की क्रियाएँ करना। १२ गूहनता-अपने स्वरूप को छिपाना। १३ वञ्चनता-दूसरे को ठगना।

हैं । २ मद-मद करना या हर्ष करना, ३ दर्प (दर्पता) घमण्ड मे चूर होना, ४ स्तंभ-नम्र न होना, स्तभ की तरह कठोर बने रहना । ५ गर्व-अहकार, ६ अत्युत्क्रोश-अपने को दूसरो से उत्कृष्ट मानना-बताना, ७ परपरिवाद-दूसरे की निन्दा करना । अथवा 'परपरिपात' दूसरे को उच्च गुणो से पतित करना, ८ उत्कर्ष-क्रिया से अपने आपको उत्कृष्ट मानना । अथवा अभिमान पूर्वक अपनी समृद्धि प्रकट करना, ९ अपकर्ष अपने से दूसरे को तुच्छ बताना, १० उन्नत-विनय का त्याग करना, अथवा उन्नय' अभिमान से नीति का त्याग कर अनीति मे प्रवृत्त होना, ११ उन्नाम-वन्दन योग्य पुरुष को भी वन्दन न करना, अथवा अपने को नमस्कार करने वाले पुरुष को न नमना एव सदभाव न रखना और १२ दुर्नाम-वन्दनीय पुरुष को भी अभिमानपूर्वक बुरे ढग से वदन करना । ये 'स्तभ' आदि मान के कार्य हैं, अथवा ये सभी शब्द 'मान' के एकार्थक शब्द हैं ।

४ प्रश्न-अह भते ! १ माया, २ उवही, ३ णियडी ४ वलये, ५ गहणे, ६ णूमे, ७ कक्के, ८ कुरूए, ९ जिम्हे, १० किव्विसे, ११ आयरणया, १२ गूहणया, १३ वचणया, १४ पलिउचणया, १५ साइजोगे य-एस ण कइवण्णे ४ पण्णत्ते ?

४ उत्तर-गोयमा ! पचवण्णे, जहेव कोहे ।

५ प्रश्न-अह भते ! १ लोभे २ इच्छा ३ मुच्छा ४ कखा ५ गेही ६ तण्हा, ७ भिज्झा ८ अभिज्झा ९ आसासणया १० पत्थणया ११ लालप्पणया १२ कामासा १३ भोगासा १४ जीवियासा १५ मरणासा १६ णदीरागे-एस ण कइवण्णे ४ ?

५ उत्तर-जहेव कोहे ।

६ प्रश्न-अह भते ! पेज्जे, दोसे, कलहे, जाव मिच्छादसण-

विरति आदि आत्मपरिणाम

७ प्रश्न—अह भंते ! १ पाणाइवायवेरमणे, जाव ५ परिग्गह-वेरमणे, ६ कोहविवेगे जाव १८ मिच्छादंसणसल्लविवेगे—एस णं कइवण्णे, जाव कइफासे पण्णत्ते ?

७ उत्तर—गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे पण्णत्ते ।

८ प्रश्न—अह भंते ! १ उप्पत्तिया २ वेणइया ३ कम्मिया ४ परिणामिया—एस णं कइवण्णा ?

८ उत्तर—तं चेव जाव अफासा पण्णत्ता ।

९ प्रश्न—अह भंते ! १ उग्गहे २ ईहा ३ अवाए ४ धारणा—एस णं कइवण्णा ?

९ उत्तर—एवं चेव जाव अफासा पण्णत्ता ।

१० प्रश्न—अह भंते ! १ उट्ठाणे २ कम्मे ३ बले ४ वीरिए ५ पुरिसक्कारपरक्कमे—एस णं कइवण्णे ?

१० उत्तर—तं चेव जाव अफासे पण्णत्ते ।

कठिन शब्दार्थ—उग्गहे—अवग्रह उट्ठाणे—उत्थान ।

भावार्थ—७ प्रश्न—हे भगवन् ! प्राणातिपात विरमण यावत् परिग्रह विरमण, क्रोधविवेक (क्रोध त्याग) यावत् मिथ्यादर्शनशल्यविवेक—इन सभी के कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श हैं ?

७ उत्तर—हे गौतम ! ये सभी वर्ण, गंध, रस और स्पर्श से रहित हैं ।

१४ प्रतिकुञ्चनता–सरल भाव से कहे हुए वाक्य का खण्डन करना या विपरीत अर्थ लगाना और १५ सातियोग–उत्तम पदार्थ के साथ हीन पदार्थ मिला देना। ये सभी शब्द 'माया' के एकार्थक शब्द हैं।

मूर्च्छा–ममत्व को 'लोभ' कहते हैं–१ लोभ–यह 'लोभ' कषाय का सामान्यवाची नाम है। 'इच्छा' आदि इसके विशेष भेद हैं। २ इच्छा–किसी वस्तु को प्राप्त करने की अभिलाषा। ३ मूर्च्छा–प्राप्त की हुई वस्तुओं की रक्षा के लिए निरन्तर अभिलाषा करना। ४ कांक्षा–अप्राप्त वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा। ५ गृद्धि–प्राप्त वस्तुओं पर आसक्ति भाव। ६ तृष्णा–प्राप्त पदार्थ का व्यय न हो ऐसी इच्छा। ७ भिध्या–विषयों का ध्यान, विषयों में एकाग्रता। ८ अभिध्या–चित्त की चञ्चलता। ९ आशंसना–अपने इष्ट पदार्थ की इच्छा। १० प्रार्थना–दूसरों से इष्ट पदार्थ की याचना। ११ लालपनता–विशेष रूप से बोल कर प्रार्थना करना। १२ कामाशा–इष्ट शब्द और इष्ट रूप को प्राप्त करने की इच्छा। १३ भोगाशा–इष्ट गन्धादि को प्राप्त करने की इच्छा करना। १४ जीविताशा–जीवन की अभिलाषा करना। १५ मरणाशा–विपत्ति के समय मरण की अभिलाषा करना। १६ नन्दी राग–विद्यमान सम्पत्ति पर राग भाव होना अथवा नन्दी अर्थात् वाञ्छित अर्थ की प्राप्ति और राग अर्थात् विद्यमान पर रागभाव–ममत्वभाव होना।

'पेज्ज' प्रेम–पुत्रादि विषयक स्नेह। द्वेष–अप्रीति। कलह–प्रेम हास्यादि से उत्पन्न क्लेश अथवा वाग्युद्ध। अभ्याख्यान–प्रकट रूप से अविद्यमान दोषों का आरोप लगाना–झूठा कलंक लगाना। पैशुन्य–पीठ पीछे किसी के दोष प्रकट करना–चुगली करना। परपरिवाद–दूसरे की बुराई करना–निन्दा करना। अरतिरति–मोहनीय कर्म के उदय से प्रतिकूल विषयों की प्राप्ति होने पर जो उद्वेग होता है वह 'अरति' है और अनुकूल विषयों के प्राप्त होने पर चित्त में जो आनन्द रूप परिणाम उत्पन्न होता है वह 'रति' है। जीव को जब एक विषय में रति होती है, तब दूसरे विषय में स्वतः अरति हो जाती है। यही कारण है कि एक वस्तु विषयक रति को ही दूसरे विषय की अपेक्षा से अरति कहते हैं। इसलिये दोनों को एक पापस्थानक गिना है। मायामृषा–मायापूर्वक झूठ बोलना। मिथ्यादर्शन शल्य–श्रद्धा का विपरीत होना। जैसे–शरीर में चुभा हुआ शल्य सदा कष्ट देता है इसी प्रकार मिथ्यादर्शन भी आत्मा को दुःखी बनाये रखता है।

प्राणातिपात से लेकर मिथ्यादर्शनशल्य तक ये अठारह ही पापस्थान पाँच वर्ण, दो गंध, पाँच रस और चार स्पर्श वाले हैं।

अवाय–ईहा से जाने हुए पदार्थो मे निश्चयात्मक ज्ञान होना अवाय कहलाता है।

धारणा–अवाय से जाना हुआ पदार्थो का ज्ञान इतना दढ हो जाय कि कालान्तर मे भी उसका विस्मरण न हो, तो उसे धारणा कहते हैं।

वीर्यान्तिराय कम के क्षय या क्षयोपशम से उत्पन्न होने वाले जीव के परिणाम विशेपो को उत्थानादि कहत हैं। उत्थान–शारीरिक चेप्टा विशेप, कम–भ्रमणादि क्रिया। वल–शारीरिक सामथ्य। वीय–जीव प्रभाव अर्थात आत्मिक शक्ति। पुरुपकारपराक्रम–स्वाभिमान विशप।

औत्पत्तिकी बुद्धि आदि चार, अवग्रहादि चार और उत्थानादि पाच ये सभी जीव के उपयोग विशप हैं। अत अमूत्त होने मे वर्णादि रहित हैं।

अवकाशान्तरादि मे वर्णादि

११ प्रश्न–सत्तमे णं भते ! उवासतरे कइवण्णे ?

११ उत्तर–एव चेव जाव अफासे पण्णत्ते।

१२ प्रश्न–मत्तमे ण भते ! तणुवाए कइवण्णे ?

१२ उत्तर–जहा पाणाइवाए, णवर अट्ठफासे पराणत्ते, एव जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए, घणोदही, पुढवी। छट्ठे उवासतरे अवण्णे, तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी–एयाइ अट्ठफासाइ, एव जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्व। जवुद्दीवे दीवे जाव सयभुरमणे समुद्दे, सोहम्मे कप्पे, जाव ईसिपब्भारा पुढवी, णेरइयावासा, जाव वेमाणियावासा–एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि।

८ प्रश्न–हे भगवन् ! औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कार्मिकी और पारिणामिकी बुद्धि में कितने वण, गन्ध, रस और स्पश हैं ?

८ उत्तर–हे गौतम ! ये वण, गन्ध, रस और स्पर्श से रहित हैं ।

९ प्रश्न–हे भगवन् ! अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा–ये सभी कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाले हैं ?

९ उत्तर–हे गौतम ! ये सभी वण, गन्ध, रस और स्पर्श से रहित हैं ।

१० प्रश्न–हे भगवन् ! उत्थान, कर्म, बल, वीर्य और पुरुषकारपराक्रम–ये सभी कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पश वाले हैं ?

१० उत्तर–हे गौतम ! ये सभी वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श से रहित हैं ।

विवेचन–प्राणातिपात विरमणादि जीव के उपयोग स्वरूप हैं और जीव का स्वरूप अमूर्त्त है, इसलिये अठारह पापो का विरमण, वर्णादि रहित है ।

औत्पत्तिकी बुद्धि–जो बुद्धि बिना देखे, सुने और सोचे ही पदार्थों को सहसा ग्रहण कर के काय को सिद्ध कर देती है, उसे औत्पत्तिकी बुद्धि कहते हैं ।

वनयिकी बुद्धि-गुरु महाराज की सेवा शुश्रूषा करने मे प्राप्त होने वाली बुद्धि–वैनयिकी बुद्धि है ।

कार्मिकी बुद्धि–कम अर्थात सतत अभ्यास और विचार से विस्तृत होने वाली बुद्धि कार्मिकी है । जैसे–सुनार, किसान आदि कम करते करते अपने काय मे उत्तरोत्तर विशेष दक्ष हो जाते हैं ।

पारिणामिकी बुद्धि–अति दीघकाल तक पूर्वापर पदार्थों के देखने आदि से उत्पन्न होने वाला आत्मा का धम परिणाम कहलाता है, उस परिणाम के निमित्त से हाने वाली बुद्धि को पारिणामिकी बुद्धि कहते हैं । अर्थात वयोवद्ध व्यक्ति को बहुत काल तक ससार के अनुभव से प्राप्त होने वाली बुद्धि पारिणामिकी बुद्धि कहलाती है ।

अवग्रह–इन्द्रिय और पदार्थों के याग्य स्थान मे रहने पर सामा य प्रतिभास रूप दशन के बाद होने वाले अवा तर सत्ता सहित वस्तु के सव प्रथम ज्ञान को अवग्रह कहते हैं । जसे–दूर से किसी चीज का ज्ञान होना ।

ईहा–अवग्रह से जाने हुए पदाथ के विषय मे उत्पन्न हुए सशय को दूर करते हुए विशेष की जिज्ञासा को 'ईहा' कहते हैं ।

पृथ्वी तक जानना चाहिये । जम्बूद्वीप यावत् स्वयम्भूरण समुद्र, सौधर्मकल्प यावत् ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी, नैरयिकावास यावत् वैमानिकवास, ये सब आठ स्पर्शवाले है ।

१३ प्रश्न–हे भगवन् ! नैरयिको में कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श है ?

१३ उत्तर–हे गौतम ! वैक्रिय और तैजस पुद्गलो की अपेक्षा वे पाच-वर्ण, पाच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्शवाले है । कार्मण पुद्गलो की अपेक्षा, पाच वर्ण, पाच रस, दो गन्ध और चार स्पर्शवाले है । जीव की अपेक्षा वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श रहित है । इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमारो तक कहना चाहिये ।

१४ प्रश्न–हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श-वाले है ?

१४ उत्तर–हे गौतम ! औदारिक और तैजस पुद्गलो की अपेक्षा पाच-वर्ण, पाच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श वाले है । कार्मण की अपेक्षा और जीव की अपेक्षा पूर्ववत्–नैरयिको के कथन के समान जानना चाहिये । इसी प्रकार यावत् चौइन्द्रिय, तक जानना चाहिये । परन्तु इतनी विशेषता है कि वायुकायिक औदारिक वैक्रिय और तैजस पुद्गलो की अपेक्षा पाचवर्ण, पाचरस, दो गन्ध और आठ स्पर्श वाले है । शेष नैरयिको के समान जानना चाहिये । पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक जीवो का कथन भी वायुकायिको के समान जानना चाहिये ।

विवेचन–पहली और दूसरी नरक पृथ्वी के बीच का आकाश खण्ड प्रथम 'अवकाशान्तर' कहलाता है उसकी अपेक्षा सप्तम नरक पृथ्वी के नीचे का आकाश खण्ड 'सप्तम अवकाशान्तर' कहलाता है । उसके ऊपर सातवा घनवात है । उसके ऊपर सातवा घनोदधि है और उसके ऊपर सातवी नरक पृथ्वी है । इसी क्रम से प्रथम नरक पृथ्वी तक जानना चाहिये । तनुवात आदि पौद्गलिक होने से मूर्त है, अतएव वे वर्णादि वाले हैं । बादर परिणाम वाले होने से इनमे आठ स्पर्श होते हैं ।

१५ प्रश्न–मणुस्साणं पुच्छा ।

१५ उत्तर–ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयगाइं पडुच्च पंच-

१३ प्रश्न–णेरइया ण भते ! कइवण्णा, जाव कइफासा पण्णत्ता ।

१३ उत्तर–गोयमा ! वेउव्विय तेयाइ पडुच्च पचवण्णा, पचरसा, दुग्गधा, अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मग पडुच्च पचवण्णा, पचरसा, दुगधा, चउफासा पण्णत्ता, जीव पडुच्च अवण्णा, जाव अफासा पण्णत्ता, एव जाव थणियकुमारा ।

१४ प्रश्न–पुढविक्काइयाणं पुच्छा ।

१४ उत्तर–गोयमा ! ओरालिय-तेयगाइ पडुच्च पचवण्णा, जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मग पडुच्च जहा णेरइयाण, जीव पडुच्च तहेव, एव जाव चउरिदिया । णवर वाउक्काइया ओरालिय-वेउव्विय-तेयगाइ पडुच्च पचवण्णा, जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, सेस जहा णेरइयाण । पचिदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउक्काइया ।

कठिन शब्दार्थ–उवासतरे–अवकाशान्तर ।

भावार्थ–११ प्रश्न–हे भगवन् ! सातवे अवकाशान्तर में कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श है ?

११ उत्तर–हे गौतम ! वह वर्ण,गन्ध, रस और स्पर्श रहित है ।

१२ प्रश्न–हे भगवन् ! सातवा तनुवात, कितने वर्णादि है युक्त ?

१२ उत्तर–हे गौतम ! प्राणातिपात के समान कहना चाहिये, किन्तु इतनी विशेषता है कि यह आठ स्पर्शवाला है। सातवे तनुवात के समान सातवा घनवात घनोदधि और सातवी पृथ्वी कहनी चाहिये । छठा अवकाशान्तर वर्णादि रहित है । छठा तनुवात, घनवात, घनोदधि और छठी पृथ्वी, ये सब आठ स्पर्श वाले है । जिस प्रकार सातवीं पृथ्वी की वक्तव्यता कही है, उसी प्रकार यावत् प्रथम

स्पर्श रहित हैं। पुद्गलास्तिकाय पाच वर्ण, पाच रस, दो गन्ध, और आठ स्पर्श वाला है। ज्ञानावरणीय यावत् अन्तराय–ये आठ कर्म पाच वर्ण, पाच रस, दो गन्ध और चार स्पर्श वाले हैं।

१६ प्रश्न–हे भगवन् ! कृष्ण लेश्या कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाली है ?

१६ उत्तर–हे गौतम ! द्रव्य लेश्या की अपेक्षा पाच वर्ण, पाच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श वाली है और भाव लेश्या की अपेक्षा वर्णादि रहित है। इसी प्रकार यावत् शुक्ल लेश्या तक जानना चाहिये। सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सम्यग-मिथ्यादृष्टि, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन, अभिनिबोधिक (मति) ज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुत-अज्ञान, विभगज्ञान, आहारसज्ञा, भयसज्ञा, मैथुनसज्ञा, और परिग्रहसज्ञा, ये सभी वर्णादि रहित हैं। औदारिक शरीर, वैक्रियशरीर, आहारक शरीर और तैजस-शरीर ये आठ स्पर्श वाले हैं और कार्मणशरीर, मनयोग और वचनयोग, ये चार स्पर्श वाले हैं। कामभोग आठ स्पर्शवाले हैं। साकारोपयोग और अनाकारोप-योग ये दोनो वर्णादि रहित हैं।

१७ प्रश्न–सव्वदव्वा ण भते ! कइवण्णा–पुच्छा ।

१७ उत्तर–गोयमा ! अत्थेगइया सव्वदव्वा पचवण्णा, जाव अट्ठफासा पण्णत्ता अत्थेगइया सव्वदव्वा पचवण्णा चउफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया सव्वदव्वा एगवण्णा एगगधा एगरसा दुफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया सव्वदव्वा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता। एव सव्वपएसा वि सव्वपज्जवा वि तीयद्धा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता, एव अणागयद्धा वि एव सव्वद्धा वि ।

वण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मग जीव च पडुच्च जहा णेरइयाण, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा णेरइया। धम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए-एए सव्वे अवण्णा जाव अफासा, णवर पोग्गलत्थिकाए पचवण्णे, पचरसे, दुगधे अट्ठफासे पण्णत्ते। णाणावरणिज्जे जाव अतराइए-एयाणि चउफासाणि।

१६ प्रश्न-कण्हलेसा ण भते ! कइवण्णा-पुच्छा।

१६ उत्तर-दव्वलेस पडुच्च पचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, भावलेस पडुच्च अवण्णा ४ एव जाव सुक्कलेस्सा। सम्मद्दिट्ठि ३, चक्खुदसणे ४, आभिणिबोहियणाणे ५ जाव विभगणाणे, आहारसण्णा, जाव परिग्गहसण्णा-एयाणि अवण्णाणि ४। ओरालियसरीरे, जाव तेयगसरीरे-एयाणि अट्ठफासाणि। कम्मगसरीरे चउफासे, मणजोगे, वयजोगे य चउफासे कायजोगे अट्ठफासे। सागारोवओगे य अणागारोवओगे य अवण्णा।

भावार्थ-१५ प्रश्न-हे भगवन् ! मनुष्य कितने वण, गध, रस और स्पश वाले हैं।

१५ उत्तर-हे गौतम ! औदारिक, वैक्रिय, आहारक, और तैजस पुदगलो की अपेक्षा पाच वण, पाच रस, दो गन्ध, और आठ स्पश वाले ह। कामण पुदगल और जीव की अपेक्षा नैरयिको के समान जानना चाहिए और नैरयिको के समान ही वाणव्यतर, ज्योतिषी और वैमानिको का कथन करना चाहिये। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और काल-ये वर्ण, गन्ध, रस,और

स्पर्श रहित है। पुद्गलास्तिकाय पाच वर्ण, पाच रस, दो गन्ध, और आठ स्पर्श वाला है। ज्ञानावरणीय यावत् अन्तराय-ये आठ कर्म पाच वर्ण, पाच रस, दो ग ध और चार स्पश वाले हैं।

१६ प्रश्न-हे भगवन् ! कृष्ण लेश्या कितने वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श वाली है ?

१६ उत्तर-हे गौतम ! द्रव्य लेश्या की अपेक्षा पाच वर्ण, पाच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श वाली है और भाव लेश्या की अपेक्षा वर्णादि रहित है। इसी प्रकार यावत् शुक्ल लेश्या तक जानना चाहिये। सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सम्यग्-मिथ्यादृष्टि, चक्षुदशन, अचक्षुदर्शन, अवधिदशन, केवलदर्शन, अभिनिबोधिक (मति) ज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुत-अज्ञान, विभगज्ञान, आहारसज्ञा, भयसज्ञा, मथुनसज्ञा, और परिग्रहसज्ञा, ये सभी वर्णादि रहित है। औदारिक शरीर, वैक्रियशरीर, आहारक शरीर और तैजस-शरीर ये आठ स्पर्श वाले है और कार्मणशरीर, मनयोग और वचनयोग, ये चार स्पश वाले है। कामभोग आठ स्पर्शवाले है। साकारोपयोग और अनाकारोप-योग ये दोनो वर्णादि रहित है।

१७ प्रश्न-सव्वदव्वा ण भते ! कइवण्णा-पुच्छा।

१७ उत्तर-गोयमा ! अत्थेगइया सव्वदव्वा पचवण्णा, जाव अट्ठफासा पण्णत्ता अत्थेगइया सव्वदव्वा पचवण्णा चउफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया सव्वदव्वा एगवण्णा एगगधा एगरसा दुफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया सव्वदव्वा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता। एव सव्वपएसा वि सव्वपज्जवा वि तीयद्धा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता, एव अणागयद्धा वि एव सव्वद्धा वि।

१८ प्रश्न–जीवे ण भते ! गब्भ वक्कममाणे कइवण्ण, कइ-गध, कइरस कइफास परिणाम परिणमइ ?

१८ उत्तर–गोयमा ! पचवण्ण, पचरस, दुगध, अट्ठफास परि-णाम परिणमइ ।

भावार्थ–१७ प्रश्न–हे भगवान् ! सभी द्रव्य कितने वर्णादि वाले हैं ?

१७ उत्तर–हे गौतम ! कुछ द्रव्य पाच वर्ण, पाच रस, दो गन्ध, और आठ स्पश वाले हैं, कुछ पाच वण, पाच रस, दो गन्ध, और चार स्पर्शवाले हैं और कुछ एक वर्ण, एक रस, एक गन्ध, और दो स्पश वाले हैं, तथा कुछ द्रव्य वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श से रहित हैं। इसी प्रकार सभी प्रदेश, सभी पर्याय, अतीत काल, अनागत काल और समस्त काल–ये सब वर्ण, गन्ध, रस, और स्पश से रहित हैं।

१८ प्रश्न–हे भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता हुआ जीव कितने वण, गध, रस और स्पर्श वाले परिणाम से परिणत होता है ?

१८ उत्तर–हे गौतम ! वह पाच वण, पाच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श वाले परिणाम से परिणत होता है ।

विवचन–लेश्या दो प्रकार की है,–द्रव्य लेश्या और भाव लेश्या । द्रव्य लेश्या बादर पुद्गल परिणाम रूप होने से वह पाच वण पाच रस दो गन्ध आठ और स्पश वाली होती है । भावलेश्या आन्तरिक परिणामरूप होने से वर्णादि रहित होती है ।

बादर पुदगल पाच वण, पाच रस, दो गन्ध और आठ स्पश वाले होते हैं और सूक्ष्म पुदगल द्रव्य पाच वण पाच रस दो गन्ध और चार स्पश वाले होते है । परमाणु पुदगल एक वण, एक रस, एक गन्ध और दो स्पश वाला होता है । दो स्पश इस प्रकार है स्निग्ध और उष्ण अथवा स्निगध और शीत अथवा रूक्ष और शीत अथवा रूक्ष और उष्ण ।

द्रव्य के निर्विभाग अश को 'प्रदेश' कहते हैं और द्रव्य के धम को 'पर्याय' कहते हैं । मूत्त द्रव्यो के प्रदेश और पर्याय उन्ही के समान वर्णादि वाले होते हैं । अमूत्त द्रव्यो के प्रदेश और पर्याय भी उन्ही द्रव्यो के समान वर्णादि रहित होते हैं । अतीत, अनागत और सव काल, ये अमूत्त होने से वर्णादि रहित हैं ।

निष्कर्ष यह है कि १८ पाप, ८ कर्म, कार्मण शरीर, मनयोग, वचनयोग और सूक्ष्म पुद्गलास्तिकाय का स्कन्ध-ये तीस प्रकार के स्कन्ध, पाच वर्ण, दो गन्ध, पाच रस और चार स्पर्श (शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष) युक्त होते हैं।

६ द्रव्यलेश्या, ४ शरीर (औदारिक वैक्रिय, आहारक और तैजस) घनोदधि घन-वात, तनुवात, काययोग, और बादर पुद्गलास्तिकाय का स्कन्ध, इन पन्द्रह प्रकार के स्कन्धो मे पाच वर्ण, दो गन्ध, पाच रस और आठ स्पर्श पाये जाते हैं।

१८ पाप से विरति, १२ उपयोग (५ ज्ञान ३ अज्ञान और ४ दर्शन) छह भाव-लेश्या, पाच द्रव्य (धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय और काल) चार बुद्धि, चार अवग्रहादि, तीन दृष्टि, पाच शक्ति (उत्थानादि) चार सज्ञा, इन ६१ प्रकार के स्कन्धो मे वर्ण गन्ध, रस और स्पर्श नही पाये जाते। ये सभी अरूपी हैं।

गर्भ मे आता हुआ जीव (शरीर युक्त जीव) पच वर्णादि वाला होता है।

कर्म परिणाम से जीव के विविध रूप

१९ प्रश्न-कम्मओ ण भते ! जीवे णो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ,कम्मओ ण जए णो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ?

१९ उत्तर-हता गोयमा ! कम्मओ ण त चेव जाव परिणमइ णो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ।

॥ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

॥ पचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-विभत्तिभाव-विविध रूप। जए-जगत (जीव समूह)

भावार्थ-१९ प्रश्न-हे भगवन् ! जीव कर्मों से ही मनुष्य तिर्यञ्चादि विविध रूपों को प्राप्त होता है, कर्मो के विना विविध रूपो को प्राप्त नहीं होता

१८ प्रश्न–जीवे ण भते ! गब्भ वक्कममाणे कइवण्ण, कइ-गध, कइरस कइफास परिणाम परिणमइ ?

१८ उत्तर–गोयमा ! पचवण्ण, पचरस, दुगध, अट्ठफास परि-णाम परिणमइ ।

भावाथ–१७ प्रश्न–हे भगवान् ! सभी द्रव्य कितने वर्णादि वाले हैं ?

१७ उत्तर–हे गौतम ! कुछ द्रव्य पाच वर्ण, पाच रस, दो गन्ध, और आठ स्पश वाले हैं, कुछ पाच वण, पाच रस, दो गन्ध, और चार स्पशवाले हैं और कुछ एक वर्ण, एक रस, एक गन्ध, और दो स्पर्श वाले हैं, तथा कुछ द्रव्य वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श से रहित हैं। इसी प्रकार सभी प्रदेश, सभी पर्याय, अतीत काल, अनागत काल और समस्त काल–ये सब वर्ण, गन्ध, रस, और स्पश से रहित ह।

१८ प्रश्न–हे भगवन् ! गर्भ में उत्पन्न होता हुआ जीव कितने वर्ण, गध, रस और स्पर्श वाले परिणाम से परिणत होता है ?

१८ उत्तर–हे गौतम ! वह पाच वर्ण, पाच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श वाले परिणाम से परिणत होता है ।

विवेचन–लेश्या दो प्रकार की है,–द्रव्य लेश्या और भाव लेश्या। द्रव्य लेश्या बादर पुदगल परिणाम रूप होने से वह पाच वण, पाच रस, दो गध आठ और स्पश वाली होती है। भावलेश्या आन्तरिक परिणामरूप होने से वर्णादि रहित होती है।

बादर पुदगल पाच वण, पाच रस, दो गध और आठ स्पश वाले होते हैं और सूक्ष्म पुदगल द्रव्य पाच वण पाच रस दो गध और चार स्पश वाले होते हैं। परमाणु पुदगल एक वण, एक रस, एक गध और दो स्पश वाला होता है। दो स्पश इस प्रकार है स्निग्ध और उष्ण अथवा स्निगध और शीत अथवा रूक्ष और शीत अथवा रूक्ष और उष्ण।

द्रव्य के निर्विभाग अश को 'प्रदेश' कहते हैं और द्रव्य के धम को पर्याय' कहते हैं। मूत्त द्रव्यो के प्रदेश और पर्याय उन्ही के समान वर्णादि वाले होते हैं। अमूत्त द्रव्यो के प्रदेश और पर्याय भी उन्ही द्रव्यो के समान वर्णादि रहित होते हैं। अतीत, अनागत और सव काल, ये अमूत्त होने से वर्णादि रहित हैं।

परूवेमि—" एव खलु राहू देवे महिड्डीए, जाव महेसक्खे, वरवत्थधरे, वरमल्लधरे, वरगधधरे, वराभरणधारी, राहुस्स ण देवस्स णव णामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—१ सिंघाडए २ जडिलए ३ खत्तए ४ खरए ५ दद्दुरे ६ मगरे ७ मच्छे ८ कच्छभे ९ कण्हसप्पे। राहुस्स णं देवस्स विमाणा पचवण्णा पण्णत्ता, त जहा—किण्हा, णीला, लोहिया, हालिद्दा, सुक्किल्ला। अत्थि कालए राहुविमाणे खजणवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थी णीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मजिट्ठवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि सुक्किल्लए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते। जया ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्स पुरत्थिमेण आवरित्ता ण पच्चत्थिमेण वीईवयइ तया ण पुरत्थिमेण चदे उवदसेइ, पच्चत्थिमेण राहू, जया ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्स पच्चत्थिमेण आवरित्ता ण पुरत्थिमेण वीईवयइ तया ण पच्चत्थिमेणं चदे उवदसेइ, पुरत्थिमेण राहू एव जहा पुरत्थिमेण पच्चत्थिमेण य दो आलावगा भणिया तहा दाहिणेण य उत्तरेण य दो आलावगा भाणियव्वा एव उत्तरपुरत्थिमेण दाहिणपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा, एव दाहिणपुरत्थिमेण उत्तरपच्चत्थिमेण य दो

क्या जगत् कर्मों से विविध रूपो को प्राप्त होता है ? और बिना कर्मों के प्राप्त नहीं होता ?

१६ उत्तर-हां, गौतम ! कम से जीव और जगत (जीवो का समूह) विविध रूपो को प्राप्त होते है, किन्तु कर्मों के बिना विविध रूपो को प्राप्त नहीं होते हैं ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार ह-ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन-जीव नरक तिर्यंच, मनुष्य और देवगति मे जिन विविध रूपो का प्राप्त होता है, वह सभी कर्मों के उदय से प्राप्त हाता है, बिना वर्मो के जीव विभिन्न रूपा का धारण नही कर सकता । सुख दु ख,सम्पन्नता विपन्नता, जन्म-मरण, रोग शाक, सयाग वियाग, आदि परिणामो को जीव स्वकृत कर्मों के उदय से भोगता है ।

॥ बारहवें शतक का पाचवॉ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १२ उद्देशक ६

चन्द्रमा को राहु ग्रसता है ?

१ प्रश्न-रायगिहे जाव एव वयासी-बहुजणे ण भते ! अण्ण-मण्णस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ,-एव खलु राहू चद गेण्हइ, एव०' से कहमेय भते ! एव ?

१ उत्तर-गोयमा ! जण्ण से बहुजणे अण्णमण्णस्स० जाव मिच्छते एवमाहसु, अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, जाव एव

वाला है। वह उत्तम वस्त्र, उत्तम माला, उत्तम सुगंध और उत्तम आभूषणों को धारण करने वाला देव है। उस राहु देव के नौ नाम कहे हैं। यथा--१ शृंगाटक २ जटिलक ३ क्षत्रक ४ खर ५ दर्दुर ६ मकर ७ मत्स्य ८ कच्छप और ९ कृष्णसर्प। राहु के विमान पांच वर्णों वाले कहे हैं। यथा--१ काला २ नीला ३ लाल ४ पीला और ५ श्वेत, इनमें से राहु का जो काला विमान है, वह खंजन (काजल) के समान वर्ण वाला है, जो नीला (हरा) विमान है, वह कच्चे तुम्बे के समान वर्ण वाला है, जो लाल विमान है, वह मजीठ के समान वर्ण वाला है, जो पीला विमान है, वह हल्दी के समान वर्ण वाला है और जो श्वेत विमान है, वह भस्मराशि (राख के ढेर) के समान वर्ण वाला है। जब आता जाता हुआ, विकुर्वणा करता हुआ, तथा काम-क्रीडा करता हुआ राहु देव, पूर्व में रहे हुए चन्द्रमा के प्रकाश को ढक कर पश्चिम की ओर जाता है, तब पूर्व में चन्द्र दिखाई देता है और पश्चिम में राहु दिखाई देता है, जब पश्चिम में चन्द्रमा के प्रकाश को ढक कर पूर्व की ओर जाता है, तब पश्चिम में चन्द्रमा दिखाई देता है और पूर्व में राहु दिखाई देता है। जिस प्रकार पूर्व और पश्चिम के दो आलापक कहे हैं, उसी प्रकार दक्षिण और उत्तर के दो आलापक कहना चाहिये, इसी प्रकार उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) और दक्षिण पश्चिम (नैऋत्यकोण) के दो आलापक कहना चाहिये और इसी प्रकार दक्षिण-पूर्व (अग्निकोण) और उत्तर-पश्चिम (वायव्यकोण) के दो आलापक कहना चाहिये। इसी प्रकार यावत् जब उत्तर-पश्चिम में चन्द्र दिखाई देता है और दक्षिण पूर्व में राहु दिखाई देता है एवं जब गमनागमन करता हुआ, विकुर्वणा करता हुआ अथवा काम क्रीडा करता हुआ राहु, चन्द्रमा के प्रकाश को आवृत्त करता है, तब मनुष्य कहते हैं कि 'चन्द्रमा को राहु ग्रसता है,' इसी प्रकार जब राहु चन्द्रमा के प्रकाश को आवृत्त करता हुआ निकट से निकलता है, तब मनुष्य कहते हैं कि 'चन्द्रमा ने राहु की कुक्षि का भेदन कर दिया'। इसी प्रकार राहु जब चन्द्रमा के प्रकाश को ढकता हुआ पीछा लौटता है, तब मनुष्य कहते कि 'राहु ने चन्द्रमा का वमन कर दिया'। इसी प्रकार जब राहु चन्द्रमा

आलावगा भाणियव्वा, एव चेव जाव तया ण उत्तरपच्चत्थिमेणं चदे उवदसेइ, दाहिणपुरत्थिमेणं राहू । जया ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्स आवरेमाणे २ चिट्ठइ तया ण मणुस्सलोए मणुस्सा वयति 'एव खलु राहू चद गेण्हइ एव०' । जया ण राहू आगच्छमाणे ४ चदस्स लेस्स आवरित्ता ण पासेण वीइवयइ तया ण मणुस्सलोए मणुस्सा वयति–'एव खलु चदेण राहुस्स कुच्छी भिण्णा, एव०' । जया ण राहू आगच्छमाणे वा ४ चदस्स लेस्स आवरित्ता ण पच्चोसक्कइ तया ण मणुस्सलोए मणुस्सा वयति–'एव खलु राहुणा चदे वते, एव०' । जया ण राहू आगच्छमाणे वा ४ जाव परियारेमाणे वा चदलेस्स अहे सपक्खि सपडिदिसि आवरित्ता ण चिट्ठइ तया ण मणुस्सलोए मणुस्सा वयति–'एव खलु राहुणा चदे घत्थे एव०' ।

कठिन शब्दार्थ–सपक्खि–समान दिशा में । सपडिदिसि–समान विदिशा में । घत्थे–ग्रसित किया ।

भावार्थ–१–राजगृह नगर में यावत गौतम स्वामी ने इस प्रकार पूछा–हे भगवन् ! बहुत-से मनुष्य इस प्रकार कहते है और परूपणा करते है कि 'राहु चन्द्रमा को ग्रसता है,' तो हे भगवन् ! 'राहु चन्द्रमा को ग्रसता है' यह किस प्रकार हो सकता है ?

१ उत्तर–हे गौतम ! बहुत-से मनुष्य परस्पर यो कहते है और परूपणा करते है कि 'राहु चन्द्रमा को ग्रसता है'–यह मिथ्या है । हे गौतम ! मैं इस प्रकार कहता हूँ तथा परूपणा करता हूँ कि राहु महर्द्धिक यावत् महासौख्य

३ प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'चंदे ससी' 'चंदे ससी'?

३ उत्तर-गोयमा ! चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे कंता देवा कंताओ देवीओ कंताइं आसण-सयण-खंभ-भंडमत्तोवगरणाइं, अप्पणा वि य णं चंदे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कंते सुभए पियदंसणे सुरूवे, से तेणट्ठेणं जाव ससी ।

४ प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'सूरे आइच्चे,' 'सूरे आइच्चे'?

४ उत्तर-गोयमा ! सूरादिया णं समया इ वा आवलिया इ वा जाव उस्सप्पिणी इ वा अवसप्पिणी इ वा, से तेणट्ठेणं जाव आइच्चे ।

कठिन शब्दार्थ-मियंके-मृगाङ्क, आइच्चे-आदित्य ।

भावार्थ-२ प्रश्न-हे भगवन् ! राहु कितने प्रकार का कहा है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! राहु दो प्रकार का कहा है । यथा-ध्रुव-राहु (नित्य राहु) और पर्वराहु । जो ध्रुव राहु है, वह कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रतिदिन अपने पन्द्रहवे भाग से, चन्द्र-बिम्ब के पन्द्रहवे भाग को ढकता रहता है । यथा-प्रतिपदा को प्रथम भाग ढकता है, द्वितीया के दिन दूसरे भाग को ढकता है, इस प्रकार यावत् अमावस्या के दिन चन्द्रमा के पन्द्रहवे भाग को ढकता है । कृष्ण पक्ष के अन्तिम समय में चन्द्रमा रक्त (सर्वथा आच्छादित) हो जाता है और दूसरे समय में चन्द्र रक्त (अंश से आच्छादित) और विरक्त अंश से अनाच्छादित रहता है । शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रतिदिन चन्द्र के प्रकाश का पन्द्रहवा भाग खुला होता जाता है । यथा-प्रतिपदा के दिन पहला भाग खुला होता है यावत् पूर्णिमा के दिन पन्द्रहवा भाग खुला हो जाता है ।

के प्रकाश को नीचे से, चारो दिशाओ से और चारो विदिशाओ से ढक देता है, तब मनुष्य कहते है कि 'राहु ने चन्द्रमा को ग्रसित कर लिया है'।

विवेचन—राहु और चन्द्रमा के विमान की अपेक्षा 'ग्रहण' कहलाता है। विमानो में ग्रासक और ग्रसनीय भाव नही समझना चाहिये, किन्तु आच्छादक और आच्छाद्य भाव है और इसी को 'ग्रास' होना कहा गया है। यह ग्रास (राहु के द्वारा चन्द्र का आच्छादन) वस्रसिक (स्वाभाविक) है।

नित्यराहु पर्वराहु

२ प्रश्न—कइविहे ण भते ! राहू पण्णत्ते ?

२ उत्तर—गोयमा ! दुविहे राहू पण्णत्ते, त जहा—धुवराहू य पव्वराहू य। तत्थ ण जे से धुवराहू से ण बहुलपक्खस्स पाडिवए पण्णरसइभागेण पण्णरसइभाग चदस्स लेस्स आवरेमाणे २ चिट्ठइ, तजहा—पढमाए पढम भाग, बितियाए बितिय भाग, जाव पण्णरसेसु पण्णरसम भाग, चरिमसमये चदे रत्ते भवइ, अवसेसे समये चदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, तमेव सुक्कपक्खस्स उवदसेमाणे २ चिट्ठइ, पढमाए पढम भाग जाव पण्णरसेसु पण्णरसम भाग चरिमसमये चदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समये चदे रत्ते य विरत्ते य भवइ। तत्थ ण जे से पव्वराहू से जहण्णेण छण्ह मासाण उक्कोसेण बायालीसाए मासाण चदस्स, अडयालीसाए सवच्छराण सूरस्स।

चन्द्र सूर्य के भोग

५ प्रश्न–चदस्स णं भते ! जोइसिदस्स जोइसरण्णो कइ अग्ग-महिसीओ पण्णत्ताओ ?

५ उत्तर–जहा दसमसए जाव णो चेव णं मेहुणवत्तिय। सूरस्स वि तहेव।

६ प्रश्न–चदिम-सूरिया ण भते ! जोइसिंदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरति ?

६ उत्तर–गोयमा ! से जहाणामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाण-बलत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थाए भारियाए सद्धि अचिरवत्तविवाह-कज्जे, अत्थगवेसणयाए सोलसवासविप्पवासिए, से ण तओ लद्धट्ठे, कयकज्जे,अणहसमग्गे पुणरवि णियगगिहं हव्वमागए,ण्हाए कयबलि-कम्मे, कयकोउय-मगलपायच्छित्ते, सव्वालकारविभूसिए मणुण्ण थालिपागसुद्ध अट्ठारसवजणाउल भोयण भुत्ते समाणे, तसि तारिस-गसि वासघरसि, वण्णओ महब्बले कुमारे, जाव सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिगारागारचारुवेसाए जाव कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाणुकूलाए सद्धि इट्ठे सद्दे फरिसे जाव पच-विहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरेज्जा, से ण गोयमा ! पुरिसे विउसमणकालसमयसि केरिसय सायासोक्ख पच्चणुब्भ-

शुक्लपक्ष के अन्तिम समय में चन्द्र विरक्त (सवथा अनाच्छादित) हो जाता ह और शेष समय में चन्द्र रक्त और विरक्त रहता है । जो पर्वराहु है वह जघन्य छह मास में चन्द्र और सूय को ढकता है और उत्कृष्ट बयालीस मास में चन्द्रमा को और अडतालीस वष में सूर्य को ढकता है ।

३ प्रश्न–हे भगवन् ! चन्द्रमा को 'शशि' (सश्री) क्यो कहते हैं ?

३ उत्तर–हे गौतम ! ज्योतिपियो का इन्द्र, एव ज्योतिषियो का राजा चन्द्र के मृगाङ्क (मृग के चिन्ह वाला) विमान है । उसमें कान्त (सुन्दर) देव, कान्त देवियाँ और का त आसन, शयन, स्तम्भ, पात्र आदि उपकरण है, तथा ज्योति षियो का इन्द्र, ज्योतिषियो का राजा चन्द्र स्वय भी सौम्य, का त, सुभग, प्रियदशन और सुरूप है, इसलिये चन्द्र को 'शशि' (सश्री–शोभा सहित) कहते है ।

४ प्रश्न–हे भगवन् ! सूर्य को 'आदित्य' (आदि–प्रथम–पहला) क्यो कहते हैं ?

४ उत्तर–हे गौतम ! समय, आवलिका यावत उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी आदि कालो का आदिभूत (कारण) सूय है, इसलिये इसे 'आदित्य' कहते हैं ।

विवेचन–राहु दो प्रकार का है । ध्रुवराहु और पवराहु । ध्रुवराहु च द्रमा के नीचे नित्य रहता है । च द्रमा के सोलह भाग (अश–कला) है । कृष्णपक्ष मे राहु प्रतिदिन च द्रमा के एक एक भाग को आच्छादित करता जाता है । अमावस्या तक वह प द्रह भागो को आच्छादित कर देता है और शुक्लपक्ष मे प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक प्रतिदिन एक एक भाग को अनावत्त (खुला) करता जाता है । पवराहु जघ य छह मास मे च द्रमा को आवत्त करता है और उत्कृष्ट ४२ मास मे आवत्त करता है । सूय को जघ य छह मास मे और उत्कृष्ट ४८ वष मे आच्छादित करता है । यही च द्र ग्रहण और सूय ग्रहण कहलाता है । च द्र सम्ब धी देव और देवी तथा स्वय च द्र का त्यादि से युक्त होने के कारण 'शशि' कहलाता है । समय, आवलिका, दिन, रात आदि का विभाग सूय से ही ज्ञात होता है, अर्थात समयादि का ज्ञान करने मे सूय 'आदि' (प्रथम) कारण है । इसलिये इसे 'आदित्य' कहते हैं ।

निमित्तक भोग भोगने में समर्थ नहीं है"–तक कहना चाहिये। सूर्य के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार कहना चाहिये।

६ प्रश्न–हे भगवन् ! ज्योतिषियो के इन्द्र, ज्योतिषियो के राजा चन्द्र और सूर्य किस प्रकार के काम-भोग भोगते हुए विचरते है ?

६ उत्तर–हे गौतम ! जिस प्रकार प्रथम युवा अवस्था के प्रारम्भ में किसी बलवान् पुरुष ने युवावस्था में प्रविष्ठ होती हुई किसी बलशाली कन्या के साथ नया ही विवाह किया और इसके बाद ही वह पुरुष अर्थोपार्जन करनें के लिये परदेश चला गया और सोलह वर्ष तक विदेश में रहकर धनोपाजन करता रहा, फिर सभी कार्यो को समाप्त करके वह निर्विघ्न रूप से लौटकर अपने घर आया। फिर स्नानादि तथा विघ्न निवारणार्थ कौतुक और मगल रुप प्रायश्चित करे, फिर सभी अलकारो से अलकृत होकर, मनोज्ञ स्थालीपाक विशुद्ध अठारह प्रकार के व्यञ्जनो से युक्त भोजन करे, तत्पश्चात् महाबल के उद्देशक में वर्णित वासगृह के समान शयनगृह में, शृगार की गृहरूप सुन्दर वेषवाली यावत् ललित कलायुक्त, अनुरक्त, अत्यन्त रागयुक्त और मनोऽनुकूल स्त्री के साथ वह इष्ट शब्द-स्पर्शादि पाच प्रकार के मनुष्य सम्बन्धी काम-भोग सेवन करता है। वेदोपशमन (विकार शान्ति) के समय में हे गौतम ! वह पुरुष किस प्रकार के सुख का अनुभव करता है ?"(गौतम स्वामी कहते है कि)"हे भगवन् ! वह पुरुष उदार सुख का अनुभव करता है" (भगवान् फरमाते है कि)"हे गौतम ! उस पुरुष के काम भोगो की अपेक्षा वाणव्यन्तर देवो के काम-भोग अनन्त गुण विशिष्ट होते है। वाणव्यन्तर देवो के काम-भोगो से असुरेन्द्र के सिवाय शेष भवनवासी देवो के काम-भोग अनन्तगुण विशिष्ट होते है। शेष भवनवासी देवो के काम-भोगो से असुरकुमार देवो के काम-भोग अनन्तगुणा विशिष्ट होते हैं। असुरकुमार देवो के काम भोगो से ज्योतिषी देवरूप ग्रहगण, नक्षत्र और तारा देवो के काम-भोग अनन्त गुण विशिष्ट होते है। ज्योतिषी देव रूप ग्रहगण, नक्षत्र और तारा के देवो के कामभोग से ज्योतिषियो के इन्द्र, ज्योतिषियो के राजा चन्द्र और सूय

वमाणो विहरइ ? ओराल समणाउसो ! तस्स ण गोयमा ! पुरिसस्स कामभोगेहितो वाणमतराण देवाण एत्तो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा, वाणमतराण देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंद-वज्जियाण भवणवासीण देवाण एत्तो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा, असुरिंदवज्जियाण भवणवासियाण देवाण कामभोगेहिंतो असुरकुमाराण देवाण एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा, असुरकुमाराण देवाण कामभोगेहितो गहगण णक्खत्त तारा-रूवाण जोइसियाण देवाण एत्तो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा, गहगण-णक्खत्त-जाव कामभोगेहिंतो चदिम सूरियाण जोइसियाण जोइसराईण एत्तो अणतगुणविसिट्ठयरा चेव कामभोगा, चदिम-सूरिया ण गोयमा ! जोइसिदा जोइसरायाणो एरिसे कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरति ।

॰ सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर जाव विहरइ ॰

॥ छट्ठओ उद्देसओ समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ—पच्चणुब्भवमाणा—अनुभव करते हुए ।

भावार्थ—५ प्रश्न—हे भगवन् ! ज्योतिषियो के इन्द्र, ज्योतिषियो के राजा चन्द्रमा के कितनी अग्रमहिषिया है ?

५ उत्तर—हे गौतम ! जिस प्रकार दशवे शतक के दशवे उद्देशक में कहा है, उस प्रकार जानना चाहिये, यावत् "अपनी राजधानी में सिंहासन पर मैथुन-

निमित्तक भोग भोगने में समर्थ नहीं है"–तक कहना चाहिये । सूर्य के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार कहना चाहिये ।

६ प्रश्न–हे भगवन् ! ज्योतिषियो के इन्द्र, ज्योतिषियो के राजा चन्द्र और सूर्य किस प्रकार के काम-भोग भोगते हुए विचरते है ?

६ उत्तर–हे गौतम ! जिस प्रकार प्रथम युवा अवस्था के प्रारम्भ में किसी बलवान् पुरुष ने युवावस्था में प्रविष्ठ होती हुई किसी बलशाली कन्या के साथ नया ही विवाह किया और इसके बाद ही वह पुरुष अर्थोपार्जन करने के लिये परदेश चला गया और सोलह वर्ष तक विदेश में रहकर धनोपार्जन करता रहा, फिर सभी कार्यों को समाप्त करके वह निर्विघ्न रूप से लौटकर अपने घर आया । फिर स्नानादि तथा विघ्न निवारणार्थ कौतुक और मगल रूप प्रायश्चित करे, फिर सभी अलकारो से अलकृत होकर, मनोज्ञ स्थालीपाक विशुद्ध अठारह प्रकार के व्यञ्जनो से युक्त भोजन करे, तत्पश्चात् महाबल के उद्देशक में वर्णित वासगृह के समान शयनगृह में, शृगार की गृहरूप सुन्दर वेषवाली यावत् ललित कलायुक्त, अनुरक्त, अत्यन्त रागयुक्त और मनोऽनुकूल स्त्री के साथ वह इष्ट शब्द-स्पर्शादि पाच प्रकार के मनुष्य सम्बन्धी काम-भोग सेवन करता है। वेदोपशमन (विकार शान्ति) के समय में हे गौतम ! वह पुरुष किस प्रकार के सुख का अनुभव करता है ?" (गौतम स्वामी कहते है कि) "हे भगवन् ! वह पुरुष उदार सुख का अनुभव करता है" (भगवान् फरमाते है कि) "हे गौतम ! उस पुरुष के काम भोगो की अपेक्षा वाणव्यन्तर देवो के काम-भोग अनन्त गुण विशिष्ट होते है । वाणव्यन्तर देवो के काम-भोगो से असुरेन्द्र के सिवाय शेष भवनवासी देवो के काम-भोग अनन्तगुण विशिष्ट होते है । शेष भवनवासी देवो के काम-भोगो से असुरकुमार देवो के काम-भोग अनन्तगुणा विशिष्ट होते है । असुरकुमार देवो के काम भोगो से ज्योतिषी देवरूप ग्रहगण, नक्षत्र और तारा देवो के काम-भोग अनन्त गुण विशिष्ट होते है । ज्योतिषी देव रूप ग्रहगण, नक्षत्र और तारा के देवो के कामभोग से ज्योतिषियो के इन्द्र, ज्योतिषियो के राजा चन्द्र और सूय

के काम भोग अनन्तगुण विशिष्ट होते है । हे गौतम ! ज्योतिषियो के इन्द्र ज्योतिषियो के राजा चन्द्र और सूर्य इस प्रकार के काम भोगो का अनुभव करते हुए विचरते हैं ।

"हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है"–ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन–भगवती शतक दस उद्देशक दस मे चन्द्र और सूय की अग्रमहिषिया, परिवार आदि का विस्तृत वणन किया गया है ।

यहा काम भोगो के सुख को जो 'उदार सुख' कहा गया है, वह सासारिक सामान्य जन की अपेक्षा से कहा गया है । वास्तव मे तो काम भोग सम्बन्धी सुख सुख नही है, किन्तु सुखाभास है और दुख रूप है । ससारी लोगो ने दुख रूप काम भोगो को भी सुखरूप मान लिया है । यह केवल उनकी विडम्बना मात्र है ।

॥ बारहवे शतक का छठा उद्देशक सम्पूर्ण ॥

शतक १२ उद्देशक ७

बकरियो के बाडे का दृष्टात

१ प्रश्न–तेण कालेण तेण समएण जाव एव वयासी–केमहालए ण भते ! लोए पण्णत्ते ?

१ उत्तर–गोयमा ! महतिमहालए लोए पण्णत्ते, पुरत्थिमेण असखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ, दाहिणेण असखिज्जाओ एव चेव, एव पच्चत्थिमेण वि, एव उत्तरेण वि, एव उड्ढ पि, अहे

असखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खभेणं ।

२ प्रश्न–एयसि ण भते ! एमहालगसि लोगसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ ण अय जीवे ण जाए वा, ण मए वा वि ?

२ उत्तर–गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।

प्रश्न–से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ–'एयसि णं एमहालयसि लोगसि णत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अय जीवे ण जाए वा, ण मए वा वि' ?

उत्तर–गोयमा ! से जहाणामए केइ पुरिसे अयासयस्स एग मह अयावय करेज्जा, से ण तत्थ जहण्णेण एक्क वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण अयासहस्स पक्खिवेज्जा, ताओ णं तत्थ पउरगोयराओ पउरपाणियाओ जहण्णेण एगाह वा दुयाह वा तियाह वा उक्कोसेण छम्मासे परिवसेज्जा, अत्थि णं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जेण तासि अयाण उच्चारेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिंघाणएण वा वतेण वा पित्तेण वा पूएण वा सुक्केण वा सोणिएण वा चम्मेहि वा रोमेहि वा सिंगेहि वा खुरेहि वा णहेहि वा अणक्कतपुव्वे भवइ ? णो इणट्ठे समट्ठे होज्जा वि ण गोयमा ! तस्स अयावयस्स केई परमाणु-पोग्गलमेत्ते वि पएसे, जे ण तासि अयाण उच्चारेण वा जाव

णहेहिं वा अणक्कंतपुव्वे, णो चेव णं एयंसि एमहालयंसि लोगंसि लोगस्स य सासयं भावं, संसारस्स य अणाइभावं, जीवस्स य णिच्चभावं, कम्मबहुत्तं, जम्मण-मरणबाहुल्लं च पडुच्च णत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे ण जाए वा ण मए वा वि से तेणट्ठेणं तं चेव जाव ण मए वा वि ।

कठिन शब्दार्थ–आयावय–अजाव्रज–बकरियों का वाड़ा ।

भावार्थ–१ प्रश्न–उस काल उस समय में गौतम स्वामी ने इस प्रकार पूछा–"हे भगवन् ! लोक कितना बड़ा है ?"

१ उत्तर–हे गौतम ! लोक बहुत बड़ा है। वह पूर्व दिशा में असंख्य कोटा कोटि योजन है, इसी प्रकार दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशा में भी असंख्य कोटा कोटि योजन है, और इसी प्रकार ऊर्ध्वदिशा और अधोदिशा में भी असंख्य कोटा कोटि योजन आयामविष्कम्भ (लम्बाई चौड़ाई) वाला है ।

२ प्रश्न–हे भगवन् ! इतने बड़े लोक में क्या कोई परमाणु-पुद्गल जितना भी आकाश प्रदेश ऐसा है जहाँ पर इस जीव ने जन्म मरण नहीं किया है ?

२ उत्तर–हे गौतम ? यह अर्थ समर्थ नहीं है ।

प्रश्न–हे भगवन् ! इसका क्या कारण है ?

उत्तर–हे गौतम ! जैसे कोई पुरुष सौ बकरियों के लिये एक विशाल अजाव्रज बनवाये । उसमें कम से कम एक,दो, तीन और अधिक से अधिक एक हजार बकरियों को रखे और उसमें उनके लिये घास पानी डाल दे । यदि वे बकरियाँ वहाँ कम से कम एक, दो, तीन दिन और अधिक से अधिक छह महीने तक रहे ।

भगवान् पूछते हैं–"हे गौतम ! उस बाड़े का कोई परमाणु पुद्गल मात्र प्रदेश ऐसा रह सकता है कि जो बकरियों की मल, मूत्र, श्लेष्म, नाक का मैल, वमन, पित्त, शुक्र, रुधिर, चर्म, रोम, सींग, खुर और नख से स्पर्श न किया गया हो ?"

गौतम स्वामी उत्तर देते है–"हे भगवन् ! यह अर्थ समर्थ नहीं है।"

भगवान् कहते है कि–"हे गौतम ! कदाचित् उस वाडे में कोई एक परमाणु पुद्गल मात्र प्रदेश ऐसा रह भी सकता है कि जो बकरियो के मल यावत् नखो से स्पृष्ट न हुआ हो, तथापि इतने बडे लोक में, लोक के शाश्वत भाव के कारण, ससार के अनादि होने के कारण, जीव की नित्यता के कारण, कर्म की बहुलता के कारण और जन्म-मरण की बहुलता के कारण कोई भी परमाणु पुद्गल मात्र प्रदेश ऐसा नहीं है कि जहाँ इस जीव ने जन्म-मरण नहीं किया हो। इस कारण हे गौतम ! उपर्युक्त बात कही गई है।"

विवेचन–ससार का ऐसा कोई भी परमाणु पुदगल मात्र प्रदेश शेष नही जहा इस जीव ने जन्म मरण नही किया हो। इस बात की पुष्टि के लिये पाच कारण दिये गये हैं। विनाशी के लिये यह बात नही हो सकती, अत कहा गया है कि 'लोक शाश्वत है।' लोक के शाश्वत होने पर भी यदि वह सादि (आदि सहित) हो, तो उपर्युक्त बात घटित नही हो सकती इसलिये कहा गया है कि 'लोक अनादि है।' अनेक जीवो की अपेक्षा ससार यदि अनादि हो और विवक्षित जीव अनित्य हो, तो उपर्युक्त अर्थ घटित नही हो सकता, इस लिये कहा गया है कि 'जीव नित्य है।' जीव के नित्य होने पर भी यदि कर्म अल्प हो, तो तथाविध ससार परिभ्रमण नही हो सकता और उस दशा मे उपर्युक्त अर्थ भी घटित नही हो सकता, इसलिये कर्मों की बहुलता बतलाई गई है। कर्मों की बहुलता होने पर भी यदि जन्म मरण की अल्पता हो तो उपर्युक्त अर्थ घटित नही हो सकता, अत जन्मादि की बहुलता बतलाई गई है। इन पाच कारणो से इतने बडे लोक मे ऐसा कोई एक भी आकाश प्रदेश नही, जहा इस जीव ने जन्म मरण नही किया हो।

जीवो का अनन्त जन्म-मरण

३ प्रश्न–कइ ण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?

३ उत्तर–गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, जहा पढमसए

पचमउद्देसए तहेव आवासा ठावेयव्वा जाव अणुत्तरविमाणेत्ति, जाव अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे ।

४ प्रश्न–अय णं भते ! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि णिरयावाससि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए णरगत्ताए णेरइयत्ताए उववण्णपुव्वे ?

४ उत्तर–हता गोयमा ! असइ अदुवा अणतखुत्तो ।

५ प्रश्न–सव्वजीवा वि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरया० ?

५ उत्तर–त चेव जाव अणंतखुत्तो ।

६ प्रश्न–अय ण भते ! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणवीसा० ?

६ उत्तर–एव जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा एव जाव धूमप्पभाए ।

७ प्रश्न–अय णं भते ! जीवे तमाए पुढवीए पचूणे णिरयावाससयसहस्से एगमेगसि० ?

७ उत्तर–सेस त चेव ।

८ प्रश्न–अय ण भते ! जीवे अहेसत्तमाए पुढवीए पचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महाणिरएसु एगमेगसि णिरयावाससि०

८ उत्तर–सेस जहा रयणप्पभाए ।

६ प्रश्न-अय ण भते ! जीवे चउमट्ठीए असुरकुमारावाससय-सहस्सेसु एगमेगसि असुरकुमारावाससि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए आसण सयण-भडमत्तोवगरण-त्ताए उववण्णपुव्वे ?

६ उत्तर-हता गोयमा ! जाव अणतखुत्तो । सव्वजीवा वि ण भते ! एव चेव, एव जाव थणियकुमारेसु । णाणत्त आवासेसु, आवासा पुव्वभणिया ।

कठिन शब्दार्थ-असइ-असकृत-अनेक वार, अणतक्खुत्तो-अनन्त वार ।

भावार्थ-३ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वियाँ कितनी कही है ?

३ उत्तर-हे गौतम ! पृथ्वियाँ सात कही है । यहाँ प्रथम शतक के पाचवे उद्देशक में कहे अनुसार नरकादि के आवास कहने चाहिये । इसी प्रकार यावत् अनुत्तरविमान यावत् अपराजित और सर्वार्थसिद्ध तक कहना चाहिये ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! यह जीव, इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासो में से प्रत्येक नरकावास में, पृथ्वीकायिकपने यावत वनस्पतिकायिकपने, नरकपने (नरकावास पृथ्वीकायिकरूप) और नैरयिकपने, पहले उत्पन्न हुआ है ?

४ उत्तर-हाँ, गौतम ! अनेक वार अथवा अनन्त वार पहले उत्पन्न हो चुका है ।

५ प्रश्न-हे भगवन् ! सभी जीव, इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावासो में से प्रत्येक नरकावास में पृथ्वीकायिकपने यावत् वनस्पतिकायिकपने, नरकपने और नैरयिकपने, पहले उत्पन्न हो चुके है ?

५ उत्तर-हाँ, गौतम ! अनेक वार अथवा अनन्त बार उत्पन्न हो चुके हैं ।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! यह जीव, शर्कराप्रभा के पच्चीस लाख नरका-वासो में से प्रत्येक नरकावास में, पृथ्वीकायिकपने यावत् वनस्पतिकायिकपने यावत्

पहले उत्पन्न हो चुका है ?

६ उत्तर-हाँ, गौतम ! जिस प्रकार रत्नप्रभा के दो आलापक कहे ह, उसी प्रकार शकराप्रभा के भी दो आलापक (एक जीव और सभी जीव के) कहने चाहिये । इसी प्रकार यावत धूमप्रभा तक कहना चाहिये ।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! यह जीव, तम प्रभा पृथ्वी के पाच कम एक लाख नरकावासो में से प्रत्येक नरकावास में पूर्ववत् उत्पन्न हो चुका है ?

७ उत्तर-हाँ, गौतम ! पूर्ववत् उत्पन्न हो चुका है ।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! यह जीव, अध सप्तम पृथ्वी के पाच अनुत्तर और अति विशाल नरकावासो में से प्रत्येक नरकावास में पूववत् उत्पन्न हो चुका है ?

८ उत्तर-हाँ, गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के समान हो चुका है ।

९ प्रश्न-हे भगवन ! यह जीव, असुरकुमारो के चौसठ लाख असुरकुमारावासो में से प्रत्येक असुरकुमारावास में, पृथ्वीकायिकपने यावत वनस्पतिकायिकपने, देवपनें, देवीपने, आसन, शयन, पात्रादि उपकरण के रूप में पहले उत्पन्न हो चुका है ?

९ उत्तर-हाँ, गौतम ! अनेक बार या अनन्त बार उत्पन्न हो चुका है । सभी जीवो के विषय में भी इसी प्रकार जानना चाहिये । इसी प्रकार स्तनितकुमारो तक जानना चाहिये । किन्तु उनके आवासो की सख्या में भेद है । वह सख्या पहले बताई गई है ।

१० प्रश्न-अय ण भते ! जीवे असखेज्जेसु पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि पुढविक्काइयावाससि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववण्णपुव्वे ?

१० उत्तर-हता गोयमा ! जाव अणतखुत्तो । एव सव्वजीवा वि, एव जाव वणस्सइकाइएसु ।

११ प्रश्न–अय ण भते ! जीवे असंखेज्जेसु वेदियावाससय-महस्सेसु एगमेगमि वेंदियावाससि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइ-काइयत्ताए वेइदियत्ताए उववण्णपुव्वे ?

११ उत्तर–हता गोयमा ! जाव खुत्तो । सव्वजीवा वि णं एव चेव, एव जाव मणुस्सेसु, णवर तेंदियएसु जाव वणस्सइकाइय-त्ताए तेंदियत्ताए, चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए, पचिंदियतिरिक्ख-जोणिएसु पचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए, सेस जहा वेंदियाण, वाणमतर-जोइसिय-सोहम्मीसाणाण य जहा असुरकुमाराण ।

१२ प्रश्न–अय ण भते ! जीवे सणकुमारे कप्पे वारससु विमाणावाससयसहस्सेसु एगमेगसि वेमाणियावाससि पुढविकाइय-त्ताए ?

१२ उत्तर–सेस जहा असुरकुमाराण जाव अणतखुत्तो, णो चेव णं देवित्ताए, एव सव्वजीवा वि, एव जाव आणय-पाणएसु, एव आरण-च्चुएसु वि ।

१३ प्रश्न–अय णं भते ! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु गेविज्ज-विमाणावाससयेसु० ?

१३ उत्तर–एवं चेव ।

१४ प्रश्न–अय ण भते ! जीवे पचसु अणुत्तरविमाणेसु एग-

मेगसि अणुत्तरविमाणसि पुढवि० ?

१४ उत्तर–तहेव जाव अणतखुत्तो, णो चेव णं देवत्ताए वा देवीत्ताए वा, एव सव्वजीवा वि ।

भावार्थ–१० प्रश्न–हे भगवन् ! यह जीव असख्यात लाख पृथ्वी कायिक आवासो में से प्रत्येक पृथ्वीकायिकावास में पृथ्वीकायिकपने यावत् वनस्पति-कायिक के रूप में उत्पन्न हो चुका है ?

१० उत्तर–हाँ, गौतम ! अनेक बार या अनत बार उत्पन्न हो चुका है। इसी प्रकार सभी जीवो के लिये भी कहना चाहिये। इसी प्रकार यावत वनस्पति कायिको में भी कहना चाहिये।

११ प्रश्न–हे भगवन् ! यह जीव असख्यात लाख बेइन्द्रियावासो में से प्रत्येक बेइन्द्रियावास में पृथ्वीकायिकपने यावत वनस्पतिकायिकपने और बेइन्द्रिय के रूप में पहले उत्पन्न हो चुका है ?

११ उत्तर–हाँ, गौतम ! अनेक बार या अनत बार उत्पन्न हो चुका है। इसी प्रकार सभी जीवो के विषय में भी कहना चाहिये, परन्तु इतनी विशेषता है कि तेइन्द्रियो में यावत वनस्पतिकायिकपने यावत् तेइन्द्रियपने, चौइन्द्रियो में यावत् चौइन्द्रियपने, पञ्चेन्द्रिय तियञ्च योनिको में यावत पञ्चेन्द्रिय तियञ्चयोनिकपने और मनुष्यो में यावत मनुष्यपने उत्पत्ति जाननी चाहिये। शेष सभी बेइन्द्रियो के समान कहना चाहिये। जिस प्रकार असुरकुमारो के विषय में कहा है, उसी प्रकार वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, सौधम और ईशान देवलोक तक कहना चाहिये।

१२ प्रश्न–हे भगवन् ! यह जीव सनत्कुमार देवलोक के बारह लाख विमानावासो में से प्रत्येक विमानावास में पृथ्वीकायिकपने यावत पहले उत्पन्न हो चुका है ?

१२ उत्तर–हाँ, गौतम ! सब कथन असुरकुमारो के समान जानना

चाहिये। किन्तु वहां देवीपने उत्पन्न नहीं हुआ। इसी प्रकार सभी जीवों के विषय में जानना चाहिये। इसी प्रकार यावत् आनत, प्राणत् आरण और अच्युत तक जानना चाहिये।

१३ प्रश्न–हे भगवन् ! यह जीव तीन सौ अठारह ग्रैवेयक विमानावासो में से प्रत्येक विमानावास में पृथ्वीकायिक के रूप में यावत् उत्पन्न हो चुका है ?

१३ उत्तर–हाँ, गौतम ! पूर्ववत उत्पन्न हो चुका है।

१४ प्रश्न–हे भगवन् ! यह जीव पाच अनुत्तर विमानो में से प्रत्येक विमान में पृथ्वीकायिक के रूप में यावत पहले उत्पन्न हो चुका है ?

१४ उत्तर–हाँ, गौतम ! अनेक बार या अनन्त बार उत्पन्न हो चुका है, किन्तु वहाँ देव और देवी रूप से उत्पन्न नहीं हुआ। इसी प्रकार सभी जीवो के विषय में जानना चाहिये।

विवेचन–पृथ्वीकायिका वास असंख्यात हैं। किन्तु उनकी बहुलता बतलाने के लिये 'सयसहस्स (शतसहस्र–लाख)' शब्द का प्रयोग किया है।

पहले और दूसरे देवलोक तक ही देवियां उत्पन्न होती हैं, इसलिये उससे आगे के देवलोको मे देवीपने उत्पन्न होने का निषेध किया है।

अनुत्तर विमानो म तो कोई भी जीव, देव रूप से अनन्त बार उत्पन्न नही हो सकता। और देवियो की उत्पत्ति तो वहाँ है ही नही। इसलिये अनुत्तर विमानो में देवपने और देवीपने अनन्तबार उत्पन्न होने का निषेध किया गया है।

१५ प्रश्न–अयं णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए, पिइत्ताए, भाइत्ताए, भगिणित्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववण्णपुव्वे ?

१५ उत्तर–हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो।

मेगसि अणुत्तरविमाणसि पुढवि० ?

१४ उत्तर-तहेव जाव अणतखुत्तो, णो चेव ण देवत्ताए वा देवीत्ताए वा, एव सव्वजीवा वि ।

भावार्थ-१० प्रश्न-हे भगवन् ! यह जीव असख्यात लाख पृथ्वी कायिक आवासो में से प्रत्येक पृथ्वीकायिकावास में पृथ्वीकायिकपने यावत् वनस्पति-कायिक के रूप में उत्पन्न हो चुका है ?

१० उत्तर-हाँ, गौतम ! अनेक बार या अनत बार उत्पन्न हो चुका है । इसी प्रकार सभी जीवो के लिये भी कहना चाहिये । इसी प्रकार यावत वनस्पति कायिको में भी कहना चाहिये ।

११ प्रश्न-हे भगवन् ! यह जीव असख्यात लाख बेइन्द्रियावासो में से प्रत्येक बेइन्द्रियावास में पृथ्वीकायिकपने यावत वनस्पतिकायिकपने और बेइन्द्रिय के रूप में पहले उत्पन्न हो चुका है ?

११ उत्तर-हाँ, गौतम ! अनेक बार या अनत बार उत्पन्न हो चुका है । इसी प्रकार सभी जीवो के विषय में भी कहना चाहिये, परन्तु इतनी विशेषता है कि तेइन्द्रियो में यावत वनस्पतिकायिकपने यावत तेइन्द्रियपने, चौइन्द्रियो में यावत् चौइन्द्रियपने, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिको में यावत पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चयोनिकपने और मनुष्यो में यावत मनुष्यपने उत्पत्ति जाननी चाहिये । शेष सभी बेइन्द्रियो के समान कहना चाहिये । जिस प्रकार असुरकुमारो के विषय में कहा है, उसी प्रकार वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, सौधम और ईशान देवलोक तक कहना चाहिये ।

१२ प्रश्न-हे भगवन् ! यह जीव सनत्कुमार देवलोक के बारह लाख विमानावासो में से प्रत्येक विमानावास में पृथ्वीकायिकपने यावत् पहले उत्पन्न हो चुका है ?

१२ उत्तर-हाँ, गौतम ! सब कथन असुरकुमारो के समान जानना

कठिन शब्दार्थ-सुण्हत्ताए-स्नुषा-पुत्र वधू रूप से, भाइल्लगत्ताए-भागीदार रूप से।

भावार्थ-१५ प्रश्न-हे भगवन् ! यह जीव, सभी जीवों के मातापने, पिता, भाई, बहन, स्त्री, पुत्र, पुत्री और पुत्रवधू के सम्बन्ध से पहले उत्पन्न हो चुका है ?

१५ उत्तर-हाँ, गौतम ! अनेक वार या अनंत वार उत्पन्न हो चुका है।

१६ प्रश्न-हे भगवन् ! सभी जीव, इस जीव के मातापने यावत् पुत्रवधूपने उत्पन्न हो चुके हैं ?

१६ उत्तर-हाँ, गौतम ! अनेक वार या अनंत वार उत्पन्न हो चुके हैं।

१७ प्रश्न-हे भगवन् ! यह जीव, सभी जीवों के शत्रुपने, वैरी, घातक, वधक, प्रत्यनीक और शत्रुसहायक होकर उत्पन्न हो चुका है ?

१७ उत्तर-हाँ, गौतम ! अनेक वार या अनंत वार उत्पन्न हो चुका है।

१८ प्रश्न-हे भगवन् ! सभी जीव, इस जीव के शत्रुपने यावत् शत्रुसहायकपने पहले उत्पन्न हो चुके हैं ?

१८ उत्तर-हाँ, गौतम ! अनेक वार या अनंत वार उत्पन्न हो चुके हैं।

१९ प्रश्न-हे भगवन् ! यह जीव, सभी जीवों के राजापने, युवराज यावत् सार्थवाहपने पहले उत्पन्न हो चुका है ?

१९ उत्तर-हाँ, गौतम ! अनेक वार या अनंत वार उत्पन्न हो चुका है। इसी प्रकार सभी जीवों के विषय में भी जानना चाहिये।

२० प्रश्न-हे भगवन् ! यह जीव, सभी जीवों के दासपने, प्रेष्यपने (नौकर होकर) भृतक, भागीदार, भोगपुरुष (दूसरों के उपार्जित धन का भोग करने वाला) शिष्य और द्वेष्य (द्वेषी-ईर्षालू) के रूप में पहले उत्पन्न हो चुका है ?

२० उत्तर-हाँ, गौतम ! अनेक वार या अनंत वार उत्पन्न हो चुका है। इस प्रकार सभी जीव भी इस जीव के प्रति पूर्वोक्त रूप से उत्पन्न हो चुके हैं।

"हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है"-ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

॥ बारहवें शतक का सातवाँ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

१६ प्रश्न–सव्वजीवा वि णं भते ! इमस्स जीवस्स माइत्ताए जाव उववण्णपुव्वा ?

१६ उत्तर–हता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो ।

१७ प्रश्न– अय णं भते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए, वेरियत्ताए, घातगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववण्णपुव्वे ?

१७ उत्तर–हता गोयमा ! जाव अणतखुत्तो ।

१८ प्रश्न–सव्वजीवा वि णं भते ० !

१८ उत्तर–एव चेव ।

१९ प्रश्न–अय णं भते ! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए, जुवरायत्ताए जाव सत्थवाहत्ताए उववण्णपुव्वे ?

१९ उत्तर–हता गोयमा ! असइ, जाव अणतखुत्तो । सव्वजीवाण एव चेव ।

२० प्रश्न–अय णं भते ! जीवे सव्वजीवाण दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए, भाईल्लगत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववण्णपुव्वे ?

२० उत्तर–हता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो । एव सव्वजीवा वि अणंतखुत्तो ।

सेव भते ! सेव भते त्ति जाव विहरइ

॥ सत्तमो उद्देसओ समत्तो ॥

सण्णिहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भवेज्जा ? हंता भवेज्जा, सेसं तं चेव जाव अंतं करेज्जा ।

६ प्रश्न-अह भंते ! गोलंगूलवसभे, कुक्कुडवसभे, मंडुक्कवसभे-एए णं णिस्सीला णिव्वया णिग्गुणा णिम्मेरा णिप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेण सागरोवमट्ठिईयंसी णरयंसी णेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?

६ उत्तर-समणे भगवं महावीरे वागरेइ 'उववज्जमाणे उववण्णे' त्ति वत्तव्वं सिया ।

७ प्रश्न-अह भंते ! सीहे वग्घे जहा उस्स(ओम) प्पिणीउद्देसए जाव परस्सरे-एए णं णिस्सीला० ?

७ उत्तर-एवं चेव जाव वत्तव्वं सिया ।

८ प्रश्न-अह भंते ! ढंके कंके विलए मग्गुए सिखीए-एए णं णिस्सीला० ?

८ उत्तर-सेसं तं चेव जाव वत्तव्वं सिया ।

॰ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॰

॥ अट्ठमो उद्देसो समत्तो ॥

कठिन शब्दार्थ-गोलंगूलवसभे-गोलांगुल वृषभ-बड़ा बन्दर । ढंके-कौवा । कंके-गिद्ध । विलए-बिल्लक-एक जानवर । सिखि-शिखी-मोर ।

भावार्थ-१ प्रश्न-उस काल उस समय में गौतम स्वामी ने यावत् इस

शतक १२ उद्देशक ८

देव का नागआदि मे उपपात

१ प्रश्न–तेण कालेण तेण समएण जाव एव वयासी–देवे ण भते ! महिड्ढीए जाव महेसक्खे अणतर चय चइत्ता बिसरीरेसु णागेसु उववज्जेज्जा ?

१ उत्तर–हता गोयमा ! उववज्जेज्जा ।

२ प्रश्न–से ण तत्थ अच्चिय वदिय पूइय सक्कारिय सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहियपाडिहेरे यावि भवेज्जा ?

२ उत्तर–हता, भवेज्जा ।

३ प्रश्न–से ण भते ! तओहितो अणतर उव्वट्टिता सिज्झेज्जा बुज्झेज्जा जाव अत करेज्जा ?

३ उत्तर–हता सिज्झिज्जा, जाव अत करेज्जा ।

४ प्रश्न–देवे ण भते ! महिड्ढीए एव चेव जाव बिसरीरेसु मणीसु उववज्जेजा ?

४ उत्तर–एव चेव जहा णागाण ।

५ प्रश्न–देवे ण भते ! महिड्ढीए जाव बिसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा ?

५ उत्तर–हता, उववज्जेज्जा एव चेव, णवर इम णाणत्त जाव

रत्नप्रभा पृथ्वी में उत्कृष्ट सागरोपम की स्थिति वाले नरकावास में नैरयिक रूप से उत्पन्न होते हैं ?

६ उत्तर-श्रमण भगवान् महावीर स्वामी कहते हैं कि हां, गौतम ! नैरयिक रूप से उत्पन्न होता है, क्योंकि 'उत्पन्न होता हुआ, उत्पन्न हुआ कहलाता है।

७ प्रश्न-हे भगवन् ! सिंह, व्याघ्र आदि सातवे शतक के छट्ठे अवसर्पिणी उद्देशक में कथित जीव यावत् पाराशर-ये सभी शील रहित इत्यादि पूर्वोक्त रूप से उत्पन्न होते हैं ?

७ उत्तर-हाँ गौतम ! होते हैं।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! कौआ, गिद्ध, बिलक, मेंढक और मोर-ये सभी शील रहित इत्यादि पूर्वोक्त रूप से उत्पन्न होते हैं ?

८ उत्तर-हाँ, गौतम ! उत्पन्न होते हैं।

हे भगवन् । यह इसी प्रकार है। हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है। ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं।

विवेचन-जो जीव देव भव से चव कर वृक्ष मे उत्पन्न होता है तो उसका पूर्व संगतिक देव उस वृक्ष की रक्षा करता है और वह उसके समीप रहता है। अतएव वह वृक्ष देवाधिष्ठित कहलाता है। ऐसा देवाधिष्ठित विशिष्ठ वृक्ष वद्धपीठ होता है। लोग उस पीठ (चबूतरा) को गोबरादि से लीप कर तथा खडिया मिट्टी आदि से पोतकर स्वच्छ रखते हैं।

जो जीव नागादि के शरीर को छोडकर मनुष्य शरीर को धारण करके मोक्ष को प्राप्त करते हैं। वे दो शरीर को धारण करने वाले नागादि कहलाते हैं।
जिस समय वानरादि हैं, उस समय वे नारकरूप नही हैं। फिर नारकरूप मे कैसे उत्पन्न हुए ? इस प्रश्न के उत्तर म श्रमण भगवान महावीर स्वामी कहते हैं कि 'उत्पन्न होता हुआ भी उत्पन्न हुआ कहलाता है।' इसलिये जो वानरादि नारकरूप से उत्पन्न होने वाले हैं वे 'उत्पन्न हुए कहलाते हैं।

॥ बारहवें शतक का आठवाँ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

प्रकार पूछा–हे भगवन् ! महाऋद्धिवाला, यावत् महासुखवाला देव चवकर (मरकर) तुरन्त ही केवल दो शरीर धारण करने वाले नागो में (सप अथवा हाथी में) उत्पन्न होता है ?

१ उत्तर–हाँ गौतम ! उत्पन्न होता है ।

२ प्रश्न–हे भगवन् ! वह वहाँ नाग के भव में अर्चित, वन्दित, पूजित, सत्कारित, सम्मानित, दिव्य, प्रधान, सत्य, सत्यावपातरूप एव सन्निहित प्रातिहारिक होता है ?

२ उत्तर हा, गौतम ! होता है ।

३ प्रश्न्–हे भगवन् ! वहाँ से चवकर अतर रहित वह मनुष्य होकर सिद्ध, बुद्ध होता है, यावत् ससार का अन्त करता है ?

३ उत्तर–हा, गौतम ! वह सिद्ध बुद्ध होता है, यावत् ससार का अन्त करता है ।

४ प्रश्न–हे भगवन् ! महर्द्धिक यावत् महासुख वाला देव, दो शरीर वाली मणियो में उत्पन्न होता है ?

४ उत्तर–हा, गौतम ! होता ह ।

५ प्रश्न–हे भगवन् ! महर्द्धिक यावत महासुखवाला देव दो शरीर धारण करनें वाले वृक्षो में उत्पन्न होता है ?

५ उत्तर–हाँ, गौतम ! होता है, पूववत् । परन्तु इतनी विशेषता है कि जिस वृक्ष में वह उत्पन्न होता है, वह वृक्ष सन्निहित प्रातिहारिक होता है, तथा उस वृक्ष की पीठिका (चबुतरा आदि) गोबरादि से लीपी हुई और खडिया मिट्टी आदि द्वारा पोती हुई होती है । शेष पूववत, यावत् वह ससार का अन्त करता है ।

६ प्रश्न–हे भगवन् ! वानवृषभ (बडा बदर) कुक्कुट-वृषभ (बडा कूकडा) मडूक वृपभ (वडा मेंढक) ये सभी शील रहित, व्रत रहित, गुण रहित, मर्यादा रहित, प्रत्याख्यान पौषधोपवास रहित, काल के समय काल करके इस

५ उत्तर-गोयमा ! जे इमे अरिहंता भगवंतो उप्पण्णणाण-दंसणधरा जाव सव्वदरिसी से तेणट्ठेण जाव 'देवाहिदेवा देवाहि-देवा'।

६ प्रश्न-से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ-'भावदेवा भावदेवा'?

६ उत्तर-गोयमा ! जे इमे भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा देवगइणामगोयाइ कम्माइ वेदेंति से तेणट्ठेण जाव 'भावदेवा भावदेवा'।

कठिन शब्दार्थ-णवणिहिपइणो-नवनिधि पति-नवनिधियो के स्वामी।

भावार्थ-१ प्रश्न-हे भगवन् ! देव कितने प्रकार के कहे है ?

१ उत्तर-हे गौतम ! देव पांच प्रकार के कहे हैं। यथा-भव्यद्रव्यदेव, नरदेव, धर्मदेव, देवाधिदेव और भावदेव।

२ प्रश्न-हे भगवन् ! 'भव्यद्रव्य देव'-ऐसा कहने का कारण क्या है ?

२ उत्तर-हे गौतम ! जो पञ्चेन्द्रिय-तिर्यञ्च योनिक अथवा मनुष्य, देवो में उत्पन्न होने योग्य (भव्य) हैं, वे 'भव्यद्रव्यदेव' कहलाते है।

३ प्रश्न-हे भगवन् ! 'नरदेव' क्यों कहलाते हैं ?

३ उत्तर-हे गौतम ! जो राजा, पूर्व पश्चिम और दक्षिण में समुद्र तथा उत्तर में हिमवान् पर्वत पर्यन्त छह खण्ड पृथ्वी के स्वामी चक्रवर्ती हैं। जिनके यहाँ समस्त रत्नों में प्रधान चक्ररत्न उत्पन्न हुआ है, जो नवनिधि के स्वामी है, समृद्ध भण्डार वाले हैं, बत्तीस हजार राजा जिनका अनुसरण करते है, ऐसे महासागर रूप उत्तम मेखला पर्यन्त पृथ्वी के पति और मनुष्येन्द्र हैं, वे 'नरदेव' कहलाते है।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! 'धर्मदेव' क्यो कहलाते है ?

४ उत्तर-हे गौतम ! जो ये अनगार भगवान् ईर्यासमिति आदि समितियो

शतक १२ उद्देशक ९

भव्यद्रव्यादि पांच प्रकार के देव

१ प्रश्न—कइविहा ण भंते ! देवा पण्णत्ता ?

१ उत्तर—गोयमा ! पचविहा देवा पण्णत्ता, त जहा—१ भविय-दव्वदेवा २ णरदेवा ३ धम्मदेवा ४ देवाहिदेवा भावदेवा ।

२ प्रश्न—से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—भवियदव्वदेवा भविय-दव्वदेवा ?

२ उत्तर—गोयमा ! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवेसु उववज्जित्तए से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—भवियदव्वदेवा भवियदव्वदेवा' ।

३ प्रश्न—से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—णरदेवा णरदेवा' ?

३ उत्तर—गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरतचक्कवट्टी उप्पण्ण-समत्तचक्करयणप्पहाणा णवणिहिपइणो समिद्धकोसा बत्तीस राय-वरसहस्साणुयायमग्गा सागरवरमेहलाहिवइणो मणुस्सिदा, से तेण-ट्ठेण जाव 'णरदेवा णरदेवा' ।

४ प्रश्न—से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—'धम्मदेवा धम्मदेवा' ?

४ उत्तर—गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवतो ईरियासमिया जाव गुत्तबभयारी, से तेणट्ठेण जाव 'धम्मदेवा धम्मदेवा' ।

५ प्रश्न—से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—'देवाहिदेवा देवाहिदेवा' ?

हिंतो वि उववज्जति, भेओ जहा वक्कतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव 'अणुत्तरोववाइय' त्ति, णवर असखेज्जवासाउयअकम्मभूमग-अतरदीवगमव्वट्ठसिद्धवज्ज जाव अपराजियदेवेहितो वि उववज्जति, णो सव्वट्ठसिद्धदेवेहितो उववज्जति ।

८ प्रश्न–णरदेवा ण भते ! कओहिंतो उववज्जति ? कि णेरइए० पुच्छा ।

८ उत्तर–गोयमा ! णेरइएहिंतो वि उववज्जति, णो तिरि०, णो मणु०, देवेहितो वि उववज्जति ।

९ प्रश्न–जइ णेरइएहिंतो उववज्जति किं रयणप्पभापुढविणेर-इएहिंतो उववज्जति, जाव अहेसत्तमपुढविणेरइएहिंतो उववज्जति ?

९ उत्तर–गोयमा ! रयणप्पभापुढविणेरइएहितो उववज्जति, णो सक्कर० जाव णो अहेसत्तमपुढविणेरइएहितो उववज्जति ।

१० प्रश्न–जइ देवेहितो उववज्जति कि भवणवासिदेवहितो उववज्जति, वाणमतर० जोइसिय० वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जति ?

१० उत्तर–गोयमा ! भवणवासिदेवेहितो वि उववज्जति, वाण-मतर० एव सव्वदेवेसु उववाएयव्वा, वक्कतीभेएण जाव सव्वट्ठ-सिद्धत्ति ।

११ प्रश्न–धम्मदेवा ण भते ! कओहितो उववज्जति ? किं णेरइएहिंतो० ?

से समन्वित यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हैं, वे 'धमदेव' कहलाते हैं।

५ प्रश्न-हे भगवन ! 'देवाधिदेव' क्यो कहलाते है ?

५ उत्तर हे गौतम ! उत्पन्न हुए केवलज्ञान और केवलदर्शन को धारण करने वाले यावत् सर्वदर्शी अरिहन्त भगवान् 'देवाधिदेव' कहलाते हैं।

६ प्रश्न-हे भगवन् ! 'भावदेव' किसे कहते हैं ?

६ उत्तर-हे गौतम ! भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक देव, जो देवगति सम्बधी नामकम और गौत्र कम का वेदन कर रहे हैं, वे 'भावदेव' कहलाते हैं।

विवेचन-जो क्रीडादि धम वाले है अथवा जिनकी आराध्यरूप से स्तुति की जाती वे देव' कहलाते हैं।

भव्यद्रव्य देव मे 'द्रव्य' शब्द अप्राधान्य वाचक है। भूतकाल मे देव पर्याय का प्राप्त हुए अथवा भविष्यत्काल मे देवपने को प्राप्त करने वाले, किन्तु वतमान मे देव के गुणो से शून्य होने के कारण वे अप्रधान हैं। इनमे से जा इस भव के बाद ही दवपने का प्राप्त करने वाले है, वे 'भव्यद्रव्यदेव' कहलाते हैं।

मनुष्यो मे देवो के समान आराधना करने के योग्य मनुष्येन्द्र-चक्रवर्ती 'नरदेव' कहलाते है।

श्रुतादि धम द्वारा जो देव तुल्य हैं अथवा जिनमे धम की ही प्रधानता है ऐसे धार्मिक देवरूप अनगार 'धमदेव' कहलाते हैं।

पारमार्थिक देवपना होने से जो देवो से भी अधिक श्रेष्ठ है, ऐसे तीथकर भगवान 'देवाधिदेव' अथवा 'देवातिदेव' कहलाते है।

देवगत्यादि कम के उदय से देवपने का अनुभव करने वाले 'भावदेव' कहलाते हैं।

७ प्रश्न-भवियदव्वदेवा ण भते ! कओहितो उववज्जति, किं णेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्ख० मणुस्स० देवेहितो उववज्जति ?

७ उत्तर-गोयमा ! णेरइएहिंतो उववज्जति, तिरि० मणु० देवे-

हिंतो वि उववज्जति, भेओ जहा वक्कतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव 'अणुत्तरोववाइय' त्ति णवर असखेज्जवासाउयअकम्मभूमग-अतरदीवगसव्वट्ठसिद्धवज्ज जाव अपराजियदेवेहिंतो वि उववज्जति, णो सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतो उववज्जति ।

८ प्रश्न-णरदेवा ण भते ! कओहिंतो उववज्जति ? किं णेरइए० पुच्छा ।

८ उत्तर-गोयमा ! णेरइएहिंतो वि उववज्जति, णो तिरि०, णो मणु०, देवेहिंतो वि उववज्जति ।

९ प्रश्न-जइ णेरइएहिंतो उववज्जति किं रयणप्पभापुढविणेर-इएहिंतो उववज्जति जाव अहेसत्तमपुढविणेरइएहिंतो उववज्जति ?

९ उत्तर-गोयमा ! रयणप्पभापुढविणेरइएहिंतो उववज्जति, णो सक्कर० जाव णो अहेसत्तमपुढविणेरइएहिंतो उववज्जति ।

१० प्रश्न-जइ देवेहिंतो उववज्जति किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जति, वाणमतर० जोइसिय० वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जति ?

१० उत्तर-गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जति, वाण-मतर० एव सव्वदेवेसु उववाएयव्वा, वक्कतीभेएण जाव सव्वट्ठ-सिद्धत्ति ।

११ प्रश्न-धम्मदेवा ण भते ! कओहिंतो उववज्जति ? किं णेरइएहिंतो० ?

११ उत्तर-एव वक्कतीभेएण सव्वेसु उववाएयव्वा जाव 'सव्वट्ठसिद्ध' त्ति। णवर तमा-अहेसत्तमाए णो उववाओ तेउ वाउ-असखिज्जवासाउयअकम्मभूमग-अतरदीवगवज्जेसु।

१२ प्रश्न-देवाहिदेवा णं भते! कओहितो उववज्जति, कि णेरइएहितो उववज्जति-पुच्छा।

१२ उत्तर-गोयमा! णेरइएहितो उववज्जति, णो तिरि० णो मणु० देवेहिंतो वि उववज्जति।

१३ प्रश्न-जइ णेरइएहितो० ?

१३ उत्तर-एव तिसु पुढवीसु उववज्जति, सेसाओ खोडे-यव्वाओ।

१४ प्रश्न-जइ दवेहिंतो० ?

१४ उत्तर-वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, सेसा खोडेयव्वा।

१५ प्रश्न-भावदेवा ण भते! कओहितो उववज्जति ?

१५ उत्तर-एव जहा वक्कतीए भवणवासीण उववाओ तहा भाणियव्वो।

कठिन शब्दार्थ-खोडेयव्वा-निषेध करना चाहिये।

७ प्रश्न-हे भगवन्! भव्यद्रव्य देव किस गति से आकर उत्पन्न होते हैं ? क्या नैरयिको से आकर उत्पन्न होते है, अथवा तिर्यञ्चो, मनुष्यो या देवों से

आकर उत्पन्न होते है ?

७ उत्तर-हे गौतम ! नैरयिको, तिर्यञ्चो, मनुष्यो और देवो से आकर उत्पन्न होते है । यहाँ प्रज्ञापना सूत्र के छठे व्युत्क्रान्ति पद में कहे अनुसार भेद (विशेषता) कहना चाहिये । उन सभी के उत्पत्ति के विषय में अनुत्तरौपपातिक तक कहना चाहिये । इसमें इतनी विशेषता है कि असख्यात वर्ष की आयुष्य वाले अकर्मभूमि और अन्तरद्वीप के जीव तथा सर्वार्थसिद्ध के जीवो को छोडकर यावत् अपराजित देवो (भवनपति से लगाकर अपराजित नाम के चौथे अनुत्तर विमान तक) से आकर उत्पन्न होते है, परन्तु सर्वार्थसिद्ध के देवो से आकर उत्पन्न नहीं होते ।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! नरदेव कहाँ से आकर उत्पन्न होते है, क्या नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य या देवो से आकर उत्पन्न होते है ?

८ उत्तर-हे गौतम ! वे नैरयिक और देवो से आकर उत्पन्न होते है, तिर्यंच और मनुष्यो से आकर उत्पन्न नही होते ।

९ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि वे नैरयिको से आकर उत्पन्न होते है, तो क्या रत्नप्रभा यावत् अध सप्तम पृथ्वी के नैरयिको से आकर उत्पन्न होते है ?

९ उत्तर-हे गौतम ! वे रत्नप्रभा पृथ्वी के नैरयिको से आकर उत्पन्न होते है, किंतु शकराप्रभा यावत् अध सप्तम पृथ्वी के नरयिको से नहीं ।

१० प्रश्न-हे भगवन ! यदि वे देवो से आकर उत्पन्न होते है, तो क्या भवनवासी, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक देवो से आकर उत्पन्न होते है ?

१० उत्तर-हे गौतम ! वे भवनवासी, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक-सभी देवो से आकर उत्पन्न होते है । इसी प्रकार सभी देवो के विषय में यावत सर्वार्थसिद्ध पर्यंत, व्युत्क्रान्ति पद में कथित विशेषता पूर्वक उपपात कहना चाहिये ।

११ प्रश्न-हे भगवन् ! धर्मदेव नैरयिक आदि किस गति से आकर उत्पन्न होते है ?

११ उत्तर–हे गौतम ! यह सभी वर्णन व्युत्क्रान्ति पद में कथित भेद सहित यावत् सर्वार्थसिद्ध तक उपपात कहना चाहिये, परन्तु इतनी विशेषता है कि तम प्रभा और अध सप्तम पृथ्वी से तथा तेउकाय, वायुकाय, असख्यात वर्ष वाले कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज और अन्तरद्वीपज मनुष्य तथा तिर्यंचो से आकर धर्मदेव उत्पन्न नहीं होते है ।

१२ प्रश्न–हे भगवन् ! देवाधिदेव कहाँ से आकर उत्पन्न होते है ? क्या नैरयिकादि चारो गति से आकर उत्पन्न होते है ?

१२ उत्तर–हे गौतम ! नैरयिक और देवो से आकर उत्पन्न होते है, तिर्यंच और मनुष्य गति से आकर उत्पन्न नही होते ।

१३ प्रश्न–हे भगवन् ! यदि नैरयिको से आकर उत्पन्न होते है, तो क्या रत्नप्रभा आदि के नैरयिको से आकर उत्पन्न होते है ?

१३ उत्तर–हे गौतम ! प्रथम तीन पृथ्वियो से आकर उत्पन्न होते है, शेष पृथ्वियो का निषेध है ।

१४ प्रश्न–हे भगवन ! यदि देवो से आकर उत्पन्न होते है, तो क्या भवनपति आदि से आकर उत्पन्न होते है ?

१४ उत्तर–हे गौतम ! सभी वैमानिक देवो से यावत् सर्वार्थसिद्ध से आकर उत्पन्न होते है । शेष देवो का निषेध करना चाहिये ।

१५ प्रश्न–हे भगवन् ! भावदेव किस गति से आकर उत्पन्न होते है ?

१५ उत्तर–हे गौतम ! प्रज्ञापना सूत्र के छठे व्युत्क्रान्ति पद में जिस प्रकार भवनवासियो का उपपात कहा है, उसी प्रकार यहाँ कहना चाहिये ।

विवेचन–भव्य द्रव्यदेव की उत्पत्ति मे असख्यात वर्ष की आयुष्य वाले कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज और अन्तरद्वीपज तथा सर्वार्थ सिद्ध के देवो का निषेध किया है, इसका कारण यह है कि असख्यात वर्ष की आयुष्य वाले जीव तथा अकर्मभूमिज और अन्तरद्वीपज तो सीधे भाव देवो मे उत्पन्न होते हैं किन्तु भव्यद्रव्यदेवो (मनुष्य तिर्यञ्च) मे उत्पन्न नही होते और सर्वार्थसिद्ध के देव तो भव्यद्रव्य सिद्ध हैं । अर्थात् वे तो मनुष्यभव करके सिद्ध हो जाते हैं, अत वे मनुष्य मे उत्पन्न होकर भी भव्यद्रव्यदेवों मे उत्पन्न नही होते ।

तम प्रभा (छठी नरक) तक मे निकले हुए जीव मनुष्य भव प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु चारित्र प्राप्त नही कर सकते। अध सप्तम पृथ्वी तेउकाय, वायुकाय, असख्यात वर्ष की आयुष्य वाले कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज और अतरद्वीपज मनुष्य तथा तिर्यञ्च–इनसे निकले हुए जीव तो मनुष्य-भव भी प्राप्त नही कर सकते। अतएव वे धर्मदेव (चारित्रयुक्त अनगार) नही हो सकते।

पहली, दूसरी और तीसरी नरक मे निकले हुए जीव तीर्थंकर पद प्राप्त कर सकते हैं। शेष चार पृथ्वियो से निकले हुए जीव तीर्थंकर नही हो सकते। अत आगे की पृथ्वियो का निषेध किया गया है।

बहुत से स्थानो से आकर जीव भवनपति देवपने उत्पन्न होते हैं, क्योकि उनमे असज्ञी जीव भी उत्पन्न होते हैं, इसलिये यहा भवनपति सम्बन्धी उपपात का कथन किया है।

१६ प्रश्न–भवियदव्वदेवाण भते! केवइय काल ठिई पण्णत्ता?

१६ उत्तर–गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ।

१७ प्रश्न–णरदेवाण पुच्छा।

१७ उत्तर–गोयमा! जहण्णेण सत्त वाससयाइ, उक्कोसेणं चउरासीई पुव्वसयसहस्साइ।

१८ प्रश्न–धम्मदेवाण भते! पुच्छा।

१८ उत्तर–गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी।

१९ प्रश्न–देवाहिदेवाण पुच्छा।

१९ उत्तर–गोयमा! जहण्णेण बावत्तरिं वासाइ, उक्कोसेणं

११ उत्तर–हे गौतम ! यह सभी वर्णन व्युत्क्रान्ति पद में कथित भेद सहित यावत् सर्वार्थसिद्ध तक उपपात कहना चाहिये, परन्तु इतनी विशेषता है कि तम प्रभा और अध सप्तम पृथ्वी से तथा तेउकाय, वायुकाय, असख्यात वर्ष वाले कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज और अन्तरद्वीपज मनुष्य तथा तिर्यंचो से आकर धर्मदेव उत्पन्न नही होते ह ।

१२ प्रश्न–हे भगवन् ! देवाधिदेव कहाँ से आकर उत्पन्न होते है ? क्या नैरयिकादि चारो गति से आकर उत्पन्न होते है ?

१२ उत्तर–हे गौतम ! नैरयिक और देवो से आकर उत्पन्न होते है, तिर्यंच और मनुष्य गति से आकर उत्पन्न नही होते ।

१३ प्रश्न–हे भगवन् ! यदि नैरयिको से आकर उत्पन्न होते है, तो क्या रत्नप्रभा आदि के नैरयिको से आकर उत्पन्न होते है ?

१३ उत्तर–हे गौतम ! प्रथम तीन पृथ्वियो से आकर उत्पन्न होते है, शेष पृथ्वियो का निषेध है ।

१४ प्रश्न–हे भगवन ! यदि देवो से आकर उत्पन्न होते है, तो क्या भवनपति आदि से आकर उत्पन्न होते ह ?

१४ उत्तर–हे गौतम ! सभी वैमानिक देवो से यावत सर्वार्थसिद्ध से आकर उत्पन्न होते है । शेष देवो का निषेध करना चाहिये ।

१५ प्रश्न–हे भगवन् ! भावदेव किस गति से आकर उत्पन्न होते है ?

१५ उत्तर–हे गौतम ! प्रज्ञापना सूत्र के छठे व्युत्क्रान्ति पद में जिस प्रकार भवनवासियो का उपपात कहा है, उसी प्रकार यहाँ कहना चाहिये ।

विवेचन–भव्य द्रव्यदेव की उत्पत्ति मे असख्यात वर्ष की आयुष्य वाले कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज और अतरद्वीपज तथा सर्वार्थ सिद्ध के देवा का निषेध किया है, इसका कारण यह है कि असख्यात वर्ष की आयुष्य वाले जीव तथा अकर्मभूमिज और अतरद्वीपज तो सीधे भाव देवो मे उत्पन्न होते हैं किन्तु भव्यद्रव्यदेवो (मनुष्य तिर्यञ्च) मे उत्पन्न नही होते और सर्वार्थसिद्ध के देव तो भव्यद्रव्य सिद्ध हैं । अर्थात वे तो मनुष्यभव करके सिद्ध हो जाते हैं, अत वे मनुष्य मे उत्पन्न होकर भी भव्यद्रव्यदेवो मे उत्पन्न नही होते ।

की आयु इतनी ही थी ।

कोई भी मनुष्य अतर्मुहूर्त आयुष्य शेष रहने पर चारित्र स्वीकार करे तो, उसकी अपेक्षा धर्मदेव की जघन्य स्थिति अतर्मुहूर्त की कही गई है। कोई पूर्वकोटि वर्ष की आयुष्यवाला मनुष्य, सातिरेक आठ वर्ष की उम्र मे चारित्र स्वीकार करे । उसकी अपेक्षा धर्मदेव की उत्कृष्ट स्थिति देशोनपूर्वकोटि कही गई है। पूर्वकोटि वर्ष से अधिक की आयुष्य वाला मनुष्य, चारित्र स्वीकार नही कर सकता ।

देवाधिदेव की जघन्य स्थिति बहत्तर वर्ष की है । चरम तीर्थपति भ० महावीर-स्वामी की आयु इतनी ही थी । उत्कृष्ट स्थिति चौरासी लाख पूर्व की होती है । प्रथम तीर्थंकर भ० ऋषभदेव की आयु इतनी ही थी ।

२१ प्रश्न–भवियदव्वदेवा णं भंते ! किं एगत्त पभू विउव्वित्तए, पुहुत्त पभू विउव्वित्तए ?

२१ उत्तर–गोयमा ! एगत्त पि पभू विउव्वित्तए, पुहुत्त पि पभू विउव्वित्तए, एगत्त विउव्वमाणे एगिंदियरूव वा जाव पचिंदियरूव वा, पुहुत्त विउव्वमाणे एगिंदियरूवाणि वा जाव पचिंदियरूवाणि वा, ताइ सखेज्जाणि वा असखेज्जाणि वा, सबद्धाणि वा असबद्धाणि वा, सरिसाणि वा असरिसाणि वा विउव्वति, विउव्वित्ता तओ पच्छा अप्पणो जहिच्छियाइ कज्जाइ करेंति, एव णरदेवा वि, एव धम्मदेवा वि ।

२२ प्रश्न–देवाहिदेवाण पुच्छा ?

२२ उत्तर–गोयमा ! एगत्त पि पभू विउव्वित्तए, पुहुत्त पि पभू विउव्वित्तए, णो चेव ण सपत्तीए विउव्विसु वा विउव्विति वा

चउरासीइ पुव्वसयसहस्साइ ।

२० प्रश्न-भावदेवाणं पुच्छा ।

२० उत्तर-गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइ, उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइ ।

भावार्थ-१६ प्रश्न-हे भगवन् ! भव्यद्रव्य देवो की स्थिति कितने काल की कही है ।

१६ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट तीन पल्योपम ।

१७ प्रश्न-हे भगवन ! नरदेवो की स्थिति कितने काल की है ?

१७ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य सात सौ वर्ष और उत्कृष्ट चौरासी लाख पूर्व की है ।

१८ प्रश्न-हे भगवन् ! धमदेवो की स्थिति कितने काल की है ?

१८ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूत और उत्कृष्ट देशोनपूवकोटि ।

१९ प्रश्न-हे भगवन् ! देवाधिदेवो की स्थिति कितने काल की ह ?

१९ उत्तर-हे गौतम ! जघन्य बहत्तर वर्ष और उत्कृष्ट चौरासी लाख पूव की है ।

२० प्रश्न-हे भगवन् ! भावदेवो की स्थिति कितने काल की है ?

२० उत्तर-हे गौतम ! जघन्य दस हजार वष और उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की है ।

विवेचन-अन्तर्मुहूत की आयुष्यवाले पञ्चेन्द्रिय तियञ्च, देवरूप मे उत्पन्न होते हैं, इसलिये भव्यद्रव्यदेव की जघ य स्थिति अ तमुहूत की कही गई है । तीन पल्यापम की स्थिति वाले देवकुरु और उत्तरकुरु के मनुष्य और तियञ्च भी देव होते हैं, इसलिये भव्य द्रव्यदेव की उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्यापम की है ।

नरदेव (चक्रवर्ती) की जघन्य स्थिति सात सौ वष की होती है । ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की आयु इतनी ही थी । उत्कृष्ट स्थिति चोरासी लाख पूव की होती है । भरत चक्रवर्ती

की आयु इतनी ही थी ।

कोई भी मनुष्य अन्तर्मुहूत आयुष्य शेप रहने पर चारित्र स्वीकार करे तो, उसकी अपेक्षा धमदेव की जघन्य स्थिति अतर्मुहूत की कही गई है। कोई पूवकोटि वप की आयुष्यवाला मनुष्य, मातिरेक आठ वप की उम्र मे चारित्र स्वीकार करे। उसकी अपेक्षा धमदेव की उत्कृष्ट स्थिति देशानपूवकोटि कही गई है। पूवकोटि वप से अधिक की आयुष्य वाला मनुष्य, चारित्र स्वीकार नही कर सकता ।

देवाधिदेव की जघन्य स्थिति वहत्तर वप की है। चरम तीथपति भ० महावीर-स्वामी की आयु इतनी ही थी। उत्कृष्ट स्थिति चौरासी लाख पूर्व की होती है। प्रथम तीर्थंकर भ० ऋषभदेव की आयु इतनी ही थी ।

२१ प्रश्न–भवियदव्वदेवा णं भते ! कि एगत्त पभू विउव्वित्तए, पुहुत्त पभू विउव्वित्तए ?

२१ उत्तर–गोयमा ! एगत्त पि पभू विउव्वित्तए, पुहुत्त पि पभू विउव्वित्तए, एगत्त विउव्वमाणे एगिंदियरूव वा जाव पचिंदियरूव वा, पुहुत्त विउव्वमाणे एगिंदियरूवाणि वा जाव पचिंदियरूवाणि वा, ताइ सखेज्जाणि वा असखेज्जाणि वा, सबद्धाणि वा असबद्धाणि वा, सरिसाणि वा असरिसाणि वा विउव्वति, विउव्वित्ता तओ पच्छा अप्पणो जहिच्छियाइ कज्जाइ करेति, एव णरदेवा वि, एव धम्मदेवा वि ।

२२ प्रश्न–देवाहिदेवाण पुच्छा ?

२२ उत्तर–गोयमा ! एगत्त पि पभू विउव्वित्तए, पुहुत्त पि पभू विउव्वित्तए, णो चेव ण सपत्तीए विउव्विसु वा विउव्विति वा

विउव्विस्सति वा ।

२३ प्रश्न–भावदेवाण पुच्छा ।

२३ उत्तर–जहा भवियदव्वदेवा ।

कठिन शब्दाथ–पुहुत्त–पथक्त्व–अनेक ।

भावार्थ–२१ प्रश्न–हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेव एक रूप अथवा अनेक रूपो की विकुवणा करने में समर्थ है ?

२१ उत्तर हाँ गौतम ! भव्यद्रव्यदेव एक रूप और अनेक रूपो की विकुर्वणा करने में समर्थ है । एक रूप की विकुवणा करता हुआ एक एकेन्द्रिय रूप यावत एक पञ्चेन्द्रियरूप की विकुवणा करता है । अथवा अनेक रूपो की विकुवणा करता हुआ अनेक एकेद्रिय रूप यावत् अनेक पञ्चेन्द्रिय रूप विकुवणा करता है । वे रूप सख्यात या असख्यात, सम्बद्ध या असम्बद्ध, समान या असमान होते है । उनसे वह अपना यथेष्ट कार्य करता है । इसी प्रकार नरदेव और धमदेव के विषय में भी समझना चाहिये ।

२२ प्रश्न–हे भगवन् ! देवाधिदेव एक रूप या अनेक रूपो की विकुर्वण करने में समथ है ?

उत्तर२२–हे गौतम ! एकरूप और अनेक रूपो की विकुवणा करने में समथ हे । परन्तु उन्होने (शक्ति होते हुए भी उत्सुकता के अभाव से) सम्प्राप्ति द्वारा कभी विकुवणा नहीं की, करते भी नहीं और करेंगे भी नही ।

२३ प्रश्न–हे भगवन् ! भावदेव एकरूप या अनेक रूपो की विकुवणा करने में समथ है ?

२३ उत्तर–हे गौतम ! जिस प्रकार भव्यद्रव्यदेव का कथन किया है, उसी प्रकार इनका भी जानना चाहिये ।

विवेचन–वेही भव्यद्रव्यदेव (–मनुष्य और तियन्च) एक या अनेकरूपो की विकुवणा कर सकते हैं, जो वक्रिय लब्धि सम्पन्न हो ।

२४ प्रश्न–भवियदव्वदेवा णं भंते ! अणतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छति कहिं उववज्जति ? किं णेरइएसु उववज्जति जाव देवेसु उववज्जति ?

२४ उत्तर–गोयमा ! णो णेरइएसु उववज्जति, णो तिरि० णो मणु० देवेसु उववज्जति, जइ देवेसु उववज्जति सव्वदेवेसु उववज्जति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति ।

२५ प्रश्न–णरदेवा ण भंते ! अणतरं उव्वट्टित्ता–पुच्छा ।

२५ उत्तर–गोयमा ! णेरइएसु उववज्जति, णो तिरि० णो मणु० णो देवेसु उववज्जति, जइ णेरइएसु उववज्जति० सत्तसु वि पुढवीसु उववज्जति ।

२६ प्रश्न–धम्मदेवा ण भंते ! अणतर०–पुच्छा ।

२६ उत्तर–गोयमा ! णो णेरइएसु उववज्जेज्जा, णो तिरि० णो मणु०, देवेसु उववज्जति ।

२७ प्रश्न–जइ देवेसु उववज्जति किं भवणवासि०–पुच्छा ।

२७ उत्तर–गोयमा ! णो भवणवासिदेवेसु उववज्जति, णो वाणमंतर०, णो जोइसीय०, वेमाणियदेवेसु उववज्जति सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जति जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइएसु–जाव उववज्जति, अत्थेगइया सिज्झति जाव अंतं करेंति ।

२८ प्रश्न–देवाहिदेवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छति, कहिं

उववज्जति ?

२८ उत्तर-गोयमा ! सिज्झति जाव अत करेंति ।

२९ प्रश्न-भावदेवा ण भते ! अणतर उव्वट्टित्ता-पुच्छा ।

२९ उत्तर-जहा वक्कतीए असुरकुमाराणं उववट्टणा तहा भाणियव्वा ।

कठिन शब्दार्थ-उव्वट्टित्ता-निकल कर।

भावार्थ-२४ प्रश्न-हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेव मरकर तुरन्त नैरयिको में यावत देवो में उत्पन्न होते है ?

२४ उत्तर-हे गौतम ! नैरयिक, तियञ्च और मनुष्या में उत्पन्न नहीं होते, देवो में उत्पन्न होते है और देवो में भी सभी देवो में यावत् सर्वार्थसिद्ध तक उत्पन्न होते है ।

२५ प्रश्न-हे भगवन् ! नरदेव मरने के बाद तत्काल किस गति में उत्पन्न होते है ?

२५ उत्तर-हे गौतम ! नैरयिको में उत्पन्न होते है । तियञ्च, मनुष्य और देवो में उत्पन्न नहीं होते । नैरयिको में भी सातो नरक पृथ्वियो में उत्पन्न होते है ।

२६ प्रश्न-हे भगवन् ! धमदेव आयु पूण कर तत्काल कहा उत्पन्न होते है ?

२६ उत्तर-हे गौतम ! वे नरक, तियञ्च और मनुष्यो में उत्पन्न नहीं होते, देवो में उत्पन्न होते है ।

२७ प्रश्न-हे भगवन् ! यदि धमदेव, देवो में उत्पन्न होते है, तो भवनपति, वाणव्यतर, ज्योतिषी या वैमानिक देवो में उत्पन्न होते है ?

२७ उत्तर-हे गौतम ! भवनपति, वाणव्यतर और ज्योतिषी देवो में

उत्पन्न नहीं होते , वैमानिक देवो में उत्पन्न होते हैं। वैमानिको में वे सभी वैमानिक देवो में यावत् सर्वार्थसिद्ध-अनुत्तरोपपातिक देवो में उत्पन्न होते हैं, और कोई कोई धमदेव सिद्ध होकर समस्त दु खो का अन्त कर देते हैं।

२८ प्रश्न–हे भगवन् ! देवाधिदेव आयु पूर्ण कर तत्काल कहाँ उत्पन्न होते हैं ?

२८ उत्तर–हे गौतम ! वे सिद्ध होते हैं यावत् समस्त दु खो का अन्त करते हैं।

२९ प्रश्न–हे भगवन् ! भावदेव तत्काल आयु पूण कर कहाँ उत्पन्न होते हैं ?

२९ उत्तर–हे गौतम ! प्रज्ञापनासूत्र के छठे व्युत्क्रान्ति पद में, जिस प्रकार असुरकुमारो की उद्वर्तना कही है, उसी प्रकार यहाँ भावदेवो की भी उद्वर्तना कहनी चाहिये ।

विवेचन–यद्यपि काई चक्रवर्ती देवो भी मे उत्पन्न होते है, तथापि वे नरदेवपन (चक्रवर्ती पद) छोड कर, धमदेव पद स्वीकार करके साधु बने, तभी देवो मे या सिद्धो मे उत्पन्न होते हैं। काम भोगो का त्याग किये विना नरदेव अवस्था मे तो वे नरक मे ही उत्पन्न होते हैं।

३० प्रश्न–भवियदव्वदेवे ण भते ! 'भवियदव्वदेवे' त्ति कालओ केवचिर होइ ?

३० उत्तर–गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ, एव जहेव ठिई सच्चेव सचिट्ठणा वि जाव भावदेवस्स णवर धम्मदेवस्स जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी।

३१ प्रश्न–भवियदव्वदेवस्स णं भते ! केवइय काल अतर होइ ?

३१ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्त-मब्भहियाइ उक्कोसेण अणत काल-वणस्सइकालो ।

३२ प्रश्न-णरदेवाण पुच्छा ।

३२ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेण साइरेग सागरोवम, उक्कोसेणं अणत काल-अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूण ।

३३ प्रश्न-धम्मदेवस्स ण पुच्छा ।

३३ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहुत्त, उक्कोसेणं अणत काल, जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूण ।

३४ प्रश्न-देवाहिदेवाण पुच्छा ।

३४ उत्तर-गोयमा ! णत्थि अतर ।

३५ प्रश्न-भावदेवस्स ण पुच्छा ।

३५ उत्तर-गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं अणंत काल-वणस्सइकालो ।

कठिन शब्दार्थ-सचिट्ठणा-सस्थिति ।

भावार्थ-३० प्रश्न-हे भगवन ! भव्यद्रव्यदेव, भव्यद्रव्यदेव रूप से कितने काल तक रहता है ?

३० उत्तर-हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त, और उत्कृष्ट तीन पल्योपम तक रहता है। जिस प्रकार भवस्थिति कही, उसी प्रकार सस्थिति भी कहनी चाहिये। विशेषता यह कि धर्मदेव जघन्य एक समय और उत्कृष्ट देशोन पूर्वकोटि वर्ष तक रहता है।

३१ प्रश्न-हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेव का अन्तर कितने काल का होता है ?

३१ उत्तर–हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूत अधिक दस हजार वर्ष तक और उत्कृष्ट अनन्तकाल–वनस्पति काल पयन्त अन्तर होता है ।

३२ प्रश्न–हे भगवन् ! नरदेव का अन्तर कितने काल का होता है ?

३२ उत्तर–हे गौतम ! जघन्य एक सागरोपम से कुछ अधिक और उत्कृष्ट अनन्तकाल, देशोन अपार्द्ध पुद्गल परावतन पर्यन्त अन्तर होता है ।

३३ प्रश्न–हे भगवन् ! धमदेव का अन्तर कितने काल का होता है ?

३३ उत्तर–हे गौतम ! जघन्य पल्योपम पृथक्त्व (दो से नव पल्योपम तक) और उत्कृष्ट अनन्तकाल, देशोन अपार्द्ध पुद्गल-परावत्तन पर्यन्त होता है ।

३४ प्रश्न–हे भगवन् ! देवाधिदेव का अन्तर कितने काल का होता है ?

३४ उत्तर–हे गौतम ! देवाधिदेव का अन्तर नहीं होता ।

३५ प्रश्न–हे भगवन् ! भावदेव का अन्तर कितने काल का होता है ?

३५ उत्तर–हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अनन्तकाल, वनस्पतिकाल पयन्त अन्तर होता है ।

विवेचन–कोई धमदेव, अशुभ भाव का प्राप्त करके फिर पीछा एक समय मात्र शुभ भाव का प्राप्त कर तुरन्त मत्यु को प्राप्त हो जाता है । इसलिये धमदेव का जघन्य सचिट्ठणा काल परिणामो की अपेक्षा से एक समय का कहा गया है ।

कोई भव्यद्रव्यदेव होकर दस हजार वप की स्थिति वाले व्यन्तरादि देवो मे उत्पन्न हो गया । वहा से चवकर शुभ पथ्वी आदि मे चला गया । वहा जाकर अन्तर्मुहूत तक रहा । फिर भव्यद्रव्यदेव रूप से उत्पन्न हा गया । इस प्रकार अन्तर्मुहूत अधिक दस हजार वप का अन्तर होता है ।

शका–देवलोक से चवकर तुरन्त भव्यद्रव्यदेव रूप से उत्पत्ति का सम्भव होने से दस हजार वप का अन्तर होता है, परन्तु अन्तर्मुहूत अधिक कैसे होता है ?

समाधान–'सब जघन्य आयुष्य वाला देव वहा से चवकर शुभ पथ्वी आदि मे उत्पन्न होकर भव्यद्रव्यदेव (तियञ्च पञ्चेन्द्रिय) मे उत्पन्न हाता है'–ऐसा प्राचीन टीकाकार का आशय मालूम होता है । उस मत के अनुसार अन्तर्मुहूत अधिक दस हजार वप का अन्तर

होता है। कोई आचाय इसका समाधान इस प्रकार भी करते हैं-जिसने देव का आयुष्य बाध लिया है, उसको यहा भव्यद्रव्यदेव' रूप से समझना चाहिये। इससे दस हजार वष की स्थिति वाला देव, देवलोक से चवकर भव्यद्रव्यदेवपने उत्पन्न हाता है और अतर्मुहूत के वाद आयुष्य का बध करता है। इसलिये अतर्मुहूत अधिक दस हजार वष का अतर होता है। तथा अपर्याप्त जीव देवगति मे उत्पन्न नही हो सकता, अत पयाप्त हान के बाद ही उसे भव्यद्रव्यदेव गिनना चाहिये। इस प्रकार गिनने से जघय अन्तर अतर्मुहूत अधिक दस हजार वष का होता है। यह मायता विशेष सगत ज्ञात होती है। भव्यद्रव्यदेव मरकर देव होता है और वहा से चवकर वनस्पति आदि मे अनत काल तक रहकर फिर भव्यद्रव्यदेव होता है। इस अपेक्षा से उत्कृष्ट अतर अनत काल का होता है।

कोई नरदेव (चक्रवर्ती) कामभोगो मे आसक्त रहता हुआ यहा से मरकर पहली नरक मे उत्पन्न हो। वहा एक सागरोपम की आयुष्य भोगकर पुन नरदेव हो और जबतक चक्ररत्न उत्पन्न न हो, तबतक उसका जघय अतर एक सागरोपम से कुछ अधिक होता है। काई सम्यगदष्टि जीव चक्रवर्ती पद प्राप्त करे, फिर वह देशोन अपाद्ध पुदगल परावतन काल तक ससार मे परिभ्रमण करे, इसके बाद सम्यक्त्व प्राप्त कर चक्रवर्तीपन प्राप्त करे और सयम पालकर मोक्ष जाय, इस अपेक्षा से नरदेव का उत्कृष्ट अन्तर देशान अपाद्ध पुदगलपरावतन कहा गया है।

कोई धमदेव (चारित्र युक्त साधु) सौधम देवलोक मे पल्योपम पथक्त्व की आयुष्य वाला देव होवे और वहा से चवकर पुन मनुष्य भव प्राप्त करे। वहा वह साधिक आठ वष की उम्र मे चारित्र स्वीकार करे, इस अपेक्षा से धमदेव का जघय अन्तर पल्यापम पृथक्त्व कहा गया है।

देवाधिदेव (तीथकर भगवान) मोक्ष मे जाते हैं। इसलिये उनका अन्तर नही होता है।

३६ प्रश्न-एएसि ण भते! भवियदव्वदेवाणं, णरदेवाण, जाव भावदेवाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?

३६ उत्तर-गोयमा! सव्वत्थोवा णरदेवा, देवाहिदेवा सखेज्ज-

गुणा, धम्मदेवा सखेज्जगुणा, भवियदव्वदेवा असखेज्जगुणा, भावदेवा असखेज्जगुणा ।

३७ प्रश्न–एएमि णं भते ! भावदेवाणं भवणवासीणं वाणमतराणं, जोइसियाण, वेमाणियाणं सोहम्मगाण, जाव अच्चुयगाण, गेवेज्जगाण, अणुत्तरोववाइयाण य कयरे कयरेहितो जाव विसेसाहिया वा ?

३७ उत्तर–गोयमा ! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा सखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जा सखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जा सखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देवा सखेज्जगुणा, जाव आणयकप्पे देवा सखेज्जगुणा, एव जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुय जाव जोइमिया भावदेवा असखेज्जगुणा ।

॥ सेव भते ! सेव भते त्ति ॥

॥ णवमो उद्देसओ समत्तो ॥

भावार्थ–३६ प्रश्न–हे भगवन् ! इन भव्यद्रव्यदेव, नरदेव यावत भावदेव में से कौन किससे अल्प, बहुत या विशेषाधिक है ?

३६ उत्तर–हे गौतम ! सबसे थोडे नरदेव होते हैं, उनसे देवाधिदेव सख्यात गुण, उनसे धमदेव सख्यात गुण, उनसे भव्यद्रव्यदेव असख्यात गुण और उनसे भावदेव असख्यात गुण होते है ।

३७ प्रश्न–हे भगवन् ! भावदेव, भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिपी, वैमा-

याया जोगाया भाणियव्वा ।

४ प्रश्न–जस्स ण भते ! दवियाया, तस्स उवओगाया–एव सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा ।

४ उत्तर–गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स उवओगाया णियम अत्थि, जस्स वि उवओगाया तस्स वि दवियाया णियम अत्थि, जस्स दवियाया तस्स णाणाया भयणाए जस्स पुण णाणाया तस्स दवियाया णियम अत्थि, जस्स दवियाया तस्स दसणाया णियम अत्थि, जस्स वि दसणाया तस्स दवियाया णियम अत्थि, जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया णियम अत्थि, एव वीरियायाए वि सम ।

कठिन शब्दार्थ–सव्वत्थ–सवत्र–सभी जगह ।

भावार्थ–१ प्रश्न–हे भगवन ! आत्मा कितने प्रकार की कही है ?

१ उत्तर–हे गौतम ! आत्मा आठ प्रकार की कही ह । यथा–द्रव्य आत्मा, कषाय आत्मा, योग आत्मा, उपयोग आत्मा, ज्ञान आत्मा, दशन आत्मा, चारित्र आत्मा और वीय आत्मा ।

२ प्रश्न–हे भगवन् ! जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके कषायात्मा होती है और जिसके कषायात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा होती है ?

२ उत्तर–हे गौतम ! जिसके द्रव्यात्मा होती ह, उसके कषायात्मा कदाचित होती है और कदाचित नही भी होती, परन्तु जिसके कषायात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा अवश्य होती है ।

३ प्रश्न–हे भगवन् ! जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके योगात्मा होती है और जिसके योगात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा होती ह ?

३ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार द्रव्यात्मा और कषायात्मा का सम्बन्ध कहा है, उसी प्रकार द्रव्यात्मा और योगात्मा का सम्बन्ध कहना चाहिये ।

४ प्रश्न-हे भगवन् ! जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके उपयोग आत्मा होती है और जिसके उपयोगात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा होती है ? इस प्रकार सभी आत्माओ के सम्बन्ध में प्रश्न करना चाहिये ।

४ उत्तर-हे गौतम ! जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके उपयोगात्मा अवश्य होती है और जिसके उपयोगात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा अवश्य होती है । जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके ज्ञानात्मा भजना (विकल्प) से होती है । अर्थात् कदाचित् होती है, कदाचित् नहीं भी होती । जिसके ज्ञानात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा अवश्य होती ह । जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके दर्शनात्मा अवश्य होती है । जिसके दशनात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा अवश्य होती है । जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके चारित्रात्मा भजना से होती है और जिसके चारित्रात्मा होती है उसके द्रव्यात्मा अवश्य होती है । जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके वीर्यात्मा भजना से होती ह और जिसके वीर्यात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा अवश्य होती है ।

५ प्रश्न-जस्स ण भंते ! कसायाया तस्स जोगाया-पुच्छा ।

५ उत्तर-गोयमा ! जस्स कसायाया तस्स जोगाया णियम अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय णत्थि, एव उवओगायाए वि सम कसायाया णेयव्वा, कसायाया य णाणाया य परोप्पर दो वि भइयव्वाओ, जहा कसायाया य उव-ओगाया य तहा कमायाया य दमणाया य कसायाया य चरित्ताया य दो वि परोप्पर भइयव्वाओ, जहा कसायाया य जोगाया य

तहा कसायाया य वीरियाया य भाणियव्वाओ, एव जहा कसायायाए वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाए वि उवरिमाहिं सम भाणियव्वाओ । जहा दवियायाए वत्तव्वया भणिया तहा उवयोगायाए वि उवरिल्लाहि सम भाणियव्वा । जस्स णाणाया तस्स दसणाया णियम अत्थि, जस्स पुण दसणाया तस्स णाणाया भयणाए, जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय णत्थि, जस्स पुण चरित्ताया तस्स णाणाया णियम अत्थि, णाणाया वीरियाया दो वि परोप्पर भयणाए । जस्स दसणाया तस्स उवरिमाओ दो वि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दसणाया णियम अत्थि । जस्स चरित्ताया तस्स वीरियाया णियम अत्थि, जस्स पुण वीरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय णत्थि ।

६ प्रश्न–एयासि ण भते ! दवियायाण, कसायायाण जाव वीरियायाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ?

६ उत्तर–गोयमा ! सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ, णाणायाओ अणतगुणाओ, कसायाओ अणतगुणाओ, जोगायाओ विसेसाहियाओ, वीरियायाओ विसेसाहियाओ, उवयोग दविय-दसणायाओ तिण्णि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ।

कठिन शब्दार्थ–परोप्पर–परस्पर ।

भावार्थ–५ हे भगवन् ! जिसके कषायात्मा होती है, उसके योगात्मा

होती है, इत्यादि प्रश्न।

५ उत्तर–हे गौतम ! जिसके कषायात्मा होती है, उसके योगात्मा अवश्य होती है, किंतु जिसके योगात्मा होती है, उसके कषायात्मा कदाचित होती है और कदाचित् नहीं होती। इसी प्रकार उपयोगात्मा के साथ कषायात्मा का सबध कहना चाहिये। तथा कषायात्मा और ज्ञानात्मा, इन दोनो का परस्पर सम्बन्ध भजना से कहना चाहिये। कषायात्मा और उपयोगात्मा के सम्बन्ध के समान कषायात्मा और दर्शनात्मा का सम्बन्ध कहना चाहिये, तथा कषायात्मा और चारित्रात्मा का परस्पर सम्बन्ध भजना से कहना चाहिये। कषायात्मा और योगात्मा के सम्बन्ध के समान कषायात्मा और वीर्यात्मा का सम्बन्ध कहना चाहिये। जिस प्रकार कषायात्मा के साथ अन्य छह आत्माओ की वक्तव्यता कही है, उसी प्रकार योगात्मा के साथ आगे की पाच आत्माओ की वक्तव्यता कहनी चाहिये। जिस प्रकार द्रव्यात्मा की वक्तव्यता कही, उसी प्रकार उपयोगात्मा की आग की चार आत्माओ के साथ वक्तव्यता कहनी चाहिये। जिसके ज्ञानात्मा होती है, उसके दर्शनात्मा अवश्य होती है और जिसके दर्शनात्मा होती है, उसके ज्ञानात्मा भजना से होती है। जिसके ज्ञानात्मा होती है, उसके चारित्रात्मा भजना से होती है और जिसके चारित्रात्मा होती है, उसके ज्ञानात्मा अवश्य होती है। ज्ञानात्मा और वीर्यात्मा–इन दोनो का पारस्परिक सम्बन्ध भजना से कहना चाहिये। जिसके दर्शनात्मा होती है, उसके चारित्रात्मा और वीर्यात्मा–ये दोनो भजना से होती है। जिसके चारित्रात्मा और वीर्यात्मा होती है, उसके दर्शनात्मा अवश्य होती है। जिसके चारित्रात्मा होती है, उसके वीर्यात्मा अवश्य होती है और जिसके वीर्यात्मा होती है, उसके चारित्रात्मा कदाचित् होती है और कदाचित् नहीं भी होती।

६ प्रश्न–हे भगवन ! द्रव्यात्मा, कषायात्मा यावत् वीर्यात्मा–इनमें से कौनसी आत्मा किससे अल्प यावत विशेषाधिक है ?

६ उत्तर–हे गौतम ! सबसे थोडी चारित्रात्मा है, उससे ज्ञानात्मा

अनत गुण है, उससे कषायात्मा अनत गुणी है, उससे योगात्मा विशेषाधिक है, उससे वीर्यात्मा विशेषाधिक है, उससे उपयोगात्मा, द्रव्यात्मा और दशनात्मा ये तीनो विशेषाधिक है और ये तीनो परस्पर तुल्य है ।

विवेचन–जो निरतर दूसरी दूसरी स्व पर पर्यायो को प्राप्त करती रहती है वह आत्मा है । अथवा जिसमे सदा उपयाग अर्थात बोधरूप व्यापार पाया जाय, वह आत्मा है । उपयोग की अपेक्षा सामाय रूप से सभी आत्माए एक प्रकार की हैं, कि तु विशिष्ट गुण और उपाधी को प्रधान मानकर आत्मा के आठ भेद बतलाये गये हैं । वे इस प्रकार हैं,–

१ द्रव्य आत्मा–त्रिकालवर्ती द्रव्यरूप आत्मा द्रव्यात्मा है । यह द्रव्यात्मा सभी जीवो के होती है ।

२ कषाय आत्मा–क्रोध, मान, माया, लोभरूप कषाय से युक्त आत्मा–कषायात्मा है । उपशान्त कषाय और क्षीण कषाय आत्माओ के सिवाय शेष सभी ससारी जीवो के यह आत्मा होती है ।

३ योग आत्मा–मन वचन और काय के व्यापार को योग कहते हैं । इन योगो से युक्त आत्मा–योग आत्मा कहलाती है । योग वाले सभी जीवो मे यह आत्मा होती है । अयागी केवली और सिद्धो के यह आत्मा नही होती ।

४ उपयोग आत्मा–ज्ञान और दशन रूप उपयोग प्रधान आत्मा उपयोग आत्मा है । उपयोगात्मा सिद्ध और ससारी सभी जीवो के होती है ।

५ ज्ञान आत्मा–विशेष अनुभव रूप सम्यग् ज्ञान से विशिष्ट आत्मा को ज्ञान आत्मा कहते है । ज्ञानात्मा सम्यग्दष्टि जीवो के होती है ।

६ दशन आत्मा–सामाय अवबोधरूप दशन से विशिष्ट आत्मा को दशनात्मा कहते हैं । दशनात्मा सभी जीवो के होती है ।

७ चारित्र आत्मा–चारित्र के विशिष्ट गुण से युक्त आत्मा को चारित्रात्मा कहते हैं । चारित्रात्मा विरति वालो के होती है ।

८ वीय आत्मा–उत्थानादि रूप कारणो से युक्त वीय विशिष्ट आत्मा को वीर्यात्मा कहते हैं । यह सभी ससारी जीवो के होती है । यहाँ वीय से 'सकरण वीय' लिया जाता है । सिद्धो मे वीर्यात्मा नही मानी गई है । क्योकि वे कृतकाय हो चुके हैं अर्थात उन्ह कोई काय करना शप नही रहा है ।

आत्मा के आठ भेदो मे परस्पर क्या सम्बध है ? एक भेद मे दूसरा भेद रहता है

ा नही, इसका उत्तर निम्न प्रकार है,—

जिस जीव के द्रव्यात्मा होती है, उसके कपायात्मा होती भी है और नही भी होती। सकपायावस्था मे द्रव्यात्मा के कपायात्मा हाती है और उपशान्त कपाय और क्षीण कपाया वस्था मे द्रव्यात्मा के कपायात्मा नही होती। किन्तु जिस जीव के कपायात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा नियम से होती है। क्योंकि द्रव्यात्मत्व अर्थात जीवत्व के विना कपायो का सभव नही है।

जिस जीव के द्रव्यात्मा होती है, उसके योगात्मा होती भी है और नही भी होती। सयोगी अवस्था मे द्रव्यात्मा के योगात्मा होती है, किंतु अयोगी अवस्था मे द्रव्यात्मा के योगात्मा नही होती, परन्तु जिस जीव के योगात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा नियम से होती है क्योंकि द्रव्यात्मा जीव रूप है और जीव के बिना योगो का सभव नही है।

जिस जीव के द्रव्यात्मा होती है, उसके उपयोगात्मा नियम से हाती है। और जिसके उपयोगात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा नियम से होती है। द्रव्यात्मा और उपयोगात्मा का परस्पर नित्य सम्बन्ध है। सिद्ध और ससारी सभी जीवो के द्रव्यात्मा भी है और उपयोगात्मा भी है। क्योंकि द्रव्यात्मा जीव रूप है और उपयाग उसका लक्षण है। इसलिए दोनो एक दूसरी में नियम से पाई जाती है।

जिसके द्रव्यात्मा होती है उसके ज्ञानात्मा की भजना है। क्योंकि सम्यग्दृष्टि द्रव्यात्मा के ज्ञानात्मा होती है और मिथ्यादृष्टि द्रव्यात्मा के ज्ञानात्मा (सम्यग्ज्ञान रूप) नही होती, किन्तु जिसके ज्ञानात्मा है उसके द्रव्यात्मा नियम से है। क्योंकि द्रव्यात्मा के विना ज्ञानात्मा सभव ही नही है।

जिसके द्रव्यात्मा होती है उसके दशनात्मा नियम से होती है। जसे कि सिद्ध भगवान को केवल दशन होता है। जिसके दशनात्मा होती है उसके द्रव्यात्मा नियम से हाती है। जैसे चक्षुदशनादि वाले के द्रव्यात्मा होती है। द्रव्यात्मा और उपयोगात्मा के समान द्रव्यात्मा और दशनात्मा मे भी नित्य सम्बन्ध है।

जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके चरित्रात्मा की भजना है, क्योंकि विरति वाले द्रव्यात्मा मे ही चारित्रात्मा पाई जाती ह, विरति रहित ससारी जीव और सिद्ध जीवो मे द्रव्यात्मा हाने पर भी चारित्रात्मा नही पाई जाती। जिस जीव के चारित्रात्मा होती है, उसके द्रव्यात्मा अवश्य होती ह। क्योंकि द्रव्यात्मा के बिना चारित्र सम्भव ही नही।

जिसके द्रव्यात्मा होती है, उसके वीर्यात्मा की भजना है, क्योंकि सकरण वीय रहित

सिद्ध जीवो मे द्रव्यात्मा तो है, किन्तु वीर्यात्मा नही । ससारी जीवो के द्रव्यात्मा और वीर्यात्मा दोनो ही है । जहा वीर्यात्मा है, वहा द्रव्यात्मा अवश्य होती है, वीर्यात्मा वाले सभी ससारी जीवा मे द्रव्यात्मा हाती ही है । साराश यह है कि द्रव्यात्मा मे कषायात्मा, योगात्मा, ज्ञानात्मा, चारित्रात्मा और वीर्यात्मा की भजना है, परन्तु उक्त आत्माओ मे द्रव्यात्मा का रहना निश्चित है । द्रव्यात्मा उपयोगात्मा और दर्शनात्मा का परस्पर नित्य सम्बन्ध है । इस प्रकार द्रव्यात्मा के साथ शप सात आत्माओ का सम्बन्ध है ।

कषायात्मा के साथ आगे की छह आत्माओ का सम्बन्ध इस प्रकार है –

जिस जीव के कषायात्मा होती है उसके यागात्मा अवश्य हाती है, क्योकि सकषायी आत्मा आयोगी नही हाती । जिसके योगात्मा होती है उसके कषायात्मा की भजना है, क्योकि सयोगी आत्मा सकषायी और अकषायी दोनो प्रकार की हाती है ।

जिस जीव के कषायात्मा होती है, उसके उपयोगात्मा अवश्य होती ह क्योकि उपयोग रहित ता जड पदाथ है और उस के कषायो का अभाव है । उपयोगात्मा के कषायात्मा की भजना है, क्योकि ग्यारहवे से लेकर चौदहवे गुणस्थान तक के जीवा मे तथा सिद्ध जीवो मे उपयोगात्मा तो है, परन्तु कषाय का अभाव है ।

जिस जीव के कषायात्मा होती है, उसके ज्ञानात्मा की भजना है, मिथ्यादृष्टि के कषायात्मा होते हुए भी ज्ञानात्मा नही होती । सकषायी सम्यगदष्टि के ज्ञानात्मा होती है । जिस जीव के ज्ञानात्मा हाती ह उसके कषायात्मा की भजना है । ज्ञानी कषाय सहित भी होते है और कषाय रहित भी ।

जिस जीव के कषायात्मा होती है उसके दर्शनात्मा अवश्य होती ह । दशन रहित घटादि जड पदार्थो मे कषाया का सवथा अभाव है । जिसके दशनात्मा होती है, उसके कषायात्मा की भजना है, क्योकि दशनात्मा वाले जीव सकषायी और अकषायी दोना प्रकार क होत हैं । जिस जीव क कषायात्मा हाती है, उसके चारित्रात्मा की भजना है और चारित्रात्मा वाले के भी कषायात्मा की भजना है, कषाय वाले जीव सयत और असयत दाना प्रकार क हाते है । सामायिकादि चारित्र वालो के कषाय रहती है और यथाख्यात चारित्र वाले कषाय रहित हाते हैं । जिस जीव के कषायात्मा है, उसके वीर्यात्मा अवश्य होती है । वीयरहित जीवो म कषायो का अभाव पाया जाता है । वीर्यात्मा वाले जीवो के कषायात्मा की भजना ह । क्योकि वीर्यात्मा वाले जीव सकषायी और

सकपायी दोनो प्रकार के होते हैं।

योगात्मा के साथ आगे की पाच आत्माओ का पारस्परिक सम्बन्ध इस प्रकार है,-

जिस जीव के योगात्मा होती ह उसके उपयोगात्मा अवश्य होती है। सभी सयोगी जीवो मे उपयोग होना ही ह, किन्तु जिसके उपयोगात्मा होती है, उसके योगात्मा होती भी ह और नही भी होती। चौदहवे गुणस्थानवर्ती अयोगी केवली और सिद्धात्माओ मे उपयोगात्मा होते हुए भी योगात्मा नही ह।

जिस जीव के योगात्मा होती है, उसके ज्ञानात्मा की भजना है। मिथ्यादष्टि जीवो मे योगात्मा होते हुए भी ज्ञानात्मा नही होती। इसी प्रकार ज्ञानात्मा वाले जीव के भी योगात्मा की भजना है। चौदहवे गुणस्थानवर्ती अयोगी केवली और सिद्ध जीवो मे ज्ञानात्मा होते हुए भी योगात्मा नही होती।

जिस जीव के योगात्मा होती है उसके दर्शन आत्मा अवश्य होती है। सभी जीवो मे सामान्यावबोध रूप दर्शन रहता ही है। किन्तु जिस जीव के दर्शनात्मा होती है, उसके योगात्मा की भजना है। दर्शन वाले जीव योग सहित भी होते हैं और योग रहित भी होते हैं।

जिस जीव के योगात्मा होती है, उसके चारित्रात्मा की भजना है। योगात्मा होते हुए भी अविरत जीवो मे चारित्रात्मा नही होती। इसी तरह जिस जीव के चारित्रात्मा होती है, उसके भी योगात्मा की भजना है क्योकि चौदहवे गुणस्थानवर्ती अयोगी जीवो के चारित्रात्मा तो है, परन्तु योगात्मा नही है। दूसरी वाचना मे यह बताया है कि जिसके चारित्रात्मा होती है, उसके नियमपूर्वक योगात्मा होती है। यहा प्रत्युपेक्षणादि व्यापाररूप चारित्र की विवक्षा है और यह चारित्र योगपूर्वक ही होता है।

जिसके योगात्मा होती है, उसके वीर्यात्मा अवश्य होती है। योग होने पर वीर्य अवश्य होता ही है। जिसके वीर्यात्मा होती है, उसके योगात्मा की भजना है, क्योकि अयोगी केवली मे वीर्यात्मा तो है, किन्तु योगात्मा नही है। यह बात करण और लब्धि दोनो वीर्यात्माओ को लेकर कही गई है। जहा करण वीर्यात्मा है, वहा योगात्मा अवश्य रहेगी, परतु जहा लब्धि वीर्यात्मा है, वहा योगात्मा की भजना है।

उपयोगात्मा के साथ ऊपर की चार आत्माओ का सम्बन्ध इस प्रकार है-

जिस जीव के उपयोगात्मा है, उसके ज्ञानात्मा की भजना है। मिथ्यादृष्टि जीवों मे उपयोगात्मा होते हुए भी ज्ञानात्मा नही होती। जिस जीव के ज्ञानात्मा है उसके

उपयोगात्मा अवश्य है ।

जिस जीव के उपयोगात्मा है, उसके दशनात्मा अवश्य होती है और जिस जीव के दशनात्मा है, उसके उपयोगात्मा अवश्य है ।

जिस जीव के उपयोगात्मा है, उसके चारित्रात्मा की भजना ह । असयति जीवो के उपयोगात्मा तो हाती है परन्तु चारित्रात्मा नही होती । जिस जीव के चारित्रात्मा होती है, उसके उपयोगात्मा अवश्य होती है ।

जिस जीव के उपयोगात्मा होती है, उसके वीर्यात्मा की भजना है । सिद्धो मे उपयोगात्मा के होते हुए भी वीर्यात्मा नही पाई जाती ।

ज्ञानात्मा, दशनात्मा, चारित्रात्मा और वीर्यात्मा मे उपयोगात्मा अवश्य रहती है । जीव का लक्षण ही उपयोग है । उपयोग लक्षण वाला जीव ही ज्ञान दशन, चारित्र और वीय का धारक हाता है । उपयोग शून्य घटादि मे ज्ञानादि नही पाय जात ।

ज्ञानात्मा के साथ ऊपर की तीन आत्माओ का सम्बन्ध इस प्रकार है, –

जिस जीव के ज्ञानात्मा ह उसके दशनात्मा अवश्य होती है । ज्ञान (सम्यगज्ञान) सम्यग्दृष्टि जीवो के होता है और वह दशनपूवक ही होता ह । जिस जीव के दशनात्मा है, उसके ज्ञानात्मा की भजना है, क्योकि मिथ्यादष्टि जीवो के दशनात्मा हाते हुए भी ज्ञानात्मा नही हाती ।

जिस जीव के ज्ञानात्मा है उसक चारित्रात्मा की भजना है । अविरति सम्यग्दृष्टि जीव के ज्ञानात्मा होते हुए भी चारित्रात्मा नही होती । जिस जीव के चारित्रात्मा ह, उसके ज्ञानात्मा अवश्य हाती ह । ज्ञान के बिना चारित्र का अभाव है ।

जिस जीव के ज्ञानात्मा हाती है उसके वीर्यात्मा की भजना है । सिद्ध जीवो मे ज्ञानात्मा के होते हुए भी वीर्यात्मा नही होती । जिस जीव के वीर्यात्मा है उसके ज्ञानात्मा की भजना है । मिथ्यादष्टि जीवो के वीर्यात्मा हाते हुए भी ज्ञानात्मा नही होती ।

दशनात्मा क साथ चारित्रात्मा और वीर्यात्मा का सम्बन्ध इस प्रकार है, –

जिस जीव क दशनात्मा होती है उसके चारित्रात्मा और वीर्यात्मा की भजना है, क्योकि दशनात्मा के होते हुए भी असयति जीवा के चारित्रात्मा नही हाती और सिद्धो के वीर्यात्मा नही हाती । जिस जीव के चारित्रात्मा और वीर्यात्मा होती है उसके दशनात्मा अवश्य होती है । सामान्यावबोध रूप दशन तो सभी जीवा मे होता है ।

चारित्रात्मा और वीर्यात्मा का सम्बन्ध इस प्रकार है,–

जिस जीव के चारित्रात्मा होती है, उसके वीर्यात्मा अवश्य होती है। वीर्य के बिना चारित्र का अभाव है। जिस जीव के वीर्यात्मा होती है, उसके चारित्रात्मा की भजना है, क्योंकि असयत जीवो म वीर्यात्मा के होते हुए भी चारित्रात्मा नही होती।

अल्प-बहुत्व–इन आठ आत्माओ का अल्प बहुत्व इस प्रकार है। सबसे कम चारित्रात्मा है, क्योकि चारित्रवान् जीव सख्यात ही हैं। चारित्रात्मा से ज्ञानात्मा अनन्त गुण हैं क्योकि सिद्ध और सम्यग्दृष्टि जीव चारित्री जीवो से अनन्त गुण है। ज्ञानात्मा से कषायात्मा अनन्तगुण है। क्योकि सिद्ध जीवो की अपेक्षा कषायो के उदय वाले जीव अनन्तगुण है। कषायात्मा से योगात्मा विशेषाधिक है, क्योकि योगात्मा मे कषायात्मा तो सम्मिलित है ही और कषाय रहित योग वाले जीवो का भी इसमे समावेश हो जाता है। योगात्मा से वीर्यात्मा विशेषाधिक हैं क्योकि वीर्यात्मा मे अयोगी आत्माओ का समावेश है। उपयोगात्मा, द्रव्यात्मा और दर्शनात्मा–ये तीनो परस्पर तुल्य हैं। ये सभी सामान्य जीव रूप हैं, परन्तु वीर्यात्मा से विशेषाधिक हैं, क्योकि इन तीन आत्माओ मे वीर्यात्मा वाले ससारी जीवो के अतिरिक्त सिद्ध जीवो का भी समावेश होता है।

आत्मा का ज्ञान अज्ञान और दर्शन

७ प्रश्न–आया भते ! णाणे अण्णाणे ?

७ उत्तर–गोयमा ! आया सिय णाणे सिय अण्णाणे, णाणे पुण णियम आया।

८ प्रश्न–आया भते ! णेरइयाण णाणे, अण्णे णेरइयाण णाणे ?

८ उत्तर–गोयमा ! आया णेरइयाण सिय णाणे, सिय अण्णाणे। णाणे पुण से णियम आया, एव जाव थणियकुमाराणं।

९ प्रश्न–आया भते ! पुढविकाइयाण अण्णाणे, अण्णे पुढवि-

काइयाणं अण्णाणे ?

९ उत्तर-गोयमा ! आया पुढविकाइयाणं णियम अण्णाणे, अण्णाणे वि णियम आया, एव जाव वणस्सइकाइयाण, वेइदिय-तेइदिय जाव वेमाणियाण जहा णेरइयाण ।

१० प्रश्न-आया भते दसणे, अण्णे दसणे ?

१० उत्तर-गोयमा ! आया णियम दमणे, दसणे वि णियम आया ।

११ प्रश्न-आया भते ! णेरइयाणा दसणे, अराणे णेरइयाण दसणे ?

११ उत्तर-गोयमा ! आया णेरइयाणा णियमा दसणे, दसणे वि से णियम आया, एव जाव वेमाणियाण णिरतर दडओ ।

भावार्थ-७ प्रश्न-हे भगवन् ! आत्मा ज्ञान-स्वरूप है या अज्ञानरूप है ?

७ उत्तर-हे गौतम ! आत्मा कदाचित् ज्ञान स्वरूप है और कदाचित् अज्ञान स्वरूप है, परन्तु ज्ञान तो अवश्य आत्म-स्वरूप है ।

८ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिको की आत्मा ज्ञानरूप है या अज्ञानरूप ?

८ उत्तर-हे गौतम ! नैरयिक जीवो की आत्मा कदाचित् ज्ञानरूप है और कदाचित् अज्ञान रूप है, परन्तु उनका ज्ञान अवश्य ही आत्मरूप है । इसी प्रकार यावत् स्तनितकुमारो तक कहना चाहिये ।

९ प्रश्न-हे भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीवो की आत्मा ज्ञानरूप है या अज्ञानरूप ?

९ उत्तर-हे गौतम ! पृथ्वीकायिक जीवो की आत्मा अवश्य अज्ञानरूप

है, परन्तु उनका अज्ञान अवश्य आत्मरूप है। इस प्रकार यावत् वनस्पतिकायिक तक कहना चाहिये। बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय यावत् वैमानिक तक जीवों का कथन नैरयिकों के समान जानना चाहिये।

१० प्रश्न-हे भगवन् ! आत्मा दर्शनरूप है या दर्शन उससे भिन्न है ?

१० उत्तर-हे गौतम ! आत्मा अवश्य दर्शनरूप है और दर्शन भी अवश्य आत्मरूप है।

११ प्रश्न-हे भगवन् ! नैरयिक जीवों की आत्मा दर्शनरूप है या नैरयिक जीवों का दर्शन उससे भिन्न है ?

११ उत्तर-हे गौतम ! नैरयिक जीवों की आत्मा अवश्य दर्शनरूप है और उनका दर्शन भी अवश्य आत्मरूप है। इस प्रकार यावत् वैमानिकों तक चौवीस ही दण्डक कहना चाहिये।

पृथ्वी आत्मरूप है ?

१२ प्रश्न-आया भंते ! रयणप्पभापुढवी अण्णा रयणप्पभा पुढवी ?

१२ उत्तर-गोयमा ! रयणप्पभा १ सिय आया २ सिय णोआया ३ सिय अवत्तव्वं आयाइ य णोआयाइ य।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय णोआया, सिय अवत्तव्वं आयाइ य णो आयाइय' ?

उत्तर-गोयमा ! १ अप्पणो आइट्ठे आया, २ परस्स आइट्ठे णो आया, ३ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं रयणप्पभा पुढवी आयाइ य णो आयाइ य, से तेणट्ठेणं तं चेव जाव णो आयाइ य।

१३ प्रश्न-आया भंते ! सक्करप्पभा पुढवी ?

१३ उत्तर-जहा रयणप्पभा पुढवी तहा सक्करप्पभाए वि, एवं जाव अहेसत्तमा ।

१४ प्रश्न-आया भंते ! सोहम्मे कप्पे पुच्छा ।

१४ उत्तर-गोयमा ! १ सोहम्मे कप्पे सिय आया, २ सिय णो आया जाव णोआयाइ य ।

प्रश्न-से केणट्ठेणं भंते ! जाव णो आयाइ य ?

उत्तर-गोयमा ! १ अप्पणो आइट्ठे आया, २ परस्स आइट्ठे णो आया, ३ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आयाइ य णोआयाइ य, से तेणट्ठेणं तं चेव जाव णोआयाइ य । एवं जाव अच्चुए कप्पे ।

१५ प्रश्न-आया भंते ! गेविज्जविमाणे, अण्णे गेविज्जविमाणे ?

१५ उत्तर-एवं जहा रयणप्पभा तहेव, एवं अणुत्तरविमाणा वि, एवं ईसिपब्भारा वि ।

कठिन शब्दार्थ-आइट्ठे-आदिष्ट-उनके द्वारा कहे जाने पर ।

१२ प्रश्न-हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी आत्मरूप है या अन्य (असद् रूप) ?

१२ उत्तर-हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी कथंचित आत्मरूप (सद्रूप) है और कथंचित् नोआत्मरूप (असद्रूप) है । सदसद्रूप (उभयरूप) होने से कथंचित् अवक्तव्य है ।

प्रश्न–हे भगवन् ! क्या कारण है कि–रत्नप्रभा पृथ्वी कथचित् सद्रूप, कथचित् असद्रूप, और कथचित् उभयरूप होने से अवक्तव्य कहते हैं ?

उत्तर–हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी अपने स्वरूप से सद्रूप है, पर स्वरूप से असद्रूप है और उभयरूप की विवक्षा से सद् असद्रूप होने से अवक्तव्य है । इसलिये पूर्वोक्त रूप से कहा गया है ।

१३ प्रश्न–हे भगवन् ! शर्कराप्रभा पृथ्वी आत्मरूप (सद्रूप) है, इत्यादि प्रश्न ।

१३ उत्तर–हे गौतम ! जिस प्रकार रत्नप्रभा पृथ्वी का कथन किया है, उसी प्रकार शर्कराप्रभा पृथ्वी के विषय में यावत अध सप्तम पृथ्वी तक कहना चाहिये ।

१४ प्रश्न–हे भगवन् ! सौधम देवलोक सद्रूप है, इत्यादि प्रश्न ।

१४ उत्तर–हे गौतम ! सौधर्म देवलोक कथचित सद्रूप है, कथचित् असद्रूप है और कथचित सदसद्रूप होने से अवक्तव्य है ।

प्रश्न–हे भगवन् ! इसका क्या कारण है ?

उत्तर–हे गौतम ! स्व स्वरूप से सद्रूप है, पर स्वरूप से असद्रूप है और उभय की अपेक्षा अवक्तव्य है । इसलिये उपर्युक्त रूप से कहा है । इसी प्रकार यावत् अच्युत कल्प तक जानना चाहिये ।

१५ प्रश्न–हे भगवन् ! ग्रैवेयक विमान सद्रूप है इत्यादि प्रश्न ।

१५ उत्तर–हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के समान कहना चाहिये । इसी प्रकार अनुत्तर विमान तथा ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी तक कहना चाहिये ।

विवेचन–यहा ज्ञान से सम्यग्ज्ञान का और अज्ञान से मिथ्या ज्ञान का ग्रहण किया गया है । 'आत्मा' का अर्थ है सद्रूप और अनात्मा का अथ है असद्रूप । किसी भी वस्तु को एक साथ सद्रूप और असद्रूप नही कहा जा सकता । उस दशा मे वस्तु अवक्तव्य कहलाती है । रत्नप्रभा पृथ्वी अपने वर्णादि पर्यायो द्वारा सद्रूप है, पर वस्तु की पर्यायो से असद्रूप है, स्व पर पर्यायो से आत्मस्वरूप और अनात्मरूप अर्थात् सद और असद्रूप-इन दोनो द्वारा एक बार कहना अशक्य है । इसलिये यहा सद्रूप, असद्रूप और अवक्तव्य-ये तीन भग होते हैं ।

परमाणु आदि की सद्रूपता

१६ प्रश्न–आया भंते ! परमाणुपोग्गले, अण्णे परमाणुपोग्गले ?

१६ उत्तर–एवं जहा सोहम्मे कप्पे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियव्वे ।

१७ प्रश्न–आया भंते ! दुपएसिए खंधे, अण्णे दुपएसिए खंधे ?

१७ उत्तर–गोयमा ! १ दुपएसिए खंधे सिय आया २ सिय णोआया ३ सिय अवत्तव्वं आयाइय णोआयाइ य, ४ सिय आया य णोआया य, ५ सिय आया य अवत्तव्वं आयाइ य णोआयाइ य, ६ सिय णोआया य अवत्तव्वं आयाइ य णोआयाइ य ।

१८ प्रश्न–से केणट्ठेणं भंते ! एवं तं चेव जाव 'णोआया य अवत्तव्वं आयाइ य णोआयाइ य' ?

१८ उत्तर–गोयमा ! १ अप्पणो आइट्ठे आया २ परस्स आइट्ठे णोआया ३ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं दुपएसिए खंधे आयाइ य णोआयाइ य ४ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे दुप्पएसिए खंधे आया य णोआया य ५ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं आयाइ य णोआयाइ य ६ देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे णोआया य अवत्तव्वं

आयाइ य णोआयाइ य, से तेणट्ठेण त चेव जाव 'णोआयाइ य'।

भावार्थ-१६ प्रश्न-हे भगवन् ! परमाणु-पद्गल सद्रूप है या असद्-रूप है ?

१६ उत्तर-हे गौतम ! जिस प्रकार सौधर्म देवलोक के विषय में कहा है उसी प्रकार परमाणु पुद्गल के विषय में भी कहना चाहिये।

१७ प्रश्न-हे भगवन् ! द्विप्रदेशी स्कन्ध सद्रूप है या असद्रूप ?

१७ उत्तर-हे गौतम ! द्विप्रदेशी स्कन्ध कथचित् सद्रूप है। कथचित् असद्रूप है और सदसद्रूप होने से कथचित् अवक्तव्य है। ४ कथचित् सद्रूप है और कथचित् असद्रूप है। ५ कथचित् सद्रूप है और सदसद्उभयरूप होने से अवक्तव्य है। ६ कथचित् असद्रूप है और सदसद्उभयरूप होने से अवक्तव्य है।

१८ प्रश्न-हे भगवन् ! क्या कारण है कि यावत् अवक्तव्यरूप है ?

१८ उत्तर-हे गौतम ! द्विप्रदेशी स्कन्ध अपने स्वरूप की अपेक्षा सद्रूप है, परस्वरूप की अपेक्षा असदरूप है और उभयरूप से अवक्तव्य है। एक देश की अपेक्षा एव सद्भाव पर्याय की विवक्षा तथा एक देश की अपेक्षा से एव असद्भाव पर्याय की विवक्षा से द्विप्रदेशी स्कन्ध सदरूप और असद्रूप है। ५ एक देश की अपेक्षा, सद्भाव पर्याय की अपेक्षा, और एक देश की अपेक्षा से सद-भाव और असद्भाव, इन दोनो पर्यायो की अपेक्षा से द्विप्रदेशी स्कन्ध सद्रूप और सदसदरूप उभयरूप होने से अवक्तव्य है। ६ एक देश की अपेक्षा, असद्भाव पर्याय की अपेक्षा और एक देश के सद्भाव असद्भावरूप उभय पर्याय की अपेक्षा द्विप्रदेशी स्कन्ध असदरूप और अवक्तव्यरूप है। इस कारण पूर्वोक्त प्रकार से कहा है।

विवेचन-द्वि प्रदेशी स्कन्ध के विपय मे छह भग बनते हैं, इनमे से पहले के तीन भग सम्पूर्ण स्कन्ध की अपक्षा से बनते हैं जो कि पहले कहे गये हैं। ये असयोगी है। बाकी

के तीन भग देश की अपेक्षा हैं, जो कि द्विसयोगी है। द्विप्रदेशी स्कन्ध होने से उसके एक देश की स्वपर्यायो द्वारा सदरूप की विवक्षा की जाय और दूसरे देश की पर पर्यायो द्वारा असदरूप से विवक्षा की जाय, तो द्वि प्रदेशी स्क ध अनुक्रम से कथचित सदरूप और कथचित असदरूप होता है। उसके एक देश की स्वपर्यायो द्वारा सद्रूप से विवक्षा की जाय और दूसरे देश से सदसद उभयरूप से विवक्षा की जाय, तो कथचित सदरूप और कथचित अवक्तव्य कहलाता है। उस स्कन्ध के एक देश की पर्यायो द्वारा असदरूप से विवक्षा की जाय और दूसरे देश की उभयरूप से विवक्षा की जाय, तो असदरूप और अवक्तव्य कहलाता है। कथचित् सदरूप, कथचित असदरूप और कथचित अवक्तव्य रूप, इस प्रकार सातवा भग द्विप्रदेशी स्क ध मे नही बनता है। क्योकि उसके केवल दो अश ही हैं। त्रि प्रदेशी आदि स्कन्ध मे तो य सातो भग बनते हैं।

१६ प्रश्न–आया भते ! तिपएसिए खधे अण्णे तिपएसिए खधे ?

१६ उत्तर–गोयमा ! तिपएसिए खधे १ सिय आया २ सिय णोआया ३ सिय अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य ४ सिय आया य णोआया य ५ सिय आया य णोआयाओ य ६ सिय आयाओ य णोआया य ७ सिय आया य अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य ८ सिय आया य अवत्तव्वाइ आयाओ य णोआयाओ य ९ सिय आयाओ य अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य १० सिय णोआया य अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य ११ सिय णोआया य अवत्तव्वाइ आयाओ य णोआयाओ य १२ सिय णोआयाओ य अवत्तव्व आया य णोआया य १३ सिय आया य णोआया य अवत्तव्व आया य

णोआया य ।

२० प्रश्न– से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ–तिपएसिए खधे सिय आया एव चेव उच्चारेयव्व जाव सिय आया य णो आया य अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य ?

२० उत्तर–गोयमा ! १ अप्पणो आइट्ठे आया, २ परस्स आइट्ठे णोआया, ३ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य, ४ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खधे आया य णोआया य, ५ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा तिपएसिए खधे आया य णोआयाओ य, ६ देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खधे आयाओ य णोआया य, ७ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खधे आया य अवत्तव्व आया य णोआयाइ य, ८ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खधे आया य अवत्तव्वाइ आयाओ य णोआयाओ य, ९ देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खधे आयाओ य अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य, एए तिण्णि भगा, १० देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खधे णोआया य, अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य, ११ देसे आइट्ठे

असब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे णोआया य अवत्तव्वाइ आयाओ य णोआयाओ य, १२ देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे णोआयाओ य अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य, १३ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य णोआया य अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ–'तिपएसिए खंधे सिय आया त चेव जाव णोआयाइ य।'

भावार्थ–१९ प्रश्न–हे भगवन् ! त्रिप्रदेशी स्कन्ध आत्मा (सद् रूप) है या उससे अन्य है ?

१९ उत्तर–हे गौतम ! त्रिप्रदेशी स्कन्ध १ कथचित् आत्मा (विद्यमान) है, २ कथचित् नो आत्मा है, ३ आत्मा तथा नो आत्मा इस उभयरूप से कथचित् अवक्तव्य है, ४ कथचित् आत्मा तथा कथचित नो आत्मा है, ५ कथचित आत्मा और नो आत्माए ह, ६ कथचित् आत्माएँ और नो आत्मा है, ७ कथचित आत्मा और आत्मा तथा नो आत्मा उभय रूप से अवक्तव्य है, ८ कथचित् आत्मा और आत्माएँ तथा नो आत्माएँ उभय रूप से अवक्तव्य है, ९ कथचित आत्माएँ और आत्मा तथा नो आत्मा उभय रूप से अवक्तव्य है, १० कथचित् नो आत्मा और आत्मा तथा नो आत्मा उभय रूप से अवक्तव्य है, ११ कथचित् नो आत्मा और आत्माएँ तथा नो आत्माएँ उभय रूप से अवक्तव्य है। १२ कथचित् नो आत्माएँ और आत्माएँ तथा नो आत्माएँ उभय रूप से अवक्तव्य है, १३ कथचित् आत्मा, नो आत्मा और आत्मा तथा नो आत्मा उभय रूप से अवक्तव्य है।

२० प्रश्न–हे भगवन् ! ऐसा क्यों कहा गया कि 'त्रिप्रदेशी स्कन्ध कथंचित् आत्मा है, इत्यादि ?

२० उत्तर–हे गौतम ! त्रिप्रदेशी स्कन्ध १ अपने आदेश (अपेक्षा) से आत्मा है, २ पर के आदेश से नो आत्मा है, ३ उभय के आदेश से आत्मा और नो आत्मा इस उभय रूप से अवक्तव्य है, ४ एक देश के आदेश से सदभाव पर्याय की अपेक्षा से और एक देश के आदेश से असद्भाव पर्याय की अपेक्षा, त्रिप्रदेशी स्कन्ध आत्मा और नो आत्मारूप है, ५ एक देश के आदेश से सद्भाव पर्याय की अपेक्षा और बहुत देशो के आदेश से असदभाव पर्याय की अपेक्षा से वह त्रिप्रदेशी स्कन्ध आत्मा तथा नोआत्माए है, ६ बहुत देशो के आदेश से सद्भाव पर्याय की अपेक्षा और एक देश के आदेश से असदभाव पर्याय की अपेक्षा से त्रिप्रदेशी स्कन्ध आत्माए और नो आत्मा है, ७ एक देश के आदेश से सदभाव पर्याय की अपेक्षा से और एक देश के आदेश से उभय (सद्भाव और असद्भाव) पर्याय की अपेक्षा से त्रिप्रदेशी स्कन्ध आत्मा और आत्माए तथा नो आत्माए उभय रूप से अवक्तव्य है ८ एक देश के आदेश से सद्भाव पर्याय की अपेक्षा से और बहुत देशो के आदेश से उभय पर्याय की विवक्षा से त्रिप्रदेशी स्कन्ध आत्मा और आत्माए तथा नोआत्माए इस उभय रूप से अवक्तव्य है ९ बहुत देशो के आदेश से सद्भाव पर्याय की अपेक्षा से और एक देश के आदेश से उभय पर्याय की अपेक्षा से त्रिप्रदेशी स्कन्ध आत्माए और आत्मा तथा नो आत्मा इस उभय रूप से अवक्तव्य है। ये तीन भग जानने चाहिये। १० एक देश के आदेश से असद्भाव पर्याय की अपेक्षा से और एक देश के आदेश से उभय पर्याय की अपेक्षा से त्रिप्रदेशी स्कन्ध नो आत्मा और आत्मा तथा नो आत्मा से अवक्तव्य है, ११ एक देश के आदेश से असदभाव पर्याय की अपेक्षा से और बहुत देशो के आदेश से तदुभय पर्याय की अपेक्षा से त्रिप्रदेशी स्कन्ध नो आत्माए और आत्माए तथा नो आत्माए इस उभयरूप से अवक्तव्य है। १२ बहुत देशों के आदेश से असदभाव पर्याय की अपेक्षा से और एक देश के आदेश से तदुभय पर्याय की अपेक्षा से त्रिप्रदेशी स्कन्ध नो आत्माए और आत्मा तथा नो आत्मा उभय रूप

से अवक्तव्य है, १३ एक देश के आदेश से सदभाव पर्याय की अपेक्षा, एक देश के आदेश से असदभाव पर्याय की अपेक्षा से और एक देश के आदेश से तदुभय पर्याय की अपेक्षा से त्रिप्रदेशी स्कन्ध कथचित आत्मा, नोआत्मा और आत्मा तथा नोआत्मा उभयरूप से अवक्तव्य है। इसलिये हे गौतम ! त्रिप्रदेशी स्कन्ध के विषय में उपर्युक्त कथन किया गया है।

विवेचन-त्रिप्रदेशी स्कन्ध के विषय मे तेरह भग होते हैं। उनमे से पहले कहे हुए भगो मे से तीन भग सम्पूण स्कन्ध की अपेक्षा से असयोगी हैं, पीछे नौ भग द्विसयोगी हैं। तेरहवा भग त्रिसयोगी है।

२१ प्रश्न-आया भते ! चउप्पएसिए खधे अण्णे० पुच्छा ?

२१ उत्तर-गोयमा ! चउप्पएसिए खधे १ सिय आया २ सिय णोआया ३ सिय अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य, ४-७ सिय आया य णोआया य ४, ८-११ सिय आया य अवत्तव्व ४, १२-१५ सिय णोआया य अवत्तव्व ४, १६ सिय आया य णोआया य अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य ४, १७ सिय आया य णोआया य अवत्तव्वाइ आयाओ य णोआयाओ य १८ सिय आया य णोआयाओ य अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य १९ सिय आयाओ य णोआया य अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य।

२२ प्रश्न-से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ-'चउप्पएसिए खधे सिय आया य णोआया य अवत्तव्व-त चेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्व ?

२२ उत्तर-गोयमा ! १ अप्पणो आइट्ठे आया २ परस्स

आइट्ठे णोआया ३ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य ४ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे चउभगो, सब्भावपज्जवेण तदुभएण य चउभगो, असब्भावेणं तदुभएण य चउभगो, देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खधे आया य णोआया य अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य १६ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खघे भवइ आया य णोआया य अवत्तव्वाइ आयाओ य णोआयाओ य १७ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आइट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खधे आया य णोआयाओ य अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य १८ देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खधे आयाओ य णोआया य अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य १९ से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ चउप्पएसिए खधे सिय आया सिय णोआया सिय अवत्तव्व णिक्खेवे ते चेव भगा उच्चारेयव्वा जाव–णोआयाइ य ।

भावार्थ–२१ प्रश्न–हे भगवन् ! चतु प्रदेशी स्कन्ध आत्मा है या अन्य है, इत्यादि प्रश्न ।

२१ उत्तर–हे गौतम ! चतुष्प्रदेशी स्कन्ध १ कथचित् आत्मा है २ कथचित् नोआत्मा है ३ आत्मा नोआत्मा उभय रूप से कथचित् अवक्तव्य

हैं। ४-७ कथचित् आत्मा और नोआत्मा है (एक वचन और बहुचन आश्री चार भग)। ८-११ कथचित आत्मा और अवक्तव्य हैं (एक वचन और बहु वचन आश्री चार भग)। १२-१५ कथचित नोआत्मा और अवक्तव्य है (एक वचन और बहुवचन आश्री चार भग)। १६ कथचित् आत्मा और नोआत्मा तथा आत्मा, नोआत्मा रूप से अववतव्य है। १७ कथचित् आत्मा, नोआत्मा और आत्माए तथा नोआत्माए रूप से अवक्तव्य हैं। १८ कथचित आत्मा, नोआत्माए तथा आत्मा और नोआत्मा उभयरूप से अवक्तव्य हैं। १९ कथचित आत्माए, नोआत्मा और आत्मा तथा नोआत्मारूप से अवक्तव्य है।

२२ प्रश्न—हे भगवन ! ऐसा कहने का क्या कारण है ?

२२ उत्तर—हे गौतम ! १ अपने आदेश से आत्मा है, २ पर के आदेश से नोआत्मा है, ३ तदुभय के आदेश से आत्मा और नोआत्मा—इस उभय रूप से अवक्तव्य है। ४ एक देश के आदेश से सद्भाव पर्याय की अपेक्षा से और एक देश के आदेश से असद्भाव पर्याय की अपेक्षा से (एक वचन और बहुवचन आश्री) चार भग होते हैं। ८-११ सदभाव पर्याय और तदुभय पर्याय की अपेक्षा से (एक वचन बहुवचन आश्री) चार भग होते ह। १२ १५ असद्भाव पर्याय और तदुभय पर्याय की अपेक्षा से (एक वचन बहुवचन आश्री) चार भग होते हैं। १६ एक देश के आदेश से सदभाव पर्याय की अपेक्षा से, एक देश के आदेश से असद्भाव पर्याय की अपेक्षा से और एक देश के आदेश से तदुभय पर्याय की अपेक्षा से चतुष्प्रदेशी स्कन्ध आत्मा, नोआत्मा और आत्मा नोआत्मा उभयरूप से अववतव्य है। १७ एक देश के आदेश से सदभाव पर्याय की अपेक्षा से, एक देश के आदेश से असद्भाव पर्याय की अपेक्षा से और बहुत देशो के आदेश से तदुभय पर्याय की अपेक्षा से चतुष्प्रदेशी स्कन्ध आत्मा, नोआत्मा और आत्माएँ, नोआत्माएँ उभय रूप से अवक्तव्य है। १८ एक देश के आदेश से सद्भाव पर्याय की अपेक्षा से, बहुत देशो के आदेश से असद्भाव पर्याय की अपेक्षा से और एक देश के आदेश से तदुभयपर्याय की अपेक्षा से चतुष्प्रदेशी स्कन्ध आत्मा,

नो आत्माएँ और आत्मा नोआत्मा उभय रूप से अवक्तव्य है । १९ बहुत देशो के आदेश से सद्भाव पर्याय की अपेक्षा से, एक देश के आदेश से असदभाव पर्याय की अपेक्षा से और एक देश के आदेश से तदुभय पर्याय की अपेक्षा से चतुष्प्रदेशी स्कन्ध आत्माएँ, नोआत्मा और आत्मा नोआत्मा उभयरूप से अवक्तव्य है । इसलिये हे गौतम ! इस कारण ऐसा कहा जाता है कि चतुष्प्रदेशी स्कन्ध कथचित आत्मा है, कथचित नोआत्मा है और कथचित अवक्तव्य है । इस निक्षेप में पूर्वोक्त सभी भग यावत् 'नोआत्मा है' तक कहना चाहिये ।

विवेचन–चतुष्प्रदेशी स्कन्ध मे भी त्रिप्रदेशी स्कन्ध के समान जानना चाहिये । किन्तु यहा उन्नीस भग बनते हैं । उनमे से तीन भग सम्पूर्ण स्कन्ध की अपेक्षा से असयोगी होते हैं । बाद मे बारह भग द्विसयोगी होते हैं । शेष चार भग त्रिसयोगी होते हैं ।

२३ प्रश्न–आया भते ! पचपएसिए खधे अण्णे पचपएसिए खधे ?

२३ उत्तर–गोयमा ! पचपएसिए खधे १ सिय आया २ सिय णोआया ३ सिय अवत्तव्व आयाइ य णोआयाइ य ४-७ सिय आया य णोआया य सिय अवत्तव्व ४, ८-११ णोआया य अवत्तव्वेण य ४, तियगसजोगे एक्को ण पडइ ।

२४ प्रश्न–से केणट्ठेण भते ! त चेव पडिउच्चारेयव्व ?

२४ उत्तर–गोयमा ! १ अप्पणो आइट्ठे आया २ परस्स आइट्ठे णोआया ३ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्व ४ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे–एव दुयगसजोगे सव्वे पडति तियग-सजोगे एक्को ण पडइ । छप्पएसियस्स सव्वे पडति । जहा छप्पए

सिए एव जाव अणतपएसिए ।

॥ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

॥ बारसमसए दसमो उद्देसो समत्तो ॥

॥ समत्त बारसम सय ॥

भावार्थ—२३ प्रश्न—हे भगवन् ! पञ्चप्रदेशी स्कन्ध आत्मा है या अन्य है ?

२३ उत्तर—हे गौतम ! पञ्चप्रदेशी स्कन्ध १ कथचित् आत्मा है, २ कथचित् नोआत्मा है, ३ आत्मा नोआत्मा रूप से कथचित् अवक्तव्य है, ४-७ कथचित् आत्मा, नोआत्मा और आत्मा नोआत्मा उभयरूप से कथचित् अवक्तव्य है, ८-११ कथचित् आत्मा और अवक्तव्य के चार भग, १२ १५ कथचित् नोआत्मा और अवक्तव्य के चार भग, त्रिक सयोगी आठ भग में से एक आठवाँ भग घटित नहीं होता, अर्थात् सात भग होते हैं । कुल मिलाकर बावीस भग होते है ।

२४ प्रश्न—हे भगवन् ! ऐसा क्यो कहा गया है कि पञ्चप्रदेशी स्कन्ध आत्मा है, इत्यादि प्रश्न ।

२४ उत्तर—हे गौतम ! १ पञ्चप्रदेशी स्कन्ध अपने आदेश से आत्मा है, २ पर के आदेश से नोआत्मा है, ३ तदुभय के आदेश से अवक्तव्य है, एक देश के आदेश से सदभाव पर्याय की अपेक्षा और एक देश के आदेश से असदभाव पर्याय की अपेक्षा से कथचित् आत्मा है, कथचित् नोआत्मा है । इस प्रकार द्विक सयोगी सभी भग पाये जाते हैं । त्रिसयोगी आठ भग होते ह, उनमें से आठवां भग घटित नहीं होता ।

छह प्रदेशी स्कन्ध के विषय में वे ये सभी भग घटित होते हैं । छह प्रदेशी स्कन्ध के समान यावत् अनन्त प्रदेशी तक कहना चाहिये ।

हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है । हे भगवन् ! यह इसी प्रकार है–ऐसा कहकर गौतम स्वामी यावत् विचरते हैं ।

विवेचन–पञ्चप्रदेशी स्कन्ध के २२ भग होते हैं । इनमे से पहले के तीन भग पूर्ववत् सकलादेश रूप हैं । इसके बाद द्विकसंयोगी बारह भग हैं । त्रिकसंयोगी आठ भग होते हैं । उनमे से यहा प्रथम के सात भग ग्रहण करने चाहिये । आठवाँ भग यहाँ असम्भव होने से घटित नही हो सकता । छह प्रदेशी स्कन्ध मे और इससे आगे यावत अनन्त प्रदेशी स्कन्ध तक तेईस तेईस भग होते हैं । वे इस प्रकार हैं–

असयोगी तीन भग

१ आत्मा, २ नो आत्मा ३ अवक्तव्य ।

दो सयोगी १२ भग

१ आत्मा एक, नोआत्मा एक
२ आत्मा एक, नोआत्मा बहुत
३ आत्मा बहुत नोआत्मा एक
४ आत्मा बहुत, नोआत्मा बहुत
५ आत्मा एक अवक्तव्य एक
६ आत्मा एक, अवक्तव्य बहुत
७ आत्मा बहुत, अवक्तव्य एक
८ आत्मा बहुत, अवक्तव्य बहुत
९ नोआत्मा एक अवक्तव्य बहुत
१० नोआत्मा एक अवक्तव्य एक
११ नोआत्मा बहुत अवक्तव्य एक
१२ नोआत्मा बहुत, अवक्तव्य बहुत

तीन सयोगी ८ भग

१ आत्मा एक, नोआत्मा एक, अवक्तव्य एक
२ आत्मा एक, नोआत्मा एक अवक्तव्य बहुत
३ आत्मा एक, नोआत्मा बहुत, अवक्तव्य एक
४ आत्मा एक, नोआत्मा बहुत, अवक्तव्य बहुत
५ आत्मा बहुत, नोआत्मा एक, अवक्तव्य एक
६ आत्मा बहुत, नोआत्मा एक, अवक्तव्य बहुत
७ आत्मा बहुत, नोआत्मा बहुत, अवक्तव्य एक
८ आत्मा बहुत, नोआत्मा बहुत, अवक्तव्य बहुत

परमाणु पुद्गल में तीन असयोगी भग पाये जाते हैं । दो प्रदेशी स्कन्ध में ६ भग पाये जाते हैं, असयोगी ३ और दो सयोगी ३, (पहला पाचवा नौवा) । त्रि प्रदेशी स्कन्ध

मे १३ भग पाये जाते हैं यथा—३ असयोगी, ६ दो सयोगी (चौथा, आठवा और बारहवां, ये तीन भग छोडकर, शेष ६)। तीन सयोगी १ (पहला भग)।

चतुष्प्रदेशी स्कन्ध मे १६ भग पाये जाते है, यथा—३ असयोगी, १२ दो सयोगी और ४ तीन सयोगी, (पहला, दूसरा, तीसरा, पाचवा)।

पञ्चप्रदेशी स्कन्ध मे २२ भग पाये जाते हैं, यथा—३ असयोगी १२ दोसयोगी और ७ तीन सयोगी (आठवा भग छोडकर शेष सात)।

छह प्रदेशी स्कन्ध मे २३ भग पाये जाते हैं। इसी प्रकार सात प्रदेशी स्कन्ध में आठ प्रदेशी स्कन्ध मे यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध मे, प्रत्येक मे तेईस-तेईस भग पाये जाते हैं।

॥ बारहवें शतक का दसवॉ उद्देशक सम्पूर्ण ॥

बारहवां शतक सम्पूर्ण

चतुर्थ भाग सम्पूर्ण

श्री भगवती सूत्र के